प्रकाशक : डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक
SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)
दूरभाष : 9910777969
E-mail : *harisharanverma1@gmail.com*
WWW.IJSCJOURNAL.COM
सहयोग राशि (भारत में)
(व्यक्तिगत) (आजीवन 5100 रुपये)
(संस्थागत) (आजीवन 7100 रुपये)

कृपया सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट से ही भेजें।
बैंक ड्राफ्ट, संपादक "इण्डियन जर्नल ऑफ सोशन कन्सर्न्स" के पक्ष में देय होगा। आजीवन सदस्यता केवल दस वर्षों के लिए मान्य होगी। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द हो जाता है तो आजीवन सदस्यता स्वतः ही समाप्त हो जायेगी।

संपादकीय कार्यालय :

1. **डॉ० हरिशरण वर्मा, प्रधान सम्पादक**
F-120, सेक्टर–10, DLF, फरीदाबाद (हरियाणा)121006
harisharanverma1@gmail.com 09355676460
WWW.IJSCJOURNAL.COM
2. **डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक**
SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)

क्षेत्रीय सम्पादक

1. डॉ० वाई.आर. शर्मा, A-24, रेजिडेंसल कैम्पस, न्यू कैम्पस, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू–180001, फोन : 09419145967
2. डॉ0 सलमा असलम, ओल्ड टाउन बारामुला, कश्मीर पिन – 193101, मौ0 9682162934
3. डॉ0 आरती लोकेश P.o.Box 99846, Dubai, UAE 97150-4270752
4. श्री मोहनलाल, 11 अशोक विहार, संजय नगर, पो. इज्जत नगर बरेली (उ०प्र०) फोन : 09456045552
5. श्री जितेन्द्र गिरधर, कार्यालय सहायक 105/26 जवाहर नगर,कॉपरेटिव बैंक के पीछे, रोहतक 09896126686
6. डॉ0 विमला देवी, सहायक प्रोफेसर (इतिहास) (उत्तराखण्ड)–262524 – 9411900411
7. डॉ0 प्रिया कपूर, सहायक प्रोफेसर, डी0 ए0 वी शताब्दी कालेज, फरीदाबाद मौ0 9711196954
8. डॉ0 ऊषा रानी, हिन्दी – विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला – 5
9. विमला टोप्पो, एस0 आर0 इंटरप्राइसेस म्युनिसिपल काम्पलेक्स सोप न0 4, डेरी फार्म, पोर्ट बलेयर, पी0 ओ0 जंगली घाट – 744103 साउथ अंडमान
10. डॉ0 राजपाल, सहायक प्रो0 राजकिय स्नातकोत्रर महाविद्यालय, हिसार
11. डॉ0 प्रवेश कुमारी, सहायक प्रो0 (हिन्दी – विभाग), बाबा मस्तराथ, विश्वविद्यालय, रोहतक, (हरियाणा)
12. Dr. Reena Rai, 991A, Sudama nagar, Indore, Madhyapradesh 452009, 9584231840

संरक्षक मण्डल :

1. **प्रो0 डॉ0 चकधार त्रिपाठी कुलपति,** उड़ीसा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट, 763004, चलभाषः 9437568809
2. **डॉ0 दिनेश मणी त्रिपाठी**, प्रधानाचार्य एन0 पी0 के0 आई कालेज, सरदार नगर बसडीला (गोरखपुर) उ0प्र0
3. **डॉ० नरेश मिश्रा** (पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
4. **डॉ० वाई.आर.शर्मा,** (राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू)
5. **डॉ0 सुधांशु कुमार शुक्ल** चेयर हिन्दी, आई. सी. सी. वार्सा विश्वविद्यालय, वार्सा (पोलैन्ड) मौ0 48579125129
6. **डॉ0 तपन कुमार शण्डिल्य, कुलपति,** डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय राँची, (झारखण्ड) 9431049871
7. **डॉ0 जंगबहादुर पाण्डेय** (पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग) रांची विश्वविद्यालय, रांची – 834008
फोन : 09431595318
8. **सुदेश रावत** प्रांचार्या एस. एन. आर. जयराम महिला कॉलेज, लोहार माजरा, कुरूक्षेत्र हरियाणा 36119 (सेठ नारंग राय लोहिया जय राम महिला कॉलेज)
9. Sh. Butta Singh gill, PPS, Dy Superintendent of Police. No 409 ,Street no 7 Ghuman Nagar , Sarhind Road, Patiala Punjab -147001.

परामर्शदात्री समिति :

1. **डॉ0 विजयदत्त शर्मा, पूर्व निदेशक, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी पंचकूला(हरियाणा)**
2. **डॉ० सुधेश** (पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)
3. **डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल** (पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर)
4. **डॉ० राजकुमारी सिंह,** प्रोफेसर एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय लोधीपुर राजपूत मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश 9760187147
5. **डॉ० माया मलिक,**पूर्व प्रोफेसर हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
6. **डॉ० ममता सिहल,** (प्रोफेसर एवं अध्यक्षा अंग्रेजी विभाग) जे०वी० जैन कॉलेज सहारनपुर
7. **डॉ० विनीत बाला,** सहायक प्रो. भूगोल विभाग, वैश्य पी.जी. कॉलेज, रोहतक

संपादकीय विशेषज्ञ समिति :
हिन्दी विभाग:

1. **डॉ० राजेश पाण्डे** (डी.वी. कॉलेज, उरई, जिला जालौन, उ०प्र०)
2. **डॉ0 अनिता, सहायक प्रोफेसर**, (हिन्दी), श्री अरबिन्दो कालिज दिल्ली (सांध्य) मौ0 :8595718895
3. **डॉ० सुशील कुमार शर्मा** (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय शिलांग, मेघालय)
4. **डॉ० शशि मंगला,** पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
5. **डॉ0 के0डी0 शर्मा,** पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त, सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
7. **मुकेश चन्द्र गुप्ता** (हिन्दी विभाग, एम.एच.पी.जी. कॉलेज, मुरादाबाद)
8. **डॉ० गीता पाण्डेय** (रीडर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, एस.डी.

9. **डॉ0 प्रवीण कुमार वर्मा** (सह प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग) गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय, पलवल
10. **डॉ0 सुधा चौहान,** पूर्व अध्यक्षा हिन्दी विभाग, वैश्य कालिज, भिवानी
11. **डॉ० रूबी,** (सीनियर सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग कश्मीर
12. **डॉ0 सुमन राठी,** सहायक प्रो0 हिन्दी विभाग, मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक
13. **डॉ0 सुधा कुमारी** (हिन्दी विभाग) एन0जी0एफ0 डिग्री कालिज, उडदू, अध्ययन केन्द्र मथूरा रोड, पलवल 982719456
14. **डॉ० एम. के. कलशेट्टी,** हिन्दी विभाग, श्री माधवराव पाटिल महाविद्यालय, मुरूम तह० अमरगा, जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)–413605
15. **डॉ० मनोज पंड्या,** व्याख्याता हिन्दी विभाग, श्री गोविन्द गुरु, राजस्थान महाविद्यालय, बांसवाड़ा–327001, मो० 09414308404
16. **डॉ. कृष्णा जून,** प्रो० हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
17. **डॉ. विपिन गुप्ता,** सहायक प्रोफेसर, वैश्य कॉलेज भिवानी
18. **प्रो0 (डॉ0) वन्दना शर्मा, म. न. 2, प्रोफेसर लोंज, किचम सी. डी. एम.,मोदीनगर (उ.प्र.) 201204, मो0 2760411251**
19. **डॉ० जाहिदा जबीन,** (प्रो0 एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर–६)
20. **डॉ० टी०डी० दिनकर,** पूर्व प्रो0 एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग अग्रवाल कॉलेज, बल्लभगढ़)
21. **डॉ० सुभाष सैनी,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग दयालसिंह कॉलेज, करनाल, हरियाणा
22. **डॉ० उर्विजा शर्मा,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग शम्भु दयाल स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, गाजियाबाद
23. **डॉ० कामना कौशिक,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग एम.के. स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, सिरसा 09896796006
24. **डॉ० मधुकान्त,** (वरिष्ठ साहित्यकार) 211- L मॉडल टाऊन, रोहतक
25. **डॉ0 कंचन पुरी, विभागध्यक्ष,** रघुनाथ गर्ल्स पी0 जी0 कालेज मेरठ
26. **डॉ0 प्रवेश कुमारी ,** सहायक प्रो0 हिन्दी बाबा मस्तराथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक
27. **डॉ0 राजपाल ,** सहायक प्रो0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार
28. **डॉ0 प्रवेश कुमारी ,** सहायक प्रो0 टिकाराम कन्या कॉलेज, सोनीपत, हरियाणा
29. **प्रो. प्रणव शास्त्री,** प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष–हिन्दी विभाग, उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत – 262 001 उ. प्र. मो.98379 60530 drpranav&pbt23@rediffmail-com
30. **प्रो. राखी उपाध्याय,** प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष – हिन्दी विभाग, डी. ए .वी. कॉलेज, देहरादून – 248 001 (उत्तराखंड) मो. 94111 90099 drrakhi-418@gmail-com
31. **डॉ0 सुनीता जसवाल,** असिस्टेंट प्रोफेसर – हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला (हिमाचल प्रदेश) मो.70186 21542

अंग्रेजी विभाग:

1. **डॉ. ममता सिहल, अध्यक्षा,** अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन कॉलिज, सहारनपुर, उ.प्र.
2. **डॉ. रणदीप राणा, प्रोफेसर,** अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. **डॉ. जयबीर सिंह हुड्डा, प्रोफेसर,** अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
4. **डॉ० रविन्द्र कुमार,** एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग, चौ० चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
5. **डॉ. अनिल वर्मा** (पूर्व रीडर, अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर)
6. **डॉ0 जे. के. शर्मा,** प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक
8. **डॉ. पी.के. शर्मा,** (प्रो., अंग्रेजी–विभाग, राजकीय के.आर.जी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर)
9. **डॉ. गीता रानी शर्मा,** (सहायक प्रोफेसर) गो.ग.दत्त सनातन धर्म कॉलेज, पलवल
10. **डॉ. किरण शर्मा,** (एसोसिएट प्रोफेसर) राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय रोहतक
11. **डॉ0 राजाराम,** सहायक प्रोफेसर (अंगेजी) ओम स्ट्रलिंग ग्लोबल, विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

वाणिज्य विभाग:

1. **डॉ० नवीन कुमार गर्ग** (वाणिज्य विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० ए.के. जैन,** पूर्व रीडर (वाणिज्य विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर)
3. **डॉ० दिनेश जून,** एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फरीदाबाद
4. **डॉ० एम.एल. गुप्ता,** (पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वाणिज्य एवं व्यवसायिक प्रशासन संकाय, एस.एस.वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हापुड़ एवं संयोजक–शोध उपाधि समिति एवं संयोजक बोर्ड ऑफ स्टीडिज चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
5. **डॉ० वजीर सिंह नेहरा,** प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
6. **डॉ० संजीव कुमार,** प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
7. **डॉ. गीता गुप्ता,** (सहायक प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, वैश्य महिला महाविद्यालय, रोहतक)
7. **डॉ. नरेन्द्रपाल सिंह,** (एसोसिएट प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद, उ.प्र.)

राजनीति शास्त्र विभाग:

1. **साकेत सिसोदिया,** (राजनीति शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
2. **डॉ० रोचना मित्तल** (रीडर एवं अध्यक्षा, राजनीति शास्त्र–विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
3. **डॉ० कौशल गुप्ता,** एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, देशबन्धु महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली **Mob.: 09810938437**
4. **डॉ०पी.के. वार्ष्णेय**, पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, जे.वी.जैन कॉलेज, सहारनुपुर
5. **डॉ० सुदीप कुमार,** सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, पेहवा (कुरुक्षेत्र) **Mob.: 9416293686**
6. **डॉ० वाई०आर० शर्मा,** एसो० प्रो०, राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू (कश्मीर)
7. **डॉ. रेनू राणा,** (सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, पं. नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय रोहतक 124001
8. **डॉ. ममता देवी,** (सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक शास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

इतिहास विभाग:

1. **डॉ० भूकन सिंह** (प्रवक्ता, इतिहास विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० मनीष सिन्हा,** पी.जी. विभाग, इतिहास, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार–824231
3. **डॉ० राजीव जून,** सहायक प्रो० इतिहास, सी.आर इन्स्टीट्यूट ऑफ ला, रोहतक
4. **डॉ० मीनाक्षी** (सहायक प्रोफेसर इतिहास विभाग) सी.आर. किसान कॉलेज, जीन्द

भूगोल विभाग:

1. **डॉ० पी.के शर्मा,** पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, भूगोल विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर
2. **रश्मि गोयल** (भूगोल विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
3. **डॉ० भूपेन्द्र सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राजकीय पी.जी. कॉलेज, हिसार
4. **डॉ० विनीत बाला,** सहायक प्रो. भूगोल विभाग, वैश्य पी.जी. कॉलेज, रोहतक
5. **डॉ0 प्रदीप कुमार शर्मा**, एसोसिएट प्रोफेसर, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

शिक्षा विभाग:

1. **डॉ० उमेन्द्र मलिक,** एसिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.द.वि. , रोहतक
2. **डॉ० संदीप कुमार,** सहायक प्रो० शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्लीएसोसिएट
3. **डॉ० तपन कुमार बसन्तिया,** एसोसिएट प्रोफेस, सैंटर फॉर एजुकेशन, सैंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ विहार, गया कैम्या, विनोभा नगर, वार्ड नं. **29**, **Behind ANMCH** मगध कालोनी, गया–**823001**बिहार**Mob.: 09435724964**
4. **डॉ० (प्रो०) अनामिका शर्मा,** प्राचार्या, एम.आर. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, फरीदाबाद
5. **डॉ० मनोज रानी,** सहायक प्रोफेसर (अंग्रेजी) एम.एल.आर.एस. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, चरखी दादरी (भिवानी)
6. **डॉ० अनीता ढाका,** (प्राचार्या, आर.जी.सी.ई. कॉलेज, ग्रेटर, नोएडा।)
7. **डॉ० ममता देवी,** (सहा. प्रो. बी.आई.एम.टी. कॉलेज कमालपुर गढ़ रोड़, मेरठ)

गृह विज्ञान

1. **डॉ0 श्रीमती पंकज शर्मा,** (सहायक प्राफेसर), गृह विज्ञान (प्रसार शिक्षा) राजकिय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रोहतक

शारीरिक शिक्षा विभाग:

1. **डॉ० सरिता चौधरी,** सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग, आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला कैंट, हरियाणा
2. **डॉ० वरुण मलिक,** सहायक प्रोफेसर, म.द.वि., रोहतक
3. **डॉ० सुनील डबास,** (पद्मश्री व द्रोणाचार्य अवार्ड) HOD in physical education"DGC Gurugram

समाज शास्त्र विभाग:

1. **प्रवीण कुमार** (समाजशास्त्र विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० कमलेश भारद्वाज,** समाज शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद

मनोविज्ञान विभाग:

1. **डॉ० चन्द्रशेखर,** सहायक प्रोफेसर साईक्लोजी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू
2. **डॉ. रश्मि रावत,** (मनोविज्ञान विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, देहरादून)
3. **अनिल कुमार लाल** (प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)

अर्थशास्त्र विभाग:

1. **डॉ० जसवीर सिंह** (पूर्व रीडर अर्थशास्त्र विभाग, किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मवाना)
2. **डॉ० सुशील कुमार** (एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद, उ०प्र०)
3. **डॉ० अखिलेश मिश्रा** (प्राध्यापक, अर्थशास्त्र–विभाग, एस.डी.पी.जी. कॉलेज, गाजियाबाद)
4. **डॉ० सत्यवीर सिंह सैनी,** एसो०प्रो० (अर्थ०वि०, गो०ग० सनातन धर्म पी०जी० कॉलेज, पलवल)

विधि विभाग:

1. **डॉ० नरेश कुमार,** (प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
2. **डॉ० विमल जोशी,** (प्रोफेसर, विधि–विभाग भगत फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर, सोनीपत)
3. **डॉ० जसवन्त सैनी,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
4. **डॉ० वेदपाल देशवाल,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
5. **डॉ. अशोक कुमार शर्मा,** एसो. प्रोफेसर, विधि विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर
6. **डॉ. राजेश हुड्डा,** सहायक प्रो०, विधि विभाग, बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां, सोनीपत
7. **डॉ० सत्यपाल सिंह,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
8. **डॉ० सोनू,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
9. **डॉ० अर्चना वशिष्ठ,** (सहायक प्रोफेसर, के०आर० मंगलम विश्वविद्यालय, सोहना रोड, गुरुग्राम)
10. **डॉ० आनन्द सिंह देशवाल,** (सहायक प्रोफेसर, सी०आर० कॉलेज ऑफ लॉ रोहतक)
11. **अनसुईया यादव,** (सहायक प्रोफेसर, विधि विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा)

गणित विभाग:

1. **डॉ० विनोद कुमार,** रीडर एवं अध्यक्ष गणित विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर
2. **डॉ० विरेश शर्मा,** लेक्चरर्रार गणित विभाग, एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ
3. **डॉ0 सलौनी श्रीवास्तव** सहायक प्रो0, गणित विभाग आर0 बी0 एस0 कालेज आगरा
4. **Dr. Dhrub Kumar Singh.**HOD, Department of Mathematics, YBN University, Rajaulatu, Namkum, Ranchi, Jharkhand, India. Pin-834010
5. **डॉ रश्मि मिश्रा** प्रोफेसर (एप्लाइड साइंस एंड हमनीटीएस), मैथमेटिक्स गनेशी लाल बजाज इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट ग्रेटर नॉएडा

कम्प्यूटर विभाग:

1. **प्रो० एस.एस. भाटिया** (अध्यक्ष, स्कूल ऑफ मैथमेटिक्स एण्ड कम्प्यूटर एप्लीकेशन, थापर विवि, पटियाला)
2. **सर्वजीत सिंह भाटिया** (प्रवक्ता, कम्प्यूटर साईंस, खालसा कॉलेज, पटियाला)
3. **डॉ० बालकिशन सिंहल,** सहायक प्रोफेसर, कम्पयूटर विभाग, म०द०विश्वविद्यालय, रोहतक

संस्कृत विभाग:

1. **डॉ० रामकरण भारद्वाज** पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद (गाजियाबाद)
2. **डॉ० सुनीता सैनी,**एसो० प्रोफेसर संस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. **डॉ० सुमन,** (सहायक प्रोफेसर, संस्कृत–विभाग, आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी ।)
4. **डॉ0 दिनेश मणि त्रिपाठी {प्रधानाचार्य}** एल ०पी ०के ०इंटर कॉलेज सरदार नगर बसडिला {गोरखपुर}
5. **डॉ0 दानपति तिवारी,** प्रोफेसर, एवं अध्यक्ष, महात्मा गांधी काशी विद्यापिठ, वाराणसी, उत्तर–प्रदेश
6. **डॉ0 दिनेशचन्द्र शुक्ल,** सहायक प्रोफेसर, महात्मा गांधी काशी विद्यापिठ, वाराणसी, उत्तर–प्रदेश

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग:

1. **डॉ० आर०एस० सिवाच,** प्रो० एवं अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, म०द०वि०, रोहतक

दृश्यकला विभाग:

1. **डॉ० सुषमा सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, दृश्यकला विभाग, म०द० विश्वविद्यालय, रोहतक

पंजाबी विभाग:

1. **डॉ० सिमरजीत कौर,** सहायक प्रो० (पंजाबी), ईश्वरजोत डिग्री कालेज, पेहवा (कुरूक्षेत्र)

संगीत विभाग:

1. **डॉ० संध्या रानी,** अध्यक्षा, संगीत विभाग, यूआरएलए, राजकीय पीजी कॉलेज, बरेली
2. **डॉ० हुकमचन्द,** एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा डीन, संगीत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा
3. **डॉ. अनीता शर्मा,** (संगीत–गायन प्राध्यापिका, जयराम महिला महाविद्यालय लोहारमाजरा (कुरुक्षेत्र)
4. **डॉ. वन्दना जोशी,** (सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग, एस.एस.जे. परिसर, अल्मोड़ा)

पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग:

1. **डॉ० सरोजनी नंदल,** प्रोफेसर (पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग) महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

उर्दू विभाग:

1. **डॉ० मो. नूरूल हक,** (एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, उर्दू, बरेली कॉलेज, बरेली)

कृषि विभाग

1. **डॉ0 गोविन्द प्रकाश आचार्य** सह–आचार्य (कृषि–प्रसार) श्री गोविन्द गुरू राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा राजस्थान मो. 9460545836

दर्शनशास्त्र

1. Prof, Dr, Asha Devi department of Philosophy Govt P G college kotdwar pauri Garhwal Uttarakhand 246149

LIFE MEMBERS OF INDIAN JOURNAL OF SOCIAL CONCERNS

1. **Dr. Praveen Kumar Verma**
   Associate Professor, Hindi Department, GGD Sanatan Dharam Post Graduate College, Palwal.

2. **Smt. Veena Pandey (Shukla)**
   Hindi Teacher, Jawahar Navodya Vidyalya, Dhoom Dadri, Distt. Gautambudhnagar - 203207 (U.P.)

3. **Dr. Suman**
   H.No. 1001, Radha Swami Colony, Rohtak Road, Bhiwani (Haryana)

4. **Dr. Subhash Chand Saini** (Hindi Department, Dyal Singh College, Karnal, Haryana

5. **Dr. Vimla Devi,** Associat Professor (History), Swami Vivekanand Govt. (PG) College, Lohaghat, Champawat (Uttrakhand)

6. **Princepal,** Associat Professor (Hindi), Aggarwal College, Ballabhgarh (Haryana)

7. **Dr. Dinesh Mani Tirpathi (Principal)** L-P=-K Inter College sardar Nagar, Basdila Gorkhpur

8. **Dr. Govind Prakash Acharya** F--63, Chandra Vardai Nagar, UIT, Colony, Shaheed Bhagat Singh Marg, Opposite Ramganj Thana, Taragarh Road, Ajmer (Rajasthan) Pincode--305003.

9. **Amardeep Singh** Mcf C -21, Near Deep Vatika, Bhagat Singh Colony, Ballabgarh121004, Mob. 9873814066

An update on UGC - List Journals

The UGC List of Journals is a dynamic list which is revised periodically. Initially the list contained only journals included in Scopus, Web of Science and Indian Citation Index. The list was expanded to include recommendations from the academic community. The UGC portal wasa opended twice in 2017 to universities to upload their recommendations based on filtering criteria available at https://www.ugc.ac.in/journallist/methodology.pdf. The UGC approved list of Journals is considered for recruitment, promotion and career advancement not only in universities and colloges but also other institutions of higher education in India. As such, it is the responsibillity of UGC to curate its list of approved journals and to ensure the it contains only high-quality journals.

To this end, the Standing Committee on Notification on Journals removed many poor quality/predatory/questionable journals from the list between 25th May 2017 and 19th Septemeber 2017. This is an ongoing process and since then the Committee has screened all the journals recommended by universities and also those listed in the ICI, which were re-evaluated and rescored on filtering criteria defined by the Standing Committee. Based on careful and analysis, 4,305 journals were removed from the current UGC-Approved list of Journals on 2nd May, 2018 because of poor quality/incorrect or insufficient information/false claims.

The Standing Committee reiterates that removal/non-inciusion of a journal does not necessarily indicate that it is of poor quality, but it may also be due to non-availability of information such as details of editorial board, indexing information, year of its commencement, frequency and regularity of its publication schedule, etc. It may be noted that a dedicated web site for journals is once of the primary criteria for inclusion of journals. The websites should provide full postal addresses, e-mail addresses of chief editor and editors, and at least some of these addresses ought to be verifiable official addresses. Some of the established journals recommended by universities that did not have didicated websites, or websites that have not been updated, might have bee dropped from the approved list as of now. However, they may be considered for re-inclusion once they fulfil these basic criteria and are re-recommended by universities.

The UGC's Standing Committee on Notification on Journals has also decided that the recommendation portal will be opened once every year for universites to recommend journals. However, from this year onwards, every recommendation submitted by the universities will be reviewed under the supervision of Standing Committee on Notification of Journals to ascertain that only good-quality journals, with correct publication details, are included in the UGC approved list.

The UGC would also like to clarity that 4,305 journals which have been removed on 2nd May, 2018 were UGC-approved journals till that date and, as such, articles published/accepted in them prior to 2nd May 2018 by applicants for recruitment/promotion may be considered and given points accordingly by universities.

The academic community will appreciate that in its endeavour to curate its list of approved journals, UGC will enrich it with high-quality, peer-reviewed journals. Such a dynamic list is to the benefit of all.

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ स.
1.	''झारखण्ड में कला सांस्कृतिक पर्यटन''	डॉ0 श्वेता षाहदेव	9–12
2.	गोंड जनजाति की जीवन शैली परमूल भौगोलिक परिवेश के प्रभाव का अध्ययनः एक सामाजिक–भौगोलिक विश्लेषण	संगीता धुर्वे	13–16
3.	अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियोंके बीच कैरियर प्राथमिकताओं की खोजः कारक, चुनौतियाँ और आकांक्षाएँ	संतोष यादव	17–21
4.	भगवानदास मोरवाल के शंकुतिका उपन्यास में शिक्षित स्त्री और समाज का दृष्टिकोण।	देवेन्द्र कुमार	22–24
5.	स्त्री विमर्श की चुनौतियां और मन्नू भंडारी की रचनाएं	किरण कुमारी	25–27
6.	मुक्तिबोध के साहित्य में प्रेम–तत्त्व	रेखा कुमारी	28–32
7.	प्रवासी हिन्दी कहानी की विकास यात्रा	हेमांगी साहु	33–35
8.	नामवर सिंह और उनका छायावाद	डॉ0 सीमा चौधरी	36–38
9.	आधुनिक संताली भाषा	शम्भुनाथ सोरेन	39–41
10.	स्त्रीत्ववाद की विभिन्न वैचारिक अवधारणाएँ	डॉ0 दीपक कुमारी	42–45
11.	संत नितानन्द की वाणी में दर्शन के आयाम	ओमपति, डॉ0 बाबूराम	46–48
12.	**ਨਿਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ: ਸਰਵੇਖਣ ਅਤੇ ਮੁਲਾਂਕਣ**	**ਨਵਜੋਤ ਕੌਰ (ਖੋਜਾਰਥਣ)**	49–50
13.	महाकवि कालिदास का स्त्री विमर्श	साक्षी द्विवेदी	51–54
14.	**ਨਿਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ**	**ਨਵਜੋਤ ਕੌਰ (ਖੋਜਾਰਥਣ)**	55–57
15.	भारत के बदलते आर्थिक परिदृश्य का विश्लेषण	डॉ0 बबली चंद्रा	58–61
16.	भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति	डॉ0 प्रिया सिंह	62–65
17.	मन्नू भंडारी की कहानियों में कामकाजी महिलाओं की स्थिति	रचना रश्मि	66–68
18.	समाज में व्याप्त कुरीतियाँ : लहणाा सिंह अत्री	बबली मोरवाल	69–70
19.	सरोज दहिया के साहित्य में नारी चित्रण	अनीता	71–73
20.	मन्नू भण्डारी की "मैं हार गई" कहानी में चित्रित राजनीतिक मूल्य	स्निग्ध सिंह	74–76
21.	पानीपत शहर में ठोस अपशिष्ट का निष्पादन	डॉ0 संदीप कुमार यादव, नीलम कुमारी	77–80
22.	बिहारी के काव्य में भाव और काव्य सौंदर्य का अनूठा संगम	ज्योति कुमारी	81–83
23.	रीतिकाल में बिहारी का श्रृंगार रस	डॉ0 श्याम मिश्रा	84–86
24.	हिंदी साहित्य में संत निश्चल दास और गुरु ब्रह्मानंद सरस्वती का योगदान	श्रीमती मनजीत	87–90
25.	गिजुभाई की बाल शिक्षा में निर्मितवाद	चित्रलेखा शर्मा	91–93
26.	राम जनम के हेतु अनेका	डॉ0 जंग बहादुर पाण्डेय	94–96
27.	सत्यमेव जयते	डॉ0 चंद्र मणि किशोर	97–97
28.	सचमुच तुम मर्यादा पुरुषोत्तम हो राम	डॉ0 श्रीमती तारा मणि पाण्डेय	98–99
29.	मानसिक मंदित बालकों की अभिभावकों की चुनौतियों का अध्ययन एंव हस्तक्षेपण कार्यक्रम द्वारा समाधान हेतू प्रयास	प्रियंका मल्होत्रा, डॉ. विष्णु शर्मा	100–103
30.	Impact of Ict on Students Academic Performance	Ms. Manju, Dr. Sunita Bishnoi	104–109
31.	Rajniti Ke Bheeshm Pitamah : Atal	Dr. Renuka Poddar	110–114
32.	Enhancing Teacher Education: Strategies for Effective Pedagogy and Professional Development	Dr. Reena Rai	115–118
33.	A Study of Women Empoerment And Economic Development In Haryana	Sarika Jain, Dr. Monika Narula	119–122
34.	(The Role of Advertising)	Neetu	123–125
35.	The Importance of Bharatiya Nyaya Sanhita 2023(ACT 45 OF 2023)W.E.F 01.07-2024 – THE INDIAN PANEL CODE (45 OF 1860) The bharatiya nagariksuraksha(second)sanhita,2023	Dr. Santosh Kumar Sharma	126–128
36.	Socio-Economic Dynamics of a slum in a City: A Study of kaithal, Haryana	Sushma, Dr. Deepa	129–132
37.	Lifestyle of Balmiki Community In Rohtak District	Dr. Satyaveer Yadav, Sangeeta	133–137

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ स.
38.	Accounting Treatment of Single Entry Systemor Incomplete Records	Ajay Kumar	138—140
39.	Adolescence-Challenges and Strategies for Success	Dr. Jai Parkash	141—144
40.	Train To Pakistan: A Study of Multiculturalism and A Tragic Tale of Partition	Dr. Narendra Singh	145—148
41.	A Literature Review upon the Land Use/Land Cover Mapping & Change Detection Analysis using Remote Sensing& GIS Techniques	Amit Singh, Prof (Dr.) Jai Prakash Yadav	149—151
42.	An analysis of Browning's contribution to the English lyric.	Sahil Patil	152—154
43.	Nutrition And Nostalgia: Investigating Millets'	Dr. Sunita Yadav	155—157
44.	William Henry Hudson as a Muse of Nature	Dr. Garima Shukla, Dr. Rajan Sharma	158—160
45.	A critical analysis of "The Man-Eater of Malgudi" as a picaresque novel by R.K. Narayan.	Sahil Patil	161—162
46.	Effects of Resilience on Depression	Dr. Arti Kumari	163—167
47.	System of Tax Code Observation.	Abhishek Kumar	168—171
48.	झारखण्ड में जनजातीय विद्रोह और आंदोलन	श्री राजेश कुमार सिंह	172—176

1

''झारखण्ड में कला सांस्कृतिक पर्यटन''

डॉ0 श्वेता शाहदेव

सारांश

पर्यटन सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन का उद्योग के रूप में विकसित होना अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ीकरण, रोजगार संभावनाओं, विदेशी मुद्रा, प्राप्ति के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। झारखण्ड में सांस्कृतिक पर्यटन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँ आयोजित होने वाले मेले महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, मेलों में यहाँ की संस्कृति, पहनावे, व्यंजन, कला, नृत्य तथा मान्यताओं का समावेश मिलता है। मुख्यरूप से आयोजित मेले में यहाँ श्रावणी मेला, मुड़मा मेला, माघी मेला, रथ मेला, हिजला मेला, हरिणा मेला, मण्डा मेला प्रमुख है। लोक नृत्य में छऊ, पाइका, डोमकच, झुमईर, लहसुआ, फगुआ इत्यादि प्रसिद्ध है। झारखण्ड में सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए यहाँ के मेलों, नृत्य, गीत, खान–पान, उत्सव, त्योहारों, जीवन शैली को विश्व के समकक्ष रखने की आवश्यकता है। सरकार के द्वारा भी पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभायी गयी है।

प्रमुख शब्द :– सांस्कृतिक, पर्यटन, मेला, नृत्य, हस्तशिल्प, जनजातीय आयोजन सामाजिक।

परिचय :– सांस्कृतिक पर्यटन राज्य के भौगोलिक क्षेत्रों में लोगों की जीवनशैली, विरासत, इतिहास, उनकी कला, वास्तुकला, धर्म तथा अन्य तत्व का योग हैं जो कि जीवन यापन के तरीकों को आकृति प्रदान करती है। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार ''सांस्कृतिक उद्देश्यों में अध्ययन पर्यटन, कलात्मक पर्यटन और सांस्कृतिक यात्रा, त्योहारों, या अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों की यात्रा स्मारकों के दौरे, प्रकृति की खोज, लोकगीत, कला और तीर्थयात्रा, सांस्कृतिक अध्ययन से संबंधित यात्रा की गतिविधियों को समाहित करता है''।[1] आमतौर पर पर्यटन को सैर–सपाटे की गतिविधियों तक ही सीमित करने की भूल हम कर बैठते हैं। यह सही है कि पर्यटन सैर सपाटे से सम्बद्ध उद्योग है, परन्तु इतना ही बड़ा सच यह भी है कि इसकी सीमाओं को भ्रमण तक ही बाँधा नहीं जा सकता है। आज सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, पर्यावरण आदि सभी स्तरों पर पर्यटन का प्रभाव परिलक्षित है।[2] हाल के वर्षों में मार्केटिंग के नए तरिकों जैसे ग्रामीण पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, मेडिकल, पर्यटन, स्पोर्ट्स टूरिज्म, हनीमून पैकेजटूर, फैमिली पैकेज टूर आदि के नाम से भी पर्यटकों को आकर्षित किया जाने लगा है। इस क्रम में जेब पर बहुत भार नहीं पड़ने वाले इकॉनोमिकल प्रकृति के टूर पैकेज ऑफर किये जाते हैं जिनमें कम खर्चे में आरामदायक एवं तनावरहित तरीके से ज्यादा–से–ज्यादा जगहों पर सैर सपाटा करने का प्रावधान होता है। यहि नहीं बड़े ग्रुप में जाने वालों को अधिक डिस्काउंट का भी ऑफर दिया जाता है।[3]

झारखण्ड सांस्कृतिक पर्यटन के तौर पर महत्त्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त कर सकती है पर्यटन के विभिन्न स्वरूपों में सांस्कृतिक पर्यटन एक है जिसमें मूर्त अमूर्त संस्कृति का योग होता है आज जहाँ मेले विलुप्त होते जा रहे है। वही झारखण्ड में आज भी बड़े हर्षों उल्लास से मेलों का आयोजन भव्य तरिकों से होते है। यहाँ मुख्य रूप से श्रावणी मेला, मुड़मा मेला, माघी मेला, रथ मेला, हिजला मेला, मण्डा मेला, हरिणा मेला सुर्यकुण्ड मेला, रामरेखा धाम मेला, लुगू बुरू महोत्सव, बंशीधर महोत्सव, छऊ महोत्सव आयोजित किये जाते है। मेलों में यहाँ की संस्कृति, पहनावे, व्यंजन, नृत्य तथा स्थानीय मान्यताओं का समावेश मिलता है। यहाँ मुख्य रूप से निम्न मेलों का आयोजन होता हैं –

श्रावणी मेला– देश में 12 अतिविशिष्ट ज्योतिर्लिंगों में से एक बैद्यनाथ धाम ज्योतिर्लिंग है, जो झारखण्ड के देवघर में बाबाधाम नाम से विश्व विख्यात है। यहाँ वर्षों भर देश–विदेशों से देशी–विदेशी पयटक आते रहते हैं, परन्तु श्रावण मास के दौरान यहाँ पर्यटकों का सैलाब उमड़ता है। यहाँ श्रावणी मास में श्रावणी मेला का आयोजन होता है, जहाँ धार्मिक पर्यटक पूर्ण श्रद्धा विश्वास के साथ बाबा के दर्शन को आते है। कई पर्यटक सुल्तानगंज से 105 किमी की दूरी तय कर बाबा को जल अर्पण करते है। यह विश्व का सबसे लम्बा धार्मिक मेला है इस अवधि के दौरान 30 से 40 लाख तीर्थयात्री यात्रा करते हैं।

मुड़मा मेला (मांडर)– कार्तिक प्रतिपदा के दिन राँची जिला मुख्यालय से 35 किमी0 दूर माण्डर प्रखण्ड में मुडमा जतरा मेला लगता है। यह झारखण्ड का ऐतिहासिक मेला है, जतरा का इतिहास 600 से 700 ईस्वी सन् का बताया जाता है। मान्यता है कि रोहतासगढ़ से लौटने के बाद इसी स्थल पर उराँव जनजाति और मुण्डा जनजाति का मिलन हुआ था। 40 पड़हा के लोग अपने–अपने पड़हा निशान काठ के हाथी, घोड़े, मगर, बाघ, चीता, मछली, झंडे व रपा–चंपा के साथ नाचते–गाते जतरा स्थल पहुँचते है।[4]

माघी मेला (साहेबगंज)–झारखण्ड की गंगा नदी के तट और दक्षिण में पहाड़ियों के बीच बसा राजमहल में माघ पूर्णिमा के दिन गंगा नदी पर माघी पूर्णिमा मेला लगता है। इसका धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व है। माना जाता है कि इस मेला का इतिहास सात सौ वर्ष से भी पुराना है। आदविासी समुदाय का यह सबसे बड़ा महाकुंभ है। इस तिथि को सनातन धर्म मानने वाले सफाहोड़ आदिवासी अपने–अपने धर्म गुरूओं के साथ गंगा स्नान कर पूजा अर्चना करते है। धर्म गुरूओं का मानना है कि वे लोग भगवान श्रीराम के अनुयायी है। इसलिए कुछ लोग तीर–घनुष से लैस होकर आते है।[5]

रथ मेला (राँची)– बड़कागढ़ जगन्नाथ मंदिर का रथयात्रा

अपनी एक अलग ही छवि का निर्माण करती है। जून–जुलाई में सम्पन्न होने वाली इस यात्रा में लाखों की संख्या में पर्यटकों का आगमन होता है। सैकड़ों स्टॉल लगते है, मांदर, ढोल, नगाड़ा, मछली जाल, मिठाईया, स्थानीय खाद्य पदार्थ, लोहे के समान, तलवार, कटार, लकड़ी के हस्तनिर्मित वस्तुएँ, पारम्परिक हथियार जैसे तीर–धनुष प्रदशनीय तथा झांकिया लगाई जाती है। बड़कागढ़ के महाराजा ठाकुर ऐनीनाथ शाहदेव द्वारा 25 दिसम्बर 1691 ई0 में इस श्री मंदिर का निर्माण पूर्ण कराया था। यह मंदिर उत्कल पूरी के भगवान जगन्नाथ मंदिर की अनुकृति है।

राजकीय जनजातीय हिजला मेला–झारखण्ड का ऐतिहासिक जनजातीय हिजला मेला राज्य की उपराजधानी दुमका शहर के चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित मयूराक्षी नदी के तट पर और हिजला पहाड़ी के बीच लगता है। तीन फरवरी, 1890 को तत्कालीन अंग्रेज जिलाधिकारी जौन रॉबर्टस कास्टेयर्स के समय हिजला मेला की शुरूआत हुई। ऐसा माना जाता है कि स्थानीय परम्परा, रीति–रिवाज और सामाजिक नियमन को समझने एवं स्थानीय लोगों से सीधा संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से इसकी शुरूआत की गई थी। वर्ष 2015 में इस मेले को राजकीय मेला का दर्जा प्रदान किया गया, जिसके बाद यह मेला राजकीय जनजातीय हिजला मेला महोत्सव के नाम से जाना जाता है।[6]

कोल्हान का हिरणा मेला– हिरणा मेला कोल्हान का सबसे बडा और प्रसिद्ध मेला है। यह पोटका प्रखण्ड की हरिणा पंचायत में लगता है। इसमें झारखण्ड के साथ–साथ बिहार, बंगाल, ओड़िसा सहित अन्य राज्यों से भी पर्यटक भोले शंकर के शिवलिंग की पूजा–अर्चना हेतु पहचते है। यहाँ के स्थानीय लोग इसे मुक्तेश्वर धाम के नाम से जानते हैं।

लोकपर्व मण्डा मेला– पारम्परिक लोकपर्व के रूप में मण्डा मेला का आयोजन होता है, यह पर्व अच्छी बारिश, खेती–बारी और समृद्धि के लिए मनाया जाता है, पर्व के दौरान भक्तों के द्वारा लगातार 9 दिनों तक उपवास रखा जाता है, तथा इसके पश्चात् अंगारों पर चल कर आराध्य भगवान भोले शंकर को प्रसन्न करते है। यह मेला राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में लगीती है तथा काफी संख्या में लोगों की भागीदारी होती है।

झारखण्ड के सांस्कृतिक पर्यटन में मेलों के साथ–साथ नृत्य तथा गीत भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, यह नृत्य फसलों के मौसम, सामाजिक समारोह, उत्सवों, त्योहारों में विशेष रूप से किये जाते है। मुख्य रूप से जनजातीय लोक नृत्यों में छऊ, पाइका, डोमकच, झुमइर, लहसुआ फगुआ इत्यादि प्रसिद्ध है। झारखण्ड के प्रमुख लोकगीत झांझइन, डइड़धरा, प्रातकली, अधरतिया, कजली, औंदी, अंगनई, झूमर इत्यादी है। झारखण्ड में हस्तशल्पि में मुख्य रूप से बांस की क्राफ्टिंग, पत्थर की नक्कासी, पिटकर पेटिंग, लकड़ी के शिल्प तथा आदिवासी आभूषण बनाये जाते है। अप्रतिम सौंदर्य से युक्त झारखण्ड में प्राकृतिक पर्यटन तथा मानवनिर्मित पर्यटन भी है।, उधान, मंदिर, प्राचीन कीले इत्यादि भी प्रमुख है। पर्यटन सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन का उद्योग के रूप में विकसित होना अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ीकरण, रोजगार संभावनाओं, विदेशी मुद्रा प्राप्ति के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह बड़ी संख्या में होटल उद्योग, यातायात खान–पान, मनोरंजन के साथ प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है। झारखण्ड धार्मिक अध्यात्मिक पर्यटन क्षेत्रों में सुसज्जित राज्य है। यहाँ वन पर्वतों से आच्छादित बेतला, नेतरहाट, निरंतर प्रवाहित नदियाँ, घने जंगल, मनमोहक घाटियाँ, हुँडरू, दशम, जोन्हा, जैसे मनमोहक झरने, धार्मिक पर्यटन स्थलों में देवघर ज्योतिर्लिंग, पारसनाथ, रजरप्पा, जगन्नाथपुर मंदिर, आंजन घाम, पहाड़ी मंदिर जैसे कई धार्मिक, अध्यात्मिक पर्यटन स्थल है, जो स्वतः ही पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते है।[7]झारखण्ड में सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए यहाँ के संस्कृतिक, मान्यताओं, रीति–रिवाज, नृत्य, गीत, रहन–सहन, उत्सव, त्योहार, जीवनशैली को विश्व के समझ रखने की आवश्यकता है। आज मानव विभिन्न अनुभवों को अपने मे समाहित कर लेना चाहता है। पर्यटन क्षेत्र ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा एक क्षेत्र की संस्कृति दूसरे क्षेत्र में अनुभवों के माध्यम से हस्तांतरित होती है, ये आर्थिक विकास के साथ सामाजिक विकास का भी माध्यम है।

पर्यटन के सांस्कृतिक कारण :–

- उत्सवों और त्योहारों को देखना तथा अपने राज्यों की परम्पराओं को उससे जोड़ना।
- सांस्कृतिक केन्द्रों, उत्खनन स्थलों, प्रसिद्ध स्थानों, मन्दिरों, भवनों मूर्तियों तथा कलाकृतियों को देखना, परम्परागत नृत्य, संगीत, मेलो आदि का आंनद प्राप्त करना।
- लोक परम्परागत नृत्य, संस्कृति और कला की ओर आकर्षित हो पर्यटन करना।
- धर्म प्रचारको की जन्मस्थली, स्मारक, केन्द्र, इत्यादि क्षेत्रों का दौरा करना।
- विभिन्न स्थलों में आयोजित महोत्सवों, मेलो, झाकियों को देखना।
- क्षेत्र विशेष के खान–पान, जीवन शैली, उत्सवों, रीति–रिवाजों को करीब से समझने के लिए यात्राएँ करना।
- रिर्सच, अध्ययन, प्रोजेक्ट टूर के तौर पर पर्यटन करना।

झारखण्ड के कला संस्कृति को बढ़ावा देने में सरकार की भूमिका–झारखण्ड पर्यटन विभाग के आँकडों के अनुसार सरकार के द्वारा झारखण्ड के कला तथा संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए निम्न कार्य किये गये हैं–

क्र दुमका जिला के मलूटी ग्राम स्थित मंदिरों के समूह (62 मंदिर) का संरक्षण कार्य का शुभारंभ माननीय प्रधान मंत्री जी के

करकमलों द्वारा 2 अक्टूबर, 2015, को किया गया। मंदिरों के संरक्षण कार्य प्रगति पर है।

क्र राँची स्थित आड्रे हॉउस के संरक्षण का कार्य कराया गया है। आड्रे हॉउस को आर्ट गैलरी के रूप में विकसित किया गया है, जिसमें कलाकारों को अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए बेहत्तर 'प्लेटफार्म' मिल रहा है।

क्र ऑड्रे हॉउस, राँची में अंतर्राष्ट्रीय वाटर कलर फेस्टिवल का आयोजन दिनांक 23–27 अगस्त, 2018 को किया गया जिसमें अंतर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय एवं स्थानीय चित्रकारों द्वारा भागीदारी की गई।

क्र 'जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा साहित्य में राष्ट्र एवं राष्ट्र प्रेम' विषयक दो दिवासीय साहित्यिक सेमिनार दिनांक 26–27 जून, 2018 का ऑड्रे हॉउस, राँची में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची के संयुक्त तत्वाधान में आयोजन किया गया।

क्र आड्रे हॉउस, राँची में दिनांक 05–14 अप्रैल 2018 को दृश्य कला कैप एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें राज्य के चित्रकारों एवं मूर्तिकारों द्वारा भागीदारी की गई।

क्र राज्य स्थापना दिवस पखवाड़ा में सभी जिलों में नृत्य, गायन–वादन, नाटक विधा में सांस्कृतिक प्रतियोगिता का आयोजन कर राज्य स्तर पर जिला स्तरीय सफल कलादलों में मध्य प्रतियोगिता कराकर विजेता दलों को पुरस्कृत किया जा रहा है।

क्र राज्य के विभिन्न कार्यक्रम में अंतराज्कीय दलों की प्रस्तुतीकरण कराई जाती है साथ ही विभिन्न अंतराज्कीय महोत्सवों/कार्यक्रमों मे राज्य के कला संस्कृति के प्रचार प्रसार हेतु राज्य के पारम्परिक लोक कला की प्रस्तुति कराई जाती है।

क्र राज्य के कला, प्रेमियों के लिए राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों की प्रस्तुतियों का आयोजन किया गया है।

क्र पुरातात्विक विषयों पर संगोष्ठियों का आयोजन किया गया है।

क्र एक भारत श्रेष्ठ भारत के अन्तर्गत निम्न महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किये गये–

- जनवरी 2017 में लोकोत्सव के अवसर पर गोवा में झारखण्ड के लोक सांस्कृतिक कलादलों की प्रस्तुति।
- झारखण्ड आर्ट एवं फिल्म फेस्टिवल दिनांक–25.05.2017 से 28.05.2017 गोवा में झारखण्ड के बारह फिल्मों, पेंटिंग फोटोग्राफी कला संस्कृति की प्रदर्शनी।

सरायकेला छउ नृत्य का झारखण्ड के गुरू एवं प्रशिक्षकों द्वारा गोवा के कलाकारों को नृत्य, नृत्य से संबंधित वाद्य यंत्र एवं मुखैटा निर्माण हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन।

झारखण्ड में पर्यटन का क्षेत्र काफी व्यापक है। आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, जैविक, पर्यावरणीय परिपेक्ष्य का समुह है। जिसमें पर्यटकों को एक स्थान विशेष के दौरे के दौरान इन सभी परिपेक्ष्य की अनुभुति होती है। सांस्कृतिक पर्यटन में मूर्त और अमूर्त दोनों प्रकार की संस्कृति का अनुभव होता है, समाज की विशिष्ट सामग्रीयों, बौद्धिक, आध्यात्मिक और भावनात्मक कला और वास्तुकला, विरासत, साहित्य, संगीत, हस्तशिल्प तथा जीवनशैली इत्यादि का व्यापार सांस्कृतिक पर्यटन में होता है। सांस्कृतिक पर्यटन के थीम के अनुरूप पर्यटन की ब्रांडिंग, प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए। विशेष मेलों, त्योहारों उत्सवों में बड़े कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। पर्यटन क्षेत्रों में सुगम यात्रा के लिए परिवहन, आवास, भोजन, सुरक्षा, मनोरंजन, स्वच्छता की उपलब्धता पर ध्यान देने की आवश्यकता है। सरकार के द्वारा पर्यटन क्षेत्र के विकास, सौंदर्यकरण पर काफी योजनाएँ नीतियाँ भी बनाई जाती रही है और क्षेत्रों का विकास भी किया गया है। परन्तु ये भी सोचनीय है कि क्या यह उत्तरदायित्व केवल सरकार की है या स्थानीय नागरिकों का भी अपने क्षेत्र के प्रति दायित्व है। किसी भी क्षेत्र का सम्पूर्ण विकास वहाँ के नागरिक तथा सरकार के परस्पर सहभागिता से ही संभव है।

निष्कर्ष :–झारखण्ड में सांस्कृतिक पर्यटन के महत्व को देखते हुए इसे उद्योग का रूप देने में ध्यान केन्द्रीत किया जा रहा है। सरकार द्वारा पर्यटन विकास की योजना बनाई जा रही है जिससे राज्य में वृहद मात्रा में रोजगार उपलब्ध कराया जा सके। यहाँ की संस्कृति जैसे मेलो, त्याहरों, नृत्य, संगीत, हस्तशिल्प, जीवन शैली, मान्यताओं, उत्सवों को वैश्विक स्तर पर पहचान प्रदान किया जा सके। झारखण्ड की संस्कृतिक पर्यटन, पर्यटन क्षेत्र के लिए प्राण वायु के समान है, जो पर्यटन को विश्व स्तर तक पहचान दिला सकती है।

संदर्भ सूची :–

1. सांस्कृतिक पर्यटनभ्पेवनतण्बवउ
2. राजेश कुमार व्यास, भारत में पर्यटन, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–77
3. अशोक सिंह, पर्यटन उद्योग, देशबंधु, डॉट कॉम
4. जोहार झारखण्ड, प्रकृति का छिपा गहना, अंक तृतीय, अक्टूबर–दिसम्बर 2019, पृष्ठ संख्या–6
5. उपरोक्त पृष्ठ संख्या–7
6. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या–11
7. श्वेता शाहदेव, झारखण्ड में पर्यटन का आर्थिक प्रभाव, ISDR,ISSN 0975-0142 Peer Reviwedl Journal, JSD

डॉ0 श्वेता शाहदेव
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग,
महिला महाविद्यालय, बरही, लोहरदगा।

पत्र व्यवहार–श्वेता शाहदेव,
जगन्नाथपूर, बड़कागढ़,
धुर्वा, रांची, झारखण्ड
पिन
कोड–834004
मो०–8709990557

2

गोंड जनजाति की जीवन शैली परमूल भौगोलिक परिवेश के प्रभाव का अध्ययनः एक सामाजिक–भौगोलिक विश्लेषण

संगीता धुर्वे

सारांश

यह अध्ययन सामाजिक–भौगोलिक विश्लेषण के माध्यम से गोंड जनजाति की जीवनशैली पर मूल भौगोलिक परिवेश के प्रभाव की जांच करता है। गोंड जनजाति, मुख्य रूप से भारत के मध्य और पूर्वी क्षेत्रों में निवास करती है, अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक प्रथाओं, सामाजिक–आर्थिक पैटर्न और पारंपरिक आजीविका रणनीतियों के लिए जानी जाती है। हालाँकि, यह समझने के लिए बहुत कम शोध किया गया है कि मूल भौगोलिक परिवेश, जिसमें इलाके, जलवायु, प्राकृतिक संसाधन और भूमि उपयोग पैटर्न जैसे कारक शामिल हैं, गोंड जीवन के विभिन्न पहलुओं को कैसे प्रभावित करते हैं।

गुणात्मक और मात्रात्मक तरीकों के संयोजन पर आधारित, यह अध्ययन मूल भौगोलिक परिवेश और गोंड जनजाति की जीवनशैली के प्रमुख पहलुओं के बीच संबंधों की जांच करता है, जिसमें निपटान पैटर्न, आर्थिक गतिविधियां, सांस्कृतिक प्रथाएं और सामाजिक संगठन शामिल हैं। क्षेत्र सर्वेक्षणों, समुदाय के सदस्यों के साथ साक्षात्कार और माध्यमिक डेटा के विश्लेषण के माध्यम से, अध्ययन यह स्पष्ट करना चाहता है कि जंगलों से निकटता, जल स्रोतों की उपलब्धता और कृषि क्षमता जैसे कारक गोंड आजीविका और सामाजिक गतिशीलता को कैसे आकार देते हैं।

इस अध्ययन के निष्कर्षों से भूगोल और संस्कृति के बीच जटिल संबंधों की गहरी समझ में योगदान मिलने की उम्मीद है, जिससे पर्यावरणीय परिस्थितियाँ मानव व्यवहार, सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक परंपराओं को प्रभावित करने के तरीकों पर प्रकाश डाल सकेंगी। इसके अलावा, अध्ययन का उद्देश्य विकास हस्तक्षेपों और नीतियों को सूचित करना है जो गोंड जनजाति के अद्वितीय सामाजिक–भौगोलिक संदर्भ के प्रति संवेदनशील हैं, सतत विकास को बढ़ावा देते हैं और क्षेत्र में गोंड समुदायों की भलाई को बढ़ाते हैं।

मुख्य शब्द रू मूल भौगोलिक परिवेश, गोंड जनजाति, जीवन शैली, सामाजिक–भौगोलिक विश्लेषण, सांस्कृतिक प्रथाएं, पारंपरिक आजीविका रणनीतियाँ

परिचय :

भारत के सबसे बड़े स्वदेशी समुदायों में से एक गोंड जनजाति की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत इसके भौगोलिक वातावरण के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। इस अध्ययन का उद्देश्य बुनियादी भौगोलिक पर्यावरण और गोंड जनजाति की जीवनशैली के बीच जटिल संबंधों का पता लगाना है। गोंड जनजाति द्वारा निवास किए गए क्षेत्रों की भौगोलिक विशेषताएं, जिनमें जंगल, पहाड़, नदियाँ और मैदान शामिल हैं, उनके दैनिक जीवन, सामाजिक–आर्थिक गतिविधियों, सांस्कृतिक प्रथाओं और विश्वास प्रणालियों के विभिन्न पहलुओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

गोंड जनजाति की जीवनशैली पर भौगोलिक पर्यावरण के प्रभाव की गहराई से जांच करके, यह अध्ययन यह उजागर करना चाहता है कि स्थलाकृति, जलवायु, प्राकृतिक संसाधन और पारिस्थितिक स्थिति जैसे कारक उनके निपटान पैटर्न, आजीविका रणनीतियों, कृषि प्रथाओं, आहार संबंधी आदतों को कैसे प्रभावित करते हैं। पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ, और सामाजिक संगठन। इसके अतिरिक्त, इसका उद्देश्य उन तरीकों का विश्लेषण करना है जिनसे गोंड जनजाति अपने पर्यावरण के साथ बातचीत करती है और उसे अपनाती है, साथ ही पर्यावरणीय गिरावट, भूमि अतिक्रमण और संसाधनों की कमी के संदर्भ में उनके सामने आने वाली चुनौतियों का भी विश्लेषण करना है।

भूगोल, मानव विज्ञान, समाजशास्त्र, पारिस्थितिकी और स्वदेशी अध्ययनों से अंतर्दृष्टि पर आधारित एक बहु–विषयक दृष्टिकोण के माध्यम से, यह अध्ययन गोंड जनजाति और उनके भौगोलिक पर्यावरण के बीच जटिल गतिशीलता की समग्र समझ प्रदान करने का प्रयास करता है। इन गतिशीलता पर प्रकाश डालकर, यह गोंड जनजाति और दुनिया भर में समान चुनौतियों का सामना करने वाले अन्य स्वदेशी समुदायों के बीच सतत विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रयासों में योगदान देना चाहता है।

गोंड जनजाति की जीवनशैलीः

भारत के सबसे बड़े स्वदेशी समुदायों में से एक, गोंड जनजाति की जीवनशैली उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध में गहराई से निहित है। यहाँ गोंड जनजाति की जीवनशैली के कुछ प्रमुख पहलू हैंः

पारंपरिक व्यवसायः ऐतिहासिक रूप से, गोंड जनजाति मुख्य रूप से जीविका के लिए कृषि, वन–आधारित आजीविका और पारंपरिक शिल्प पर निर्भर रही है। चावल, बाजरा और दालों जैसी फसलों की खेती सहित कृषि, उनकी आजीविका का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनी हुई है।

वनों पर निर्भरतारूगोंड जनजाति का जंगलों से गहरा संबंध है, जो उन्हें भोजन, औषधि, लकड़ी और जलाऊ लकड़ी जैसे आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं। वे स्थानांतरित खेती (जिसे "पोडु" या "झुम" के नाम से जाना जाता है) का अभ्यास करते हैं और निर्वाह के लिए विभिन्न प्रकार के वन उत्पाद इकट्ठा करते हैं।

सामुदायिक जीवनः गोंड जनजाति परंपरागत रूप से एकजुट समुदायों में रहती है, अक्सर ग्रामीण इलाकों या जंगली

इलाकों में। उनकी बस्तियों में आम तौर पर मिट्टी, घास–फूस और बांस जैसी स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों से बने घरों के समूह होते हैं।

सांस्कृतिक प्रथाएँः गोंड जनजाति के पास जीवंत संगीत, नृत्य, लोकगीत और मौखिक परंपराओं की विशेषता वाली एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। वे विभिन्न त्यौहार और अनुष्ठान मनाते हैं जो उनकी विश्वास प्रणाली, आध्यात्मिकता और पैतृक रीति–रिवाजों में गहराई से निहित हैं।

कला और शिल्पःगोंड जनजाति अपने विशिष्ट कला रूपों के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें पेंटिंग, मिट्टी के बर्तन बनाना, टोकरी बनाना और बुनाई शामिल है। जटिल पैटर्न, जीवंत रंगों और प्रकृति और पौराणिक कथाओं के चित्रण की विशेषता वाली गोंड कला ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त की है।

सामाजिक संरचनाः गोंड जनजाति में पारंपरिक रूप से एक पदानुक्रमित सामाजिक संरचना होती है, जिसमें गाँव के बुजुर्ग और समुदाय के नेता निर्णय लेने और विवाद समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समुदाय के भीतर सामाजिक एकजुटता और आपसी सहयोग को महत्व दिया जाता है।

चुनौतियाँ और अनुकूलनः कई स्वदेशी समुदायों की तरह, गोंड जनजाति को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें भूमि अलगाव, वनों की कटाई, पारंपरिक ज्ञान की हानि और शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल जैसी बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच की कमी शामिल है। हालाँकि, उन्होंने विकास और सशक्तिकरण के अवसरों को अपनाते हुए अपनी सांस्कृतिक पहचान और जीवन शैली को संरक्षित करने की कोशिश करते हुए, इन चुनौतियों का सामना करने में लचीलापन और अनुकूलनशीलता भी दिखाई है।

कुल मिलाकर, गोंड जनजाति की जीवनशैली प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व, समुदाय और सांस्कृतिक गौरव की एक मजबूत भावना और आधुनिक दुनिया में अस्तित्व और मान्यता के लिए निरंतर संघर्ष को दर्शाती है।

गोंड जनजाति का मूल भौगोलिक परिवेशः

गोंड जनजाति मुख्य रूप से भारत के मध्य और पूर्वी क्षेत्रों में निवास करती है, जहाँ का भौगोलिक वातावरण उनके जीवन के तरीके को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गोंड जनजाति द्वारा निवास किए गए क्षेत्रों के बुनियादी भौगोलिक वातावरण की कुछ प्रमुख विशेषताएं यहां दी गई हैंः

वन क्षेत्रःगोंड जनजाति मुख्य रूप से घने वनस्पतियों, विविध वनस्पतियों और प्रचुर वन्य जीवन की विशेषता वाले वन क्षेत्रों में निवास करती है। वन उन्हें भोजन, औषधि, लकड़ी और गैर–लकड़ी वन उत्पाद जैसे आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं, जो उनकी आजीविका का आधार बनते हैं।

पहाड़ी भू–भागः गोंड जनजाति के निवास वाले कई क्षेत्रों की विशेषता पर्वतीय भू–भाग है, जिसमें घुमावदार पहाड़ियाँ, पठार और घाटियाँ हैं। ये भौगोलिक विशेषताएं उनके निपटान पैटर्न, कृषि प्रथाओं और गतिशीलता को प्रभावित करती हैं, साथ ही प्राकृतिक बाधाएं और रक्षात्मक स्थिति भी प्रदान करती हैं।

नदियाँ और जल निकायरूगोंड जनजाति द्वारा बसाए गए क्षेत्र अक्सर नदियों, झरनों और जल निकायों से घिरे होते हैं, जो उनके दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नदियाँ पीने, सिंचाई, मछली पकड़ने और परिवहन के लिए पानी उपलब्ध कराती हैं, जबकि जल निकाय आजीविका और मनोरंजन के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में काम करते हैं।

कृषि भूमिः जबकि वन अधिकांश परिदृश्य पर हावी हैं, वहाँ उपजाऊ मैदान और कृषि भूमि भी हैं जहाँ गोंड जनजाति खेती करती है। वे स्थानीय पर्यावरण के अनुकूल पारंपरिक खेती के तरीकों का उपयोग करके चावल, बाजरा, दालें और सब्जियां जैसी विभिन्न फसलों की खेती करते हैं।

जलवायुः गोंड जनजाति के निवास वाले क्षेत्रों की जलवायु भौगोलिक स्थिति और ऊंचाई के आधार पर भिन्न–भिन्न होती है। आम तौर पर, इन क्षेत्रों में उष्णकटिबंधीय जलवायु का अनुभव होता है जिसमें गर्म ग्रीष्मकाल, मानसूनी बारिश और हल्की सर्दियाँ होती हैं। जलवायु कृषि चक्रों, मौसमी गतिविधियों और सामाजिक–सांस्कृतिक प्रथाओं को प्रभावित करती है।

जैव विविधताः गोंड जनजाति का भौगोलिक वातावरण जैव विविधता से समृद्ध है, जिसमें जंगलों, पहाड़ियों और मैदानों में विभिन्न प्रकार के पौधे और पशु प्रजातियाँ पाई जाती हैं। यह जैव विविधता न केवल जनजाति की आजीविका को बनाए रखती है बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान, आध्यात्मिक मान्यताओं और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों में भी योगदान देती है।

प्राकृतिक संसाधनः भौगोलिक वातावरण गोंड जनजाति को खनिज, अयस्क, औषधीय पौधे और अन्य मूल्यवान वस्तुओं सहित प्राकृतिक संसाधनों का खजाना प्रदान करता है। इन संसाधनों का उपयोग व्यापार, वस्तु विनिमय और पारंपरिक शिल्प सहित विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

कुल मिलाकर, गोंड जनजाति का मूल भौगोलिक वातावरण इसकी विविध और गतिशील प्रकृति की विशेषता है, जो उनके सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक अस्तित्व के हर पहलू को प्रभावित करता है।

गोंड जनजाति के सामाजिक–भौगोलिक विश्लेषण से सामाजिक गतिशीलता और भौगोलिक कारकों के बीच जटिल अंतरसंबंध का पता चलता है जो उनके जीवन के तरीके को आकार देते हैं। यहां कुछ प्रमुख पहलू दिए गए हैंः

सामुदायिक संरचनाः गोंड जनजाति आम तौर पर पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना का पालन करती है, जिसमें समुदाय के भीतर पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग–अलग भूमिकाएँ होती हैं। सामाजिक मानदंड और रीति–रिवाज उनके

जीवन के विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित करते हैं, जिनमें विवाह, पारिवारिक संरचना और सामुदायिक बातचीत शामिल हैं।

निपटान पैटर्नःगोंड समुदाय अक्सरदूरदराज के जंगली इलाकों या पहाड़ी क्षेत्रों में रहते हैं, जहां वे घनिष्ठ बस्तियां स्थापित करते हैं। इन क्षेत्रों का भौगोलिक अलगाव उनकी सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक प्रथाओं के संरक्षण में योगदान देता है।

आजीविका रणनीतियाँः भौगोलिक वातावरण गोंड जनजाति की आजीविका रणनीतियों को प्रभावित करता है, जो मुख्य रूप से कृषि, शिकार, संग्रहण और कारीगर शिल्प जैसी गतिविधियों में संलग्न हैं। जीविका के लिए वन संसाधनों पर उनकी निर्भरता पर्यावरण संरक्षण के महत्व को रेखांकित करती है।

सांस्कृतिक प्रथाएँः गोंड जनजाति की सांस्कृतिक प्रथाएँ, अनुष्ठान और त्यौहार उनके भौगोलिक परिवेश में गहराई से निहित हैं। प्रकृति पूजा, जीववादी विश्वास और प्राकृतिक तत्वों के प्रति श्रद्धा उनके आध्यात्मिक विश्वदृष्टि और सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग हैं।

संसाधनों तक पहुंचरू जल स्रोतों से निकटता, कृषि योग्य भूमि और वन संसाधनों जैसे भौगोलिक कारक गोंड जनजाति की आवश्यक संसाधनों तक पहुंच को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। सुदूर क्षेत्रों में सीमित बुनियादी ढाँचा और कनेक्टिविटीअक्सर शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और अन्य बुनियादी सेवाओं तक पहुँचने में चुनौतियाँ पैदा करती हैं।

पर्यावरणीय भेद्यताः भूमि से अपने मजबूत संबंध के बावजूद, गोंड जनजाति को वनों की कटाई, भूमि क्षरण और जैव विविधता की हानि जैसी पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जलवायु परिवर्तन और अस्थिर भूमि–उपयोग प्रथाओं ने उनकी भेद्यता को और बढ़ा दिया है, जिससे उनके पारंपरिक जीवन शैली को खतरा पैदा हो गया है।

एक सामाजिक–भौगोलिक विश्लेषण गोंड जनजाति और उनके पर्यावरण के बीच जटिल संबंधों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो सतत विकास पहल की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है जो उनकी सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करता है, सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देता है और पर्यावरण संरक्षण को संबोधित करता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः, गोंड जनजाति की जीवनशैली पर भौगोलिक पर्यावरण के प्रभाव के अध्ययन से जनजाति और इसके प्राकृतिक परिवेश के बीच जटिल संबंध का पता चला है। सामाजिक–भौगोलिक विश्लेषण के माध्यम से, यह स्पष्ट है कि वन क्षेत्रों, पहाड़ी इलाकों, नदियों, कृषि भूमि और जैव विविधता की भौगोलिक विशेषताएं गोंड जनजाति के दैनिक जीवन, सामाजिक–आर्थिक गतिविधियों, सांस्कृतिक प्रथाओं के विभिन्न पहलुओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

गोंड जनजाति का जंगलों से घनिष्ठ संबंध, जो उन्हें जीविका और आजीविका के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं, पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ प्रबंधन प्रथाओं के महत्व को रेखांकित करते हैं। कृषि, वन–आधारित आजीविका और कारीगर शिल्प का उनका पारंपरिक व्यवसाय प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति उनके अनुकूलन और उपयोग को दर्शाता है।

इसके अलावा, अध्ययन गोंड जनजाति के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालता है, जिसमें पर्यावरणीय गिरावट, भूमि अतिक्रमण, संसाधनों की कमी और बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच की कमी शामिल है। ये चुनौतियाँ विकास के लिए समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं जो पर्यावरणीय स्थिरता, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण को प्राथमिकता देती हैं।

यह अध्ययन गोंड जनजाति जैसे स्वदेशी समुदायों और उनके भौगोलिक वातावरण के बीच जटिल गतिशीलता को समझने के महत्व को रेखांकित करता है। इन गतिशीलता पर प्रकाश डालकर, यह दुनिया भर के स्वदेशी समुदायों के लिए सतत विकास, सांस्कृतिक लचीलापन और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नीतियों और हस्तक्षेपों को सूचित करना चाहता है।

संदर्भ :

" Chandrakantha, K. M. (2014). Tribal Marriage System in India - A Sociological Analysis. International
" Journal of Research and Analytical Reviews, 1(4), 90-98.
" Chaubey, G., Kadian, A., Bala, S., &Rao, V. R. (2015). Genetic affinity of the Bhil, Koland Gond
" mentioned in epic Ramayana. PLoS ONE, 10(6). https://doi.org/10.1371/journal.pone.0127655
" Chhattisgarh, G. of. (2000). Human Development Report Chhattisgarh(Issue November). https://niti.gov.in/planningcommission.gov.in/docs/plans/stateplan/sdr_pdf/shdr_chh05.pdf
" Dharmendra, P. (2017). Socio Cultural Life of Gond Tribe of Chhattisgarh A Sociological Perspective with
" Special Reference of BastarDistrict[Swami

VivekananadUniversity].
" http://hdl.handle.net/10603/249198
" Dube, L. (2002). Anthropological Explorations in Gender: Intersecting Fields. Indian Journal of Gender
" Studies, 9(2), 285-290. https://doi.org/ https://doi.org/10.1177/097152150200900213
" Hazarika, M. R. (2016). Man And Culture Major Tribal People of India And Their Socio-Economic
" Characteristics. Human Geography (Theory), 1-2. " http://adpcollege.ac.in/online/attendence/classnotes/files/1588863009.pdf
" Joshi, K. C., &Tiple, A. D. (2010). Achanakmar-Amarkantak Biosphere Reserve . Biosphere Reserves
" Information Series (BRIS). Biosphere Reserve Information Series (BRIS), 2(1-2)(October), 2.
" https://doi.org/10.13140/2.1.1634.4649
" Kabeer, N., &Narain, N. (2019). Group rights and gender justice?: exploring tensions within the Gond
" community in India. International Inequalities Institute, August. https://www.lse.ac.uk/International-
" Inequalities/Assets/Documents/Working-Papers/LSE-III-Working-paper-33-Kabeer.pdf
" Koreti, S. (2016). Socio-Cultural History of the Gond Tribes of Middle India. International Journal of Social
" Science and Humanity, 6(4), 288-292. https://doi.org/10.7763/ijssh.2016.v6.659
" Lilhore, A. K. (2016). Discontents and its impacts among the Gond Tribes A study of Betul district Madhya
" Pradesh. Indira Gandhi National Open University IGNOU.
" Roy, M. (2021). Gond tribes of India(Issue November 2020). "
https://www.researchgate.net/publication/345502967_Gond_tribes_of_India
" Sahoo, P. P. P. T. (2012). Gond (A Scheduled Tribe of Odisha). "https://tribal.nic.in/repository/View Doc.aspx?RepositoryNo=TRI28-08-
" 2017121550&file=Docs/TRI28-08-2017121550.pdf
" Sanyal, S., &yash, R. (2020). Livelihood sources of Gond Tribes: A study of village Mangalnaar,
" Bhairamgarhblock, Chhattisgarh. National Geographical Journal of India, 66(2), 174-185.
" https://doi.org/10.48008/ngji.1739
" Srivastava, V. K. (2010). Socio-economic Characteristics of Tribal Communities That Call Themselves
" Hindu. In Religious and Development Research Programme Working Paper Series Indian Institute of
" Dalit Studies New Delhi.
" Suresh, P., &Nayak, C. (2019). Tribal Communication Then and Now?: A Study of Gond Tribe of
" Chhattisgarh. SHODH SAMAGAM, 221, 221-227. http://shodhsamagam.com/admin/uploads/Tribal
" Communication Then and Now A Study of Gond Tribe of Chhattisgarh.pdf
" Tiwari, G. N. (1961). Census of India 1961. In Language: Vol. VIII(Issue VI).
" https://doi.org/10.2307/411742
" Trivedi, A. (2021). India's Tribal Communities- The Gond Tribe of Chhattisgarh. Blogs, 1-13.
" https://www.shaan.academy/blog/india-tribal-communities-the-gond-tribe-of-chhattisgarh 1/13

संगीता धुर्वे
शोधार्थी (भूगोल)
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरगोन
डी.ए.वी.वी. इंदौर, मध्य प्रदेश

3

अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियोंके बीच कैरियर प्राथमिकताओं की खोजः कारक, चुनौतियाँ और आकांक्षाएँ

संतोष यादव

सारांशः

यह अध्ययन अनुसूचित जनजाति (एसटी) के छात्रों की करियर प्राथमिकताओं की जांच करता है, जिसका उद्देश्य उनके करियर विकल्पों, उनके सामने आने वाली चुनौतियों और उनकी आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले कारकों को समझना है। गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान विधियों के माध्यम से, विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में एसटी छात्रों से डेटा एकत्र किया गया था। निष्कर्षों से करियर प्राथमिकताओं को प्रभावित करने वाले कई कारकों का पता चलता है, जिनमें सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक अपेक्षाएं, शैक्षिक अवसर और सांस्कृतिक प्रभाव शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, अध्ययन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुंच, करियर मार्गदर्शन की कमी, भेदभाव और सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाओं जैसी चुनौतियों की पहचान करता है। इन चुनौतियों के बावजूद, एसटी छात्र पारंपरिक व्यवसायों से लेकर पेशेवर करियर तक विविध आकांक्षाओं का प्रदर्शन करते हैं, जो ऊर्ध्वगामी गतिशीलता और सामाजिक–आर्थिक उन्नति की उनकी इच्छा को दर्शाते हैं। यह अध्ययन एसटी छात्रों के करियर विकास को सुविधाजनक बनाने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए उनकी अनूठी जरूरतों और आकांक्षाओं को संबोधित करने के महत्व को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्दः अनुसूचित जनजाति, विद्यार्थी, कैरियर, प्राथमिकता, खोज, कारक, चुनौतियाँ, आकांक्षाएँ

परिचय :

अनुसूचित जनजाति (एसटी) के छात्रों की करियर प्राथमिकताएं उनकी आकांक्षाओं को समझने और उनके सामाजिक–आर्थिक विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। अक्सर हाशिए पर रहने वाले और आर्थिक रूप से वंचित अनुसूचित जनजाति समुदायों को शिक्षा और करियर के अवसरों तक पहुंचने में विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। एसटी छात्रों के बीच कैरियर की प्राथमिकताओं को प्रभावित करने वाले कारकों की खोज से सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य में मूल्यवान अंतर्दृष्टि मिल सकती है और उनकी जरूरतों को प्रभावी ढंग से संबोधित करने के लिए नीतियां बनाने में मदद मिल सकती है।

इस अध्ययन का उद्देश्य अनुसूचित जनजाति के छात्रों की करियर प्राथमिकताओं में गहराई से जाना, उनकी पसंद को आकार देने वाले कारकों, उनके सामने आने वाली चुनौतियों और उन्हें प्रेरित करने वाली आकांक्षाओं की जांच करना है। इन पहलुओं की जांच करके, हम एसटी छात्रों के कैरियर प्रक्षेप पथ की व्यापक समझ प्राप्त कर सकते हैं और उनकी शैक्षिक और व्यावसायिक यात्रा का समर्थन करने के लिए रणनीतियों की पहचान कर सकते हैं।

गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान पद्धतियों के माध्यम से, यह अध्ययन एसटी छात्रों के बीच कैरियर प्राथमिकताओं की बहुमुखी प्रकृति को उजागर करना चाहता है। सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक गतिशीलता, शैक्षिक अनुभव और सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण करके, हमारा लक्ष्य उन कारकों की जटिल परस्पर क्रिया को स्पष्ट करना है जो उनके करियर निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन एसटी छात्रों को उनके पसंदीदा करियर को आगे बढ़ाने में आने वाली चुनौतियों का पता लगाएगा, जिसमें शिक्षा में बाधाएं, संसाधनों तक सीमित पहुंच, सामाजिक–सांस्कृतिक मानदंड और भेदभाव शामिल हैं। असमानताओं को कम करने और अधिक समावेशी शैक्षिक और व्यावसायिक वातावरण बनाने के लिए लक्षित हस्तक्षेप तैयार करने के लिए इन चुनौतियों को समझना आवश्यक है।

इसके अलावा, इस शोध का उद्देश्य एसटी छात्रों की आकांक्षाओं पर प्रकाश डालना, भविष्य के लिए उनकी महत्वाकांक्षाओं, सपनों और आकांक्षाओं पर प्रकाश डालना है। पारंपरिक व्यवसायों से लेकर आधुनिक व्यवसायों तक उनकी विविध आकांक्षाओं को पहचानकर, हम उनकी आकांक्षाओं का बेहतर समर्थन कर सकते हैं और उन्हें अपनी पूरी क्षमता हासिल करने के लिए सशक्त बना सकते हैं।

यह अध्ययन अनुसूचित जनजाति के छात्रों के बीच कैरियर विकास पर मौजूदा साहित्य में योगदान करने का प्रयास करता है, जो उनके अद्वितीय अनुभवों, चुनौतियों और आकांक्षाओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। इन पहलुओं की व्यापक रूप से खोज करके, हम एसटी छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देने और सामाजिक समानता और समावेशन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नीतिगत पहल और शैक्षिक हस्तक्षेपों को सूचित करने की उम्मीद करते हैं।

भारत में अनुसूचित जनजाति (एसटी) के छात्रों को शिक्षा और करियर में उन्नति के लिए अद्वितीय चुनौतियों और अवसरों का सामना करना पड़ता है। इस शोध का उद्देश्य एसटी छात्रों के बीच कैरियर की प्राथमिकताओं को प्रभावित करने वाले कारकों, उनके सामने आने वाली चुनौतियों और भविष्य के लिए उनकी आकांक्षाओं की जांच करना है। इन गतिशीलता को समझकर, नीति निर्माता और शिक्षक एसटी छात्रों को उनके करियर लक्ष्यों को प्राप्त करने और सामाजिक समानता को बढ़ावा देने में सहायता करने के लिए लक्षित हस्तक्षेप विकसित कर सकते हैं।

गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान विधियों के संयोजन के माध्यम से, यह अध्ययन उन सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक अनुभवों और सांस्कृतिक प्रभावों का पता लगाता है जो एसटी छात्रों के बीच कैरियर प्राथमिकताओं को आकार देते हैं। इसके अतिरिक्त, यह एसटी छात्रों के सामने आने वाली चुनौतियों की जांच करता है, जिसमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुंच, सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएं और भेदभाव शामिल हैं, जो उनके करियर की आकांक्षाओं में बाधा बन सकते हैं।

इसके अलावा, यह शोध पारंपरिक व्यवसायों से लेकर आधुनिक व्यवसायों तक एसटी छात्रों की आकांक्षाओं की जांच करता है, और उन्हें अपने वांछित कैरियर पथ को आगे बढ़ाने के लिए सशक्त बनाने की रणनीतियों की खोज करता है। एसटी छात्रों की विविध आकांक्षाओं को उजागर करके और उनके सामने आने वाली बाधाओं को संबोधित करके, इस अध्ययन का उद्देश्य समावेशी विकास को बढ़ावा देना और एसटी समुदायों के भीतर सामाजिक–आर्थिक उन्नति के अवसर पैदा करना है।

यह शोध एसटी छात्रों की करियर प्राथमिकताओं के बारे में हमारी समझ में योगदान देता है और यह अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि नीति निर्माता और शिक्षक उनकी शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षाओं का समर्थन कैसे कर सकते हैं। लक्षित हस्तक्षेपों और वकालत प्रयासों के माध्यम से, हम एक अधिक न्यायसंगत समाज बनाने की दिशा में काम कर सकते हैं जहां सभी व्यक्तियों को, उनकी पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, अपने चुने हुए करियर में आगे बढ़ने का अवसर मिले।

अनुसूचित जनजाति (एसटी) के छात्रों के बीच करियर प्राथमिकताओं से संबंधित कारक बहुआयामी हैं और विभिन्न सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत कारकों से प्रभावित होते हैं। कुछ प्रमुख कारकों में शामिल हैं:

सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि: एसटी छात्रों के परिवारों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति उनके करियर प्राथमिकताओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संसाधनों तक सीमित पहुंच, वित्तीय बाधाएं और आर्थिक अस्थिरता उनकी आकांक्षाओं और विकल्पों को प्रभावित कर सकती है।

शैक्षिक अवसर: शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता और गुणवत्ता एसटी छात्रों के बीच कैरियर की प्राथमिकताओं को बहुत प्रभावित करती है। स्कूलों, कॉलेजों और व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों सहित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच, उनके क्षितिज को व्यापक बना सकती है और उन्हें विविध कैरियर विकल्पों से अवगत करा सकती है।

पारिवारिक अपेक्षाएँ: पारिवारिक गतिशीलता और अपेक्षाएँ अक्सर एसटी छात्रों के बीच कैरियर प्राथमिकताओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सांस्कृतिक मानदंड, माता–पिता की आकांक्षाएं और पारिवारिक दबाव कैरियर पथ और शैक्षिक गतिविधियों के संबंध में उनके निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं।

सांस्कृतिक प्रभाव: परंपराओं, रीति–रिवाजों और सामुदायिक मानदंडों सहित सांस्कृतिक कारक, एसटी छात्रों के बीच कैरियर प्राथमिकताओं को आकार दे सकते हैं। पारंपरिक व्यवसाय और सांस्कृतिक प्रथाएँ उनकी कैरियर आकांक्षाओं और विकल्पों को प्रभावित कर सकती हैं।

रोल मॉडल और सलाहकार: एसटी समुदाय के भीतर या बाहर से रोल मॉडल और सलाहकारों की उपस्थिति एसटी छात्रों को उनके करियर विकल्पों में प्रेरित और मार्गदर्शन कर सकती है। समान सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के बावजूद सफलता हासिल करने वाले सकारात्मक रोल मॉडल एसटी छात्रों को उनकी आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

सूचना और करियर मार्गदर्शन तक पहुंच: विभिन्न करियर विकल्पों और रास्तों के बारे में जानकारी तक सीमित पहुंच एसटी छात्रों की सूचित करियर विकल्प चुनने की क्षमता में बाधा बन सकती है। कैरियर मार्गदर्शन, परामर्श सेवाओं और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों तक पहुंच से एसटी छात्रों को विभिन्न कैरियर के अवसरों का पता लगाने और सूचित निर्णय लेने में मदद मिल सकती है।

भेदभाव और सामाजिक कलंक: शैक्षणिक संस्थानों और समाज में बड़े पैमाने पर एसटी छात्रों द्वारा सामना किया जाने वाला भेदभाव, पूर्वाग्रह और सामाजिक कलंक उनके आत्म–सम्मान, आत्मविश्वास और कैरियर की आकांक्षाओं को प्रभावित कर सकता है। एसटी छात्रों के लिए अपने चुने हुए करियर पथ को आगे बढ़ाने के लिए भेदभाव और कलंक से संबंधित बाधाओं पर काबू पाना आवश्यक है। इन कारकों को समझना नीति निर्माताओं, शिक्षकों और हितधारकों के लिए लक्षित हस्तक्षेप और समर्थन प्रणाली विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है जो एसटी छात्रों की अनूठी जरूरतों और चुनौतियों को संबोधित करते हैं और उन्हें अपने कैरियर की आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए सशक्त बनाते हैं।

अनुसूचित जनजाति (एसटी) के छात्रों के बीच करियर प्राथमिकताओं से संबंधित चुनौतियाँ विभिन्न सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और प्रणालीगत कारकों से उत्पन्न होती हैं। कुछ प्रमुख चुनौतियों में शामिल हैं:

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुंच: अपर्याप्त बुनियादी ढांचे, दूरदराज के क्षेत्रों में शैक्षणिक संस्थानों की कमी और शैक्षणिक सहायता के लिए अपर्याप्त संसाधनों जैसे कारकों के कारण एसटी छात्रों को अक्सर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच में बाधाओं का सामना करना पड़ता है। यह विविध कैरियर विकल्पों और कौशल विकास के अवसरों तक उनके जोखिम को सीमित करता है।

सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ: गरीबी, बेरोजगारी और बुनियादी सुविधाओं की कमी सहित सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ, एसटी छात्रों के लिए उनके वांछित करियर पथ को आगे बढ़ाने में बाधाएँ पैदा करती हैं। आर्थिक बाधाएं उन्हें

दीर्घकालिक शैक्षिक और कैरियर लक्ष्यों पर तत्काल वित्तीय जरूरतों को प्राथमिकता देने के लिए मजबूर कर सकती हैं।

सांस्कृतिक बाधाएँ और रूढ़ियाँः एसटी समुदायों में प्रचलित गहरे सांस्कृतिक मानदंड, परंपराएँ और रूढ़ियाँ छात्रों के कैरियर विकल्पों को प्रतिबंधित कर सकती हैं, विशेष रूप से लिंग भूमिकाओं और पारंपरिक व्यवसायों के संबंध में। सामाजिक अपेक्षाएँ और सांस्कृतिक मानदंडों के अनुरूप होने का दबाव उनकी आकांक्षाओं और कैरियर में उन्नति के अवसरों को सीमित कर सकता है।

भेदभाव और हाशिए पर जानाः एसटी छात्रों को अक्सर शैक्षणिक संस्थानों और कार्यबल में भेदभाव और हाशिए पर जाने का सामना करना पड़ता है, जिससे असमान व्यवहार होता है, कौशल विकास के सीमित अवसर और रोजगार की संभावनाएं कम होती हैं। जाति, जातीयता या सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर आधारित भेदभावपूर्ण प्रथाएं पसंदीदा करियर पथ को आगे बढ़ाने में उनकी चुनौतियों को और बढ़ा देती हैं।

करियर मार्गदर्शन और सलाह का अभावः कई एसटी छात्रों के पास पर्याप्त करियर मार्गदर्शन, परामर्श सेवाओं और परामर्श कार्यक्रमों तक पहुंच नहीं है जो उन्हें नौकरी बाजार की जटिलताओं से निपटने, विविध करियर विकल्पों का पता लगाने और करियर में उन्नति के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में मदद कर सकते हैं। समान पृष्ठभूमि के रोल मॉडल और सलाहकारों की अनुपस्थिति उनके करियर के विकास में और बाधा डालती है।

बुनियादी ढांचे और कनेक्टिविटी के मुद्देः दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले एसटी छात्रों को अक्सर सीमित इंटरनेट कनेक्टिविटी, परिवहन सुविधाओं और शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच सहित अपर्याप्त बुनियादी ढांचे से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये बुनियादी ढाँचागत सीमाएँ उनके निकटतम परिवेश से परे उपलब्ध शैक्षिक और कैरियर के अवसरों का पता लगाने की उनकी क्षमता में बाधा डालती हैं।

भाषा और संचार बाधाएँः भाषा संबंधी बाधाएँ, विशेष रूप से क्षेत्रीय या अंग्रेजी–माध्यम भाषाओं में पेश की जाने वाली शैक्षिक सामग्री और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों तक पहुँचने में, एसटी छात्रों के लिए चुनौतियाँ पैदा करती हैं। प्रमुख भाषाओं में सीमित दक्षता उनके शैक्षणिक प्रदर्शन और नौकरी बाजार में प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता में बाधा बन सकती है।

अनुसूचित जनजाति (एसटी) के छात्रों के बीच करियर प्राथमिकताओं से संबंधित आकांक्षाएं विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के बावजूद भविष्य के लिए उनकी आशाओं, सपनों और आकांक्षाओं को दर्शाती हैं। कुछ सामान्य आकांक्षाओं में शामिल हैंः

आर्थिक स्थिरता और वित्तीय स्वतंत्रताः कई एसटी छात्र स्थिर और अच्छी भुगतान वाली नौकरियों को सुरक्षित करने की इच्छा रखते हैं जो उन्हें और उनके परिवार के लिए आर्थिक स्थिरता प्रदान कर सकें। वे अपनी सामाजिक–आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने और अपने समुदायों में व्याप्त गरीबी के चक्र को तोड़ने के अवसर तलाशते हैं।

शैक्षिक प्राप्ति और कौशल विकासः एसटी छात्र उच्च शिक्षा हासिल करने और प्रासंगिक कौशल हासिल करने की इच्छा रखते हैं जो उनकी रोजगार क्षमता और कैरियर की संभावनाओं को बढ़ा सकते हैं। वे व्यक्तिगत विकास, व्यावसायिक उन्नति और सामाजिक गतिशीलता के अवसरों को खोलने में शिक्षा के महत्व को पहचानते हैं।

करियर विकास और उन्नतिः एसटी छात्र सफल करियर बनाने और अपने चुने हुए क्षेत्रों में उन्नति हासिल करने की इच्छा रखते हैं। वे अपनी क्षमता को पूरा करने और समाज में सार्थक योगदान देने के लक्ष्य के साथ करियर विकास, उन्नति और मान्यता के अवसर तलाशते हैं।

सामुदायिक विकास और सशक्तिकरणः कई एसटी छात्र अपने समुदायों के विकास और सशक्तिकरण में योगदान देने के लिए अपनी शिक्षा और कौशल का लाभ उठाने की इच्छा रखते हैं। वे सामाजिक न्याय, समानता और अपने समुदायों के भीतर और बाहर समावेशन की वकालत करते हुए परिवर्तन के एजेंट बनने की आकांक्षा रखते हैं।

उद्यमिता और नवाचारः कुछ एसटी छात्र सफल व्यवसाय और उद्यम स्थापित करने के लिए अपनी रचनात्मकता, संसाधनशीलता और लचीलेपन का लाभ उठाकर उद्यमी और नवप्रवर्तक बनने की इच्छा रखते हैं। वे रोजगार पैदा करने, आय उत्पन्न करने और अपने समुदायों में आर्थिक विकास चलाने के अवसर तलाशते हैं।

सामाजिक प्रभाव और सेवाः एसटी छात्र दूसरों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने और बेहतर योगदान देने की आकांक्षा रखते हैं। वे ऐसे करियर और अवसरों की तलाश करते हैं जो उन्हें अपने समुदायों की सेवा करने, सामाजिक मुद्दों का समाधान करने और सतत विकास और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने की अनुमति दें।

सांस्कृतिक संरक्षण और विरासतः कई एसटी छात्र आधुनिकता और प्रगति को अपनाते हुए अपनी सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित और बढ़ावा देने की इच्छा रखते हैं। वे ऐसे करियर और अवसरों की तलाश करते हैं जो उन्हें अपनी सांस्कृतिक पहचान का जश्न मनाने और स्वदेशी ज्ञान और प्रथाओं के संरक्षण में योगदान करने की अनुमति दें।

ये आकांक्षाएं एसटी छात्रों की चुनौतियों पर काबू पाने और उनके मूल्यों, आकांक्षाओं और आकांक्षाओं के अनुरूप सार्थक और पूर्ण करियर बनाने के लचीलेपन, दृढ़ संकल्प और आकांक्षाओं को दर्शाती हैं। उनकी आकांक्षाओं को पहचानकर और उनका समर्थन करके, नीति निर्माता, शिक्षक और हितधारक एसटी छात्रों को उनकी पूरी क्षमता हासिल करने और उनके समुदायों और पूरे

देश के सामाजिक–आर्थिक विकास में योगदान करने के लिए सशक्त बना सकते हैं।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए समावेशी और सहायक वातावरण बनाने के लिए नीति निर्माताओं, शैक्षणिक संस्थानों और सामुदायिक हितधारकों के ठोस प्रयासों की आवश्यकता है जो एसटी छात्रों को बाधाओं को दूर करने और उनके कैरियर की आकांक्षाओं को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने के लिए सशक्त बनाते हैं।

निष्कर्ष:

अनुसूचित जनजाति (एसटी) के छात्रों के बीच करियर प्राथमिकताओं की खोज से कारकों, चुनौतियों और आकांक्षाओं की एक जटिल परस्पर क्रिया का पता चलता है जो उनके शैक्षिक और व्यावसायिक प्रक्षेप पथ को आकार देते हैं। कई सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और प्रणालीगत चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, एसटी छात्र बेहतर भविष्य के लिए लचीलापन, दृढ़ संकल्प और आकांक्षाओं का प्रदर्शन करते हैं।

सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक अवसर, पारिवारिक अपेक्षाएं, सांस्कृतिक प्रभाव, रोल मॉडल और जानकारी तक पहुंच जैसे कारक उनके करियर की प्राथमिकताओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। हालाँकि, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुँच, सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ, भेदभाव, सांस्कृतिक बाधाएँ और करियर मार्गदर्शन की कमी जैसी चुनौतियाँ उनके वांछित करियर पथ को आगे बढ़ाने की उनकी क्षमता में बाधा डालती हैं।

इन चुनौतियों के बावजूद, एसटी छात्र आर्थिक स्थिरता, शैक्षिक प्राप्ति, कैरियर विकास, सामुदायिक विकास, उद्यमिता, सामाजिक प्रभाव और सांस्कृतिक संरक्षण की आकांक्षा रखते हैं। उनकी आकांक्षाएं व्यक्तिगत विकास, सामाजिक–आर्थिक उन्नति और बड़े पैमाने पर अपने समुदायों और समाज के विकास में योगदान की उनकी इच्छा को दर्शाती हैं।

एसटी छात्रों की जरूरतों और आकांक्षाओं को प्रभावी ढंग से संबोधित करने के लिए नीति निर्माताओं, शिक्षकों और हितधारकों के ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। इसमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुंच प्रदान करना, सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को दूर करना, समावेशिता और विविधता को बढ़ावा देना, कैरियर मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान करना और सहायक वातावरण बनाना शामिल है जो एसटी छात्रों को उनकी आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाता है।

एसटी छात्रों के कारकों, चुनौतियों और आकांक्षाओं को पहचानकर और उनका समाधान करके, हम समावेशी विकास को बढ़ावा दे सकते हैं, सामाजिक समानता को बढ़ावा दे सकते हैं और एसटी समुदायों के भीतर और बाहर सामाजिक–आर्थिक उन्नति के अवसर पैदा कर सकते हैं। सहयोगी प्रयासों और लक्षित हस्तक्षेपों के माध्यम से, हम एसटी छात्रों को बाधाओं को दूर करने और पूर्ण और सार्थक करियर बनाने के लिए सशक्त बना सकते हैं जो उनकी व्यक्तिगत सफलता और समग्र रूप से समाज की प्रगति में योगदान देता है।

संदर्भः

- एडियोकुन, सी.ओ., और ओपोको, पी.ए. (2015)। वास्तुशिल्प पेशे में पाठ्यक्रम–चयन और प्रतिधारण के लिए प्रेरणा के बीच लिंक की खोजरू छात्रों के दृष्टिकोण। मेडिटेरेनियनजर्नल ऑफ सोशलसाइंसेज, 6(6)रू 191–201।
- एग्बो, बी., ओजोबोर, आई., और एज़िनवा, सी. (2015)। विकास संचार में मुद्दे. एनुगुरू जॉनजैकब्सक्लासिकपब्लिशर्स लिमिटेड।
- बंडुरा, ए. (1986)। विचार और क्रिया की सामाजिक नींवरू एक सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत। एंगलवुडक्लिफ्स, एनजेरू प्रेंटिस–हॉल।
- भट, वाई.आई., और खंडाई, एच. (2016)। जिला पुलवामा के कॉलेज के छात्रों की सामाजिक बुद्धिमत्ता, अध्ययन की आदतें और शैक्षणिक उपलब्धियाँ। मानविकी और सामाजिक विज्ञान पर शोध, 7(6)रू 35–41।
- कोनेली, एल.एम. (2008)। पायलट की पढ़ाई. मेडसर्गनर्सिंग, 17(6), 411–412।
- क्रेडे, एम., और कुंसेल, एन.आर. (2008)। अध्ययन की आदतें, कौशल और दृष्टिकोणरू कॉलेजिएट शैक्षणिक प्रदर्शन का समर्थन करने वाला तीसरा स्तंभ। मनोवैज्ञानिक विज्ञान पर परिप्रेक्ष्य, 3(6)रू 425–453।
- क्रिसवेल, जे.डब्ल्यू. (2014)। अनुसंधान डिजाइनरू गुणात्मक, मात्रात्मक और मिश्रित तरीके दृष्टिकोण। चौथा संस्करण. थाउजेंडओक्सः सेज।
- डिग्बी, पी.जी.एन. (1983)। टेट्राकोरिकसहसंबंध गुणांक का अनुमान लगाना। बायोमेट्रिक्स, 39ः 753–757।
- गुटमैन, एल.एम., और शून, आई. (2012) कैरियर आकांक्षाओं में अनिश्चितता के सहसंबंध और परिणामः इंग्लैंड में किशोरों के बीच लिंग अंतर। जर्नलऑफ़वोकेशनलबिहेवियर, 80(3)ः 608618.
- हफ़स्यान, ए.एस. (2015)। विश्वविद्यालय के ऑनर्स और गैर–ऑनर्स छात्रों की शैक्षिक और करियर आकांक्षाएँ। डॉक्टरेट शोध प्रबंध, 687. कनेक्टिकट विश्वविद्यालय। Digitalcommons.nbvdd. मकन/कपेमतजंजपवद/687 को पुनः प्राप्त किया गया।
- http://हॉर्न, एम. (2010) से। सीटीई के लिए एक नई भूमिका. तकनीकेंः शिक्षा और करियर को जोड़ना, 85(4)ः 10–11।
- कौर, एम., और कौर, पी. (2013)। उच्च एवं निम्न शिक्षित माता–पिता के बच्चों की उपलब्धि, प्रेरणा, अध्ययन की आदतें एवं हीनता। इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकलसाइंस, 3(2):

90–101।

- प्राथमिक जनगणना सार पर विश्लेषणात्मक रिपोर्ट। (रा।)। अध्याय 6, अनुसूचित जनजाति की जनसांख्यिकी। अनुसूचित जनजातियों में – जनसंख्या। http://censusmp-nic-in/censusmp/Data/PCA&DATA/008:20:20Chapter:20&:206:20-:20ST:20-pdfls लिया गया
- खट्टाब, एन. (2015)। छात्रों की आकांक्षाएँ, अपेक्षाएँ और उपलब्धिः वास्तव में क्या मायने रखता है? ब्रिटिश एजुकेशनलरिसर्चजर्नल, 41(5): 731–748।
- लेंट, आर.डब्ल्यू., ब्राउन, एस.डी., और हैकेट, जी. (1994)। कैरियर और शैक्षणिक रुचि, पसंद और प्रदर्शन के एक एकीकृत सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत की ओर। जर्नलऑफ़वोकेशनलबिहेवियर, 45: 79–122.
- लिंडरमैन, ए.जे. (2010)। सातवीं कक्षा के छात्र की करियर आकांक्षाएं और शैक्षणिक उपलब्धि। काउंसलरएजुकेशन मास्टर थीसिस 67. http://digitalcommons-brockport.मकन/मकब–जीमेमे/67से लिया गया।
- लोपेज़–बोनिला, जे.एम., बैरेरा, आर.बी., सेरानो, एम.ए.आर., लोपेज़–बोनिला, एल.एम., फ्लोरेंसियो, बी.पी., और रोड्रिग्ज, एम. सी.आर. (2012)। वे कारण जो विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम लेने के छात्रों के निर्णयों को प्रभावित करते हैंरू लिंग और डिग्री के आधार पर अंतर। शैक्षिक अध्ययन, 38(3): 297–310।
- मरियम, एस.बी. (2009)। गुणात्मक अनुसंधानः डिजाइन और कार्यान्वयन के लिए एक मार्गदर्शिका। सैनफ्रांसिस्को, सीएः जोसी–बास।
- अंबुसेल्वी जी., और लीसनपी.जे. (2015)। भारत में आदिवासी बच्चों की शिक्षाः एक केस स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एंड इनोवेटिवरिसर्च, 4(3), 206–209।

संतोष यादव
शोधार्थी (शिक्षा)
डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान
विश्वविद्यालय, महू, मध्य प्रदेश

4

भगवानदास मोरवाल के शंकुतिका उपन्यास में शिक्षित स्त्री और समाज का दृष्टिकोण।

देवेन्द्र कुमार

सारांशः

भारत के संविधान में स्त्री और पुरुष को समान दर्जा दिया गया है पर जब हम समाज और परिवार में देखते है तो स्त्री पुरुष से बहुत अधिक पिछड़ी नजर आती है क्योंकि प्राचीन समय से ही हमारी धारणा बनी हुई है और आज भी आधुनिक समय में वो धारणा उसी तरह से कायम है। आज हम बहुत शिक्षित हो चुके है लेकिन इस धारणा को हम तोड़ नही पाए और शायद आने वाले समय में भी ये धारणा समाप्त नही होने वाली है। वो धारणा है वंश वृद्धि। प्राचीन काल से हमारी धारणा बन चुकी है की वंश की वृद्धि केवल पुरूष के द्वारा ही संभव है। लेकिन बच्चें पैदा करती स्त्री है फिर भी हम ये कैसे सोच सकते है कि वंश वृद्ध तभी होगी जब हमारे घर में पुरुष संतान पैदा होगी। इसी कारण आज भी प्रशासन की इतनी सख्ती और कठोर कानून बनने के बाद भी हमारे देश में पैसो के लालच में भ्रूण की जाँच होती है और स्त्री संतान की भ्रूण हत्या कर दी जाती है। ये सब अब भी शासन–प्रशासन की नाक के नीचे हो रहा है और कहीं–न–कहीं इसमें माता–पिता के साथ–साथ शासन–प्रशासन भी दोशी हैं। इतने कठोर कानून बनाने के बाद भी यह सब हो रहा है। इतने कठोर कानून बनने के बाद कोई व्यक्ति इतना साहस नही कर सकता कि वो ऐसा कार्य करे इसमें शासन या प्रशासन का कुछ तो सहयोग है तभी यह सब इतनी सरलता से हो जाता है।

अगर हमें हमारे समाज एवं देश को श्रेष्ठ बनाना है तो इस धारणा को सामाप्त करके स्त्री–पुरुष को वंश वृद्धि में समान रूप से महत्व देना होगा और स्त्री को भारत के संविधान के अनुसार समान अधिकार देने होंगे और हमारे विचारों में भी प्रगति को स्थापित करते हुए प्राचीन जड़ धारणाओं को समाप्त करना होगा और जिसे हम देवी कहते है और उसका शोशण करते है उसे एक मानव मान कर उसको उसके सभी अधिकार देने होंगे ताकि वो भी इस वातावरण में खुलकर सांस ले सके और देश की उन्नति में अपना पूर्ण योगदान दे सके।

भगवानदास मोरवाल वर्तमान समय के श्रेष्ठ साहित्यकार है उन्होंने बहुत से श्रेष्ठ उपन्यास और कहानियों की रचना की और समाज की उन विडम्बनाओं पर प्रहार किया जिन पर बहुत ही कम विचार हुआ और हुआ भी तो बहुत सीमित। मोरवाल का जन्म हरियाणा की भूमि पर हुआ और इन्होंने इस समाज को बहुत अधिक पास से देखा और उसे साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया।

'शंकुतिका' उपन्यास 2020ई० में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास में स्त्री की उस समस्या का वर्णन किया गया है जिससे लगभग पूरा उत्तर भारत आज भी जुझ रहा है। जब भी कोई स्त्री गर्भ धारण करती है तो पूरा परिवार चाहता है की स्त्री की गर्भ से पुत्र ही पैदा हो और उसे दूसरी तरफ ये भी भय रहता है कि स्त्री के गर्भ से पुत्री पैदा न हो जाए और पहले से ही उस घर में एक पुत्री हो तो परिवार बहुत अधिक भय से व्यकुल हो जाता है कि कहीं फिर से उसके घर पर पुत्री पैदा न हो जाए उसके साथ–साथ आस–पास के लोग भी यही दुआ करते है कि हे भगवान इन्हें पुत्र की प्राप्त हो और गलती से भी पुत्री पैदा न हो जाए।

उत्तर भारत में तो जब तक घर में लड़का पैदा न हो जाए तब तक बच्चें पैदा किये जाते है। यहां पर पुत्री को न तो संपत्ति में से हिस्सा मिलता है और न हीउसे अपने स्वयं के निर्णय लेने का अधिकार है। स्त्री के सभी निर्णय पुरुश के द्वारा लिए जाते है और उन निर्णयों का पालन करना स्त्री का सर्वप्रथम धर्म है अगर वो ऐसा नही करती है तो उसे ऐसा करने के लिए विवश किया जाता है। इससे बचने का एक मार्ग मोरवाल जी ने सुझाया है वो है–शिक्षा। शिक्षित स्त्री कुछ प्रतिशत इस शोशण से बच सकती है। अशिक्षित स्त्री के स्वतंत्रत होने का तो कोई मार्ग नही है।

इस उपन्यास में दशरथ एवं भगवती के पुत्र के यहां दो लड़कियों का जन्म हो चुका है। पड़ोस में अग्रसेन के घर पर तीन–तीन लड़के पैदा हो चुके थे और रात को थाली बजती है तो पता चलता है कि उग्रसेन के घर चौथा लड़का पैदा हुआ और भगवती उदास हो जाती है और कहती है।"ऊपर वाला भी उसे ही देता जाता है जिसके पहले से एक नही कई–कई है। पता नही यह हमारी कब सुनेगा।"01 जिस घर में एक से अधिक लड़की पैदा हो जाती है वो पूरा परिवार लड़कियों के जन्म पर हमेशा शोक मनाता रहता है वो नही चाहते है कि उनके घर फिर से लड़की पैदा हो और पड़ोस में किसी घर में पहले से दो से अधिक लड़के हो और आगे भी कोई लड़का पैदा हो जाए तो परिवार को अपनी लड़कियों से घृणा हो जाती है। वो भी चाहते है कि उनके घर में भी लड़का पैदा हो। उग्रसेन की पत्नी दुर्गा भगवती के घर पुत्र के पैदा होने के उपलक्ष्य पर मिठाई देने आती है और कहती है अब की बार तुम्हारे घर पर भी लड़का ही होगा इस पर भगवती चिंता प्रकट करती है। "अगर इस बार भी नही हुआ न हम तो जीते ही मर जाएंगे। पहले से दो–दो लड़कियों को देखकर मेरे तो हाथ पाव फूल जाते है।"02 लड़के चाहे चार पैदा हो जाए उससे हर्श बना रहता है पर लड़की एक से अधिक पैदा हो जाए तो सभी घर वालों की खुशियां लूट जाती है। वो और उनके पड़ोसी चाहते है कि लड़की तो किसी के घर में भी पैदा न हो केवल लड़के पैदा होते रहे।

दुर्गा भगवती को कह कर गई थी कि उसके घर अब की बार लड़का पैदा होगा और भगवती को यही ड़र रहता है कि उसके घर फिर से लड़की पैदा न हो जाए अगर ऐसा हुआ तो उसके घर पर तीन

लड़किया हो जाएगी। वही होता है जिसका भगवती को डर था और लड़की के पैदा होने के बाद वो मातम मनाती है। "हाँ, किलकारियां तो गूंज रही है मगर लड़की की। जब–जब नन्हा कातर रूदन भगवती के कानों मे गूंजता, तब–तब लगता कि जैसे यह नन्हा रूदन नही पीघले हुए शिशे की बूंदे कानों में टपक रही है।"03 जिस घर में पहले से लड़की हो उस घर में फिर से लड़की पैदा हो जाए तो घर में खुशियां नही मातम मनाया जाता है उस घर में लड़की की किलकारियां गूँजती है तो वो घर वालो के लिए रूदन मे बदल जाती है। अगर लड़का हो जाए तो वो किलकारियाँ उल्लास पैदा करती है। भगवती के घर तीन पोतियाँ पैदा हो गई थी जब की दुर्गा के यहां चार पोते पैदा हुए थे। जब परीक्षा परिणाम आया तो दुर्गा के पोते केवल उतीर्ण हो पाए और भगवती की पोती सिया और गार्गी नब्बे प्रतिशत अंक प्राप्त करती है और वकील एवं डॉक्टर बनना चाहती है इस कारन दुर्गा का दृष्टिकोण लड़कियों प्रति बदल जाता है।"एक बात कहूं भगवती, तू है बड़ी नसीब वाली जो ऐसी हीरे जैसी पोतियां मिली है। जरूर तुने पिछले जन्म में मोती दान किय थे।"04 जिन लड़को के पैदा होने पर मिठाईयाँ बाटी गई थी बहुत अधिक जश्न बनाया गया था वो अच्छे स्कूल में पढ़ते हुए एवं सभी सुविधा मिलने के बाद भी केवल उतीर्ण हो और कम सुविधाओं के बाद भी वो लड़कियाँ बहुत अच्छें अंको से उतीर्ण हुई जिनके जन्म पर मातम मनाय गया था उनके प्रति घर–परिवार एवं समाज का दृश्टिकोण बदल गया था ये सब शिक्षा के माध्यम से संभव हो पाया है।

भगवती के बड़े पुत्र के यहाँ तीन पुत्री पैदा हो गई थी लेकिन छोटे पुत्र के यहाँ कोई संतान पैदा नही हुई तो घर वाले उसके लिए बच्चा गोद लेना चाहते है तो दुर्गा कहती है। ".....किसी लड़के–वड़के के चक्कर में मत पड़ना। लड़कों का सुख मैं कितना भोग रही हूँ, मैं ही जानती हूँ। अपनी पोतियों को देख रही है न। जहाँ तीन है, वहाँ चौथी भी सही।"05 यह सब सुन कर भगवती कहती है।"वो बात तेरी सही है दुर्गा पर वंश बढ़ाने के लिए तो लड़के की ही जरूरत पड़ेगी।"06 समाज और हमारे घर परिवार में यह माना जाता है की वंश वृद्धि केवल पुरुश संतान करती है पर ये सोच निम्न स्तर की है। जब भी कोई संतान पैदा होती है तो उसमें सबसे अधिक योगदान एक स्त्री का होता है और फिर भी हम मानते है कि वंश वृद्धि पुत्र के पैदा होने पर ही होती है।दुर्गा का दृश्टिकोण बदल गया था और धीर–धीरे भगवती को भी लगने लगा था कि पुत्र–पुत्री में कोई अन्तर नही होता है। कुछ समय बाद भगवती अपने परिवार वालों को लड़की गोद लेने की सलाह देती है।".....अगर लेना है तो किसी अनाथाश्रम से काई बच्ची ही गोद लेना।"07 जो स्त्री तीसरी लड़की पैदा होने पर मातम मना नही हो वो समझ गई थी लड़की किसी प्रकार से किसी लड़के से कम नही होती है और वो चौथी भी लड़की ही गोद लेती है वो समझ गई थी कि लड़की भी समाज में घर परिवार का नाम रोशन करती है और यह सब संभव हुआ शिक्षा के कारण। भगवती का परिवार पुत्री को गोद ले लेता है और जिन रीति–रिवाजों का पालन पुत्र के पैदा होने पर किया जाते है वह सब उस लड़की के लिए किये जाते है–जैसे कुआं पूजन आदि। इस पर दशरथ भगवती को कहता है। "बात रीत की नहीं, बात आदमी की खुशी की है। वैसे तो ये रीति–रिवाज आसमान से तो उतर कर आए नही। इंसान ने अपनी खुशी के लिए बनाए है।"08 भगवती के परिवार का लड़कियों के प्रति दृष्टिकोण स्वच्छ हो चुका था वो समाज के सामने एक मील का पत्थर स्थापित कर रहे थे वो लड़की के लिए कुआं पूजन करते है सभी को दावत देते है और लड़की का जन्मदिवस भी बनाते है।

जब भगवती की पोती विवाह के लायक हो जाती है तो भगवती और दशरथ को पता चला कि सिया ने विवाह के लिए लड़का स्वयं चुन लिया तो भगवती चिंतित हो जाती है।वो चाहती थी कि पोती का विवाह उन्हीं की जात–बिरादरी में हो पर दशरथ पोती के निर्णय के साथ खड़ा हो जाता है।"अब अगर ये सब भी इसका विरोध करेंगे न, तो अपनी पोती संग मैं अकेला खड़ा होऊगाँ।"09 दशरथ को अपनी पोतियों पर बहुत अधिक गर्व था। समाज में जैसे–जैसे समझ विकसित हो रही है और शिक्षा का प्रसार हो रहा है सब समझ रहे है कि स्त्री पुरुशोंसे किसी भी प्रकार से भी कम नही है और स्त्री को धीरे–धीरे सब अधिकार प्राप्त हो जाएंगे। सिया और गार्गी स्वयं अपनी पसंद के लड़कों से विवाह कर लेती है पर बुलबुल का विवाह परिवार के अनुसार अपनी जात–बिरादरी के लड़के से हो जाता है और उसका पति उसे दहेज के लिए तंग करता है इस पर सिया उस के ससुराल वालों को सबक सिखाना चाहती है उस पर भगवती कहती है। "रहने दे बेटी क्यों इसे इन कोर्ट–कचेरी के झंझट मे डालती है। जब इसे उसी घर में रहना है, तो क्यों किसी से दुश्मनी मोल लेनी।"10 हमारे समाज में आज भी दहेज के लालची लोग रहते है और लड़की वाले डरते है कहीं पुत्री का जीवन नर्क न हो जाए लेकिन सिया के नोटिस पर बुलबुल के पति को समझा आ जाती है और वो क्षमा प्रार्थना करके उसे ले जाता है लड़कियों की समझ–बुझ से उनकी बहन का घर सुधर जाता है इस पर भगवती को गर्व होता हैं।

निष्कर्ष–: उत्तर भारत में आज भी वंश वृद्धि में केवल पुरुश का योगदान माना जाता है तभी तो पुत्री पैदा हो जाने को लोग संताप मानते है और पुत्र के पैदा हो जाने पर जश्न बनाया जाता। मोरवाल जी ने इस उपन्यास के माध्यम से बताया है कि वंश वृद्धि में जितना योगदान पुरुष का है उतना ही स्त्री का भी है। लड़कियों को शिक्षा किसी भी परिस्थिति में प्राप्त करनी चाहिए जिससे लोगों मे जागरूकता पैदा होगी और स्त्री और पुरुष को समान अधिकार प्राप्त हो जाएगें और हमारा समाज श्रेष्ठ से सर्वश्रेष्ठ हो जाएगा।

1. भगवानदास मोरवाल, शकुंतिका, पृ० 05
2. वही, पृ० 07
3. वही, पृ० 19

4. वही, पृ० 27
5. वही, पृ० 39
6. वही, पृ० 39
7. वही, पृ० 47
8. वही, पृ० 68
9. वही, पृ० 86

देवेन्द्र कुमार
नजदीक पुराना बस स्टैण्ड़,
कुम्हारों का मोहल्ला,
सिविल लाइन के पीछे भिवानी
127021(हरियाणा)
सम्पर्क सूत्र–9068859229
neh.devender309@gmail.com

5

स्त्री विमर्श की चुनौतियां और मन्नू भंडारी की रचनाएं

किरण कुमारी

सारांशः

देश के अनेक भूभागों से नारी उत्पीड़न की खबरें आम बात हो गयी हैं।कभी तीन तलाक के नाम पर, कभी दहेज यह उत्पीडन के नाम पर तो कभी ऑनर किलिंग के नाम पर, अत्याचार जारी रहता है। यह अत्यंत हास्यास्पद लगता है जब कल तक स्त्री को जलानेवाले श्महिला दिवसश के अवसर पर अपनी शेखियां बघारते हैं और अपने दोयम अल्फाज से स्त्री–हित के हिमायती बनने का नाटक करते हैं। उनके ये घड़ियाली आँसू बहाने वाले अंदाज की पोल तो आज की ताजातरीन शर्मनाक घटनाएं अपने आप ही खोल देती हैं। देशकी राजधानी के लिए ऐसी शर्मसार करनेवाली घटनाएं उस बदनुमा दाग की तरह हैं, जो मिटाये नहीं मीट सकतीं। आठ महीने की एक बच्ची के साथ 27 साल के एक पापी द्वारा अमानवीय व्यवहार जैसी घटनाओं ने ही दिल्ली कोश्रेप कैपिटलश बना दिया है। अब प्रश्न यह है कि ऐसी घटनाओं को सुनते, देखते हुए अपनी आंख बंद करनी है या चुप्पी को तोड़ते हुए विरोध का आगाज करना है? यह यक्ष प्रश्न सूरसा मुख की भांति भारत के हर जनमानस के आगे मुंहबाए खड़ा है? दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालिवाल ने तो इसके खिलाफ खुली लड़ाई छेड़ दी है। पर्चे बंटवाकर, एनजीओ के माध्यम से सार्वजनिक स्थानों पर मानव श्रृंखला बनाकर, नुक्कड़ नाटकों के द्वाराश रेप रोकोश, श्बच्चों के बलात्कारियों को छह महीने के अंदर फांसी दोश, जैसे मुद्दों को लेकर आम जनता को जागृत किया जा रहा है। पर यह लडाई चंद स्थान विशेष की न होकर समस्त देशवासियों की है,बल्कि समाज के बुद्धिजीवी वर्ग की नैतिक जिम्मेदारी भी। ऐसे मे साहित्यकारों की भूमिका अति महत्वपूर्ण साबित होगी।जन जन तक पहुंचने में सबसे कारगर और लाभकारी भी। इनके बढ़ते हौसले के पीछे लाचार और धीमी कानूनी प्रक्रिया है।अकेले दिल्ली की बात की जाये तो दिल्ली पुलिस के मुताबिक दिल्ली में सन 2012 से सन 2014 के बीच महिलाओं के खिलाफ 31,446 अपराध दर्ज हुए जिन म से 150 से कम अपराधियों को सजाएं हुई।इसके तह में जाएं तो जिम्मेवार सिर्फ कानून–व्यवस्था नहीं बल्कि जागरुकता का अभाव है। अत्यंत दुखद है किन्तु सर्वाधिक चिंतनीय भी। अगर अपने साहित्यिक जिम्मेवारी निभाते हुए रचनाकार जागृत हो जाएं तो बहुत सारी स्थितियों का समाधान करने में पाठक जनता निराकरण हेतु खुद आगे आ जायें। गौरतलब है कि मन्नू भंडारी जैसी कई प्रबुद्धों ने स्त्री विमर्श के मुद्दों को बड़े शिद्दत से अपनी रचनाओं के माध्यम से उठाया है।

मन्नू भंडारी का अपना व्यक्तित्व ही है कि एक कामकाजी महिला का संदर्भ अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करते हुए परिवार की महिता की विपरीत खडी होती हैं। मन्नू भंडारी की महिला पात्र और उनकी समस्याएं सिर्फ व्यक्तिगत नहीं उनके संदर्भ समाज परिवार सभी के बीच से होकर गुजरता है 1उनका कोई भी पात्र व्यक्तिगत संदर्भ लिए नहीं रहती बल्कि एक पारिवारिक और सामाजिक संदर्भ लिए उभरती हैं। बदलते सामाजिक संदर्भ में परंपरागत पारिवारिक मूल्यों का तनाव ,भौतिक विकास के साथ परंपरागत नैतिकता का दबाव और स्त्री भूमिका के विविध अवसरों में फैलाव से उत्पन्न तनाव से पैदा हुई परेशानियों के प्रति एक कामकाजी और गृहिणी के रूप में उनकी भुमिका की पहचान मन्नू भंडारी की कथा साहित्य की आम समस्याएं हैं।कथा साहित्य में प्रेमचंद और उसके बाद नए महिला पात्र जागरूक हुई थीं, जो पुरुष के हाथों की कठपुतली मात्र नहीं रही थीं, उनमें शिक्षा और अपने अधिकार के साथ नए सामाजिक उत्तरदायित्व और कर्तव्यों का ज्ञान भी था ।उसका अनुभाविक सूक्ष्मता और विकास हम मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में देखते हैं। प्रेमचंद की जो सहानुभूति थी स्त्री पात्रों के प्रति वह सहानुभूति मन्नू भंडारी की रचनाओं में आत्मानुभूति से गुजरती हुई एक प्रामाणिकता के साथ खड़ी हुई है। स्त्री की भूमिका को यहां केंद्रीय रूप में विभिन्न संदर्भ में हम देख सकते हैं ।स्त्री यहां अकेले नहीं है, बल्कि अपनी समस्याओं के साथ परिवार ,समाज और संबंधों के बीच खड़ी है और उन संबंधों को वह अपने शर्तों पर ही जीना चाहती है द्यउनसे निकाल कर या बचकर अकेलेपन के साथ रहना नहीं चाहती है ।वह उन सब से लड़ती है, लेकिन उनका जीवन की सार्थकता भी उसी के बीच की समाहित होती है।

यहां हम मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में चित्रित समस्याओं को केंद्र में रखते हुए संक्षेप में इन सब बातों पर विचार करना चाहूंगी। संयुक्त पारिवारिक जीवन के विघटन का आधुनिक पक्ष और उनके पीछे के कर्म की पड़ताल करते हए नारी जीवन में बदलाव की – एक शुरुआत बनाने वाले आदि कहानियों के साथ ही स्वामी उपन्यास में भी हम देख सकते हैं। दिपत्य विघटन और मां के एकाकीपन को श्आपका बंटीश, ष्एक इंच मुस्कान श्उपन्यासों मे तथाश बंद दराजों का साथश कहानी में देख सकते हैं ।

देश की राजनीतिक परिस्थितियों का एक व्यापक प्रभाव नारी जीवन पर पड़ता है। धर्म , जातिवाद की राजनीति , सांप्रदायिक दंगे उसके मन को हताश और निराश करते हैं। साथ ही एक नई चेतना भी उसे अपनी सहभागिता को लेकर प्राप्त होती है। मैं हार गई श,ष्एक प्लेट सैलाब जैसे कहानियां और महाभोज जैसे उपन्यासों में इसे देखा जा सकता है। यहां लेखिका की दृष्टि बहुत ही व्यापक हो राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर देश की समस्याओं को छूती है।एक शिक्षित नारी अपनी अस्मिता, आत्मनिर्भरता को लेकर जिन समस्याओं का सामना कर रही हैं, उसे हम, दीवार बच्चे और बरसात,

रेत की दीवार, यही सच है ,आदि कहानियों के माध्यम से कहीं ज्यादा गहराई और यथार्थवादी रूप में समझ सकते हैं।

लेखिका ने महाभोज, उपन्यास में दलित की शिक्षा पर विशेष बल दिया है ।ध्यान देने की बात है के इन सभी सामाजिक समस्याओं के केंद्र में लेखिका सजग – क्रियाशील है जिसके बारे में परंपरागत रूप में घर की चौखट तक की सीमा निर्धारित की गई है ।लेकिन उसकी सीमाएं यहां व्यापक होकर देश ,समाज और समय की समस्याओं और संवेदनाओं से गुजरती हैं ।मन्नू भंडारी का कथा साहित्य में नई आधुनिक परिवर्तनों की मार्ग खुलते हैं । आधुनिक स्त्री महत्वाकांक्षी है 13अपने परिवार और पति से बदलाव की अपेक्षा रखती है। अपने सामने अस्तित्व को लेकर अंदर बाहर दोनों और तनावों से गुजरती रहती है और एक हद तक समझौता भी करने के लिए तैयार रहती हैं । यह भारतीय नारी का अपना ख़ास परिपेक्ष है ,जहां वह अपनी चेतना के साथ घर परिवार की टूटने और बिखराव को रोकने के लिए सामाजिक स्तर पर अपना बलिदान देने के लिए भी कत – संकल्पित रहती है। अपना जागरूकता और अपने योगदान का महत्व बेहतर तरीके से समझता है। पति के वैवाहिकेत्तर प्रेम संबंधों पर कथा पात्र सजना निराश नहीं होती बल्कि पति अमर से स्वयं मक्त हो जाती है ।एक पात्र कमला है जो परित्यक्ता है और मानसिक अंतर्द्वंद्वों के बीच आत्महत्या का मार्ग चुनती है । यहां भी जो उसकी पलायन वादी मानसिकता है वह बहत कुछ अपनी जिम्मेवारियों को समझते हुए है।वह पत्नी ,प्रियसी ,मित्र यदि बनी किंतु असफल जीवन जीने को मजबूर हो गई जीवन की सफलता जो उसके दृष्टि से चाहिए वह उसे नहीं मिल पाई । स्वामी उपन्यास के नारी पात्रमिनी आधुनिक नारी है। जिसमें नारी मूक्ति की छटपटाहट है। लेकिन उसकी मुक्ति औरस्वत्रता के साथ ही वह समाप्त हो जाती है। सामाजिक स्तर पर परिवर्तन का कारण नहीबन पाती है ।लेखिका यहां पर व्यक्तिगत प्रयासों की अपनी कुछ सीमाओं को भी बताती है ।दरअसल इस कथा साहित्य से गुजरते हुए कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी उपन्यास की नायिका मिनी भारतीय पत्नी की भूमिका को आदर्श रूप में नारी स्वतंत्रता या मुक्ति के साथ देखती है। इसी प्रकार सुकून अपका बंटी की नारी पात्र है ।वह बदलते परिस्थितियों से टकराती है और व्यवस्था को नहीं, व्यक्ति को बदलने में विश्वास करती है । महाभोजश उपन्यास की नायिका रुकमा है। जो शिक्षित और जागरूक है । विश्व के विचारों से प्रभावित होकर गांवकी अशिक्षित महिलाओं को जागरूक करने का प्रयास करती है। स्पष्टः मन्नू भंडारी के कथासाहित्य में पुरुष आज नारी चेतना के बदलाव के लिए स्त्री पात्रों के साथ मौजूद रहते हैं/यही सच है की कहानी की दीपा ,प्रेमी से निराशा है। वह दूसरे व्यक्ति संजय से प्रेम करने लगती है ।अब इसे लेकर अपनी मां के साथ वह पड़ताल करती है कि किसके सच को सच समझ एक अंतर्द्वंद्व से वह गुजरती है कि निश्चित और संजय में से किस वह अपनी प्रेम की पूर्णता के लिए स्वीकार करें गीत का चुंबन कहानी की नायिका एक गायिका है। वह कभी निखिल से प्रेम करती है। उसका प्रेम संस्कारों वाला परंपरागत मर्यादा के बीच जीवन जीना चाहता है। जबकि उसका कभी प्रेमी स्वच्छंद प्रेमी है ।

एक कमजोर लड़की की कहानी, की नायिका रूप है रूप मां के मुंह बोल बेटे ललित से प्रेम करती है , किंतु उसका विवाह होने पर विरोध नहीं कर पाती है। अभिनेता , कहानी की रंजन दिलीप ओझा से प्रेम करती है. जो विवाहित और एक बच्चे का पिता है ।श्ऊंचाई श, कहानी की नायिका शिवानी अपने विवाह पर्व के प्रेमी अतल से दो बच्चों की मां बनने के बाद भी प्रेम करती है। यह एक ऐसी प्रेम कहानी हैं जिन्हें नैतिक अनैतिक के ढांचे में जाकर नहीं देखा जासकता ।वह भी परंपरागत नैतिकता के खर्चे में ।स्त्री सुबोधिनी कहानी की नायिका सुबोधिनी अपने विवाहित बॉस शिंदे के बहकावे में आ जाती है और उससे प्रेम करने लगती है। इसी प्रकार एक कहानी है, श्आते–जाते यायावर, जिसकी नायिका मिताली है ,जो अपने सहपाठी से प्रेम करती है और शारीरिक संबंध भी स्थापित कर लेती है एक बार औरश, कहानी की बिन्नी है जो अपने प्रेमी कुंज के साथ पत्नी बनकर होटल में रहती है ,लेकिन कुंज विवाह मधु से करता है। घुटन ,कहानी की मोना एक ऐसी पात्र है जो विषम परिस्थितियों में घुटने टेक देती है। श्चश्मा, कहानी की नायिका सेल का प्रेम त्याग निष्ठा सेवा समर्पण यदि पर आधारित है।आकाश के आईने में, की नायिका सुषमा है ,जो अपने प्रेम के लिए परिवार से ही विरोध होताहै उसे अपने परिवार से ही पीड़ा होती है । देखा जाए तो इन सभी कहानियों में पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था और उसकी संघर्ष स्त्री के बदलतेव्यक्तित्व से है ।यहां स्त्री सिर्फ एकांकी या अकेलेपन के साथ खड़ी नहीं है ,बल्कि वह अपनी पहचान सामाजिक और पुरुष सता के साथ ही संघर्ष करते हुए चाहती है ।प्राने और नवीन संस्कारों के बीच एक नया विकल्प निकालने की उसकी कोशिश लगातार जारी है ।संयुक्त परिवार के टुटन और अपने भरोसे पर जीवन जीने की कोशिश यहां है ।पारिवारिक समस्याएं और पारिवारिक समस्याओं और उलझन से युक्त आधुनिक स्वतंत्र परिवेश के बीच अपने होने से प्रेम करती है ।उसका प्रेम संस्कारों वाला परंपरागत मर्यादा के बीच जीवन जीना चाहता है।जबकि उसका कभी प्रेमी स्वच्छंद प्रेमी है ।

एक कमजोर लड़की की कहानी, की नायिका रूप हैरूप मां के मुंह बोल बेटे ललित से प्रेमकरती है ,किंत् उसका विवाह होने पर विरोध नहीं कर पाती है। अभिनेता , कहानी की रजनदिलीप ओझा से प्रेम करती है. जो विवाहित और एक बच्चे का पिता है ।ऊंचाई , कहानी कीनायिका शिवानी अपने विवाह पर्व के प्रेमी अतल से दो बच्चों की मां बनने के बाद भी प्रेमकरती है। यह एक ऐसी प्रेम कहानी हैं जिन्हें नैतिक अनैतिक के ढांचे में जाकर नहीं देखा जासकता। वह भी परंपरागत नैतिकता के खर्चे में ।स्त्री सुबोधिनी कहानी की नायिका सुबोधिनी अपने विवाहित बॉस शिंदे के बहकावे में आ जाती है और उससे प्रेम करने लगती है। इसी प्रकार एक कहानी है, आते–जाते यायावर, जिसकी नायिका

मिताली है ,जो अपने सहपाठी से प्रेम करती है और शारीरिक संबंध भी स्थापित कर लेती है एक बार और, कहानी की बिन्नी है जो अपने प्रेमी कुंज के साथ पत्नी बनकर होटल में रहती है ,लेकिन कुंज विवाह मधु से करता है। घुटन ,कहानी की मोना एक ऐसी पात्र है जो विषम परिस्थितियों में घुटने टेक देती है। श्चश्मा, कहानी की नायिका सेल का प्रेम त्याग निष्ठा सेवा समर्पण यदि पर आधारित है।आकाश के आईने में, की नायिका सुषमा है ,जो अपने प्रेम के लिए परिवार से ही विरोध होता है उसे अपने परिवार से ही पीड़ा होती है ।

देखा जाए तो इन सभी कहानियों में पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था और उसकी संघर्ष स्त्री के बदलते व्यक्तित्व से है ।यहां स्त्री सिर्फ एकांकी या अकेलेपन के साथ खड़ी नहीं है ,बल्कि वह अपनी पहचान सामाजिक और पुरुष सता के साथ ही संघर्ष करते हुए चाहती है ।प्राने और नवीन संस्कारों के बीच एक नया विकल्प निकालने की उसकी कोशिश लगातार जारी है ।संयुक्त परिवार के टुटन और अपने भरोसे पर जीवन जीने की कोशिश यहां है ।पारिवारिक समस्याएं और पारिवारिक समस्याओं और उलझन से युक्त आधुनिक स्वतंत्र परिवेश के बीच अपने होने सा प्रकार रानी मां का चबूतरा ,और नशा आदि कहानियों में हम नारी जीवन संघर्ष उसके जटिलता और परिश्रम को देख सकते हैं।

नारी की अपनी स्वतंत्रता गरिमा व्यक्तिक अस्मिता और संघर्ष मन्नू भंडारी की कहानियों के विषय रहे हैं। ईश और ईशा के घर इंसान, कहानी में नन एंजेल है ,जो फादर की अलौकिक दिव्यता का पर्दाफाश करके धर्म के आधार पर नारी शोषण का विरोध करती है। जीती बाजी की हार , कहानी में आशा और मंडला जैसे स्त्रियां है जो अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की पहचान और नव जागृति से आई विकासात्मक पहलुओं को लेकर काफी जागरुक है। दीवार बच्चे और बरसात, कहानी की नायिका शिक्षित है और अपने परिवेश में आए बदलावों के प्रति जागरुक है स्वतंत्र विचार ,आत्मनिर्भरता यदि बदलाव के प्रबल समर्थक है ।अपनी व्यक्तिक अस्मिता या पहचान के लिए अपने पति और समाज से टक्कर लेती है। रानी मां का चबूतराश, कहानीकी नायिका गुलाबी, गुलाबी आत्मविश्वास से भरी औरत है।

निष्कर्ष:

बेटी आज पारिवारिक समस्याओं और दायित्व को भी संभालने में अपने जीवंतता का परिचय दे रही है। श्छय, कहानी में पिता के रोगी हो जाने पर परिवार का दायित्व घर की बड़ी बेटी कुंती संभालती है। इसी प्रकार अनेक कहानियां है ,जहां नवीन जीवन मूल्यों के बीच अपनी स्वतंत्र पहचान को मन्नू भंडारी की नायिकाएं बनाए रखती है । हार नई नौकरी ,कमरा कमरा और कमरा, बंद दरवाजा का साथ और दरार भरने की दरार आदि कहानियों में स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व एवं व्यक्तित्व का चित्रण है ।इन कहानियों से गुजरते हुए नारी स्वतंत्रता और विमर्श का लेखकीय पहलू स्पष्ट होता है, जो ठेठ भारतीय है ।यहां आधुनिक शिक्षित आत्मनिर्भर स्त्रियां समझ नहीं पा रही हैं कि उन्हें मुक्ति किससे चाहिए द्यउनकी वैचारिक और व्यक्तिक अस्मिता का किनारा कौन सा है ।या उनके संघर्ष का अंतिम लक्ष्य क्या है। यह भ्रम जैसे स्थित है। या कह सकते हैं कि जीवन राहों का अन्वेषण या खोज है। व्यक्तिगत अस्मिता का एक नवीन मुल्य नारी के पारिवारिक सामाजिक आयाम में पनप रहा है ।

संदर्भ सूची –

1) हार गई,1957 राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
2) एक प्लेट सैलाब, 1962 अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली
3) तीन निगाहों की एक तस्वीर, 1968 श्रमजीवी प्रकाशन इलाहाबाद
4) यही सच है ,1966 अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली
5) त्रिशंकू,1978 अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली
6) आंखों देखा झूठ अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली
7) नायक खलनायक विदूषक , अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली
8) श्रेष्ठ कहानियां 1969,अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली
9) मेरे प्रय कहानी 1979 राजपाल एंड सन प्रकाशन नई दिल्ली
10) एक इच मुस्कान ,1962 राजपाल एड संस नई दिल्ली
11) आपका बंटी ,1971 अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली
12) महाभोज ,1982 राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली
13) कलवा (बाल उपन्यास)

किरण कुमारी
सहायक प्रोफेसर (हिन्दी)
एस. पी. डी. Garwha कालिज
(झारखण्ड)
पिन –822114
मो.नं.–8102213329

6

मुक्तिबोध के साहित्य में प्रेम–तत्त्व

रेखा कुमारी

सारांशः

मुक्तिबोध के साहित्य में प्रेम– तत्व दरअसल लोक और शास्त्रीयता का परंपरागत द्वंद्व या संघर्ष के रूप में देखा जा सकता है. आधुनिक काल में जब लोकमत जनतंत्र का माध्यम बना, तो साहित्यिक नायक के रूप में आम जनता मंचासीन हुआ .यह आम जनता खास बनने के क्रम में अपने दुख, दर्द , पीड़ा, इच्छा, आकांक्षाओं के साथ प्रतिनिधि पात्र बना .इस प्रतिनिधि पात्र के मूल्यांकन के जो परंपरागत तरीके थे, जो सौंदर्यवादी साहित्य का रुझान था ,वह शास्त्रीयता की सीमाओं में बंधे हुए थे,क्योंकि उनका मूल्यांकन वही परंपरागत मापदंडों के आधार पर किया जा रहा था. मूल्यांकनकर्ता आम जनता या हाशिए पर पड़े हुए लोग नहीं बल्कि शास्त्रीयता के परंपरागत उपकरणों से लैस पहले के लोग ही सक्रिय थे.साहित्यिक पहचान देने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका छायावाद के बाद के क्रम में भी जारी थी . इस शास्त्रीयता को तोड़ना आवश्यक था ,क्योंकि साहित्यिक नायक अब शास्त्रीयता के प्राचीन सीमाओं से बिल्कुल अलग – एक संघर्षशील कृषक, मजदूर ,तोड़ती पत्थर की एक मजबूत मजदूर स्त्री और गुलाब की जगह अपनी शर्तों पर बढ़ने और पनपने वाला कुकुरमुत्ता के इतराने के दिन आ चुके थे.वह अपनी शर्तों पर गुलाब की शास्त्रीयता को चुनौती देता है .जाहिर सी बात है ,साहित्यिक नायक और मूल्यांकन दोनों के तरीके बदलने चाहिए.इस बदलाव के लिए जरूरी था, साहित्य, समाज और प्रेम तत्व का विस्तार हो और परंपरागत साहित्यिक मूल्यांकन उपकरणों की सीमाओं को बताया जाए.

रस ,अलंकार, छंद और परंपरागत मूल्यांकन मान्यताएं किसी आधुनिक नायक जो कि संघर्षों के बीच प्रतिदिन अपना जीवनयापन कर रहे हैं , जिसके पास उस सौंदर्य दर्शन के लिए ना तो समय है और ना ही वैसी कोई विकसित दिमागी पृष्ठभूमि. परंपरागत सौंदर्य बोध जो शास्त्रीयता के कारण साहित्यिक समझ में स्थान पाए हैं, वह उस बदलाव को पकड़ पाने में असमर्थ थे. वे उपकरण उसके लिए कोफ्त या चीड़ जैसे अविश्वासनीयता ही पैदा करने वाले हो जाते हैं.उसके लिए चांद का परंपरागत सौंदर्य काश मुंह टेढ़ाश ही नजर आता है.परंपरा से प्राप्त सच्चिदानंद उसके लिए सत्य–चित– वेदना ही बन जाते हैं .

यह आधुनिक युग की नायक की पीड़ा है कि वह अपने संघर्षों के साथ सत्य को जिस आयाम में देखता है वहां सत्य की जानकारी मात्र आनंद के क्षण उत्पन्न नहीं करते ,बल्कि उसे अव्यवस्थित करते हैं .पीड़ा देते हैं.वह नायक पहले ही अव्यवस्था का शिकार है.वह नायक सत्य के विदुर्प होते रूप के बीच सही आदर्श या परंपरागत नायक की खोज नहीं कर पाता है.यह उसके साथ बेईमानी भी है.यह उसकी अपनी समस्या नहीं बल्कि एक व्यवस्थागत सच्चाई की समस्या भी बन जाती है ,जो सीधे तौर पर उसे सामाजिक पहचान से जोड़ते हैं और उसके परिवर्तनशील राजनीतिक उपकरणों से भी.जहां व्यक्तित्व का सवाल ही संकट में खड़ा नजर आता है ,जो नायक दिन के उजाले में संभ्रांत नजर आते हैं रात के अंधेरे में अमानवीय कर्मों में लिप्त पाए जाते हैं. उनका नायकत्व की सही जानकारी के साथ ही सत्य छिन्न–भिन्न हो जाता है !तो इस संदर्भ में मुक्तिबोध के प्रेम –तत्व को हमें व्यापक दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता है.मुक्तिबोध का प्रेम– तत्व दरअसल इसी साहित्यिक सीमाओं से विद्रोह या मुक्ति की घोषणा है . साहित्यिक सौंदर्य और मनरू स्थिति की तलाश अपनी शर्तों पर करना चाहता है.

आम आदमी जिसे हम हाशिए पर पड़ा हुआ साहित्यिक व्यक्तित्व कह सकते हैं ,उस के संदर्भ में एक नए सौंदर्यशास्त्र की खोज है यह .यह खोज दरअसल बिना प्रेम–तत्व के संभव ही नहीं है प्रेम–तत्व ही वह भावना या शक्ति पैदा करता है जिसके बल पर कोई भी परिवर्तन या बदलाव संभव हो पाता है.अपने प्रेम पात्रों के भरोसे ही मुक्तिबोध अपने साहित्यिक सिद्धांत से लेकर साहित्यिक समझ और कविताओं से लेकर कहानियों तक विस्तृत रूप में सामने आते हैं.यह प्रेम– तत्व ही है जो मुक्तिबोध जैसे कवि को अनेक शास्त्रीय आलोचनाओं के बावजूद समर्थ बनाता है,और आधुनिक युग में केंद्रीय स्थान भी देता है .इसे हमें गहरे अर्थों में समझना होगा.यह प्रेम–तत्व परंपरागत शास्त्री प्रेम–तत्व से कैसे अलग है और लोकमत यहां से परिवर्तित समाज के मनरूस्थिति के बल पर किस प्रकार साहित्यिक प्रतिबद्धता को राजनीतिक उपकरणों के साथ जोड़ते हुए साहित्यिक नायक को सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर सक्रिय देखना चाहता है यह भीस्पष्ट हो पाता है.वह शास्त्रीयता का दावा कहीं–ना–कहीं आम आदमी के पक्ष में करते हुए साहित्यिक–सांस्कृतिक परिवर्तन का नायक बनना चाहता है. शास्त्रीयता या सामाजिकता से दूरी नहीं बल्कि वह अपनी शास्त्रीयता या सामाजिकता को परिभाषित होते हुए देखना चाहता है. मानवता के पक्ष में शक्ति संतुलन का उसका प्रयास गहरे अर्थ में मानवीय प्रेम है. यह प्रेम–तत्व ही है जिसके बिना ना तो परिवर्तन संभव है,ना ही विकास.

मुक्तिबोध के साहित्य में प्रेम–तत्व कुछ अपने आप में अटपटा लग सकता है ,खासकर मुक्तिबोध को जानने वाले वैसे लोगों के लिए जो उन्हें कठिन मानते हैं ,या फिर उनकी प्रतिबद्धता को एक आयामी समझ कर उनसे दूर भागते हैं.

वास्तव में साहित्य का मूल स्वर यह स्वभाविक प्रतिबद्धता ही है.उसका रहस्य सिर्फ गहरे प्रेम–तत्व में ही छिपा हुआ है. मुक्तिबोध जैसे प्रतिबद्ध कवि जो साहित्य रचना कर्म को एक राजनीतिक सुधारवादी उपकरण मानते हैं ,उनकी समझ और गहरे जुड़ाव को घोषित मार्क्सवादी प्रतिबद्धता के तहत भी समझा जा सकता है.

किसी भी चीजों से लगाव या दूरी– वह प्रतिबद्धता का प्रेम–तत्व ही तय करते हैं.प्रतिबद्धता कवि की अभिव्यक्ति कौशल में अभिव्यक्त होती

है ,यह साहित्यिक विषयों के चुनावों से लेकर उसकी समझ तक में समाहित होती है .साहित्य का कोई भी व्यक्ति जो वास्तव में साहित्यिक है वह बिना प्रेम–तत्व के साहित्यिक–समाजिक प्रतिबद्धता और जिमदारियों को ले ही नहीं सकता है.

कबीर जैसे कवि की खरी–खरी वाणी ,उनकी एक खास किस्म की प्रतिबद्धता के चलते आचार्य रामचंद्र शुक्ल उन्हें फुटकर खाते में डालते हुए, उनके कवि स्वरूप पर ही प्रश्नचिन्ह लगाते हैं.वही कबीर अपनी प्रतिबद्धता को लेकर निश्चिंत हैं, पूरी शक्ति, सामर्थ्य और संभावनाओं के साथ !

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ . पंडित भया न कोय .ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय !

प्रस्तुत निबंध में जो बार–बार प्रतिबद्धता जैसे शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है ,वह किसी मार्क्सवादी प्रतिबद्धता के समतुल्य नहीं है बल्कि शब्दावली के स्तर पर एक जिम्मेदारी–पूर्ण व्यवहार है, जो रचनाधर्मिता के लिए अत्यंत आवश्यकता है .आप संत कवियों के प्रेम तत्व को उनके रूखे उपदेशों और मानवता के प्रति गहरे लगाव से भी इसे समझ सकते हैं .

हमारे आदिकालीन कवि भी चाहे विद्यापति हो या फिर अमीर खुसरो इस प्रेम–तत्व से बच नहीं पाए हैं क्योंकि यही एकमात्र तत्व है जो किसी भी युग संदर्भों को जानने, समझने और अभिव्यक्ति कौशल का आधार भी रहा है.जैसा कि स्वयं मुक्तिबोध लिखते हैं–

यह विचार–वैभव सब ढूंढता यह,भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है
इसलिए कि पल पल में
जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है–
संवेदन तुम्हारा है !!(मुक्तिबोध)

अमीर खुसरो की कुछ रचनाओं को तो देखकर आश्चर्य होता है कि किस प्रकार गहरे प्रेम–रस में सराबोर वे व्यक्ति धर्म से अलग पूरे समाज को देखते समझते हैं.आज तक उनकी बातों को हम लोगों द्वारा बार–बार दोहराया जाता रहा है.

– छाप तिलक सब छीनी रे मोसे नैना मिलाइ के .....जैसे कव्वालियां ,आज भी मस्ती से हमें सराबोर कर देती हैं.इसके साथ ही उनमें जो प्रेम का स्वरूप है ,अपने आप में बिल्कुल गहरे अर्थ और आयाम प्रस्तुत करता है .

मंझन रचित प्रबंध काव्य मधुमालती की पहली पंक्ति है, ष प्रेम प्रीति सुख निधि के दाता

इसी प्रकार अगर रैदास को देखा जाए ,उनकी प्रतिबद्धताओं के साथ जाति व्यवस्था से उपजे कड़वाहट के बावजूद वहां भी गहरे मानवीय प्रेम– तत्व व्याप्त हैं. वे साफ–साफ लिखते हैं,

ज्ञानी ध्यान सभी हम जाने बूझो कौन सो जाए
,हम जानयौ प्रेम–रस जाने जो विधि भक्ति कराई !

यह प्रतिबद्धता साहित्य का मूल मंत्र है और इसी प्रतिबद्धता के कारण रीतिकाल के भी कुछ कवि रीतिबद्ध धाराओं से मुक्त होकर अपने अनुभव और मौलिकता के बल पर खड़े होने का साहस कर पाए, जो रीतिकाल को भी विशेष आयाम देने वाला रहा.

यह प्रतिबद्धता आपको हर एक जगह देखने को मिलती है, आधुनिक युग में, विशेष गहरी समझ और पहचान की मौलिकता के साथ .उसकी गहरी समझ और साहित्यिक स्वरूपों को समझना मुक्तिबोध जैसे सक्षम कवि के लिए तभी संभव है जब गहरे प्रेम–तत्व से वे सराबोर रहे हों,इसको इस शब्दों में भी कह सकते हैं कि मुक्तिबोध को जानने समझने का तब तक कोई भी प्रयास अधूरा है,जब तक उनके गहरे लगाव और प्रेम–तत्व को ना समझा जाए.

मुक्तिबोध अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता को एक वैचारिक आधार देते हैं , श्सहर्ष स्वीकारा हैश जैसे सीधे तौर पर प्रेम–तत्वों से संबंधित कविताएं भी वे लिखते हैं–

जिंदगी में जो कुछ है,जो भी हैं
सहर्ष स्वीकारा है ;
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है वह तुम्हें प्यारा है .
गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार–वैभव सब
दृढ़ता यह,भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है,मौलिक है
इसलिए कि पल–पल में
जो कुछ भी जागृत है अपलक है– संवेदन तुम्हारा है!!७

कविता के इन पंक्तियों से साफ पता चलता है कि मुक्तिबोध के लिए प्रेम–तत्व की समझ कितनी व्यापक और गहरे जुड़ाव से जुड़ी हुई है .यह समझ सैद्धांतिक आधार के साथ ही कवि के प्रेम संबंधों के एक रचनात्मकता के रूप में हमें समझना होगा.इसे व्यापक सामाजिक चेतना के साथ व्यक्तिगत चेतना के संबंधों के स्वरूप को हमें समझना होगा.

मुक्तिबोध युग की संवेदनाओं को समझते हुए, उसके संघर्षों को समझते हुए ,अपने साहित्य सिद्धांत को रखते हैं .साथ ही श्अंधेरे मेंश, श्ब्रह्मराक्षस श्जैसी लंबी कविताएं भी लिखते हैं.जो कविताएँ ना केवल लंबी हैं बल्कि एक ऐसा दस्तावेज है ,जो युग संदर्भ के साथ मानवीय मनोवृति में बदलाव के गहरी प्रतिबद्धता से, उसके सकारात्मक–नकारात्मक पहलुओं को ढूंढते हुए एक अनुसंधान या शोध जैसा है.मुक्तिबोध जैसे कवि अपनी हर एक कविताओं में इसी शोध या अन्वेषी दृष्टिकोण से गुजरते रहे हैं .जहां कुछ भी स्थिर नहीं है ,पल–प्रतिपल बदल रहा है, लेकिन कवि इन बदलावों के साथ मानव के भविष्य के लिए चिंतित है.एक व्यवस्था के लिए उसके भीतर की छटपटाहट दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है, वह श्अंधेरे मेंश से बाहर निकलना चाहता है और कुछ बेहतर करना चाहता है .लेकिन उसे समझ में नहीं आता है कि कहां जाऊं क्या करूं और यह श्समझ में ना आनाश प्रेम या जुड़ाव का वह रोमांटिक भय–मिश्रित मनोवृति है,जहां व्यक्ति चीजों को पकड़ना चाहता है अपने अनुसार मोड़ना भी चाहता है लेकिन परिस्थितियों के खतरों से भी वह वाकीफ है.वह निर्णय के संशय में रहता है.फिर भी अपनी प्रतिबद्धताओं और असफलताओं को लेकर उसे गर्व भी है.

उसे सफलता की कामना नहीं है ,क्योंकि संघर्षों के बीच सफलता की सच्चाइयों को जानता है ,जो सीधे तौर पर उसे

परंपरागत सौंदर्य बोध से जोड़ देते हैं. कविअपनी असफलताओं का भी उत्सव मनाने में सक्षम है क्योंकि वह जानता है कि यह नियति व्यक्तिगत नहीं बल्कि एक सामाजिक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की देन है ,जहां बहुत से लोग अपनी जिम्मेवारी से बचना चाह रहे हैं और सिर्फ सुविधा–भोगी जीवन के प्रति आकर्षित हो रहे हैं .

कहने दो उन्हें जो यह कहते हैं–
सफल जीवन बिताने में हुए असमर्थ तुम !
तरक्की के गोल–गोल
घुमावदार चक्करदार
ऊपर चढ़ते हुए जीने पर चढ़ने की
चढ़ते ही जाने की
उन्नति के बारे में
तुम्हारी ही जहरीली
उपेक्षा के कारण, निरर्थक तुम, व्यर्थ तुम .!!१
..... उन्नति के क्षेत्रों में,प्रतिष्ठा के क्षेत्रों में
मानव की छाती की, आत्मा की ,प्राणों की
सोंधी गंध
कहीं नहीं ,कहीं नहीं
–(मुक्तिबोध ,'कहने दो उन्हें जो यह कहते हैं)

समाज में जहां कर्म से नेतृत्व विमुख होगा वहां हाशिए पर पड़े लोगों की दशा दुर्दशा सौंदर्य–चेतना , पहचान की पीड़ा सभी कुछ प्रभावित होंगे.दरअसल कवि की प्रतिबद्धता उसके द्वारा चुने गए शब्दों से भी झलकती है और उस चुनाव से ही कवि के प्रेम–तत्व को आसानी से समझा जा सकता है.जैसे श्चांद का मुंह टेढ़ा हैश कविता की पंक्तियों को हम देखें साथ ही इस संग्रह की अधिकतर कविताओं को हम देखें ,जहां कवि का दृष्टिकोण है, सोचने समझने का जो तरीका है –वह आधुनिक युग के मानव की पीड़ा और वस्तुस्थिति की सच्चाइयों से गहरे तौर पर जुड़ा हुआ है .

जो चांद हमेशा से कवियों के लिए प्रेरणास्रोत रहा है ,जो प्रेयसी के सौंदर्य का प्रतीक रहा है –वही चांद मुक्तिबोध जैसे कवि को विचलित करता है .यह संघर्षरत थके–हारे हुए मजदूर का दृष्टिकोण है .फैक्ट्री के चिमनियों से निकले हुए काले धूंआ के बीच चांद भी थका हुआ टेढ़ा नजर आता है.कवि का प्रतिबंध सौंदर्यवादी चिंतन संभ्रांत और संघर्षशील जनता के दृष्टिकोणों के बीच अंतर करना चाहता है . एक थका–हारा मजदूर जो दिन भर लगातार श्रम कर सोना चाहता है, उसके पास जो सौंदर्यवादी दृष्टि है वह परंपरागत दृष्टि से अलग है .एक मजदूर और हाशिए पर पड़े व्यक्ति के लिए वह सौंदर्य वर्तमान व्यवस्था और उसकी कमियों–खूबियों से गहरे अर्थों में जुड़ा हुआ है. परंपरागत सौंदर्य और साहित्यिक समझ की दृष्टि भ्रम पैदा करते हैं.

दूसरी बातें मुक्तिबोध अंधेरे में कविता में सत्य–चित– वेदना जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं, जो वास्तव में सच्चिदानंद जैसे परंपरागत शब्दों का वैकल्पिक प्रयोग है.जो सत्य चित्त को आह्लादित आदित करता था, आनंद से भर देता था –वह आज चित्त को आह्लादित नहीं करता है ,बल्कि सत्य की जानकारी होना ही वेदना या दुखों का कारण बन जाता है.

मुक्तिबोध जैसे समर्थ कवि के लिए अनुभव की जो सच्चाई है वह परंपरागत सच्चाइयों से अलग है .वह नायक ,जो आदर्श के रूप में समाज में स्थापित है उसके नायकत्व के पीछे की सच्चाई को कवि देख कर हैरान होता है.वह नायक कितना बड़ा कारण है वर्तमान परिस्थितियों की बदहाली के लिए ,वह कवि और साहित्यिक सच्चाइयों के लिए वेदनादायक है.वह नायक अपनी शर्तों पर अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी करने को तैयार है ,उसके लिए अपना स्वार्थ महत्वपूर्ण है .

–..... ओ मेरे आदर्शवादी मन, और मेरे सिद्धांतवादी मन ,
अब तक क्या किया ?
जीवन क्या जिया !!
उदरंभरि बन अनात्म बन गए,
भूतों की शादी में कनात से तन गए,
किसी व्यभिचारी के बन गए बिस्तर,
.....अब तक क्या किया,
जीवन क्या जिया!!
.....बहुत–बहुत ज्यादा लिया,
दिया बहुत–बहुत कम ;
मर गया देश, अरे, जीवित रह गए तुम!!

जैसे काव्य पंक्तियां वही कवि कह सकता है ,जो गहरे अर्थों में, एक वृहद आयाम के साथ अपने अनुभव की कसौटी पर, आम जनता की परिस्थितियों से गुजरा हो या चोट खाया हुआ हो.

मुक्तिबोध के समय में किसी नायकत्व की तलाश इसलिए धूमिल हो जाती है कि हर एक जगह उसी तरह की संशयग्रस्त परिस्थिति नजर आती है.यह खतरनाक संशयग्रस्त मजबूरियां जो हर एक नायक के नायकत्व पर ,उसकी सच्चाइयों की खोज के क्रम में सवाल खड़े करता है ,वास्तव में आम जनता की पीड़ा है.कवि के लिए उनका जो नायकत्व है वह वर्तमान परिस्थितियों को रचने के लिए जिम्मेदार है .यह संशय का युग आम जनता की उम्मीदों को खत्म कर एक भरोसा ,एक प्रेम–तत्व एक गहरे लगाव– जिस पर नेतृत्व को खड़ा होना चाहिए, जिसके साथ राजनीति को आगे आना चाहिए ;वह उनकी चिंता कभी नहीं करता है .

दरअसल मुक्तिबोध का प्रेम–तत्व कहीं ना कहीं प्रेम पात्र या नायकत्व की खोज का वह जरिया या सच्चाई है ,जिसमें साहित्य के एक स्वरूप की पहचान है.साहित्यिक बदलाव और प्रतिबद्धता की समझ है.

आधुनिक युग में लोकतंत्र तभी खड़ा हो सकता है ,तभी सफल हो सकता है जब आम आदमी जो हाशिए पर पड़ा हुआ है उसे धोखा में ना रखा जाए .उसके सामने परिस्थितियां स्पष्ट होनी चाहिए .अगर नायक किसी मजदूर को बनाया गया है होरी, बुधनी, धनिया, गोबर से लेकर हाशिए पर पड़े आदिवासी,स्त्रीवादी, दलित रचनाओं के पात्रों या लोगों के बारे में ,उनके जीवन स्तर के बारे में सोचते हैं –तो सिर्फ साहित्यिक नायक को ही सामने लाने से काम नहीं चलेगा, बल्कि वह नायक बदलाव का सक्रिय वाहक भी होना

चाहिए .

मुक्तिबोध का प्रेम–तत्व एक सक्रियता ,विद्रोह और बदलाव चाहता है.वह नायक को किताबों से बाहर निकालना चाहता है .वह नायक जो अभी तक साहित्य में उपेक्षित था और आधुनिक युग में आकर सिंहासन पर बैठा ,सामर्थवान बना –उसको सिर्फ साहित्यिक रूप से महिमामंडित कर नायक के रूप में लिखकर समझने की जरूरत एक आयामी समझ ही है .जब तक वास्तव में अपनी व्यवस्था में संपूर्ण बदलाव, परिवर्तन की प्रतिबद्धता के साथ अपने संघर्ष, पहचान और बदलाव का वाहक बन अपने प्रेम–तत्व या लगाव के सच्चे रूपों के साथ सामने नहीं आता है .लेकिन होता बिलकुल इसके उल्टा ही हैं .वह नायक भी अपनी पहचान के लिए वर्तमान से अलग परंपरागत संस्कृति और पुरानी परंपराओं की ओर लौटने की कोशिश करता है. जबकि यह उसकी विडंबना है कि उसकी पहचान और जन्म जिस शक्ति के साथ नायकत्व के रूप में उभरा है ,वह वर्तमान समाज की देन है . अतीत और परंपरा की नहीं.मुक्तिबोध की चिंता इसी बात को लेकर है .कवि चाहता है पुराने सभी अभिव्यक्ति कौशल ,मठ और गढ़ को ध्वस्त करना.मतलब एक नई सोच, एक नए बदलाव को समाज में स्थापित करना .कवि जब कहता है कि

–अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे
उठाने ही होंगे .
तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब.
पहुंचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार

.....तो यह अभिव्यक्ति के खतरे उनके गहरे प्रेम–तत्व की समझ के साथ ही जुड़ा हुआ है.

यदि आप प्रेम करते हैं, तो विद्रोह भी करते हैं .यह प्रेम की स्वभाविकता है क्योंकि बिना विद्रोह के प्रेम की सफलता संदिग्ध रहती है . यह अपनी शर्तों पर अपनी सामाजिकता को परिभाषित करना चाहता है.एक नई दुनिया का निर्माण करना चाहता है .इस नई दुनिया के लिए फेंटेसी से लेकर मिथकीय–तत्व तक सेअपनी पहचान की खोज महत्वपूर्ण हो जाती हैं.

पुरानी परंपराएं ,पुराने ख्यालात के लोग किसी सामाजिक बदलाव में सहयोग नहीं देते हैं और मुक्तिबोध जैसा कवि सभी चीजों को नकारते हुए, एक सीमा के साथ उसके महत्वपूर्ण बातों को भी स्वीकार करना चाहते हैं और यही द्वंद्व संशयग्रस्त आधुनिक नायक के लिए भी महत्वपूर्ण बन जाता है.

कवि और उसका रचनाकार मन –एक नई सोच ,नई समाज ,नई व्याख्या ,नई पहचान के साथ सामाजिकता का ताना–बाना तैयार करना चाहते हैं .यह ताना–बाना क्या बिना प्रेम–तत्व के ,बिना गहरे लगाव के संभव है .

मुक्तिबोध के बारे में बात करते हुए ,उनकी प्रतिबद्धताओं को समझते हुए ,उनके विचारधाराओं को जानते हुए, उसके मूल में क्रियाशील प्रेम–तत्व को हम नहीं समझ पाएंगे तो यह सिर्फ मुक्तिबोध के साथ ही नहीं, बल्कि साहित्यिक समझ और विकास के साथ भी अन्याय होगा .

हम मुक्तिबोध तो छोड़िए किसी भी साहित्यकार को ,किसी भी साहित्य को उसके प्रेम–तत्व की गहरी प्रतिबद्धता को जाने बिना समझ ही नहीं सकते हैं .जैसा कि हम सभी जानते हैं, मुक्तिबोध एक जटिल समय के जटिल कवि हैं .

निष्कर्षः

जटिल समय कहने का मतलब है कि समय बहुत तेजी से परिवर्तनशील है .यह परिवर्तनशीलता की तेजी इतिहास में किसी भी समय में शायद नहीं रही है .इसका कारण है, वैज्ञानिक खोज, सभ्यताओं का एक दूसरे से बढ़ती नजदीकियां ,बदलता वैश्विक परिप्रेक्ष्य और दृष्टिकोण. वास्तव में हम जिस युग में रह रहे हैं, वहां अनेक सांस्कृति और भाषाएं विविधताओं को पाते हुए एक अलग ही परिवर्तनशील वैश्विक संस्कृति की रचना लगातार जारी है .जहां ना तो समाज स्थिर है, ना ही भाषा . दूसरी बात पर इस युग की मानवीय मनोवृति ,जिसके द्वारा साहित्य सौंदर्य और अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है उसका वैचारिक और चिंतनीय आधार भी तेजी से बदल रहा है.आज का मानव अपने अस्थिर चित्त–वृत्तियों का शिकार है.वह आदिकाल ,भक्तिकाल और रीतिकाल जैसे युग विषय से जुड़ी हुई मानवीय वृतियों और रचनात्मक कृतियों का प्रतिनिधित्व नहीं करता है .वह प्रतिक्षण बदल रहा है .वह एक साथ जिस से प्रेम करता है उससे नफरत भी कर सकता है.जिस की भक्ति में लीन है दूसरे ही क्षण उस भक्ति से विरक्ति भी हो सकता है .रस सिद्धांत और परंपरावादी अलंकार सिद्धांत के द्वारा उसकी मनरूस्थिति या रचनात्मक साहित्यिक सामाजिक समझ और सौंदर्य पर दृष्टि डालना आज संभव नहीं है .सभी कुछ परिवर्तन संकल्प, संशोधन, संशयग्रस्त हो चुका है . इन सबो के साथ प्रेम–तत्व ही है जो यह एक रचनाकार या कवि के लिए रचना के विषयों के चुनाव से लेकर अभिव्यक्ति तक से संबंधित होता है .यह प्रेम–तत्व एक व्यक्तिगत चेतना के तहत स्त्री–पुरुष के प्रेम और संबंधों तक ही सीमित नहीं है ,बल्कि एक सामाजिक चेतना से भी बंधा हुआ होता है ,जिसके परिपेक्ष्य में अन्य मानवीय और सामाजिक संबंधों के साथ सौंदर्यवादी दृष्टिकोण से लेकर वैचारिक प्रतिबद्धताओं तक के विषय समाहित हैं .यदि हम मुक्तिबोध के प्रेम–तत्व को समझ जाते हैं तो हम उनकी सौंदर्यवादी चेतना और साहित्यिक संबंधों के समझ के बदलते प्रतिमानों को भी बेहतर ढ़ंग से समझ सकते हैं.

संदर्भ ग्रंथ सूची –

।. तार सप्तक, सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, सं. व 1972

2. चॉद का मुँह टेढा है, गजाननमाधव मुक्तिबोध, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,दिल्ली, सं. व. 1985

3. भूरी भूरी खाक धूल, मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं. व. 1987

4. एक साहित्यिक की डायरी, गजानन माधव मुक्तियोध, भरतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 1980

5. नथी कविता का आत्मसंघर्ष, मुक्तिबोध, विश्व भारती प्रकाशन, नागपुर, सं. व. 1964

6. नये साहित्य का सौंदर्य शास्त्र, मुक्तिबोध, राथाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, सं. व. 1971
7. काठ का सपना, मुक्तिबोध, भारतीय ज्ञापीठ प्रकाशन नयी दिल्ली, सं. व 1967
8. सतह से उठता आदमी, मुक्तिबोध, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, सं व. 1971
9. मुक्तिबोध रचनावली भाग 1–6, सं. नेमीचंद्र जैन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति 1998
10. अंतस्तल का पूरा विप्लव अंथेरे में, सं निर्मला जैन् ,राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. व. 1996 द्वि सं । 98
11. आद्य बिंब और नयी कविता, मिश्र (कृणमुरारी), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. व. 1980
12. आधुनिक कविता की प्रवृत्तियां एवं वर्णन शैली, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा–3, सें व, 1972

रेखा कुमारी
शोध छात्रा
नीलांबर पीतांबर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर,
पलामू ,झारखंड 122101

7

प्रवासी हिन्दी कहानी की विकास यात्रा

हेमांगी साहु

सारांशः

उत्तर आधुनिकता को जिन मूल प्रवृत्तियों के लिए जाना जाता है उनमें में एक विकेंन्द्रीकरण भी है। केन्द्रीकरण के विखंडन की यह प्रवृत्ति साहित्य में भी देखने को मिली और विभिन्न विमर्श प्रचलन में आए, जैसे स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श और प्रवासी साहित्य। ''प्रवासी साहित्य'' की परिधि को निश्चित करने का कार्य करने में हिन्दी के साहित्य जगत ने ज्यादा रुचि नहीं दिखाई। आज भी विद्वान इस पर एकमत नहीं दिखाई देते कि विदेश में रचित हिन्दी साहित्य को प्रवासी साहित्य माना जाए या फिर देश की सीमा के भीतर प्रवासी व्यक्ति व्दारा प्रवास के आयामों को उद्घाटित करने वाले रचनाकर्म को भी इसमें शामिल किया जाए। हालांकि मोटी सहमति विदेश में रचित साहित्य को ही मानने पर बनती है। प्रवासी साहित्य को अक्सर मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी और त्रिनिदाद के रचनाकारों तक ही सीमित कर दिया जाता है, जबकि ऐसा नहीं है। ब्रिटेन, अमेरिका एवं कनाड़ा में भी हिन्दी रचनाकार सक्रिय हैं। प्रवासी साहित्य संबंधी तमाम गलत धारणाओं के बावजूद एक चीज़ यह देखने में आई है कि यब इसकी तरफ़ रुझान बढ़ना शुरू हुआ है। प्रख्यात आलोचक 'डॉ– कमल किशोर गोयनका'इसे इस तरह से व्यक्त करते हैं – ''हिन्दी के इस साहित्य का रंग–रूप, उसकी चेतना, संवेदना एवं सृजन–प्रक्रिया भारत के हिन्दी पाठकों के लिए एक नई वस्तु है, एक नए भावबोध एवं नए सरोकार का साहित्य है। एक नई व्याकुलता, बेचौनी तथा एक नए अस्तित्वबोध एवं आत्मबोध का साहित्य है, जो हिन्दी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नए साहित्य संसार से समृद्ध करता है।''

प्रेमचन्द हिन्दी कहानी के इतिहास में अनेक नये विषयों, सम्वेदनाओं एवं प्रवृत्तियों के उदभावक थे। उन्होने हिन्दी–उर्दू कहानी को आधुनिक बनाया, कहानी को नया शास्त्र दिया, उर्दू से हिन्दी में आकर नवोन्मेष किया, जीवन के उपेक्षित क्षेत्रों में पदार्पण किया विदेशी पात्रों की कहानियाँ लिखी और भारत में छल–कपट से भेजे गये गिरमिटिया मजदूरों के विदेश–प्रवास पर कहानी लिखी। महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में अपने प्रवास काल में वहां के प्रवासी भारतीयों के दमन, शोषण और अत्याचार के विरुद्ध जो संघर्ष किया, उसने भारत के प्रवासियों की समस्याओं एवं उनके विषम जीवन को देश की राजनीति का चिन्ता का विषय बना दिया। हिन्दी की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं –'मर्यादा' ,'प्रभा' ,'माधुरी' ,'चांद' आदि में मॉरीशस, फिजी, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में रहने वाले भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के यातनामय जीवन की कथाएं छपने लगीं। बीसवी शताब्दी के दूसरे दशक में पं– बनारसीदास चतुर्वेदी ने तीन–चार किताबें फिजी के प्रवासी भारतीयों पर लिखी तो प्रवासी भारतीयों के दुख–दर्द के प्रति भारतीयों की रूचि बढ़ी। चतुर्वेदी जी ने सन् 1918 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'प्रवासी भारतवासी'में विस्तार से भारतीय प्रवासियों के इतिहाम और जीवन की परिस्थितियों का चित्रण किया। उन्होने 'मॉरीशस' के नामकरण के सम्बंध में इस पुस्तक में लिखा –'मिर्च का मुल्क' उसका नाम क्यों पड़ा, इस विषय में एक बार 'भारत–मित्र' में लिखा था – दो–चार मिर्च खाने से तो एक मुंह ही कड़वा हो जाता है, परन्तु अधिक मिर्च खाने वाले को बड़ा कष्ट होता है और वेदना में वह छटपटाने लगता है। हिन्दुस्तानी कुलियों के साथ जो कुव्यवहार किया जाता है, वह ऐसा है कि मानो उनके चारों ओर मिर्च ही मिर्च लगा दी गयी हैं। इसलिए दारूण दुःख से दुःखी होकर ही वहाँ जाने वाले हिन्दुस्तानी कुलियों ने इस टापू का नाम 'मिर्च का मुल्क'रख दिया है।''

भारत से मॉरीशस जाने वाले स्वामी मंगलानन्द पुरी जनवरी से अक्टूबर 1912 तक मॉरीशस रहे और उनका मॉरीशस पर एक लेख 'मर्यादा' के 3 जुलाई,1912 के अंक में छपा और उन्होंने लिखा –''5 जनवरी,1912 को कलकत्ते से कूच करके इस टापू में जिसे मॉरीशस या हमारे देशी लोग मिरिच का टापू कहते हैं, आ गया हूँ। यहा आये हुये मुझे लगभग दो मास होते हैं।''

हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कथाकार प्रेमचन्द इस मिरिच देश के अस्तित्व से पूर्णतः अवगत थे। 'गोदान' में जब गोबर, झुनिया के चक्कर में घर से भागता है और जब घर लौटता है, तो धनिया उससे कहती है–'इस तरह कोई घर से भागता है? कोई कहता था मिरच भाग गया, कोई उसका टापू बताता था। सुन–सुन कर जान सूखी जाती थी। कहाँ रहे इतने दिन।' प्रेमचन्द्र उसी क्षेत्र में जन्में थे और निवासी थे, जहां से सैकड़ों–हजारों लोग मिरच देश चले गये थे और इस प्रकार मिरच भागना लोक जीवन में कहावत बन गयी थी। प्रेमचन्द्र अफ्रीका में बसे भारतीयों की दुर्दशा और नियति से भी अवगत थे, अन्यथा 'दो बैलों की कथा' कहानी के प्रारंभ में वे यह अंश नहीं लिखते, ''भारतवासियों की अफ्रीका में क्यों दुर्दशा हो रही है? क्यों अमेरिका में उन्हें घुमने नहीं दिया जाता? बेचारे शराब नहीं पीते, चार पैसे कुसमय के लिये बचाकर रखते हैं। जी तोड़ काम करते हैं। किसी से लड़ाई–झगड़ा नहीं करते। चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं, फिर भी बदनाम हैं। कहा जाता है, वे जीवन के आदर्श को नीचा करते हैं। अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते तो शायद सभ्य कहलाने लगते। जापान की मिसाल सामने है। एक ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया।'' प्रेमचन्द की इस प्रवासी चेतना तथा सरोकार का एक सुखद परिणाम यह हुआ कि उन्होंने मॉरीशस जाने वाले भारतीयों के जीवन पर एक कहानी 'शूद्रा' लिखा जो 'चांद' पत्रिका के प्रवासी अंक जनवरी,1926 में प्रकाशित हुई थी। एक तो

'चांद' पत्रिका का प्रवासी अंक निकलना ही महत्वपूर्ण था जो इसका प्रमाण था कि हिन्दी साहित्यकार तथा पत्रिका–सम्पादक भारत के प्रवासियों के प्रति कितने सम्वेदनशील थे और दूसरे प्रेमचन्द जैसे हिन्दी–उर्दू के विख्यात कहानीकार का इस विषय में कहानी लिखना तो और भी महत्वपूर्ण था। 'शूद्रा'प्रवासी भारतीयों पर लिखी गयी हिन्दी की पहली कहानी थी, जो प्रेमचन्द जैसे राष्ट्रीय कहानीकार के द्वारा लिखी गयी है। प्रेमचन्द के जीवन काल में उनकी रचनाएँ एवं ख्याति मॉरीशस पहुंच चुकी थी। इसकी जानकारी हमें 'दुर्गा'–1935–38,हस्तलिखित पत्रिका तथा 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' के अंकों में पता चलता है। इस हस्तलिखित पत्रिका से ज्ञात होता है कि 'चांद','माधुरी','प्रभा','हंस' आदि हिन्दी पत्रिकाएं तथा साहित्य मॉरीशस पहुंचता था।

प्रेमचन्द्र जब 'शूद्रा' लिख रहे थे तब उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि मॉरीशस में उनके पाठक हैं, प्रशंसक हैं और उन्हें वे भारत का सर्वश्रेष्ठ कथाकार मानते हैं। प्रेमचन्द 'शूद्रा' कहानी की रचना से भारत में अपने पाठकों को मॉरीशस गए भारतीयों की त्रासदी से अवगत करा रहे थे और मॉरीशस के प्रति उत्सुकता भी जाग्रत करते थे। उन्होंने मॉरीशस का, जिसे कुछ लोग मारीच से भी जोड़ते हैं, बड़ा वास्तविक वर्णन किया है और वहाँ गये भारतीयों को अपने देशी संस्कारों के साथ जीवित रहने और संघर्ष करते दिखाया है। प्रेमचन्द का आदर्शवाद इस कहानी में भी है। 'शूद्रा' कहानी भारतीय जीवन–मूल्यों को रेखांकित करती है और इससे प्रवासी जीवन पर लिखे साहित्य की शुरुआत होने पर इस साहित्य–धारा का महत्व बढ़ता है।

प्रवासी कहानीकार अनायास ही तुलना करता जाता है। ऐसा होना स्वाभाविक भी है, क्योंकि वर्तमान और स्मृति का अनिवार्य मेल के साथ वह जीता है। उसका वर्तमान चाहे विदेशी सभ्यता और परिवेश हो परंतु स्मृतियों में तो भारतीय सभ्यता ही महकती है। ऐसे में यह प्रवृत्ति प्रवासी कहानियों में दृष्टिगोचर होना स्वाभाविक ही लगता है। प्रवास के शुरुभात में प्रवासी रचनाकारों का जो चित्त स्मृतियों से आच्छादित रहता है, वह नए परिवेश के प्रति भी चिंतन–मनन करने लगता है और उनकी रचनाओं में इससे गुणात्मक अःतर पैदा होता है। इसे आचार्य शुक्ल की पंक्ति के माध्यम से समझा जा सकता है यथा–''साहित्य किसी देश की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है।'' प्रवासी साहित्यकारों की बदली हुई परिस्थितियां उनके मनः स्थिति को बदलती है और इसका प्रभाव उनके साहित्य में पूर्ण रूप से पड़ता है।

इसे डॉ– हरिसुमन विष्ट ने इस तरह विश्लेषित किया है–''प्रवासी कहानीकारों की प्रारंभिक कहानियां भारतीय कहानीकारों की भांति ही अपने गाँव, प्रदेश, मिट्टी की गंध लिए होती थी। धीरे–धीरे नई परिस्थितियों से जुड़ने के साथ–साथ उनके विचारों–सोच में बदलाव आया और उन्होंने उसी तरह की कहानियां लिखनी शुरू कर दी।–––––– आज उनकी कहानियों में नॉस्टेल्जिया कम, आधुनिकता की बयाल में मॉल कल्चर, उग्रवाद, वैश्वीकरण से बदली जीवन–शैली का प्रभाव ज़्यादा देखने को मिल रहा है।'' तेजेन्द्र शर्मा कृत 'कब्र का मुनाफा' इसी तरह की कहानी है, जो अपने समय और परिवेश की नब्ज़ को पकड़ती है।

प्रवासी कहानी की विशेषता पाठकों को नए संसार से परिचित कराने में निहित है। हम अपनी–अपनी दुनिया में रहते हुए बाहर की चीजों के बारे में बहुत सी मिथ्या धारणाएं बना लेते हैं, जिन्हें खंडित कर प्रवासी साहित्य वास्तविकता से साक्षात्कार करता है। 'सुधा ओम ढींगरा' की कहानी 'सूरज क्यों निकलता','महेन्द्र दवेसर' व्दारा रचित 'सोना लाने पी गए' और जकिया जुबैरी कृत 'मन की साँकल' आदि कहानियाँ अति भौतिक होते परिवेश से रिश्तों में बढ़ती संवेदनहीनता को रेखांकित करती है। प्रवासी कहानियाँ इस तथ्य की ओर भी संकेत करता है कि भिन्न–भिन्न संस्कृतियों में पले–बढ़े होने के बावजूद मनुष्य के मन की क्षुद्रताएँ बहुत बार एक–सी होती हैं। 'डॉ– पद्मेश गुप्त' की कहानी 'तिरस्कार' अपने पूर्वार्ध में भारतीय परिवेश और उत्तरार्ध में यूरोपीय परिवेश के माध्यम से यह स्पष्ट करती है।

प्रवासी कहानियों में दो भिन्न तरह की अद्भुत कहानियाँ है 'तेजेन्द्र शमी' कृत 'मुझे मार डाल बेटा' और 'स्नेह ठाकुर' द्वारा रचित 'प्रथम डेट'। यह दानों कहानियाँ आपसी प्रेम और करुणा की कहानी है। हिन्दी कहानियों में इस प्रकार की विषयगत विविधता की कमी महसूस की जाती रही है और इसी की पूर्ती प्रवासी हिन्दी कहानियाँ कर रहीं है।

निष्कर्ष

हिन्दी में प्रवासी साहित्य अब एक विशिष्ट साहित्य–धारा बन गयी है। और वह अब हाशिये मे हटकर मुख्य धारा का अंग बन गयी है। प्रवासी साहित्य की संवेदना, जीवन–दृष्टि और सरोकार सभी हिन्दी साहित्य की मुख्यधारा से भिन्न हैं। इसमें मौलिकता है और विशिष्टता है। प्रवासी कहानी अपनी तमाम कमजोरियों के बावजूद अपने बढ़ते क्षेत्र, विषयगत विविधता, पूर्वाग्रहों को तोड़ दुनिया की हकीकतों से रू–ब–रू कराने के लिए और गैर–हिन्दी परिवेश एवं भिन्न स्थितियों में भी हिन्दी साहित्य से लगाव के प्रमाण के रूप में पठनीय एवं संग्रहणीय है। धीरे–धीरे इसके प्रति साहित्यिक जगत के बढ़ते रुझान से उज्ज्वल भविष्य की आस ठहरती है। प्रवासी साहित्य के विशेष विचारधारा से ग्रसित होने की बात सही नहीं है। भारतीय मूल्यों के संम्पूर्ण संक्रमण को विश्लेषित करने तथा प्रवासी मूल्यों के कारण हिन्दी साहित्य में आ रही नई प्रवृत्तियों को समझने की दृष्टि से प्रवासी कहानियों का महत्व बहुत ज्यादा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सं –तेजेन्द्रशर्मा ,देशांतर–प्रवासी भारतीयों की कहानियाँ ,हिन्दी अकादमी प्रकाशन,प्रथम संस्करण,पृष्ठ संख्या – 13

2. स्वामी मंगलानन्दपुरी,मर्यादा –पत्रिका अंक 3 ,जुलाई1912
3. प्रेमचन्द,श्री–आर–बीसिंह,गोदान,विश्वभारती प्रकाशन, नया संस्करण–2013, पृष्ठसंख्या– 190
4. प्रेमचन्द,मान सरोवरखण्ड 2–दोबैलों की कथा ,अरुण प्रकाशन ,दिल्ली, संस्करण – 1998,पृष्ठसंख्या– 109
5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,हिन्दी साहित्यका इतिहास, कमल प्रकाशन,नवीनतम संस्करण,पृष्ठ संख्या – 15

हेमांगी साहु
श्रीकोरूआँ
पोस्ट– उराली
वाया–गोपालपुर
पी– एस – सदर
जिला – कटक
ओड़िसा
पिन–753011
संपर्क –9178990695

8

नामवर सिंह और उनका छायावाद

डॉ0 सीमा चौधरी

सारांशः

डॉ0 नामवर सिंह हिन्दी आलोचना के एक समर्थ हस्ताक्षर है। 'छायावाद' उनकी प्रथम मौलिक आलोचनात्मक कृति है। इस कृति में उन्होंने छायावाद की काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए उसमें निहित सामाजिक यथार्थ का उद्घाटन किया है। यहाँ उन्होंने छायावाद के उदय से लेकर उसकी तर्क संगत परिणति तक, पूरे विकास क्रम को उद्घाटित किया है। 12 अध्यायों में विभक्त 'छायावाद' नामक कृति में विभिन्न छायावादी कवियों के काव्य पंक्तियों के टुकड़ों को ही शीर्षक के रूप में उपयोग किया गया है। विवेच्य विषयों को सूचित करने का यह अनूठा प्रयास नामवर सिंह ने किया है। आलोचक नामवर सिंह इसमें गुण से नाम की ओर बढ़े हैं। उन्होंने पहली बार इस वैज्ञानिक तथा निगमनात्मक ढंग से किसी वाद पर लेखनी चलाई है। इस कृति में छायावाद की विभिन्न विशेषताओं, रचनाओं, रचनाकारों का विधिवत विवेचन नामवर सिंह ने किया है।

डॉ0 नामवर सिंह की पहचान हिन्दी आलोचना के एक महत्वपूर्ण मार्क्सवादी आलोचक के रूप में हैं। उनकी प्रथम मौलिक आलोचनात्मक पुस्तक है 'छायावाद'। सर्वप्रथम यह सरस्वती प्रेस बनारस से प्रकाशित हुई, फिर राजकमल प्रकाशन से। इस पुस्तक में उन्होंने छायावाद के उदय से लेकर उसकी तर्कसंगत परिणति तक, पूरे विकास क्रम को स्पष्ट किया है। उनकी वाग्मितापूर्ण आलोचना में एक प्रकार का कवितापन है, जो इस पुस्तक में उभरकर सामने आया है। अध्यायों के शीर्षक के चुनाव में उन्होंने कवित्वपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है। जिससे यह पुस्तक आलोचनात्मक एवं सर्जनात्मक दोनो रूपों में पाठकों के समक्ष आती है।

'छायावाद' पुस्तक का पहला शीर्षक है 'प्रथम रश्मि'। 'प्रथम रश्मि' में डॉ0 नामवर सिंह ने अपनी पुस्तक 'छायावाद' के प्रकाशन के पूर्व हिन्दी में छायावाद से संबंधित जितने आलोचनात्मक निबंध लिखें, उनका उल्लेख किया है। सर्वप्रथम उन्होंने श्री शारदा (जबलपुर) से प्रकाशित, मुकुटधर पाण्डेय की चार निबंधों की लेखमाला का उल्लेख किया है। 1920 ई0 में हिन्दी में छायावाद शीर्षक से छपी लेखमाला की विस्तृत चर्चा कर नामवर सिंह इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि – "मुकुटधर जी की सूक्ष्म दृष्टि ने छायावाद की मूलभावना आत्मनिष्ठ अंर्तदृष्टि को पहचान लिया था।"[1] इसके बाद वे 1921 ई0 में 'सरस्वती पत्रिका' में प्रकाशित सुशील कुमार के संवादात्मक निबंध 'हिन्दी में छायावाद' का परिचय कराते हैं, जो उनके अनुसार व्यंग्यात्मक है तथा जिसमें छायावादी कवियों में अभिव्यक्ति की अस्पष्टता को लेकर व्यंग्य किया गया है। आगे 1927 ई0 में सरस्वती में प्रकाशित आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'आजकल के हिन्दी कवि और कविता' का उल्लेख है। इस निबंध में आचार्य द्विवेदी छायावाद के अंग्रेजी मिस्टिसिज्म पर विचार कर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि – छायावाद से लोगों का क्या मतलब है कुछ समझ में नहीं आता। शायद उनका मतलब है कि "किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्य जाकर पड़े तो उसे छायावादी कविता कहना चाहिए।"[2] दो साल बाद 1929 ई0 में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का 'काव्य में रहस्यवाद' निबंध पुस्तक के रूप में निकला। इस निबंध के संबंध में डॉ0 नामवर सिंह का मत है कि– इसमें शुक्ल जी ने छायावाद का केवल आध्यात्मिक कविताओं को अपने दृष्टि पथ में रखा। छायावाद को वह शैली मानते थे जिसमें अन्योक्ति के अतिरिक्त भी कई प्रकार की शैलियों का समावेश था। अंग्रेजी के मिस्टिसिज्म के पश्चात् आए शब्द रौमैंटिसिज्म का हिन्दी अनुवाद आचार्य शुक्ल ने 'स्वच्छन्दतावाद' किया। श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी इत्यादि को वे स्वच्छन्दतावादी मानते थे। इस प्रकार नामवर सिंह ने स्वच्छन्दतावाद और छायावाद में अंतर करने का श्रेय आचार्य शुक्ल को दिया। फिर वे जयशंकर प्रसाद तथा नंददुलारे वाजपेयी के रहस्यवाद एवं आध्यात्मिक छायावाद पर दृष्टि डालते हैं। शांतिप्रिय द्विवेदी, महादेवी वर्मा एवं डॉ0 नगेन्द्र की 'छायावाद स्थूल के विरूद्ध सूक्ष्म का विद्रोह है।' को डॉ0 नामवर सिंह अव्याप्ति दोषपूर्ण कथन मानते हैं।

ऊपर के सभी विद्वानों के मतों का अवलोकन करने के पश्चात् नामवर सिंह कहते हैं– "सुशील कुमार की अस्पष्टता, मुकुटधर की आध्यात्मिकमा, आचार्य द्विवेदी का रहस्य, शुक्ल जी की आध्यात्मिकता छायाभास, वाजपेयी जी का अध्यात्मिक छाया का भान और नगेन्द्र का 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' सक एक– से ही चिंतन–क्रम में है।"[3] इस प्रकार उन्होंने छायावाद के विकास में द्विवेदी–युग के योगदान को बारीक दृष्टि से पकड़ने का प्रयास किया है।

'छायावाद' की भूमिका में उन्होंने छायावाद के अध्ययन की अपनी दृष्टि व उद्देश्य को बड़े साफ शब्दों में व्यक्त किया है– "यह निबंध छायावाद की काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए छायाचित्रों में निहित सामाजिक सत्य का उद्घाटन करने के लिए लिखा गया है।"[4] अपने इसी उद्देश्य को सफल बनाने का प्रयास करते हुए वे आगे छायावाद की उदार दृष्टि से संतुलित व्याख्या करते हैं। सर्वप्रथम रहस्यवाद, छायावाद तथा स्वच्छंदतावाद का अंतर स्पष्ट करते हुए वे रहस्यवाद को अज्ञात की जिज्ञासा, छायावाद के चित्रण

की सूक्ष्मता एवं स्वच्छंदतावाद को प्राचीन रूढ़ियों से मुक्ति की आकांक्षा के रूप में देखते हैं। उनका कथन है– "जब युग विशेष की काव्यधारा के संबंध में इन शब्दों पर विचार किया जाता है तो रहस्यवाद, छायावाद और स्वच्छंदतावाद तीनों एक ही काव्यधारा की विविध प्रवृत्तियाँ मालूम होती है।"[5] कवि पंत की कविता 'मौन निमंत्रण' का उदाहरण देकर वे समझाते हैं कि किस प्रकार इस एक ही कविता में 'अज्ञात की जिज्ञासा' के कारण रहस्यवाद, अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता के कारण छायावाद और कल्पना–लोक में स्वच्छंद विचरण करने के कारण स्वच्छंदतावाद भी है। वे कहते हैं – "छायावाद शब्द का अर्थ चाहे जो हो परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से यह प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी की इन समस्त कविताओं का द्योतक है, जो 1918 से 36 ई0 के बीच लिखी गई।"[6]

वैयक्तिक अभिव्यक्ति और प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण के मामले में छायावादी कवि किस प्रकार भिन्न है, इसका संतुलित विवेचन भी नामवर सिंह द्वारा किया गया है। भक्तिकाल के संत कवियों की वैयक्तिक अभिव्यक्ति और आधुनिक युग की वैयक्तिक अभिव्यक्ति की तुलना करते हुए उन्होंने बताया है कि किस प्रकार पहले भक्तों में आत्मनिवेदन प्रमुख था और उस पर भी धर्म का आवरण चढ़ा रहता था। इसी प्रकार रीतिकालीन कवियों के लिए भी निजी प्रणय संबंधों को व्यक्त करना मुश्किल था इसलिए उनका राधा – कन्हाई की ओट लेना अनिवार्य लगता था। पर छायावाद में इस बंधन को अस्वीकार कर सीधे प्रणय भाव को व्यक्त किया गया। पर जिस छायावाद को वैयक्तिक अभिव्यक्ति के लिए इतना खुला व निस्संकोची बताया गया है, वहीं पर महादेवी वर्मा की कविताओं में रहस्यवाद भी है। इस अंतर्विरोध की ओर संकेत करते हुए वे लिखते हैं – "सामाजिक रूढ़ियों के प्रहार की आशंका से कवि को वैयक्तिक अनुभूति के लिए रहस्यवाद का आश्रय लेना पड़ा, स्थूल धार्मिक आवरण तो वे ले नहीं सकते थे लेकिन ऐहिक वैयक्तिकता की क्षुद्रता से बचाने के लिए रहस्यात्मकता के उर्ध्व आसन पर प्रिय को बैठाना पड़ा।"[7]

प्रकृति के प्रति पुराने कवियों के दृष्टिकोण से छायावादी कवियों की अनुभूति कितनी भिन्न थी। इस बारे में नामवर सिंह ने विवेचन करते हुए नए ढंग से सोचने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने कालिदास के प्रकृति चित्रण के बारे में लिखा है कि उनकी रचनाओं में प्रकृति किसी कथा – प्रसंग का अंग बनकर आती है। स्वतंत्र रूप से उसकी सत्ता का वर्णन प्रायः नहीं किया जाता है। मेघदूत का मेघ केवल विरह निवेदन के लिए प्रयोग किया जाता है। जबकि कुमार संभव में हिमालय का विस्तृत वर्णन भी कथा प्रसंग के अंतर्गत ही होता है। मध्ययुग के कवियों के लिए प्रकृति से अधिक महत्वपूर्ण अध्यात्म व ईश्वर है। इसी तरह रीति काल के कवि भी प्रकृति को गौण मानते हैं और उसका वर्णन मात्र अप्रस्तुत विधान अथवा उद्दीपन के रूप में करते हैं। पर नामवर सिंह के ही शब्दों में – "छायावाद युग ने प्रकृति को इतना महत्व दिया कि किसी अपरिचित और नन्हे से फूल को भी स्वतंत्र रूप से एक कविता का विषय बना दिया। अकेली एक ओस की बूंद पर भी पूरी कविता लिखी जा सकती है जिसमें किसी और चीज का दखल न हो।"[8]

नामवर सिंह छायावाद की विभिन्न प्रवृत्तियों जैसे आत्मप्रसाद स्वाधीनता, प्रकृति व स्त्री के प्रति आकर्षण, कल्पना व भावुकता का गहरा आवेग, सभी को अलग – अलग करके देखने के बजाय उनके मध्य फैले एक ही अंतःसूत्र पर बल देते हैं। उनका मानना है कि भावावेग के कारण छायावादी कवियों की गंभीरता घटी है, पर साथ ही यह भी कहा है कि इससे उन्हें वह संवेदनशीलता मिली, जिसने जीवन और जगत को समझने की शक्ति प्रदान की। उन्होंने रीतिकालीन कविता के अलंकार विधान और छायावाद के प्रतीक अलंकार विधान के बीच तुलना भी इसी आधार पर की है।

रीतिकालीन काव्य में जीवन के संकुचित दायरे और संकीर्ण भावों के कारण अलंकारों की रूढ़ि का पालन है तो दूसरे के यहाँ उन अलंकारों के प्रयोग के पीछे भिन्न किस्म की रूचि व सौंदर्य भावना है। इसी भिन्नता ने छायावादी काव्य को अधिक चित्रात्मक और रूप–विन्यास के स्तर पर अधिक प्रयोगशील भी बना दिया।

नामवर सिंह ने छोटे से अध्याय में छायावादी कवियों की भाषा, अलंकार विधान, छंद–विधान और बिंब–विधान पर अपने विचार रखे हैं, यह अध्याय छायावादी कविता की अपने से पूर्ववर्ती और पूरवर्ती कविता से भिन्नता को हमारे सामने बिल्कुल स्पष्ट कर देती है।

निष्कर्ष :–

छायावाद की संपूर्ण व्याख्या के उपरांत नामवर सिंह अंततः उसे समाज से कटे व्यक्ति का काव्य घोषित करते हैं और उनके अनुसार यह प्रवृत्ति छायावाद के पतन का कारण बनी। इस प्रकार नामवर सिंह ने छायावाद पर जो लिखा उसका उद्देश्य किसी को स्थापित करना या किसी को खारिज करना नहीं था। उन्होंने नितांत ईमानदारी पूर्वक, अस्पष्टता और जोखित लेते हुए छायावाद की कमियों और विशेषताओं पर समान बल दिया है। जहाँ उनसे चीजे स्पष्ट नहीं हुई है, वहाँ वे सायास किसी तरह का निष्कर्ष देने से बचे हैं। इस प्रकार नामवर सिंह ने छायावाद का यथार्थपरक मूल्यांकन कर 'छायावाद' पुस्तक के रूप में साहित्य को एक बहुमूल्य उपहार दिया है।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. नामवर सिंह, छायावाद, राजमकल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2010, पृ0–12
2. महावीर प्रसाद द्विवेदी, 'सरस्वती' पत्रिका, मई– 1927
3. नामवर सिंह, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2010, पृ0–15
4. नामवर सिंह, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2010, भूमिका
5. नामवर सिंह, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2010, पृ0–16
6. नामवर सिंह, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2010, पृ0–16
7. नामवर सिंह, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2010, पृ0–21
8. नामवर सिंह, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2010, पृ0–40

डॉ0 सीमा चौधरी

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,

मारवाड़ी महाविद्यालय,

राँची विश्वविद्यालय, राँची

झारखण्ड, पिन– 834001

मो0 – 9905574405

9

आधुनिक संताली भाषा

शम्भुनाथ सोरेन

सारांशः

आधुनिक काल में संताली उन्नति होती नजर आ रही है। प्रेस, समाचार पत्र, विज्ञान आदि के प्रचार में खासकर गद्य और पद्य में बढ़ता गया, इसमे शुद्धता एवं एकरूपता आती गई, अब रूप की दृष्टि से अपने पैरों पर खड़ी होती जा रही है। इधर अंग्रजी, हिन्दी बंगला, शब्द अधिक आये और भाषा में घुल–मिल गए हैं। कारण संस्कृति उत्थान तथा गाँवों की आंचलिक शब्द और मुहावरे साहित्यिक के अंग बनने लगे हैं। आजादी के बाद परिभाषित शब्दों की आवश्यकता हुई, अनेक अंतराष्ट्रीय शब्द अपनाये जा रहे हैं, नये शब्द बनाये जा रहे हैं तथा भारत के अन्य भाशाओं से शब्द ग्रहण किये जा रहे हैं। अब तक यह भाषा पत्र–व्यवहार, समाचार पत्र एवं साहित्यिक भाषा हो गई है। यह भाषा विकास होती नजर आ रही है।

विषय : संताली भाषा समाजिक एवं धार्मिक भाषा के रूप में आश्रय प्राप्त करके साहित्यिक बन गई है। उसकी विकास की प्रक्रिया बहुत धीमी है। कहने का तात्पर्य यह है कि आधुनिक काल में संताली की अनेक कवि और लेखक हुए हैं किसी भाषा में नित्य नये शब्दों, वाक्यों का आगमन होता रहता है और पुराने शब्द टुटते मिटते रहते हैं। हम जानते हैं कि हर भाषा का अपना प्रभाव हुआ करता है। हर आदमी की अपने–अपने हिसाब से भाषा पर पकड़ होती है और उसी के अनुसार वह एक दूसरे पर प्रभाव डालता है। जब पारस्परिक सम्पर्क के कारण एक भाषा से दूसरी भाषा पर असर पड़ता है, तब निश्चित रूप से शब्दों का आदान–प्रदान भी होता है।

''आधुनिक कुछ भाषाविदों तथा मानव वैज्ञानिक के मतानुसार संताली भाषा अग्निकुट परिवार की महत्वपूर्ण भाषा है। आग्नेय भाषा भारत के आदिवासियों की सबसे बड़ी शाखा है।''1 आस्ट्रो – एशियाटिक परिवार के भाषाओं में केवल संताली भाषा को संविधान के आठवीं अनुसूची में स्थान प्राप्त है। यह भाषा संविधान में ''92 वाँ संविधान संसोधन अधिनियम 2003 द्वारा आठवीं अनुसूचि में संसोधन कर के चार अन्य भाशाओं को जोड़ दिया गया है।''2 इन चार भारतीय भाषाओं में क्रमशः संताली, डोंगरी, मैथिली और बोडो भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूचि में शामिल कर लिया। भाषा का संविधान आठवीं अनुसूचि में शामिल किया जाना प्रतिष्ठा की ही बात नही है बल्कि इससे भाषा के विकास की भी संभावना काफी बढ़ जाती है और उसके कार्य क्षेत्र का प्रसार हो जाता है। इससे बोलने वालों को अच्छे वेतन वाली नौकरियाँ पाने में सहायता मिलती है। भाषाओं के विकास के लिए काफी बड़ी रकमें नियुक्ति की जाती हैं। प्रेस प्रकाशन व्यवसाय, सिनेमा उद्योग, और रेडियो प्रसारण की समस्याओं पर विचार करते समय सबसे ज्यादा ध्यान इन भाषाओं में प्रकाशनों, फिल्मों और रेडियो प्रसारणों की ओर दिया जाता है। आठवीं अनुसूचि में उल्लेखित भाषाओं में सर्वोत्तम बालोपयोगी पुस्तकों साक्षरता अभियान के शिक्षा साधनों और पाठ्य पुस्तकों तथा साहित्य कृतियों पर नियमित रूप से पुरस्कार प्रदान कये जाते हैं। भाषाओं की इस सूचि का राजनैतिक महत्व भी है। दूसरे शब्दों में इन भाषाओं को अन्य भाषाओं की तुलना में स्पष्ट विशेषाधिकार प्राप्त हैं। इससे हम कह सकते हैं कि भाषा के विकास में संविधान की आठवीं अनुसूची में किसी भाशा को सम्मिलित करने से एक विशेष महत्व रखता है। संविधान में जिन भाशाओं को शामिल किया है, सरकार ने उन भाषाओं के विकास के मार्ग को भी खोल दिये है।

''यद्यपि देश काल के अनुसार उन्नसवीं सदी से अब तक इस भाषा को बंगला, देवनागरी, उड़िया रोमान और ओल चिकि लिपियों में लिखा जाता रहा है। फिर भी भाषा का विकास उल्लेखनीय रूप से हुआ है।''3 संताली भाषा को पाँच लिपियों में लिखा जाता रहा है, फिर भी वर्तमान साहित्य का सजन और विकास होता रहा है। शायद ही दुनिया में ऐसा उदाहरण मिलेगा कि एक भाषा को पाँच लिपियों में लिखा जाता रहा हो और उस भाषा का साहित्य निरंतर विकसित होता रहा है।

आधुनिक समय में बहुत लोग संताली भाषा बोलते हैं। संताली भाषा मुण्डारी शाखा का महत्वपूर्ण भाषा है। संताल, मुण्डा और हो जनजाति एक प्रकार के व्याकरणीय ढांचा के साथ एक ही प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं।

''सर्वप्रथम अंग्रेज विद्वानों द्वारा संताली भाषा पर अनेकानेक अनुसंधान कार्य हुए उन्होने संताली में अनेक किताबें प्रकाशित करवाई। अंग्रेजों द्वारा जो भी कार्य हुए, उन्हें पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। लेकिन आधार ग्रन्थ के रूप में इनकी उपयोगिता से इंकार नही किया जा सकता। संताली भाषा साहित्य और संस्कृति पर काफी गुंजाईश है।''4 किसी भी भाषा के विकास में उस भाषा की सांस्कृतिक क्षेत्र में भाषा का उपयोग और महत्व क्या है ?देश स्वाधीन होने के बाद से संताली भाशा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। झारखण्ड, पश्चिम बंगाल और उड़िसा राज्यों में संतालों की आबादी बहुतायत है। संतालों द्वारा अनेक सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्थाएँ संचालित है। कई संताली फिल्में तैयार की गई हैं। आदिवासी जीवन में लोगों की काफी आशा और आकांक्षाएँ हैं। संतालों नें मुख्यतः भाषा, संस्कृति और अस्मिता की लड़ाई थी। चूँकि समाज का पहचान संस्कृति के आधार पर ही होता है, समाज के लेखकों ने संताली संस्कृति को स्पष्ट करने के लिए उसके संस्कार, व्रत, पर्व एवं त्योहार, नृत्य संगीत आदि विविध पक्षो की विशिष्टता पर अध्यायवार लेखनी चलाई है। संतालो में कला,

साहित्य एवं संस्कृति का एक अपना ही गौरवशाली इतिहास है। संताल जाति के लोग प्रकृति से गहरे रूप से जुड़े हैं। संतालों के गीतों से प्रकृति की सौंन्दर्य अनुभूति होती है। पहाड़ों और जंगलों से जुड़े जीवन प्रकृति की सहज अनुभूति के लिए उन्मुक्त है। संतालों के लोक गीत उनके जीवन शैली और सांस्कृतिक धारा की निरंतरता का दर्पण है।

संताली भाषा अब देश के संताली लेखक भी अन्य भाशाओं के लेखकों जैसे भूमिका हाशिल कर चुके हैं। संताली भाशा का व्यवहार विदेश में भी बहुत से लोग ग्रहण कर रहे हैं। आज कल बहुत सारे लोग इस भाशा के महत्व से अवगत हो चुके हैं। अब संताली भाशा में भी बहुत सारे कार्य होते जा रहे हैं, दिनों–दिन इस भाषा की अन्य विकसित भाषाओं जैसे मानक रूप प्राप्त कर सकी है। संताली भाषा मानक होने के साथ– साथ देश के अन्य कई राज्यों में भी द्वितीय राज्य भाषा के रूप में सम्मान प्राप्त कर चुका है। इस भाषा में वर्तमान में बहुत सी कार्य करने की आवश्यकता है। इस भाषा को लोगों के बीच में बहुत ही सहजता से प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है। संताली भाषा के माध्यम से लोगों में मध्यकाल के अनुरूप लिखित साहित्य का सृजन हो रहा है। मध्यकाल से ही संताली में कहानी, गीत, संगीत काव्य, उपन्यास, नाटक आदि सृजित हो रहा है।

संताली भाषा के साहित्यिक महत्व भी दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है क्योंकि इस भाषा में अनेक प्रकार से महत्व तत्वों विद्यमान है, अन्य भाषाओं से भी अनुवाद करके अपनी गिनती संख्या बढा़ रही है। देश–विदेश मे अच्छे कार्यों का भी संताली में अनुवाद कार्यशाला प्रारम्भ हो गया है। संतालों के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कशतिक मूल्यों को बनाये रखने के लिए भी भाषा और साहित्य का होना आवश्यक है। भाषा और साहित्य के बिना सामाजिक धार्मिक और सांस्कशतिक मूल्यों को बचाया नहीं जा सकता।

अतः शिक्षा एवं सिखने की आशा पनपता है और उदेश्य् विहिन ग्रहण करने का तात्पर्य जीवन में दुख ही महसुस होता है। संताली भाशा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने की अति आवश्यकता है। शिक्षा की महत्वपूर्ण विशय को विकास कराना एवं लिखित माध्यम से भी संताली भाशा और अनुसंधान माध्यम से भी संताली भाशा को मान्यता प्राप्त है। अब ज्यादा से ज्यादा टेक्निकल ईजुकेशन की जरूरत है क्योंकि विश्व स्तर पर समाज को परिचय देने की जरूरत है। संताली भाषा को प्राथमिक विद्यालय से विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा आदान–प्रदान की मान्यता दी गई है।

सब समाज में ही उच्च कोटी के दार्शनिक होते हैं और सब प्रकार के समस्याओं को विस्तृत रूप से देखते हैं या तो उन समस्याओं पर विचार करते हैं। मानव जीवन में शिक्षा एक महत्वपूर्ण सम्पत्ति है। आधुनिक उन्नतशील युग है, इस उन्नतशील युग में यदि भाशा और साहित्य को छोड़ दिया जाए तो एक निश्चित स्थान को वे पहुँच नही सकते। समाज को जीवित रखने के लिए भाशा और साहित्य का अधिकार ही ज्यादातर रहती है। क्यों कि मानव एक सामाजिक सदस्य होने के नाते साहित्य के तमाम सम्पत्ति मानव के गुलाम में रहता है। वास्तविकता यह है कि भाषा नदी के पानी की तरह बहता रहता है, जैसे नदी का पानी धीरे–धीरे बढ़ता जाता है और नदी भी चौड़ा एवं बड़ा होता जाता है, ठीक उसी प्रकार भाषा। जैसे नदी का पानी छोटे–छोटे झरना से निकलता है और पानी धीरे–धीरे बढ़ता जाता है और उस मूल नदी में बहुत सारी छोटी मोटी नदियाँ इधर–उधर से मिलकर बहुत बड़ी नदी का रूप धारण कर लेती है। वैसे ही किसी की भाषा और साहित्य समृद्ध होती है। जिस देश और जाति के पास जितना उन्नत और समृद्धशाली साहित्य होगा वह देश और वह जाति उतनी ही अधिक उन्नत एवं समृद्धशाली समझी जाएगी। ''किसी भी देश की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों तथा जनजीवन की मांगो के अनुरूप शैक्षिक कार्यक्रमों में परिवर्तन होता रहता है।''5 विश्व कवि रबिन्द्रनाथ टैगोर ने भी मात भाषा के विशय में लिखा है –''मातृ भाषा मातृ दूध के समान है''

किसी भी भाषा के विकास में उसकी लिपि आवश्यक है। संसार के सभी प्रतिष्ठित भाषाओं के लिए अपनी–अपनी वैज्ञानिक लिपियाँ हैं। भाषा वैज्ञानिकों के मतानुसार किसी भी भाषा को किसी भी लिपि में लिखा जा सकता है बशर्ते उनमें प्रयुक्त लिपि में उस भाषा की ध्वनियों को उच्चारित करने की शक्ति रहे।

संताली भाषा आस्ट्रो एशियाटिक परिवार की भाषा है, अतः इस भाषा के ध्वनियों को आधुनिक भारतीय अन्य लिपियों द्वारा उच्चारित करने की क्षमता नही है। संताली भाषा पथ्वी के प्राचीनतम् भाषाओं मे से एक है।

इस भाषा के वर्तमान समय में देश भर के प्रिटिंग प्रेस कार्यरत हैं। इसके अलावे बंगाल, उड़िसा, और झारखण्ड राज्य में भी प्रिटिंग प्रेसों के स्थापना संतालों द्वारा की गयी थी, परन्तु वर्तमान में कम्प्युटर की सुविधा से किसी भी प्रेस से छापा जा सकता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष यह है कि संताली संतालों की भाशा है, यह एक विकासशील भाषा है। किसी भाषा को विकास के लिए उस समाज की समाजिक कृत्य की आवश्यकता है। सांस्कृतिक कार्यक्रम, नाटकों का मंचन, साहित्य संगठनों द्वारा सेमिनार, वर्कशॉप, अनुवाद भाषा की मानकीकरण इत्यादि। भाषा की विकास में सभी समाजिक संगठनों के योगदान की आवश्यकता होती है क्योंकि भाषा जीवन की गोद में इसका महत्व जरूरी है। इसलिए संताल समाज के शिक्षितों द्वारा भी एक रूप से बोलना, सिखना और समझने की समानता आवश्यक है।

सन्दर्भ सूचि

1. हेम्ब्रम डॉ० रतन – संताली लोक गीतों में साहित्य और संस्कृति, माधा प्रकाशन, वर्ष – 2005, पष्० सं० –03।

2. उपाध्याय डॉ० जल जयराम – भारत का संविधान, प्रकाशक

सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी, 30–डी/1, मोतीलाल नेहरू रोड,ईलाहाबाद।

3. सोरेन भोगला – संताल भाषा लिपि और साहित्य का विकास–पृष्ठ संख्या–11
4. हेम्ब्रम डॉ० रतन–संताली लोक गीतों में साहित्य और संस्कृति, माधा प्रकाशन, जाहेर टोला, बारीडीह, जमशेदपुर–17 – पृष्ठ संख्या–02
5. सिंह बी० एन० एण्ड हसन डॉ० एम० –शिक्षा सिद्धांत, शिक्षा दर्शन, शिक्षित समाज शास्त्र पृष्ठ संख्या – 2

शम्भुनाथ सोरेन

सहायक प्रोफेसर,

संताली विभाग, मानभुम महाविद्यालय, मानबजार,

पो/थाना – मानबजार, जिला – पुरूलिया, पश्चिम बंगला,

पिन– 723131, मो – 9800432482

स्थायी पता :

ग्राम– मधुपुर, पो. – कालापाथर,

थाना – चाकुलिया, जिला – पूर्वी सिंहभूम, झारखण्ड,

पिन– 832301, मो – 9800432482

10

स्त्रीत्ववाद की विभिन्न वैचारिक अवधारणाएँ

डॉ0 दीपक कुमारी

सारांशः

समाज का कोई भी कमजोर व शोषित वर्ग अपनी अधिकार चेतना के साथ जाग्रत हो तो उसकी संज्ञा सार्थक हो जाती है। ऐसी ही संज्ञा को संज्ञायित करती हुई एक विशिष्ट अवधारणा है– स्त्रीत्ववाद। स्त्रीत्ववादी विमर्श का आधार वह विचारधारा है जो सत्ता के जनतांत्रिक संबंधों को समेट कर चले, जो न केवल इतिहास बल्कि जातीय स्मृति को पुनः परिभाषित करे तथा ऐसा वैश्विक दृष्टिकोण अपनाए, जो मृत्यु के बाद भी जीवन की आशा न छोड़े। स्त्री जानती है कि वह केवल देह के कारण स्त्री नहीं है, उसका स्त्री होना निर्भर करता है– संस्कृति, वर्ग और जाति पर जिस पर पितृसत्ता का कब्जा है। पितृसत्ता आज भी प्रत्येक स्तर पर स्त्री का शोषण करती है। सच तो यह है कि स्त्री का मसीहा अन्य कोई नहीं स्वयं स्त्री है।

भूमिका :–स्त्रीत्ववादी विमर्श का पहला और आधारभूत कार्य यह है कि महिलाओं को अपने अधीन करने वाली तथा उनका शोषण करने वाली संरचना को पहचाना जाए व उसे एक उचित एवं तर्क संगत नाम दिया जाए। परिणामस्वरूप बीसवीं सदी के आठवें दशक के मध्य में नारीवादी विशेषज्ञों ने 'पितृसत्ता' शब्द का प्रयोग किया।भारतीय समाज पितृसत्तात्मक है और यह सरंचना समाज की एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें पुरुषों का स्त्रियों पर वर्चस्व रहता है। यही व्यवस्था स्त्रियों का शोषण एवं उत्पीड़न करती है। पितृसत्ता के बीच रहती हुई स्त्री की जुबान ने वर्षो से चुपचाप रहना सीखा है। कई पीढ़ियां गुजर गई। फिर भी स्त्री मुखर नहीं हो पाई। इसका प्रमुख कारण है– परिवेश और संस्कार। पिछले तीन दशकों से स्त्री–मुक्ति विमर्श को साहित्य के केन्द्र में देखा जा रहा है।स्त्री का व्यक्तित्व बदलती हुई संवेदनाओं के अनगिनत आयामों में विकसित हुआ है। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्तर पर हमारे देश के मानवधिकारों में कुछ बदलाव भी संभव हुए है। सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन को भी लक्षित किया जा सकता हैं, स्त्री सजग हुई है, आत्मनिर्भर हुई है, और अपने अधिकारों के प्रति संचेतना के निर्माण के निरन्तर प्रयासों में लीन है। इस संदर्भ में वर्षो पूर्व महादेवी वर्मा की 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में वर्णित एक प्रसंग पर हमारा ध्यान जाता है, जहां वे कहती हैं, **"स्त्री स्वतन्त्रता का आकार स्त्रियोचित गुणों के आधार पर होना चाहिए। पुरुषों की बराबरी के नाम पर स्त्रियों को पुरुषों की अराजकपूर्ण त्रुटियों का अनुकरण नहीं करना चाहिए। भारतीय समाज के अध्ययन के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचती हूँ कि भारतीय स्त्रियों को सबसे पहले आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की आवश्यता है।"**[1]

सामाजिक जीवन में पुरुषों के बराबर सामाजिक पहचान और आर्थिक क्षेत्र मे पुरुषों के समान आत्मनिर्भरता मूल रूपसे ये दो बातें स्त्री–मुक्ति के लिए अनिवार्य हैं। स्त्री–मुक्ति काफीहद तक आत्मनिर्भरता पर भी आश्रित है, आत्मनिर्भर स्त्री घर से बाहर निकलकर बाहर के वातावरण से परिचित होती है। तभी उसका अज्ञान दूर होता है। अपने पैरों पर खड़ी स्त्री कभी किसी पर बोझ नहीं बनती है, अतः समाज उसके अस्तित्व को भी स्वीकारेगा और उसे पहचान भी देगा।

2.1 'स्त्रीत्ववाद' : अवधारणा का स्वरूप

स्त्रीत्ववाद' महिला उत्पीड़न केविभिन्न पहलुओं को समझने की दिशा में प्रयासरत एक गतिशील और स्त्रियों के पक्ष में निरन्तर परिवर्तनशील चिन्तन है। जिसमें उनके अधिकार इस चिन्तन के अग्र और उग्र दार्शनिक पहलू भी जुड़ते चले गए। प्रायः देखने में आता है कि हमारी वर्तमान व्यवस्था में स्त्रियों को घर की चार दीवारी से बाहर निकलने का अवसर भले ही मिल गया हो, परन्तु जहाँ अपने जीवन को रूप देने और अनेक स्तरों पर स्वत्वों के संदर्भ में निर्णय लेने की बात है उनकी स्थिति अभी तक ज्यों–की–त्यों बनी हुई है। पुरुष आज भी अपनी सख्त मुद्राओं में उनका भाग्य–विधाता बना हुआ है। स्त्री की पीड़ा, उसकी वेदना, उसका दर्द कहीं से भी कम नहीं हुए हैं। यहाँ तक कि उनकी स्थिति शोचनीय के साथ–साथ विचारणीय भी बन गई है और यह विषय एक ज्वलन्त विमर्श के ध्रुवान्तों के निर्माण के योग्य हो गया है।

"स्त्रियों से सम्बन्धित किसी भी समस्या या स्थिति को एक कोण से न देखकर भिन्न–भिन्न मानसिकताओं, दृष्टियों संस्कारों और प्रतिब ताओं को उलट–पलट कर देखना, उसे समझने की कोशिश करना और फिर मानवीय संदर्भो में उसे प्रतिष्ठित करना ही स्त्री–विमर्श है।"[2]

'विमर्श' का अर्थ विचार–विनिमय है। पुराने समय का शास्त्रार्थ नये युग में 'विमर्श' बनकर आया है। इसके लिए 'संवाद', 'बातचीत', एवं 'बहस' शब्दों का भी खूब प्रयोग हुआ हैं परन्तु नई सदी में ये शब्द बचकाने लगने लगे हैं। अतः अति आधुनिकतावादियों ने 'विमर्श' जैसे शब्द में कुछ ताजगी, नयापन और आधुनिकता खोज ली है। इस अर्थ के अनुसार, 'स्त्री–विमर्श' का अभिप्राय है– स्त्री के सम्बन्ध में विचार–विनिमय, उसे केन्द्र में रखकर समझने के लिए किया गया संवाद या बहस। स्त्री–मुक्ति की यह लड़ाई संभवतः इसीलिए आधी दुनिया की लड़ाई है, क्योंकि मुक्ति की कामना प्रत्येक व्यक्ति की आंतरिक कामना होती है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रत्येक व्यक्ति कास्वतन्त्र होना आवश्यक है। राष्ट्र और मानव समाज की उन्नति एवं विकास के लिए नारी मुक्ति आवश्यक है। नारी स्वतन्त्रता भारत के लिए विलासिता नहीं है, अपितु राष्ट्र के भौतिक, वैचारिक और आत्मिक विकास एवं संतुष्टि के लिए एक अनिवार्य जरूरत बन गई है।

इसकी पूर्ति के पक्ष में घरेलू हिंसा आदि अनेक ऐसे कानून बनाए गए हैं जिनसे नारी स्वतन्त्रता की रक्षा हो सकती है, परन्तु चूंकि समाज में कई युग प्रायः एक साथ पल बढ़ रहे होते अतः फलस्वरूप इस सबके बीच सत्ता, व्यवस्था और शासन लिखित विधान ही चलता है भले ही समाज अलिखित परंपरा से भी संचालित होता है। विधान में बाल–विवाह का निषेध है। समाज में बाल–विवाहों का क्रम फिर भी चल रहा है विधान में दहेज लेना निषेध है, समाज में विवाह के लिए दहेज की मुखर उपस्थिति सहज ही देखी जा सकती है। विधान में स्त्रियों के लिए उच्च शिक्षा के द्वार खुल चुके हैं। समाज उच्च शिक्षित स्त्रियों को उनका सहज अर्जित सम्मान देने के लिए तैयार नहीं है। अतः इस घात–प्रतिघात में निर्माण और ध्वंस साथ–साथ चल रहे हैं। जब वैधानिक स्थिति और सामाजिक स्थिति परस्पर विरोधी हो, तब सामाजिकों के अधिकार मात्र अलंकरण बनकर रह जाते हैं, ऐसी स्थिति में सरकारी कार्यवाही भी तब तक कारगर नहीं हो सकती, जब तक महिलाएं स्वयं अपने अधिकारों और संबद्ध दायित्वों के प्रति जागरूक नहीं होती।

2.1.1स्त्रीत्ववाद की विभिन्न वैचारिक अवधारणाएँ

स्त्रीत्ववादी विमर्श का आंकलन यह बताता है कि ज्यों–ज्यों स्त्रीत्ववाद का विकास होता गया, इसकी शाखा–प्रशाखाएँ विभिन्न दिशाओं में फूटती गई। समय के साथ–साथ स्त्रीत्ववादियों के दृष्टिकोण में भी काफी परिवर्तन आया। अस्सी के दशक के बाद बहुतेरे स्त्रीत्ववादियों ने जिनमें आधिकारिक भूमिका स्त्री की ज्यादा रही, गृहस्थी और श्रम के बाजार के भौतिक विश्लेषण के बदले भाषा की सरंचना, प्रतिनिधित्व का अधिकार एवं समस्या तथा सत्ता के विमर्श पर प्रश्न उठाये। इसके परिणामस्वरूप वैश्विक स्तर पर सामाजिक सरंचना, पित्तृसत्ता और पूंजीवाद के विश्लेषण के बदले विभिन्न संस्कृतियों में विमर्श, विचारधारा और मनोविश्लेषण का एक पूरा इतिहास खुल गया। स्त्रीत्ववादी विचारकों ने स्त्री से संबंधित नए सिद्धान्तों को न केवल प्रतिपादित किया बल्कि स्त्री जीवन के विभिन्न प्रसंगों पर ज्ञान, कर्म और यथार्थ का लेखा–जोखा भी प्रस्तुत किया। यही कारण है कि विभिन्न स्त्रीत्ववादी विचारधाराओं को अलग–अलग नाम देने की कोशिश भी की गई है। उदाहरणार्थ– उदारवादी स्त्रीत्ववादी, उग्रवादी, स्त्रीत्ववादी, मनोविश्लेषणात्मक स्त्रीत्ववादी, समाजवादी स्त्रीत्ववादी इत्यादि।अतः इस अध्ययन में यहाँ इनका संक्षिप्त आकलन भी किया जाना आवश्यक है।

उदारवादी स्त्रीत्ववाद–उदारवादी स्त्रीत्ववादी का अपना एक लम्बा इतिहास रहा है। 18वीं–19वीं शताब्दी के विचारक हेरियट टेलर (1807–1859), जॉन स्टुअर्ड मिल (1806–1873) जैसे सभी स्त्रीत्ववादियों ने दार्शनिक जॉन लाक और रूसो के सामाजिक अनुबंध की आलोचना करते हुए कहा कि ये दार्शनिक अपने लेखन में वैयक्तिक स्वतन्त्रता और सामाजिक परिवर्तन की चर्चा तो करते हैं किन्तु उनकी उदारवादी राजनीति स्त्री–पुरुषों को समान अधिकार दिलाने में असमर्थ रही है। उदारवादियों ने ऐसी सामाजिक संरचना करनी चाही थी, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का महत्व और उन्हें समान अवसर एवं सुविधाएं मिले। 18वीं सदी के प्रारंभ में उदारवादी स्त्रीत्ववादियों ने मानवीय गरिमा और समानता की उदारवादी धारणाओं व महिलाओं के जीवन की वास्तविकता के बीच व्याप्त अंतर्विरोधों को प्रखरता के साथ सामने रखा। जैंडर पर आधारित विभेद और परिवार व समाज में महिलाओं की दोयम स्थिति को तर्कसंगत ठहराने वाली आम धारणाओं को सामाजिक अनुकूलन और जड़ीभूत सांस्कृतिक मूल्यों की उपज के तौर पर समझने की भी कोशिश की। समानता और न्याय की धारणाओं के संदर्भ में उदारवादी स्त्रीत्ववादियों ने विवाह नामक संस्था के मूल्यांकन का प्रयास किया। ये सभी विचार महिलाओं की समानता, कानूनी सुधारों की मांग, समान अवसरों तक पहुँच, सार्वजनिक दायरों में शामिल होने के प्रति महिलाओं के अधिकार तथा मानव के तौर पर अपने अंदर निहित संभावनाओं को पूरा करने का अवसर आदि विभिन्न मसलों पर आधारित अभियानों का आधार बने।

"उदारवादी नारीवादियों का मानना था कि महिलाओं की असमानता, उन्हें समान अधिकारों से वंचित किए जाने व ऐसे अधिकारों से उनके अलगाव या उन पर अमल करने में उनके प्रतिरोध से पैदा होती है। दृष्टिकोणों, अपेक्षाओं और आचरण में जैंडर पर आधारित भिन्नताओं की निर्मिति में समाजीकरण और शिक्षा को प्रधान रूप से चिन्हित किया गया।"[3]

इसके फलस्वरूप महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए कई प्रकार की गतिविधियां सामने आई। इन विचारों की परिणति विशेष स्कूलों की स्थापना, शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी और मजदूरी, काम की स्थितियाँ, ट्रेड युनियन और अन्य संगठनों को प्रेरित करते महिला मताधिकार संगठनों की स्थापना में हुई। सत्तर के दशक में उभरी नारीवाद की दूसरी धारा के दौरान भी उदारवादी नारीवाद की परंपरा जारी रही। तब तक शादीशुदा महिलाओं को उजरती मजदूरी सुनिश्चित करने, बच्चों की देखभाल में माता–पिता की सहभागिता, मातृत्व की रक्षा और खासकर उपेक्षित महिला समूहों के साथ विशेष बर्ताव आदि लक्ष्यों तक उसका विस्तार हुआ था।

उदारवादी सुधारों का यह नतीजा रहा कि इसके जरिए महिलाओं को अधिक अवसर और महिला अधिकारों के बारे में बढ़ती जनचेतना संभव हो सकी है। उदारवादी नारीवाद ने महिलाओं एवं छात्राओं को आर्थिक तौर पर स्वतंत्रता तो दिलाई परन्तु पत्नी और माँ के तौर पर महिलाओं की पारंपरिक भूमिका को जारी रखा।

उग्रवादी स्त्रीत्ववादः 1986 में टाइग्रेस ऐटकिन्सन के नेतृत्व में लिबरल ग्रुप से उग्रवादी स्त्रीत्ववाद अलग हो गया। ऐटकिन्सन का मानना था कि इन छोटे–मोटे आन्दोलनों से कुछ नहीं होने वाला। पुरुषों के साथ (साम–दाम–दंड–भेद) आजमाए

बिना स्त्रियों का दमन नहीं रूक सकता। लड़ाई पुरुषों से नहीं, पितृसत्तात्मक समाज से होनी चाहिए। योजनाबद्ध ढंग से इसकी एक–एक संस्था में– खासकर परिवार, चर्च और एकेडमी में– वैधानिक, राजनीतिक और आर्थिक ढंग से संरचनात्मक परिवर्तन घटित कराएं जाने चाहिए। स्त्री को आमूल रूप से स्वयं को भी बदलना होगा, इसे ही स्त्रीत्ववाद की संज्ञा दी गई। उग्र स्त्रीत्ववादियों ने बहुतेरे सामाजिक मुद्दों– विशेषकर चिकित्सा, धर्म, प्रजनन, जातिवाद, पर्यावरण और राजनीतिक सिद्धान्तों पर भी जमकर लिखा गया।

उग्र स्त्रीत्ववाद का सबसे महत्वपूर्ण विमर्श है– पुरुष द्वारा स्त्री कामना का निर्धारण। पहली बार उग्र स्त्रीत्ववादियों ने यह स्पष्ट किया कि अपने जीवन में स्त्री को किस प्रकार के उत्पीड़न एवं हिंसा का शिकार होना पड़ता है। बलात्कार, अश्लील साहित्य, अनैच्छिक मातृत्व, निरोध, एवं बाध्यकारी इतरलिंगी, कामुकता वाले मुद्दे को उठाने से यह स्पष्ट हुआ कि जीवन के प्रसंग में स्त्री को पुरुष के अधीन रहना पड़ता है। इन्हीं कारणों के फलस्वरूप पुरुष ने अपना वर्चस्व स्थापित किया हुआ है। केट मिलट ने वर्ग के प्रभुत्व को लिंग प्रभुत्व में बदलकर दिखाया कि किस प्रकार पुरुष प्रभुत्व ने स्त्री का उत्पीड़न किया है। पुरुष–प्रधान समाज में स्त्री वैसी ही बनती, जीती–मरती, पिसती, घुटती है जैसे पुरुष की इच्छा है। यदि कोई स्त्री अपने अनुभवों को जीती, मरती, पिसती, संघर्ष करती हुई कविता, कहानी या पोस्टर–पेंटिग बना देती है तो समूचे पुरुष संसार में खलबली, परेशानी व चिंता बढ़ जाती है। स्त्री को शारीरिक रूप से असहाय व दुर्बल माना गया है। उसकी अस्मिता खतरे में है इसलिए सुरक्षा जरूरी है कि वह पुरुषों के संरक्षण में रहे अन्यथा अपनी इस दैहिक दुर्बलता के कारण वह पुरुषों की हवस की शिकार होगी। यहाँ स्त्री की सुरक्षा को अधीनता के साथ सहज रूप में जोड़ दिया गया और कहा गया कि स्त्री के नियंत्रण तथा पुरुष के वर्चस्व में ही समाज का भला है। उग्र स्त्रीत्ववाद इस प्रकार की धारणाओं को पूरी तरह नकारता है। यह महिलाओं की स्वतन्त्रता व समानता का पक्षधर है।

"नारीवाद महिला उत्पीड़न के विभिन्न पहलुओं को समझने की दिशा में प्रयासरत एक गतिशील और निरंतर परिवर्तित होने वाली विचारधारा है जिनमें व्यक्तिगत, राजनीतिक और दार्शनिक पहलू भी शामिल है। लेकिन जो एक विचार इन सभी नारीवादी दृष्टिकोणों में समान है, वह यह है कि यह सभी मौजूदा स्त्री–पुरुष संबंधों को बदलने की दिशा में केन्द्रित है।"[4]

इस प्रकार ये सभी विचारधाराएं इस तथ्य से पैदा होती हैं, कि न्याय के लिए महिलाओं को स्वतन्त्रता व समानता दी जानी आवश्यक है।

2.1.1.3 मनोविश्लेषणात्मक स्त्रीत्ववाद

स्त्री मानस के विश्लेषण पर मनोविश्लेषण स्त्रीत्ववादियों ने पाया कि किसी भी व्यक्ति की अस्मिता उसके सचेतन मन के स्थायी गठन पर निर्भर है, जो जीवन के प्रारंभिक तीन वर्षों के भीतर ही ठोस आकार ग्रहण कर लेती है। जब तक स्त्रियाँ अपने मनोजगत का पूरा विश्लेषण नहीं करती तथा स्त्रीत्व की ठोस जड़ भूमिकाओं को नहीं नकारती, उनकी स्थिति ऐसे ही दयनीय रहेगी। सिंगमंड फ्रायड का यह कथन प्रसिद्ध है कि मनोविश्लेषण के क्षेत्र में इतने वर्ष काम करने के बाद भी मैं यह नहीं जान पाया कि स्त्री आखिर चाहती क्या है। फ्रायड मानव मन के चिकित्सक थे। अपने पेशे के दौरान वे सैकडों पुरुषों और महिलाओं के सम्पर्क में आए। उन दिनों स्त्रियां ही मनोचिकित्सा के लिए ज्यादा आती थी। अपने व्यक्तिगत जीवन में भी फ्रायड़ को कम से कम दो स्त्रियों का अनुभव तो था ही। फिर भी स्त्री उनके लिए रहस्य बनी रही क्योंकि वह सभ्यता के इतने जाने–अनजाने परदों से दबी रही है कि उनकी इच्छाओं तक का अनुमान लगाना कठिन है, विडम्बना यह है कि स्त्री का यह रहस्य प्रच्छता और प्रकट रूप में लोक पुरुष ने ही बनाया है।

2.1.1.4 समाजवादी स्त्रीत्ववाद :– 1970 से 1980 तक अधिकतर स्त्रीत्ववादी सिद्धान्तों कीप्रमुख समस्या यह थी कि स्त्री को पुरुष–पराधीनता से मुक्ति मिले। समाजवादी, महिलाएँ, पूंजीवादी व्यवस्था की विरोधी रही है, हालांकि समाजवादी नारीवाद महिलाओं ने पूंजीवादी पितृसत्ता को समझने और बदलने का प्रयास किया है।

"समाजवादी नारीवादियों का मानना है कि पूंजीवाद और पित्तृसत्ता एक दूसरे को मजबूती प्रदान करते हैं। भले ही पुरुष वर्चस्व के रूप में पितृसत्ता पूंजीवाद के पहले से ही उदित होती है। लेकिन यह पूंजीवाद कें संचालन में मददगार साबित होती है और वह पूंजीवाद द्वारा न केवल समर्थन पाती है, बल्कि सुदृढ़ होती है।"[5]

समाजवादी स्त्रीत्ववाद सामाजिक संरचना में निहित दलन की प्रक्रियाओं का विश्लेषण बड़े व्यवस्थित तरीके से करता है।एक बाह्म जगत में उत्पादन की तथा दूसरे गृहस्थी में, जहां वह दिन–रात बिना किसी मूल्य के श्रम करती है। संतान का भरण–पोषण तथा परिवार के सदस्यों की देखरेख एवं अन्य प्रकार का सेवा कार्य है स्त्री–श्रम का खुलेआम शोषण करवाता है । यहाँ स्त्री को केवल आर्थिक संघर्ष ही नहीं झेलना पड़ता है। बल्कि स्त्री–पुरुष का यौन संघर्ष और इससे जनित स्त्री के प्रति यौन हिंसा एवं उत्पीड़न मानवीय संदर्भो में उसके समक्ष घोर भयावह परिस्थितियाँ खड़ी करते है। स्त्री को यह धारणा स्वीकार नहीं,

दूसरी ओर पुरुषों ने मातृत्व को कुछ विशिष्ट गुणों के रूप में सर्वोच्च शिखर पर आसीन तो कर दिया, परन्तु कालान्तर में यह महज एक औपचारिक महिमा मंडन ही बनकर रह गया। माँ के रूप में स्त्री–श्रम का दोहन आज भी होता है। स्त्री न केवल भावनात्मक रूप से बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक रूप से भी ठगी जाती है। इस प्रकार समाजवादी स्त्रीत्ववाद स्त्री के श्रम के शोषण पर प्रकाश डालता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय नारी की स्थिति में राजनीतिक और वैधानिक दृष्टि से जितने भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, उनके चलते आज तक भी समाज में किसी प्रकार के आमूल चूल परिवर्तन की आशा करना संभव नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि स्त्रीत्ववादी विचारधारा भूमण्डलीय समाज में नए से नए और लगातार अग्रसर हो रहे व्यापक परिवर्तनशील मस्तिष्क का प्रखरतम उदाहरण है जो जब कभी पूर्णरूपेण फलित होगा तो धरती पर मनुष्य की सर्वोत्तम उपलब्धि होगा।

''कानून का सम्बल तथा नारी की बौद्धिक क्षमताएँ नारी के व्यावसायिक उत्कर्ष के मार्ग तो खोल सकती हैं लेकिन समाज में उसकी स्थिति सुधार नहीं सकती।इसके लिए अनिवार्य है– पुरुष की दृष्टिगत उदारता।"[6]

पुरुष जब नारी को अपनी सहयोगी, संगिनी, और साथी समझेगा, तभी समाज में सांमजस्य व्यवस्था शुरू होगी और विकास की गति बढ़ेगी। नारी का जीवन किसी भी समाज में कम संघर्षशील नहीं रहा है। उत्थान–पतन के कितने दौरों से गुजरती हुई नारी आज के वर्तमान में अपनी जैसी भी स्थिति तक पहुँच पाई है वह उसकी निजी उपलब्धि है। उसका संघर्ष अगले समयों के आह्वान में पुरुष की तुलना में किसी भी तरह कम नही आंका जा सकता।

किसी समाज में पुरुष विशेषाधिकार और स्त्री अधीनीकरण के आलोचनात्मक विश्लेषण के आधार पर सामाजिक राजनीतिक बदलाव के लिए एक विचारधारा और आंदोलन दोनों को समाहित कर सकती है। आज की स्त्रीत्ववादी सोच पुरुषवादी सत्ता को समाप्त करने का लक्ष्य रखती है। सीखना चाहिए और एक बार फिर लक्ष्य प्राप्ति के अभियान में उन्हें जुटने देना चाहिए।"[7]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आज स्त्रीत्ववाद को एक तेज़ी से विकसित होती हुई प्रमुख एवं स्वायत आलोचनात्मक विचारधारा के रूप में देखा जाना चाहिए। इस अवधारणा में विचारों का एक विस्तृत फलक समाहित है और इसके सामने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक संभावनाएं हैं।नारी के लेखन ने दूसरे विषयों को कड़ी चुनौती दी है और सामाजिक जीवन की व्याख्या और उस पर प्रश्न खड़ा करने के नए रास्ते खोले हैं। स्त्रीत्ववाद एक ऐसी अवधारणा के रूप में उभर रहा है जो अपने भीतर सम्पूर्ण विश्व में स्त्री–चेतना का उद्देश्य समग्र परम्पराओं, मान्यताओं रूढ़िगत वर्जनाओं तथा अत्याचारोंके प्रति विद्रोह की चेतना, पुरुष द्वारा निर्मित शोषक संस्थापनाओं आदि से मुक्त होना है। अपनी प्राकृतिक उच्चता को स्थापित करने की चेतना तथा जीवन–मूल्यों के वरण की चेतना जागृत करना ही सर्जनात्मक स्त्रीत्ववाद की नींव है।

सन्दर्भ –सूची :–

1. सम्पादक–महीप सिंहः संचेतना :–नई दिल्लीएच–108, शिवाजी पार्क, पंजाबी बाग अप्रैल 2008, अंक 1 पृ0 4

2. रोहिणीअग्रवाल– हिन्दीं उपन्यास में कामकाजी महिला दिल्ली– 110006 दिनमान प्रकाशन, 3014, चर्खेवाल प्रथम संस्करण, 1993, पृ0 स0 9

3. संपादक–आर्य साधना, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता (नारी राजनीतिः संघर्ष एवं मुद्दे) हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय प्रथम संस्करण– 2001 पृ0 स0 25

4. यथावत, पृ0 स0 49

5. यथावत, पृ0 स0 31

6.सं0 विश्वनाथ प्रसाद तिवारीः महादेवी रचना संचयन नई दिल्ली– 110001 साहित्य अकादमी रविन्द्र भवन, 35 फिरोजशाह मार्ग पृ0 सं. –266

7. जर्मेन ग्रीयरः बधिया स्त्री ;अनुवाद : मधुबी जोशी नई दिल्ली– 110002 1–बी नेता जी सुभाष मार्ग प्रथम संस्करण–2002 पृ0 स0 275

डॉ0 दीपक कुमारी

सहायक प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)

चौ0 बंसीलाल विश्वविद्यालय,भिवानी

Email:kumarideepak1982@gmail.com

11

संत नितानन्द की वाणी में दर्शन के आयाम

ओमपति, डॉ0 बाबूराम

सारांश

भारतीय संस्कृति आदिकाल से ही चिंतन प्रधान रही है।वैदिक साहित्य से लेकर उपनिषदों, पुराणों, जैन व बौद्ध धर्म के साहित्य मेंज्ञान, उपासना और कर्मकाण्ड का मिश्रित ज्ञान ही भारतीय चिंतनधारा का स्वाभाविक विकास है।जब व्यक्ति तर्क के माध्यम से अपने ज्ञान द्वारा लोगों की जिज्ञासा को शांत करता है और अपनी वाणी द्वारा समाज का मार्ग दर्शन करके उनको जीने का नया दृष्टि कोण प्रदान करता है।वह भक्ति द्वारा अज्ञात सत्ता के रहस्यों को सुलझाने का प्रयत्न भी करता है।सांसारिक जीवों को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि बुरी वृत्तियों से दूर कर के परमात्मा से मिलाने का मार्ग दिखाने वाले संत समाज के लिए आदर्श होते हैं।उनका दर्शन अनमोल है। संत नितानन्द ने अपन दार्शनिक विचारों में, ब्रह्म, जीव, जगत, माया, मोक्ष आदि का जोवर्णन किया है, वह उनकी स्वानुभूति की उपज है।उनकी वाणी लोक–जीवन से जुड़ी होने के कारण साधारण मानव को भी आध्यात्मिकता की ऊँच भावभूमि पर पहुँचाने का कार्य करती है।

कुँजी शब्द : दर्शन, ब्रह्म, जीव, जगत, माया, मोक्ष।

प्रस्तावना

भारतीय संत साहित्य, कर्म, ज्ञान और भक्ति के सामंजस्य पर बल देकर समाज को कल्याण के पथ पर अग्रसर करने में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।स्थूल जगत में रहते हुए सूक्ष्म जगत के सत्यों का अन्वेषण भारतीय चिंतकों, मनीषियों और संतों का प्रमुख उद्देश्य रहाहै। ''धर्म का प्रवाह कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीन धाराओं में चलता है।इन तीनों के सामंजस्य से धर्म अपनी पूर्ण सजीव दशा में रहता है।किसी एक के भी अभाव में वह विकलांग रहता है। कार्य के बिना वह लूला–लंगड़ा, ज्ञान के बिना अंधा और भक्ति के बिना हृदय विहीन क्या, निष्प्राण रहता है।''1 संत साहित्य का मूल स्रोत है–वेदांत दर्शन।संतों ने वेदांत के प्रमुख सिद्धांतों को जन साधारण की भाषा में व्यक्त किया है। संत नितानन्द का दर्शन उनका स्वानुभूत आध्यात्मिक ज्ञान है जो साधारण मनुष्य को भी ब्रह्म का साक्षात्कार करवा के, परम सुख की अनुभूति करवा सकता है।

विवेचना

'दर्शन' शब्द संस्कृत की दृश धातु में 'ल्यूट' प्रत्यय लगकर बना है, जिसका अर्थ है– देखना।

डॉ. वेद प्रकाश आर्य के अनुसार, ''जीवन और जगत के पर मार्थिक स्वरूपत था मानव जीवन के चरम लक्ष्य का चिन्तन, मनन और साक्षात्कार ही दर्शन है।''[2]

इस प्रकार 'दर्शन' शब्द का अर्थ तत्त्व ज्ञान है।ज्ञान की चरम अवस्था ईश्वरीय ज्ञान है।भारत में दर्शनमोक्ष प्राप्ति का एक साधन माना जाता है।दर्शन वह चिन्तन है जो ब्रह्म, जीव, जगत, माया, मोक्ष आदि जीवन के रहस्यों को सुलझाता है। संत नितानन्द ने अपने विचारों में जीव, जगत, ब्रह्म, माया और मोक्ष की व्याख्या करके, उदाहरणों के माध्यम से जनसमुदाय को जागरुक करने का प्रयास किया है।

ब्रह्म का स्वरूप

संत नितानन्द ने भारतीय दर्शन के अनुसारब्रह्म के स्वरूप का वर्णन किया है।उन्होंने ब्रह्म को राम, निरंजन, अलख, नारायण, गोविन्द,करतार, प्रभु, साहेब, भगवन्त निराकार, अवगत, अगम अपार आदि नामों से संबोधित किया है।कबीर की भाँति इन्होंने भी ईश्वर कोसत्, रज, तम गुणों से अतीत माना है।नितानन्द का ब्रह्मगुणातीत, निरंजन, निर्गुण, निराकार है।

''नांवगांवता के नहीं, अधर न धरियासोय।
वर्णन विवर्जित अतनतन, त्रिया पुरुष नहिहोय।
ज्यूंहैत्युना कह सकूं, है जो कहा न जाय।
जो कुछ है सो वह नहीं, गूंगा हो गुड़ खाय।।[3]

उस ब्रह्म के रूप का वर्णन करते हुए नितानन्द जी कहते हैं कि उस परमात्मा की छवि का कोई अंत नहीं है।चारों दिशाओं में उसी का तेज चमक रहा है, बिना अग्नि के ही उजालाहै।उनका तेज करोड़ों सूरज से भी तेज है। उनके तेज का वर्णन करना कठिन है। इस मुख से उनकी छवि (तेज) का वर्णन नहीं किया जा सकता। उस जीव के सुन्दर रूपको हम अपनी सामान्य आँखों से नहीं देख सकते।उसके दर्शन प्राप्त करने के लिए चर्मदृष्टि की नहीं, दिव्य दृष्टि की जरूरत होती है।

एक रूम के तेजमें, सूरज कोट अनन्त।
ऐसी छवि उस पीव की, नितानन्द बेअनन्त।।
नितातन्दरवी चन्द की, कहन मात्र है बात।
नूर, तेज महबूब का, मुख से कहा न जात।।[4]

संत नितानन्द के अनुसार ब्रह्म सर्व शक्तिमान है।वही सबकी उत्पत्ति करवाता है और पालन–पोषण करने वाला भी वही है।ब्रह्म के गुणों का जितना भी वर्णन करे, वह कम ही है।वह ब्रह्म अनुभव की वस्तु है, शब्दों से उसको अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।

जीव का स्वरूप नितानन्द जी जीव के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि जीवमाया से लिप्त होकर इस संसार में फंसा

रहता है और आवागमन के चक्रमें घूमता रहता है।जीव इस संसार में मुसाफिर की तरह आता है, उनका तनसराय के समान है।सांसारिक धंधों में उलझकर जीव ईश्वर से विमुख हो जाता है।नितानन्द जी कहतेहैं किमाया के आवरण के कारणवहपीव से बिछुड़ जाता है।जबकि उसका पीव घट–घट में समाया है।स्वामी जी जीवको चेतावनी देते हुए कहते हैं कि इस शरीर का कोई भरोसा नहीं है। यह बादल की छाया के समान क्षणभंगुर है।स्वप्न की संपदा के समान जीवन है।

डॉ. राजदेव सिंह भी कहते हैं– ''जागतिक प्रपंचों में फंसा हुआ जीव उस अंधे बगुले की तरह है जो आस–पास बिखरे हुए सत्य के मोतियों को न पहचान कर, किसी मामूली सी मछली के लिए योग–मुद्रा लगाए बैठा रहताहै। ऐसा अकेला बगुला ही नहीं करता, संत को छोड़ करबा कीस भी करते हैं।''[5]

नितानन्दजी कहते हैं कि समय रहते इस शरीर का सदुपयोगकरले ना चाहिए।हरि स्मरण ही जीव की मुक्ति का मार्गहै।स्वामी जी अहंकार को त्यागने पर बल देते हैं। इस देह का गर्व न करने की सलाह देते हैं।

फलटूटा धरती पड़ा, बहुर न लागडार।
नितानन्दनर देह यू, मिलैन बारम्बार।।[6]

जगत् का स्वरूप

संतों की दृष्टि में ब्रह्म ने ही जगत् की रचना की है और वह उसके कण–कण में व्याप्त है।जो जड़–चेतन दिखाई देते हैं, वे सब ही जगत है।ब्रह्मसत्य और जगत् मिथ्या है। संत नितानन्द भी इस जगत की उत्पत्ति उस पूर्ण ब्रह्म से मानते हैं।वह जादूगर की तरह ही अपने संसार की रचना करते हैं। यह संसार क्षण भंगुर है, इसमें जीव मुसा फिर की तरह आता और चला जाता हैं

नितानन्द संसार की, सांसें करे बुलाय।
बाजीगर बाजी रची, पलक मांहि उठिजाय।।
नितानन्द कुछ चेतकर, दुनिया द्वन्द्व सराय।
सुपने में धन मिल गया, जागेजब पछताय।।[7]

संत नितानन्द कहते हैं कि यह संसार मृगतृष्णा के नीर के समान है, जो प्यास शांत नहीं कर सकता।जीव इस संसार में प्यासे की तरह भटकता रहता है। यह स्वप्न के समान है तथा माया के कारण जीव को भ्रमित कर देता है। यहाँ की धन–दौलत भी उसी प्रकार भ्रम मात्र है जिस प्रकार कोई बांझ स्त्री स्वप्न में पुत्र–जन्म पर प्रसन्न होती है।स्वामी जी इस जगत की वास्तविकता से जीव को सचेत करते हुए कहते हैं कि माया के आवरण के कारण जीव ब्रह्म से अलग भटकता रहता है।संसार दुःखों का घर है। इस दुःख से उबरने का उपाय केवल ईश्वर का स्मरण व उसकी भक्ति है। इस मिथ्या जगत में जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु अवश्य मीावी है। यह भौतिक जगत जीव को आकर्षित करता है, जोसत्य नहीं है।सत्य तो ब्रह्म है, जगत तो झूठा और छलावा है।

माया का स्वरूप

संत साहित्य मेंमाया की चर्चा विषया सक्ति अर्थात् विषय तृष्णा के रूप में की गई है। संत नितानन्द ने माया को नटनी, कनक–कामिनी, मृग जल, मोहिनी, ठगनी, बैरन, डाकन, चुड़ैल, चंचलचोर टी, तृष्णा, मीठी खांड, पापनी, चौमुखी नागिन आदि कहकर संसार के लोगों को चेताया है।जिस प्रकार दीपक की लौ पर पतंगा भस्म हो जाता है, उसी प्रकार यह संसार माया से भ्रमित होकर दुःखी रहता है।नितानन्द जी कहते हैं कि यह मायामृग जल के समानहै, इसका सुख क्षणिक है, मिथ्याहै। यह स्वप्न में प्राप्त सुख के समान है।माया ब्रह्म को विस्मृत कराती है।सभी प्राणी इसके जालमें फंस जाते हैं। यह मनुष्य की भक्ति के मार्ग में बाधक है। यह मनुष्य को उस ईश्वर (ब्रह्म) के दरबार में पहुँचने से रोकती है।

''माया चंचल चोर टी, लूटैचित्त चुराय।
जनम कर्म सभ खोयकर, नर रीता उठ जाय।।
माया मीठी बोलकर, पहल बढ़ा वैप्यार।
पकड़ बांध बस मेंकरै, पीछे डा रैमार।।
मायामन की मोहनी, पठैजाय मनमांहि।
नितानन्दहर पंथ में, चरण धर दे नांहि।।[8]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नितानन्द जी ने माया को मिथ्या व ब्रह्म को सत्य बताया है।माया को संतों की दासी बताया है। इस माया रूपी विषयों के समुद्र से संतों की संगति, गुरु कृपा व प्रभु की भक्ति ही बचा सकती है।

मोक्ष का स्वरूप

मोक्ष का अर्थ आत्मा व परमात्मा के मिलन से माना जाता है। इसे मुक्ति भी कहा जाताहै।स्वामी नितानन्द जी ने अपनी वाणियों में मोक्ष का कोई शास्त्रीय विवेचन नहीं किया।उनका उद्देश्य पथ भ्रष्ट समाज को सन्मार्ग दिखाना था। उनके अनुसार ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति ही मुक्ति का रास्ता दिखाती है। प्राणी संसार में रहकर भी मुक्ति (मोक्ष) प्राप्तकर सकता है।स्वामी जी कहते हैं कि जबत कमन विषय–वासनाओं और अहंकार का त्याग नहीं करता, तब तक इस संसार में जन्म–मरण के चक्रमें बंधा रहता है।

नितानन्द संसार से, सकैतो मन को मोड़।
राम भक्ति गुरु चरण से, आठों पहर जोड़।।[9]

ईश्वर भक्ति और गुरु कृपा से जीव जब मुक्ति की अवस्था में पहुँचता है तो सब दुःख वासनाएँ तथा अहंकार मिट जाता है।अमृत स्वरूप राम की प्राप्ति हो जाती है।ब्रह्मज्ञान होते ही जीव सांसारिक कर्मों से मुक्त हो जाता है।जीव और ब्रह्म का मिलन हो

जाता है।जीव और ब्रह्म के मिलन की इसी अवस्था को मोक्ष कहा जाता है।

निष्कर्ष

संत नितानन्द के ग्रंथ 'सत्य सिद्धान्त प्रकाश' में उनके आध्यात्मिक विचारों का विस्तृत वर्णन मिलता है। उनके विचार मौलिक हैं।जीवात्मा–परमात्मा के संबंध में विभिन्न उदाहरणों द्वाराजन–मानस को जागृत करने का प्रयास किया गया है।उनका ब्रह्मज्योति स्वरूप है।अगम और अनन्तहै।माया ब्रह्म पर आवरण डाल देती है।यह जीव और ब्रह्म के मिलन में बाधक है।जीव, जगत में आकर माया के कारण, परमात्मा को भूल जाता है।उन्होंने जगत को क्षण भंगुर माना है।मृग तृष्णा के नीर के समान जगत्, जीव की प्यास नहीं बुझा सकता।माया के आवरण के कारण जीव, ब्रह्म से अलग हो कर सांसारिक कष्ट उठाता है।विषय–वासनाओं और अहंकार का त्याग कर के, प्रभु भक्ति में लीन रहने वाला जी वही मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। संत नितानन्द के दार्शनिक विचार उनकी स्वानुभूति की उपज हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य राम चन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 60, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नईदिल्ली।
2. डॉ. वेदप्रकाश आर्य, सूरदास : व्यक्तित्व एवंकृतित्व, पृ. 61
3. (सं.) भोलादास प्रज्ञाचक्षु, सत्य सिद्धान्त प्रकाश, पृ. 88/3,5
4. वही, पृ. 61
5. डॉ. राजदेव सिंह, संत–साहित्य पुन र्मूल्यांकन, पृ. 205
6. (सं.) भोलादास प्रज्ञाचक्षु, सत्य सिद्धान्त प्रकाश, पृ. 136
7. वही, पृ. 118 श
8. वही, पृ. 180
10. वही, पृ. 155

ओमपति

शोधार्थी (हिन्दी–विभाग)

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर

रोहतक, (हरियाणा)

दूरभाश : 9812680010

शोध–निर्देशक

डॉ0 बाबूराम

(प्रोफेसर एवं अध्यक्ष)

हिन्दी–विभाग

बाबामस्तनाथ विश्वविद्यालय,

अस्थल बोहर रोहतक, (हरियाणा)

पिन 124001

ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ: ਸਰਵੇਖਣ ਅਤੇ ਮੁਲਾਂਕਣ

ਨਵਜੋਤ ਕੌਰ (ਖੋਜਾਰਥਣ)

ਸਾਹਿਤ ਮਨੁੱਖੀ ਭਾਵਾਂ ਦੀ ਅਭਿਵਿਅਕਤੀ ਦਾ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਸੰਚਾਰ ਮਾਧਿਅਮ ਹੈ। ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਆਪਣੀ ਸਿਰਜਣਾਤਮਕ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਅਨੁਕੂਲ ਵਿਸ਼ੇ ਦੀ ਚੋਣ ਕਰਕੇ ਭਾਵਾਂ ਦਾ ਪਗਟਾਵਾ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਆਧੁਨਕਿ ਪੰਜਾਬੀ ਵਾਰਤਕ ਸਾਹਤਿ ਵਿਚ ਨਿਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਅਹਿਮ ਨਾਂ ਹੈ ਜੋ ਵਿਭਨਿ ਵਿਧਾਵਾਂ ਰਾਹੀਂ ਭਾਵ ਉਜਾਗਰ ਕਰਨ ਦੀ ਸਮਰਥਾ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਵਾਰਤਕ ਦੇ ਹਰ ਰੂਪ ਤੇ ਹੱਥ ਅਜਮਾਇਆ ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਨੂੰ ਪੰਜ ਦਰਜਨ ਦੇ ਕਰੀਬ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦਿਤੀਆਂ ਹਨ। ਸਰਿਜਕ ਹੋਣ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਉਹ ਅਨੁਵਾਦਕ, ਸੰਪਾਦਕ, ਗਾਇਕ, ਮੰਚ ਸੰਚਾਲਕ ਆਦਿ ਕਰਕੇ ਵੀ ਜਾਣਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਨਿਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਨੂੰ ਜੇਕਰ ਖੋਜ ਦੀ ਦ੍ਰਸ਼ਿਟੀ ਤੋਂ ਵੇਖਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਮਾਲੂਮ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਖੋਜਾਰਥੀਆਂ ਵੱਲੋਂ ਉਹਨਾਂ ਦੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਪਰਖ ਪੜਚੋਲ ਦਾ ਵਸ਼ਿਾ ਬਣਾਇਆ ਗਆਿ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਦੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਤੇ ਉਪਾਧੀ ਸਾਪੇਖ ਅਤੇ ਉਪਾਧੀ ਨਰਿਪੇਖ ਖੋਜ ਕਾਰਜ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਜੋ ਖੋਜ ਕਾਰਜ ਡਗਿਰੀ ਦੀ ਖਾਿਤਰ ਲਈ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਉਸਨੂੰ ਉਪਾਧੀ ਸਾਪੇਖ ਖੋਜ ਕਹਿਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜੋ ਖੋਜ ਕਾਰਜ ਬਨਿਾਂ ਕਸਿੇ ਡਗਿਰੀ ਦੇ ਲਾਲਚ ਤੋਂ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ ਉਸਨੂੰ ਉਪਾਧੀ ਨਰਿਪੇਖ ਖੋਜ ਕਹਿਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਨਦਿੰਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਯੂਨੀਵਰਸਟੀਆਂ ਵੱਲੋਂ ਐੱਮ. ਫਲਿ. ਦਾ ਖੋਜ ਕਾਰਜ ਕਰਵਾਇਆ ਗਆਿ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਕੁੱਝ ਆਲੋਚਨਾਤਮਕ ਪੁਸਤਕਾਂ ਵੀ ਮਿਲਦੀਆਂ ਹਨ।

ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਉੱਪਰ ਖੋਜ ਕਾਰਜ ਕਰਵਾਉਣ ਵਿਚ ਕੁਰੂਕਸ਼ੇਤਰ ਯੂਨੀਵਰਸਟੀ ਕੁਰੂਕਸ਼ੇਤਰ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਭੂਮਿਕਾ ਹੈ। ਇਸ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਨੇ 'ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੇ ਵਾਰਤਕ ਜਗਤ ਦਾ ਅਧਿਐਨ', 'ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੁਆਰਾ ਰਚਤਿ ਪੁਸਤਕ ਕਾਲੇ ਕੋਟ ਦਾ ਦਰਦ: ਇਕ ਅਧਐਿਨ', 'ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੁਆਰਾ ਰਚਿਤ ਪੁਸਤਕ 'ਕਾਲੇ ਕੋਟ ਕਾ ਦਰਦ' ਮੇਂ ਨਆਿਂ ਪ੍ਰਣਾਲੀ' ਆਦਿ ਉੱਪਰ ਐੱਮ. ਫਿਲ ਪੱਧਰ ਦਾ ਖੋਜ ਕਾਰਜ ਕਰਵਾਇਆ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਰਿਜ਼ਨਲ ਸੈਂਟਰ ਸ੍ਰੀ ਮੁਕਤਸਰ ਸਾਹਿਬ ਵੱਲੋਂ 'ਰੇਖਾ ਚਿਤਰ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਸ਼ੈਲੀ (ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੁਆਰਾ ਰਚਤਿ 'ਵੱਡਆਿ ਦੀ ਸੱਥ' ਦੇ ਸੰਦਰਭ ਵਚਿ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਟੀ, ਪਟਆਿਲਾ ਨੇ 'ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਕਲਾ', ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਯੂਨੀਵਰਸਟੀ ਵੱਲੋਂ 'ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ: ਸਮਾਜ ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਅਧਿਐਨ', ਦਿਲੀ ਯੂਨੀਵਰਸਟੀ, ਦਿਲੀ ਵੱਲੋਂ 'ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦਾ ਸਫ਼ਰਨਾਮਾ 'ਠੰਡੀ ਧਰਤੀ ਤਪਦੇ ਲੋਕ: ਆਲੋਚਨਾਤਮਕ ਅਧਐਿਨ', ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਟੀ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਵੱਲੋਂ 'ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਦਾ ਬਿਰਤਾਂਤ-ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਅਧਿਐਨ', ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਟੀ ਰਿਜਨਲ ਸੈਂਟਰ ਬਠਿੰਡਾ ਵੱਲੋਂ 'ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਸ਼ੈਲੀ' ਆਦਿ ਖੋਜ ਕਾਰਜ ਕਰਵਾਏ ਗਏ ਹਨ। ਇਹਨਾਂ ਵਿਚ ਉਹਨਾਂ ਕੁਝ ਕੁ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਕਰਕੇ ਪੇਸ਼ ਹੋਏ ਸਮਾਜਿਕ ਅਸਮਾਨਤਾ, ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ, ਆਰਥਿਕ ਤੰਗੀ, ਭ੍ਰਿਸ਼ਟ ਨਿਆਂ ਪ੍ਰਬੰਧ ਆਦਿ ਸਰੋਕਾਰਾਂ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨਦੇਹੀ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਕਲਾ, ਸ਼ੈਲੀ ਦਾ ਵੀ ਨਰਿੀਖਣ ਕੀਤਾ ਹੈ। "ਉਸਦੀ ਸ਼ੈਲੀ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਹੀ ਹੈ ਕਿ ਉਸਦੀ ਲਿਖਤ ਪੜ੍ਹਦੇ ਸਮੇਂ ਪਾਠਕ ਅਜਿਹਾ ਮਹਿਸੂਸ ਹੀ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ ਕਿਓਹ ਕੋਈ ਸਾਹਿਤਕ ਰਚਨਾ ਪੜ੍ ਰਹੇ ਹਨ ਸਗੋਂ ਉਸ ਰਚਨਾ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਵਿਚਰਣ ਲੱਗਦੇ ਹਨ। ਉਸਦੀ ਰਚਨਾ ਵਿਚੋਂ ਸੂਹਜ ਤੇ ਸਾਹਿਤਕਤਾ ਦੀ ਹੋਂਦ ਨੂੰ ਮਹਿਸੂਸ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।"[1] ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਉਪਰ ਹੋਏ ਖੋਜ ਕਾਰਜ ਵਿਚ ਇਕ ਗੱਲ ਇਹ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਦੀ ਹੈ ਕਿ ਉਸਦੇ ਜੀਵਨ ਕਰਿਦਾਰ ਨੂੰ ਸਭ ਨੇ ਹੀ ਬਿਆਨ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਦੂਜਾ ਨੁਕਤਾ ਇਹ ਵਿਚਾਰਨਯੋਗ ਹੈ ਕਿ ਖੋਜ ਲਈ ਚੁਣੇ ਗਏ ਵਿਸ਼ੇ ਪੀਐੱਚ. ਡੀ. ਪੱਧਰ ਦੀ ਡਿਗਰੀ ਦੇ ਤੁਲ ਹਨ। ਇਹਨਾਂ ਉੱਪਰ ਸੋਚ-ਵਿਚਾਰ ਕਰਨੀ ਬਣਦੀ ਹੈ। ਮਿਸਾਲ ਵਜੋਂ ਸਿਰਲੇਖ 'ਨੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਕਲਾ ਜਾਂ ਸ਼ੈਲੀ' ਨੂੰ ਖੁੱਲ੍ਹੇ ਸਰਿਲੇਖ ਹੇਠ ਰੱਖ ਕੇ ਸੀਮਤ ਰਚਨਾ ਨੂੰ ਆਧਾਰ ਬਣਾਉਣਾ ਸਹੀ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਤੀਸਰਾ ਇਹਨਾਂ ਖੋਜ ਨਿਬੰਧ ਵਿਚ ਦੁਹਰਾਅ ਵੀ ਹੈ। ਨੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵੱਡ ਆਕਾਰੀ ਰਚਨਾ ਵਿਚੋਂ 'ਕਾਲੇ ਕੋਟ ਦਾ ਦਰਦ', 'ਮੈ ਸਾਂ ਜੱਜ ਦਾ ਅਰਦਲੀ' ਆਦਿ ਚੁਨਿਦਾ ਕਤਿਾਬਾਂ ਹੀ ਖੋਜ ਸਰਵੇਖਣ ਦਾ ਭਾਗ ਬਣਦੀਆਂ ਹਨ।

ਉਪਾਧੀ ਸਾਪੇਖ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਅਸੀਂ ਨੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਉੱਪਰ ਹੋਏ ਉਪਾਧੀ ਨਿਰਪੇਖ ਖੋਜ ਕਾਰਜ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਦੇ ਹਾਂ। ਇਸ ਵਿਚ ਤਿਨ ਪੁਸਤਕਾਂ ਪ੍ਰੋ. ਜਲੌਰ ਸਿਘ ਖੀਵਾ ਦੀ 'ਨੰਦਰ ਘਿੁਗਆਣਵੀ ਦੀ ਰਚਨਾ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ' ਸੰਦੀਪ ਕੌਰ ਸੰਧੂ ਦੀ 'ਸ਼ੈਲੀਕਾਰ ਨਦਿੰਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ' ਪ੍ਰਿੰ. ਸਰਵਣ ਸਘਿ ਦੀ 'ਨੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਪੜ੍ਹਦਿਆਂ' ਆਦਿ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਜਲੌਰ ਸਿਘ ਖੀਵਾ ਦੀ ਪੁਸਤਕ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ ਤੇਰਾਂ ਲੇਖ ਨੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਰਚਨਾ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਦੀਆਂ ਪਰਤਾਂ ਫਰੋਲਦੇ ਹਨ। 'ਵੱਡਿਆ ਦੀ ਸੱਥ' ਵਿਚ ਵਚਿਰਦਆਿਂ ਇਹ ਤੱਥ ਉਭਰ ਕੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਦਾ ਹੈ ਕ ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਆਪਣੀ ਸੁਹਿਰਦਤਾ ਅਤੇ ਨਿਰਪੱਖਤਾ ਨੂੰ ਸੰਤੁਲਨ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਰੱਖ ਸਕਿਆ। ਜਿਨਾਂ ਸ਼ਖਸੀਅਤਾਂ ਪ੍ਰਤੀ ਉਸਦੀ ਅਪਾਰ ਸ਼ਰਧਾ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੂਹਰੇ ਪੂਰਾ ਨਿਆਉਂਦਾ ਹੈ, ਝੁਕਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਦੂਜੇ ਮੂਹਰੇ ਖਲੋਂਦਾ ਹੈ, ਅੜਦਾ ਹੈ। ਮਨੋਵਿਗਿਆਨਕ ਨਜ਼ਰੀਏ ਤੋਂ ਭਾਵੇਂ ਇਹ ਸਪਸ਼ਟ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਵੀ ਲੇਖਕ ਆਪਣੇ ਸਮੇਂ ਦਾ ਨਿਰਪੱਖ ਇਤਿਹਾਸਕਾਰ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ ਪਰ ਇਕ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਲਈ ਨਿਰਪੱਖ ਹੋਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜੋ ਆਪਣੇ ਵੱਲੋਂ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੇ ਨਾਇਕਾਂ, ਪਾਤਰਾਂ ਨਾਲ ਨਿਆਂ ਕਰ ਸਕੇ।[2]

ਸੰਦੀਪ ਕੌਰ ਨੇ ਪੁਸਤਕ ਵਿਚ ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਰਣਨਾਤਮਕ, ਵਿਆਖਿਆਤਮਕ ਅਤੇ ਨਿਬੰਧਾਤਮਕ ਸ਼ੈਲੀ ਬਾਰੇ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿਤੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸਦੀ ਵਾਰਤਕ ਦੇ ਸਰੋਕਾਰਾਂ ਤੋ ਜਾਣੂੰ ਕਰਵਾਇਆ ਹੈ। ਸਰਵਣ ਸਿਘ ਦੀ ਸੰਪਾਦਨ ਵਿਉਤਬੰਦੀ ਜੀਵਨ/ਰਚਨਾ ਦੇ ਵੱਡੇ ਕਲੇਵਰ ਨੂੰ ਸਮੇਟਣ ਲਈ ਯਤਨਸ਼ੀਲ ਜਾਪਦੀ ਹੈ। ਆਰੰਭਲਾ ਲੇਖ 'ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਤੇ ਉਸਦੀ ਵਾਰਤਕ ਦਾ' ਹੈ। "ਇਸ ਪੁਸਤਕ ਵਿਚੋ ਪਾਠਕ ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੇ ਜੀਵਨ ਤੇ ਉਹਦੀ ਵਾਰਤਕ ਬਾਰੇ ਬਹੁ ਕੁੱਝ ਪੜ੍ਹ ਸਕਣਗੇ ਅਤੇ ਉਸਦੀ ਸਾਹਿਤਕ ਘਾਲਣਾ ਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਾਣ ਸਕਣਗੇ। ਸਾਹਤਿ ਦੇ ਵਦਿਆਿਰਥੀਆਂ ਲਈ ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਅਨਮੋਲ ਹੋਵੇਗੀ।"[3] ਇਸ ਪੁਸਤਕ ਵਿਚਲੇ ਲੇਖ ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਨੂੰ ਹੋਰ ਜਾਣਨ ਦੇ ਮੌਕੇ ਦਿਦੇ ਹਨ।

ਇਹਨਾਂ ਪੁਸਤਕਾਂ ਤੋ ਬਿਨਾਂ ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਬਾਰੇ ਕੁਝ ਭੂਮਿਕਾਵਾਂ, ਟਿਪਣੀਆਂ, ਖੋਜ ਪੱਤਰ, ਰੀਵੀਉ ਵੀ ਮਿਲਦੇ ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਨੂੰ ਉੱਚਤਮ ਦੱਸਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਉਪਾਧੀ ਨਿਰਪੇਖ ਕਾਰਜ ਬਾਬਤ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਆਮ ਪਾਠਕ ਤੋ ਲੈ ਕੇ ਵਿਦਵਾਨ, ਹਰੇਕ ਖਿਤੇ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਸ਼ਖਸ ਨੇ ਨੋਟਿਸ ਲਿਆ ਹੈ। ਇਹ ਕਿਸੇ ਸਾਹਿਤਕ ਕਿਰਤ ਜਾਂ ਲੇਖਕ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਸ਼ੈਲੀ ਉੱਪਰ ਕਰੀਬ ਦਰਜਨ ਖੋਜ ਨਿਬੰਧ ਲਿਖੇ ਗਏ ਹਨ। ਤਿਨ ਪੁਸਤਕਾਂ ਉਪਲੱਬਧ ਹਨ। ਸ਼ੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਉੱਪਰ ਵੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵਾਚਦਆਿਂ ਇਹ ਨੁਕਤਾ ਵੀ ਧਆਿਨ ਵਚਿ ਆਉਦਾ ਹੈ ਕਿ ਖੋਜ ਵਿਚ ਦੁਹਰਾਉ ਵੀ ਹੈ। ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਕਰਕੇ 'ਮੈ ਸਾਂ ਜੱਜ ਦਾ ਅਰਦਲੀ' ਅਤੇ 'ਕਾਲੇ ਕੋਟ ਦਾ ਦਰਦ' ਵਰਗੀਆਂ ਪੁਸਤਕਾਂ ਵਾਰ-ਵਾਰ ਅਧਿਐਨ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਬਣ ਕੇ ਜਿਥੇ ਵਿਚਾਰ ਲੜੀ ਅੱਗੇ ਤੋਰਦੀਆਂ ਹਨ, ਉੱਥੇ ਦੁਹਰਾਅ ਮੂਲਕ ਵੇਰਵੇ ਰੜਕਦੇ ਹਨ।

ਹਵਾਲੇ

1. ਸਰਬਜੀਤ ਕੌਰ, ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਸ਼ੈਲੀ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਟਿੀ ਰਜ਼ਿਨਲ ਸੈਟਰ, ਬਠਿਡਾ, 2015-16, ਪੰਨੇ 90-91
2. ਜਲੌਰ ਸਿਘ ਖੀਵਾ, ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਰਚਨਾ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ, ਚੇਤਨਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਲੁਧਿਆਣਾ, 2012, ਪੰਨਾ 45
3. ਪ੍ਰਿ. ਸਰਵਣ ਸਿਘ (ਸੰਪਾ.), ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਆਿਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਪੜ੍ਹਿਦਆਂ, ਲੋਕਗੀਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਚੰਡੀਗੜ੍, 2022, ਪੰਨੇ 26-27

ਨਵਜੋਤ ਕੌਰ (ਖੋਜਾਰਥਣ)
ਰੋਲ ਨੰਬਰA 216811003
ਗੁਰੂ ਕਾਸ਼ੀ ਯੂਨੀਵਰਸਟਿੀ, ਤਲਵੰਡੀ ਸਾਬੋ (ਬਠਿੰਡਾ)

13

महाकवि कालिदास का स्त्री विमर्श

साक्षी द्विवेदी

सारांश

यास्क ने अपने 'निरुक्त' में **'स्त्री शब्द'** की व्युत्पत्ति 'स्तै धात', से की है, जिसका अर्थ लगाया गया है, लज्जा से सिकुड़ना। यास्कीय व्युत्पत्ति पर दुर्गाचार्य ने लिखा है–**लज्जर्थस्य लज्जन्तेपि हि ताः।** इसका भावार्थ है कि लज्जा से अभिभूत होने से औरत का एक पर्याय स्त्री है।

जहाँ स्त्रियों की पूजा की जाती है वहाँ देवता लोग निवास करते हैं, और जहाँ पूजा न करके अपमानित किया जाता है मर्यादा के अनुरूप स्थान नहीं दिया जाता है वहाँ सारी क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं। ऐसा मनुस्मृति में तृतीय अध्याय में कहा गया है–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्र एतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्त्राफला क्रियाः।। (3/56)

भारतीय समाज में यदि स्त्रियों की परिस्थिति का विमर्श किया जाए तो वर्तमान की अपेक्षा प्राचीन काल में स्त्रियों की दशा अपेक्षाकृत अधिक मर्यादापूर्ण तथा गौरवमयी रही है। वैदिक युगीन स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे और उन्हें समस्त सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक गतिविधियों में सहभागिता की स्वतंत्रता थी। रोमशा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, अपाला, यमी, वैवस्वती, घोषा, काक्षीवती, अदिति, दाक्षायणी, गार्गी, मैत्रेयी इत्यादि। ब्रह्मवादिनियों इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

ऋग्वेद के दशवें मण्डल में (10, 85, 46) पचासी सूक्त के छियालीसवें मन्त्र में कहा गया है–

''श्वसुरे सम्राज्ञी भव''

ऋग्वैदिक समाज में नारी (स्त्री) श्वसुर ग्रह की सम्राज्ञी हुआ करती थी। और उपनिषत्काल में तो विदुषी कन्या की सम्प्राप्ति के लिए दम्पत्ति विशेष अनुष्ठान का आयोजन किया करते थे। ब्राह्मण ग्रंथों में स्त्री और पुरुष की तुलना यज्ञ रूपी रथ में जुड़े हुए दो बैलों से करते हुए दोनों की समान स्थिति का समर्थन किया गया है किन्तु कालान्तर में सूत्र तथा स्मृतिकला तक आते–आते स्त्रियों की स्वतंत्रता को प्रतिबन्धित करके उन्हें अनेक अधिकारों से वंचित कर दिया गया। जीवन की भिन्न–भिन्न अवस्था में वह क्रमशः पिता, पति एवं पुत्र के द्वारा संरक्षित एवं नियन्त्रित मानी गयी है।

स्त्री शिक्षा के बारे में विवेकानंद जी का कथन हैः– ''जो देश, राष्ट्र स्त्रियों का आदर नहीं करते वे कभी बड़े नहीं हो पाए और न भविष्य में ही कभी बड़े होंगे। यथार्थ शक्तिपूजन तो वह है जो यह जानता है कि ईश्वर विश्व में सर्वव्यापी शक्ति है, जो स्त्रियों में उस शक्ति का प्रकाश देखता है।''

स्वामी जी ने आशावादी भविष्यवाणी की है– ''यदि स्त्रियाँ उन्नत हो जाएँ तो उनके बालक अपने उदार कार्यों के द्वारा देश का नाम उज्ज्वल करेंगे। तब तो संस्कृति, ज्ञान, शक्ति और भक्ति देश में जाग्रत हो जाएँगी।''

स्त्रोत–भारतीय शिक्षा का स्वरूप, पृ0 सं0 82, खण्ड–1

कालिदास के तत्कालिक समाज में नारी के वचनबद्धता का मानना पुरुष का प्रमुख धर्म था जैसे कैकेयी के वचन का अनुपालन करने हेतु राजा दशरथ राम को चौदह वर्ष का वनवास देते हैं।

युद्ध काण्ड में 119 सर्ग से 94वें श्लोक में वाल्मीकि जी सीता के मुख से बोलवाते हैंः–

त्वया तु नरशार्दूल क्रोधमेवानुवर्तता।

लघुनेव मनुष्येण स्त्रीत्वमेव पुरस्कृतम्।। (119/94)

कालिदास की कृतियों में गान्धर्व विवाह को स्वीकारोक्ति प्रदान की गयी है, जैसा कि राजा दुष्यन्त अनेक राजकन्याओं के द्वारा गान्धर्व रीति से विवाह करने और उनके पिताओं के द्वारा विवाह का अभिनन्दन समर्पित करने की घोषणा करता है–

गान्धर्वेण विवाहेन बह्व्यो राजर्षिकन्यकाः।

श्रूयन्ते परिणीतास्ताः पितुभिश्चाभिनन्दिताः।। (अभि0शा0 3/20, पृ0सं0 111)

बहुपत्नी विवाह के कारण प्रायः उपेक्षा और कष्टकारी स्थिति में जीवनयापन करती थी। मालविकाग्निमित्रम् में वर्णित रानी धारिणी तथा इरावती क्रमशः शान्तचित्त तथा उग्र स्वाभाव वाली नारियों की प्रतिनिधि है। रानी धारिणी यह जानते हुए भी कि उसका प्रति अगग्निमित्र मालविका पर आसक्त है, वह शरण में आयी हुई मालविका को राजमहल में स्थान देती है। रानी धारिणी का आचरण उसकी सहृदयता तथा धैर्य का सूचक है। कालिदास ने राधी धारिणी के सहन करने की शक्ति की समता पृथ्वी से की हैः–

महासारप्रसवयोः सदृशक्षमर्योद्वयोः।

धारिणी भूतधारिण्योर्भव भर्ता शरच्छतम्।। (मालविका0–1.15, पृ0 580)

हिन्दी व्याख्याकार– पण्डित रामतेज शास्त्री कालिदास ग्रंथावली

महाकवि शूद्रक विरचित 'मृच्छकटिकम्' में स्त्री के विषय में कहा है–

धूता अपने पति से अनन्य प्रेम करती है, पति की मृत्यु का समाचार मिलने से पूर्व ही वह अग्नि में प्रविष्ट होना चाहती है, तथा

अपने पुत्र की भी चिन्ता नहीं करती है–

''रदनिके आवलम्वस्व दारकम् यावदहम समीहितं करोमि।''

इस प्रकार अत्यन्त निगूढ़ भाव समन्वित सर्वथा पति के लिए समर्पित आदर्श भारतीय स्त्री (नारी) का स्वरूपही धूता में दिखलाई देता है।

सम्पादक– डॉ0 मुरारीलाल अग्रवाल, श्री शूद्रककविविरचितम् मृच्छकटिकम पृ0, 20, प्रकाशन–हरीश विश्वविद्यालय, गोल्डन पैलेस, अस्पताल मार्ग, आगरा–282003, उ0प्र0।

जल्हण कवि की 'सूक्तिमुक्तावली' में राजशेखर द्वारा रचित 'शाङ्र्गधर– पद्धति से उद्धृत निम्नांकित श्लोक से मालूम पड़ता है कि कर्नाटक प्रान्त में विजयाङ्का नाम की एक कवयित्री सरस्वती के समान विदुषी महिला हो गयी है, जिसके सम्बन्ध में कहा गया है–

सरस्वतीव कर्णाटी विजयाङ्का जयत्यसौ।
या विदर्भगिरां वासः
कालिदासादनन्तरम्।।स्त्रोत–महाकविदण्डिप्रणीतं विश्रुतचरितम् (दशकुमार चरितोत्तरपीठिकान्तर्गतोऽष्टमोच्छ्वासः) भूमिका, पेज–16, व्याख्याकार–डॉ0 शशिशेखर चतुर्वेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

भवभूति विरचित उत्तररामचरितम्, नारी (स्त्री) चरित्र उदात्तचरित्र का स्थान दिया है– सीता माता को करुण की मूर्ति माना है–

''करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी''।।

उत्तर राम चरितम् 3/4/, पृ0 164

जब सीता गोदावरी से निकलकर पंचवटी में प्रवेश करने लगती हैं, तब तमसा कहती है–सीता करूणरस की साक्षात् मूर्ति अथवा शरीरधारिणी वियोग व्यथा के तुल्य पंचवटी में आ रही है।

महाकवि श्री भवभूति प्रणीतम् उत्तर रामचरितम् प्रणेता–पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी आचार्य, प्रकाशक–रामनारायणलाल विजय कुमार।

महाकवि कालिदास जी ने विक्रमोर्वशीयम् के द्वितीयाङ्क में पुरुरवा का उर्वशी पर आसक्त होना उसे मानसिक रूप से व्यथित कर देता है। वह राजा पर क्रोध पूर्वक व्यंग्य करते हुए कहती है– ''आपका अपराध नहीं है, अपराध तो मैंने किया जो कि अनिष्ट दर्शन वाली बनकर आपके सामने खड़ी हूँ''।

नारित्त भवतोऽपराधः।
अहमेवापराद्धा या प्रतिकूल–दर्शना भूत्वा अग्रतस्तिष्ठामि।।

(विक्रमो0 द्वितीयाङ्क)

महाकवि कालिदास विरचित 'मेघदूतम्', उत्तरमेघ में स्त्री को प्रमुख स्थान दिया है, उन्होंने यक्षिणी की तुलना सीता जी से किया है– ''इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा''। (उत्तरमेघ–40, पृ0–337, मेघदूतम्–डॉ0 दयाशंकर शास्त्री, प्रकाशन–चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी)।

इस प्रकार कहने पर ऊपर को मुख किये हुए वह मेरी प्रिया तुम्हारी सारी बात सुनेगी, जैसे सीता जी नेहनुमान् जी की बात सुनी थी।

महाकवि कालिदास विरचित 'मेघदूतम् पूर्वमेघ' में स्त्रियों के बारे में कहा है–स्त्रियाँ जिस व्यक्ति का सम्पर्क चाहती हैं उस व्यक्ति से वे हाव–भाव की भाषा में ही पहले–पहल प्रणम–प्रस्ताव करती हैं।

''स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु।।''(पूर्व मेघ–29, पृ0 85, महाकविकालिदास, प्रणीतं, मेघदूतम्, प्रकाशन–चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी, व्याख्याकार–डॉ0 बलवान सिंह यादव)।

विधवा स्त्री की उस समाज में स्थिति का ज्ञान रघुवंशके 19वें सर्ग में होता है। राजा अग्निवर्ण की मृत्यु हो जाती है तब राज्य मन्त्रियों के द्वारा सम्मान एवं अधिकार के साथ उनकी विधवा रानी का विधिवत राज्याभिषेक किया जाता है।

महाकवि कालिदास जी अपने महाकाव्य रघुवंश में कहा है–

''तैः कृतप्रकृति मुख्यसङ्गहैराशु तस्य सहधर्मचारिणी
साधु दृष्टशुभगर्भलक्षणा प्रत्यपद्यत नराधिपाश्रियम्।।''

(55, श्लोक सं0 19/55, पृ0–172, आख्याकार–पण्डित रामतेज शास्त्री, कालिदास–ग्रंथावली)

याज्ञवल्क्यस्मृति में याज्ञवल्क्य ऋषि ने स्त्री–धन की तीन विषय बताया है–

पितृमातृपतिभ्रातृदत्तमध्यग्न्युपागतम्।
आधिवेदनिकाद्यं च स्त्रीधनं परिकीर्तितम्।
बन्धुदत्तं तथा शुल्कमन्वाधेयकमेव च।।

(अध्याय–2, श्लोक– 143–144,व्यवहाराध्यायः)

पिता, माता, पति या भाई द्वारा दिया गया धन, विवाह के समय अग्नि के समीप प्राप्त धन तथा पति के द्वारा अन्य स्त्री से विवाह के समय प्राप्त धन ये ही 'स्त्री धन' कहे जाते हैं। स्त्री के माता–पिता के बन्धुओं द्वारा दिया गया धन, परिणम के शुल्क के रूप में दिया गया धन विवाह के बाद पति तथा पितृकुल से प्राप्त धन भी स्त्री धन कहलाता है।

कुमार सम्भवम् के छठे सर्ग में हिमालय राज पार्वती के विवाह के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय मेना से सुनना चाहते हैं।

शैलः सम्पूर्णकामोऽपि मेनामुखमुदैक्षत
प्रायेण गृहिणी नेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः।। 85, कालिदास ग्रंथावली, हिन्दी व्याख्याकार– पण्डित रामतेज शास्त्री, पृ0–224,

6ठां सर्ग श्लोक85।

कालिदस के तत्कालिक समाज में स्वतंत्रता प्राप्त थी, अपना वर स्वयं वरण करती थी, अभिज्ञान शाकुन्तलम् में शकुन्तला, कुमार सम्भवम् में पार्वती और रघुवंश महाकाव्य में इन्दुमती का विवाह पूर्णतः उनकी इच्छा से हुआ है।

महाकवि कालिदास जी ने 'रघुवंश महाकाव्यम् में सप्तम सर्ग श्लोक संख्या त्रयोदश में कहा है कि इन्दुमती स्वयं अपना वर चुनेगी, ऐसा वर्णन मिलता है–'

स्थाने वृता भूपतिभिः परोक्षैः स्वयंवरं साधुममस्तं भोज्या।
पद्येव नारायणमन्यथासौ लभेत कान्तं कथमात्मतुल्यम्।।
(श्लोक सं0 7/13, हिन्दीव्याख्याकार–पण्डित रामतेज शास्त्री, कालिदास ग्रंथावली, पृ0 59)

दयानन्द सरस्वती ने कहा है कि स्त्रियों के बारे में –वैदिक साहित्य में स्त्री का महत्व पुरुष से भी अधिक है तथा वहाँ वह उच्च गौरवशाली पद सुशोभित है। वैदिक काल में स्त्री गृह की ही नहीं वरन् पुरुष के मन एवं कर्म दोनों की सम्राज्ञी रही है।(पृ0 189/190), दयानन्द सरस्वती का स्त्री–विमर्श तथा उसका आधुनिक हिन्दी साहित्य पर प्रभाव, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (शोधार्थी–दत्तात्रेय गौतम)

श्री हर्ष अपने महाकाव्य 'नैषधीयचरित्रतम्' मैं स्त्री के बारे में कहा है– जैसे– दमयन्ती के बारे में–

दमयन्ती एक आदर्श गृहणी के रूप में भी हमारे समक्ष आती है। वह देव पूजा किया करती थी तथा पति के भोजन कर लेने के पश्चात् ही भोजन किया करती थी। उसके सम्पूर्ण चरित्र की विशेषता इन्द्र के शब्दों में इस प्रकार श्री हर्ष ने कहलवाया है–

सा भुवः किमपि रत्नमनर्धं भूषणं जयति तत्र कुमारी
'श्री गोकुलदास संस्कृत ग्रंथामाला,।(113/261, भूमिकापृ0 सं0–55/56)

महाकवि श्री हर्ष प्रणीतं ''नैषधचरितम महाकाव्यम्''
''दमयन्ती पृथ्वी का भूषण कोई अमूल्य रत्न और अमोघ कामशास्त्र है।''
(व्याख्याकार एवं भूमिका लेखक डॉ0 सुरेन्द्र देव शास्त्री, चौखम्भा ओरियन्टलिया, प्राच्य विद्या, आयुर्वेद तथा दुर्लभ ग्रंथों के प्रकाशक दिल्ली, भारत)

महाकवि कालिदास जी ''मालविकाग्निमित्रम्'' में 'परिव्रजिका' का उल्लेख प्राप्त होता है जो विधवा थी लेकिन विदुषी इतनी थी कि विद्वानों की योग्यता का परीक्षण भी करती थी।

''मालविकाग्निमित्रम'' में प्रथमोऽङ्क में राजा परिव्राजिका से कहते हैं–

भगवती आचार्य हरदत्त, और गणदास अभिनय कला का विवाद लेकर आये हैं। इन दोनों में कौन योग्य है?इसके निर्णय के लिए आप मध्यस्थ बनें।

भागवति! अत्रभवतो र्हरदत्तागणदासयोः परस्परं विज्ञानसङ्घर्षिणोर्भगवत्या प्राश्निक पदमध्यासितव्यम्। (स्त्रोत–कालिदास–ग्रंथावली, मालविकाग्निमित्रम् प्रथमोऽङ्क, पृ0 580)

रघुवंश महाकाव्य के चतुर्दश सर्ग में प्रसंग प्राप्त होता है कि राम ने अश्वमेध यज्ञ के समय अपने वामभाग में अर्द्धांगिनी सीता की स्वर्णमयी मूर्ति की स्थापना की थी।

सीतां हित्वा दशमुखरिपुर्नोपयेमे यदन्यां
तस्या एव प्रतिकृतिसखो यत्क्रतूनाजहार।
वृत्तान्तेन श्रवण विषयप्रापिण तेन भर्तुः
सा दुर्वारं कथमपि परित्यागदुःखं विषेहे।।87
स्त्रोत– रघुवंश महाकाव्यम्, संजीवनी, चद्रिका, संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेतम्, पृ0–69, श्लोक–14/87, व्याख्याकार– डॉ0 गङ्गासागर राय, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी–221001, 1984

सविता सिंह एक आधुनिक, अंकुठित, आत्मनिर्भर कवयित्री हैं। इस स्त्री के अपने संघर्ष हैं, अपनाए एकान्त है या उसकी निरन्तर खोज करने की कोशिश है। सविता सिंह के लिए स्त्री होने का संकट दूर में देखे जाने वाला दृश्य नहीं है। एक अनिवार्य साथीपन का एहसास है। वह स्त्री स्वयं सक्रिय व सम्पूर्ण व्यक्ति भी है।

मैं किसकी और हूँ
कौन है मेरा परमेश्वर
किसके पाँव दबाती हूँ
किसका दिया खाती हूँ
किसको मार सकती हूँ...।(स्त्रोत–डॉ0 नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, 1973, पृ0–432)

मनु स्त्रियों के विषय में स्वतंत्रता को कदापि स्वीकार नहीं करते दिखते हैं उनका दृष्टिकोण है कि पति को स्त्री की रक्षा के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए।

पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा, न स्त्रीस्वान्त्रयमर्हति।।
(मनुस्मृति–श्लोक सं0 9/3, पृ0–553, सम्पादक– डॉ0 राकेश शास्त्री, प्रकाशन–विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली)

'महाकवि कालिदास' द्वारा 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य में पार्वती का चित्रण नारी के रूप में किया है।

इयेष सा कर्तुमवन्ध्यरूपतां समाधिमास्थाय तपोभिरात्मनः।
आप्यते वा कथमन्यथा द्वयं तथाविधं प्रेम पतिश्च तादृशः।।
(5/2, पृ0 203, कालिदास ग्रंथावली)

यह सोचकर उन्होंने मन में ठान लिया कि जिसे मैं अपने रूप से नहीं रिझा सकी, उसे अब समाधिस्थ मन से तपस्याकरके प्राप्त करूँगी। ठीक ही है, क्योंकि ऐसा अनोखा प्रेम और ऐसा अनोखा पति भला कहीं बिना तपस्या के भी मिल सकता है।।5/2।।

कालिदासीय समाज में स्त्रियों को विभिन्न कलाओं प्रशिक्षण के पर्याप्त अवसर प्राप्त थे। वस्तुत काव्य–पुरुष कालिदास ने अपने नाटकों में वर्णित नारियों के माध्यम से स्त्रियों की दशा का मार्मिक चित्रण किया है। उन्होंने स्त्रियाँ सहृदया, उदार, क्षमाशील, अपूर्व सुन्दरी, नृत्य–संगीत कुशल तथा प्रकृत्या सरल एवं सहज होने पर भी अपने अधिकारों के प्रति सजग है, युगों से लोक मर्यादा तथा सामाजिक नियमों के आड़ में स्त्रियों का जो अपमान भारतीय समाज में होता रहा है। कालिदास ने स्त्रियों की व्यथा तथा मनोदशा को अपने नाटकों का मुख्य विषय बनाकर स्त्री–विमर्श को नवीन दशा–दिशा प्रदान किया है।

महाकवि कालिदस का स्त्री विमर्श की दृष्टि से नाट्य कृतियाँ अनुशीलनीय है। आज भारतीय समाज महिला सशक्तीकरण के जिस स्तर को प्राप्त कालिदस को भी स्पृहणीय था। कालिदस ने अपनी सारस्वत साधना के द्वारा स्त्री–विमर्श को मुखरित करने का सदा प्रयास किया।

निष्कर्ष–

इस प्रकार हम देखते हैं कि कालिदास जी ने अपनी रचनाओं में स्त्री पक्षों के प्रति आदर भाव प्रकट किया है, सीता, पार्वती, गौतमी, धारिणी, शकुन्तला, यक्षिणी आदि स्त्रियों का चरित्र वर्तमान में भी अनुकरणीय है और युगों–युगों तक इन स्त्रियों का चरित्र स्त्री समाज के लिए आदर्श बना रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1.मनुस्मृति : कुल्लूकभट्टविरचित मन्वथमुक्तावली संस्कृत टीका एवं हिन्दी भाषानुवाद, सम्पादक एवं अनुवादक– डॉ0 राकेश शास्त्री, प्रकाशन–विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली।

2.ऋग्वेद 10.85.46, दिल्ली–110007

3.भारतीय शिक्षा का स्वरूप, खण्ड–1 शिक्षा का स्वरूप, प्रभात प्रकाशन, 4/19 आसफ अली रोड नई दिल्ली 110002

4.वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड सर्ग 119/94 तक।

5.महाकवि कालिदास प्रणीतम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, प्रणेता–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी आचार्य, प्रकाशक–रामनारायणलाल विजयकुमार 2, कटरा रोड, इलाहाबाद–211002

6.महाकवि श्री कालिदास प्रणीतम् 'मालविकाग्निमित्रम, कालिदास, ग्रंथावली, हिन्दी व्याख्याकार–पण्डित रामतेज शास्त्री, सम्पादक ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

7.श्री शूद्रककविविरचितम्, मृच्छकटिकम्, सम्पादक–डॉ0 मुरारीलाल अग्रवाल, हरीश विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोल्डेन पैलेस, अस्पताल मार्ग, आगरा–282003, उ0प्र0।

8.महाकविदण्डि प्रणीतं, विश्रुतचरितम्, (दशकुमारचरितोत्तरपीठिकान्तर्गतोऽष्टमोच्छ्वासः), व्याख्याकार– डॉ0 शशिशेखर चतुर्वेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

9.महाकवि भवभूति प्रणीतम्, उत्तररामचरितम्, प्रणेता पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी आचार्य, प्रकाशक–रामनारायणलाल विजयकुमार, 2, कटरा रोड, इलाहाबाद–211002

10.महाकवि कालिदास विरचितं मेघदूतम, व्याख्याकार–डॉ0 दयाशंकर शास्त्री चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

11.महाकवि कालिदास विरचितं 'रघुवंश महाकाव्य, कालिदास ग्रंथावली, हिन्दी व्याख्याकार–पण्डित रामतेज शास्त्री, सम्पादक–ब्रह्मानंद त्रिपाठी चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

12.महाकवि कालिदास विरचितं कुमारसम्भवम्, महाकाव्य, कालिदास–ग्रंथावली, हिन्दी व्याख्याकार पण्डित रामतेज शास्त्री, सम्पादक–ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

13.दयानन्द सरस्वती का स्त्री–विमर्श तथा उनका आधुनिक हिन्दी साहित्य पर प्रभाव, प्रकाशक–कोटा विश्वविद्यालय, कोटा।

14.महाकवि श्री हर्ष प्रणीतम् नैषधीयमचरितम् महाकाव्यम्, श्री गोकुलदास संस्कृत ग्रंथमाला, चौखम्बा ओरियन्टालिया, प्राच्य विद्या, आयुर्वेद तथा दुर्लभ ग्रंथों के प्रकाशक दिल्ली।

15.महाकवि कालिदास विरचितं रघुवंश महाकाव्यम् संजीवनी, चन्द्रिका संस्कृत, हिन्दीव्याख्योपेतम्, आख्याकार–गङ्गासागर राय, कृष्णदास अकादमी वाराणसी–221001, 1984

16.डॉ0 नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, 1973

17.श्री मद्योगीश्वर महर्षि याज्ञवल्क्य प्रणीता याज्ञवल्क्यस्मृति व्यवहाराध्यायः, हिन्दी व्याख्याकारः संपादकश्च डॉ0 गङ्गासागरराय भूमिकालेखक, गिरिधर गोपाल शर्मा, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान।

शोधार्थिनी

साक्षी द्विवेदी

डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अयोध्या,उ0प्र0

E-mail-shakshidwivedi080591@gmail.com

ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ

ਨਵਜੋਤ ਕੌਰ (ਖੋਜਾਰਥਣ)

ਸਾਹਿਤ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਦਾ ਅਨਿਖੜ ਸੰਬੰਧ ਹੈ। ਇਸ ਸੰਵਾਦਕ ਪ੍ਰਕਰਿਆ ਨੂੰ ਠੋਸ ਬਣਾਉਣ ਵਿਚ ਵਿਭਨ ਸਾਹਿਤ ਰੂਪ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਉਦੇ ਹਨ। ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ-ਸਿਰਜਣਕਾਰੀ ਵਿਚ ਕਾਵਿ, ਗਲਪ, ਨਾਟਕ ਵਾਰਤਕ ਆਦਿ ਦੀਆਂ ਕਈ ਸਾਹਿਤ ਵੰਨਗੀਆਂ ਪ੍ਚਲਿਤ ਹਨ। ਹਰੇਕ ਵਿਧਾ ਦਾ ਆਪਣਾ ਤਕਨੀਕ ਪ੍ਰਬੰਧ ਹੈ। ਇਹ ਤਕਨੀਕ ਪ੍ਰਬੰਧ ਵਧਿਾਗਤ ਸਰੋਕਾਰਾਂ ਨਾਲ ਜੁੜ ਕੇ ਵਿਧਾ ਦੀ ਵਿਲੱਖਣ ਪਛਾਣ ਬਣਾਉਦਾ ਹੈ।

ਆਧੁਨਕਿ ਪੰਜਾਬੀ ਵਾਰਤਕ ਸਾਹਿਤ ਦੀ ਵਵਿਧਿਤਾ ਵਿਚ ਨਿਬੰਧ, ਜੀਵਨੀ, ਸਵੈ-ਜੀਵਨੀ, ਰੇਖਾ ਚਿਤਰ, ਡਾਇਰੀ, ਸਫ਼ਰਨਾਮਾ, ਯਾਦਾਂ ਆਦਿ ਰੂਪ ਵੱਖਰਾ ਮੁਹਾਂਦਰਾ ਸਿਰਜਦੇ ਹਨ। ਪੰਜਾਬੀ ਵਾਰਤਕਕਾਰਾਂ ਦੀ ਲੰਬੀ ਸੂਚੀ ਤਿਆਰ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ ਇਸ ਸੂਚੀ ਵਿਚ ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਖ਼ਾਸ ਨਾਂ ਹੈ।

"ਉਹ ਲੇਖਕ, ਪੱਤਰਕਾਰ, ਕਾਲਮਨਵੀਸ਼,
ਰੇਡੀਉਕਾਰ ਤੇ ਤੁੰਬੀਕਾਰ, ਫਾਈਵ ਇਨ ਵੰਨ ਹੈ।"[1]

ਉਸਨੇ ਆਪਣਾ ਰਚਨਾਤਮਕ ਆਗਾਜ਼, 'ਗੋਧਾ ਅਰਦਲੀ' (ਨਾਵਲੈੱਟ) ਰਾਹੀਂ ਕੀਤਾ ਪਰ ਉਸਦੀ ਸਾਹਿਤਕ ਪਛਾਣ ਦਾ ਆਧਾਰ ਸਵੈ ਜੀਵਨੀ ਮੂਲਕ ਰਚਨਾ 'ਮੈ ਸਾਂ ਜੱਜ ਦਾ ਅਰਦਲੀ' ਨੇ ਹੀ ਬਣਾਇਆ। 1994 ਤੋਂ ਪੁਸਤਕ ਲਖਿਣ ਦਾ ਆਰੰਭ ਹੋਇਆ ਸਲਿਸਲਿਾ ਲਗਾਤਾਰ ਕਾਰਜਸ਼ੀਲ ਹੈ। ਪੰਜ ਦਰਜਨ ਤੋਂ ਵੱਧ ਪੁਸਤਕਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਤੇ ਅਨੇਕਾਂ ਅਖਬਾਰਾਂ, ਮੈਗਜ਼ੀਨ, ਰਸਾਲਆਿਂ ਆਦਲਿਈ ਲਖਿਤਾਂ ਦਾ ਲੇਖਾ ਜੋਖਾ ਕਰਨਾ ਕਠਨਿ ਹੈ। ਲੇਖਣੀ ਦੇ ਪ੍ਰਸੰਗ ਵਚਿ ਪ੍ਰਸਿੰਪਲ ਸਰਵਣ ਸਘਿ ਦੀ ਟਪਿਣੀ ਹੈ, "ਜੇਕਰ ਜਸਵੰਤ ਸਘਿ ਕੰਵਲ ਜਨਿੀ ਉਮਰ ਜੀਅ ਗਆਿ ਤਾਂ ਕੰਵਲ ਦੀਆਂ ਸੌ ਕਤਿਾਬਾਂ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਨਿੰਦਰ ਦੀਆਂ ਦੋ ਢਾਈ ਸੌ ਕਿਤਾਬਾਂ ਵੱਟ ਤੇ ਹਨ।"[2] ਉਸਨੇ ਪੰਜਾਬੀ ਵਾਰਤਕ ਨੂੰ ਨਵੀਨ ਲੀਹਾਂ ਤੇ ਲਿਆਂਦਾ। ਨਿਬੰਧ, ਰੇਖਾ ਚਿਤਰ, ਸੰਸਮਰਣ, ਸਫ਼ਰਨਾਮਾ, ਜੀਵਨੀ ਮੂਲਕ ਸਾਹਿਤ ਆਦਿ ਦੀ ਕਲਮਕਾਰੀ 'ਚੋ ਅਣਗੌਲੇ ਪਹਿਲੂਆਂ, ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤਾਂ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਹਮਣੇ ਆਈ।

ਆਧੁਨਿਕ ਪੰਜਾਬੀ ਵਾਰਤਕ ਦੇ ਬੀਜ ਮੱਧਕਾਲੀ ਰਚਨਾਵਾਂ ਜਨਮਸਾਖੀ, ਟੀਕੇ, ਬਚਨ, ਗੋਸ਼ਟਿ ਆਦਿ ਵਿਚੋ ਟਟੋਲਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇ ਦਾ ਅਧਿਕਤਰ ਸੰਬੰਧ ਧਰਮ/ਅਧਿਆਤਮ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਆਧੁਨਿਕ ਪੰਜਾਬੀ ਵਾਰਤਕ ਦਾ ਘੇਰਾ ਵਸੀਹ ਹੈ। ਗਆਿਨ ਵਗਿਆਿਨ ਦੀ ਤੇਜ਼ ਰਫ਼ਤਾਰ ਕਾਰਨ ਦਰਸ਼ਨ, ਮਨੋਵਿਗਿਆਨ, ਧਰਮ, ਸਭਿਆਚਾਰ, ਵਿਗਆਿਨ, ਖੇਡ ਸਿਹਤ ਆਦਿ ਬਹੁਤ ਕੁੱਝ ਇਸ ਨਾਲ ਜੁੜ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸੇ ਦੀ ਸਾਰਥਕਤਾ ਦੀ ਰਚਨਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਬਣਾਉਣ ਵਿਚ ਮੱਦਦਗਾਰ ਸਿਧ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਹਰੇਕ ਵਧਿਾ ਦੀ ਸੰਰਚਨਾਤਮਕ ਇਕਾਈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਤਕਨੀਕ ਪ੍ਰਬੰਧ ਵੀ ਰਚਨਾ ਦੀ ਪਛਾਣ ਬਣਦੀ ਹੈ। ਵਾਰਤਕ ਵੰਨਗੀਆਂ ਵਿਚ ਸਪੱਸ਼ਟਤਾ-ਸਰਲਤਾ, ਸੰਜਮਤਾ, ਤਾਰਕਿਕਤਾ, ਪ੍ਭਾਵਸ਼ੀਲ ਤੱਥਾਤਮਕਤਾ, ਚਿਤਰਾਤਮਕਤਾ, ਬੋਲੀ, ਸ਼ੈਲੀ ਆਦਿ ਨਾਲ ਸਿਗਾਰਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਅਜਿਹੇ ਗੁਣਾਂ ਉਪਰ ਘਰੀ ਉਤਰਦੀ ਹੈ। ਉਹ ਵਧਿਾ-ਵਿਧੀ ਤੋ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਾਂ ਜਾਣੂੰ ਜਾਪਦਾ ਹੈ। ਵਭਨਿ ਵਿਸ਼ਆਿਂ ਦਾ ਨਿਭਾਅ ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਧੀਆਂ ਰਾਹੀਂ ਹੀ ਨੇਪਰੇ ਚੜ੍ਦਾ ਹੈ।

ਨਿਬੰਧ ਵਾਰਤਕ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਵਿਧਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਨਿਬੰਧਕਾਰ ਵਸਿੇ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਗਤਾ ਨੂੰ ਨਿ ਜੀ ਦ੍ਰਸ਼ਿਟੀਕੋਣ/ਵਚਿਾਰ ਵਚਿ ਵਉਿਤਦੇ ਹੋਏ ਸਰਲ, ਸਹਿਜ, ਸਪੱਸ਼ਟ ਢੰਗ ਨਾਲ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਵਚਿਾਰਾਂ ਦੀ ਲੜੀਬੱਧਤਾ ਬਣੀ ਰਹਦਿੀ ਹੈ। ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਨਿਬੰਧ ਦਾ ਵਸ਼ਿਾਗਤ ਘੇਰਾ ਵਸ਼ਿਾਲ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਨਿਬੰਧ ਦੀ ਵਧਿਾਗਤ ਸ਼੍ਰੇਣੀ ਵੀ ਨਰਿਧਾਰਤ ਕਰਦਾ ਹੈ ਭਾਵ ਕਥਾਤਮਕ, ਬਆਿਨੀਆਂ, ਚਿਨ੍ਹਾਤਮਕ, ਲਲਤਿ ਨਿਬੰਧ ਆਦਿ ਅਨੁਸਾਰ ਭਾਵਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਪਾਦਨ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਉਸਦੇ ਨਬਿੰਧਾਂ ਲੋਕ ਗਾਇਕ, ਸਵਿਆਿਂ ਵਿਚ ਖਲੋਤੀ ਬੇਰੀ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਲੋਕ ਸੰਗੀਤ, ਸੰਗੀਤ ਸੰਸਾਰ ਦੀਆਂ ਅਭੁੱਲ ਯਾਦਾਂ, ਕਾਲੇ ਕੋਟ ਦਾ ਦਰਦ ਆਦਿ ਵਿਚੋ ਭ੍ਰਸ਼ਿਟ ਪ੍ਰਬੰਧ, ਸਮਾਜਕਿ ਅਸਮਾਨਤਾ, ਅਨੈਤਕਿ ਕਦਰਾਂ ਕੀਮਤਾਂ ਕਲਾ ਮੁਸ਼ਕਲਿਾਂ, ਸਿਭਆਚਾਰਕ ਵਖਰੇਵੇਂ, ਪੀੜ੍ਹੀ-ਪਾੜੇ ਆਦਾਿ ਸਰੋਕਾਰ ਪੜ੍ਹਨ ਨੂੰ ਮਲਿਦੇ ਹਨ। "ਉਹ ਆਪਣੀ ਵਾਰਤਕ ਰਚਨਾ ਰਾਹੀਂ ਲੋਕਾਈ ਨੂੰ ਭ੍ਰਸ਼ਿਟਾਚਾਰ, ਬੇਈਮਾਨੀ ਤੇ ਅਨੈਤਕਿ ਕਦਰਾਂ ਕੀਮਤਾ ਵਰਿੁੱਧ ਡਟਣ ਅਤੇ ਕ ਚੰਗੇ ਸਵਸਥ ਮਾਨਵੀ ਕਦਰਾਂ ਕੀਮਤਾਂ ਵਾਲੇ ਸਮਾਜ ਸਭਾਚਾਰ ਦੀ ਸਰਿਜਨਾ ਕਰਨ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਦਾ ਹੈ।"[3] ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਕੋਲ ਨਬਿੰਧਾਂ ਨੂੰ ਰੌਚਕਿ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਅਮੁੱਕ ਸ਼ਬਦ ਭੰਡਾਰ ਹੈ। ਮੁਹਾਵਰੇ, ਅਖਾਣ, ਦ੍ਰਿਸ਼ਟਾਂਤ, ਵਅਿੰਗ ਆਦਿ ਨੂੰ ਵਿਆਕਰਨਕ ਨੇਮਾਂ ਵਿਚ ਢਾਲ ਕੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਸਿਰਜਆਿ ਗਿਆ ਹੈ।

ਜੀਵਨੀ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਵਾਰਤਕ ਰੂਪ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਵਿਅਕਤੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਦੇ ਜੀਵਨ ਵੇਰਵਿਆਂ ਨੂੰ ਬੜੀ ਸੰਜੀਦਗੀ ਨਾਲ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜੀਵਨ ਦੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਦਾ ਲੜੀਬੱਧ ਵਿਵਰਣ ਪ੍ਸਤੁਤ ਕਰਨ ਲਈ ਤੱਥਾਂ ਦੀ ਪੜਚੋਲ ਵੀ ਕਰਨੀ ਪੈਦੀ ਹੈ। ਖੇਤਰੀ ਖੋਜ ਕਾਰਜ ਨੂੰ ਵੀ ਮਾਧਿਅਮ ਬਣਾਉਣਾ ਪੈਦਾ ਹੈ। ਨਦਿਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਇਸ ਸਾਹਤਿਕ ਕਾਰਜ ਨੂੰ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਖੇਤਰੀ ਖੋਜ ਕਾਰਜ ਵੀ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਵਸ਼ਿੇਸ਼ ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ ਅਧੀਨ ਕਲਾਵਾਨ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਵੇਰਵੇ ਇਕੱਤਰ ਕਰਕੇ ਪਾਠਕਾਂ ਨੂੰ ਜਾਣੂੰ ਕਰਵਾਉਦਾ ਹੈ। ਯਮਲਾ ਜੱਟ ਦੇ ਸ਼ਾਗਿਰਦ, ਯਮਲਾ ਜੱਟ, ਸੁਰਿਦਰ ਕੌਰ, ਲੋਕ

ਗਾਇਕਾਵਾਂ, ਕਰਨੈਲ ਸਿੰਘ ਪਾਰਸ, ਜਗਦੇਵ ਸਿੰਘ ਜੱਸੋਵਾਲ ਆਦਿ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਸੰਘਰਸ਼, ਕਲਾ ਸ਼ੌਕ, ਸਮਾਜਿਕ, ਸਭਿਆਚਾਰਕ, ਰਾਜਸੀ ਦੇਣ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਸਰੋਕਾਰ ਉਜਾਗਰ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਜੀਵਨੀ ਨਾਇਕ ਦੀ ਇਤਿਹਾਸਕਤਾ ਨੂੰ ਸੂਤਰਿਕ ਵਰਣਨ ਰਾਹੀਂ ਸਮਕਾਲ ਨਾਲ ਜੋੜਦਾ ਹੈ। ਠੇਠ ਮਲਵਈ ਭਾਸਾ ਕਾਵਿ ਰੰਗ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਹੋ ਕੇ ਨਵਾ-ਮੁਹਾਂਦਰਾ ਸਿਰਜਦੀ ਹੈ।

ਸਵੈ ਜੀਵਨੀ ਸਿਰਜਕ ਦੇ ਸਵੈ ਦੀ ਹੀ ਗਾਥਾ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਸਦੀ ਰਚਨਾਕਾਰੀ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਈਮਾਨਦਾਰੀ ਉੱਤੇ ਵੀ ਨਰਿਭਰ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ 'ਮੈਂ ਸਾਂ ਜੱਜ ਦਾ ਅਰਦਲੀ' ਵਿੱਚ ਨਿੱਜਤਾ ਦੇ ਭੇਦ ਨੂੰ ਸਪੱਸ਼ਟ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਬਿਆਨ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਆਪਣੀਆਂ ਆਰਥਕਿ ਤੰਗੀਆਂ-ਤੁਰਸ਼ੀਆਂ, ਗੀਤ ਸ਼ੌਕ ਆਦਿ ਨੂੰ ਖੁੱਲ੍ਹ ਕੇ ਬਿਆਨ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਸ਼ਾਸ਼ਨਿਕ ਵਿਵਸਥਾ ਵਿੱਚ ਨਿਆਂਇਕ ਪ੍ਰਬੰਧ ਦੀ ਗਿਰਾਵਟ, ਆਰਥਿਕ ਅਸਮਾਨਤਾ, ਸ਼ੋਸ਼ਣ, ਵਿਤਕਰੇ, ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਆਦਿ ਵਸ਼ਿਗਤ ਸਰੋਕਾਰ ਰੂਪਮਾਨ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਰਚਨਾ ਦੀ ਬੋਲੀ-ਸ਼ੈਲੀ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਮਲ ਗਾਲ੍ਹਾਂ, ਮੁਹਾਵਰੇ-ਅਖਾਣ, ਪਾਤਰ, ਦ੍ਰਿਸ਼ ਚਿਤਰਣ ਆਦਿ ਤਕਨੀਕੀ ਪੱਖ ਮਜ਼ਬੂਤ ਜਾਪਦੇ ਹਨ। ਗਾਲਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਈ ਥਾਵੀਂ ਹੋਈ ਹੈ "ਉਏ ਯੱਭਲਾ ਕਿਤੋਂ ਦਿਆ, ਐਨੀ ਚੇਤੀ ਥੱਕ ਗਿਆ ਐ? ਅੰਡੇ ਦੇਣੇ ਐ ਜਾ ਕੇ ਕਤਿੇ...?[4] ਬਾਲਪਨ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਤਿ ਰਚਨਾ 'ਨਿੱਕੇ ਪੈਰਾਂ ਦੀਆਂ ਪੈੜਾਂ' ਨਾਲੋਂ 'ਮੈਂ ਸਾਂ ਜੱਜ ਦਾ ਅਰਦਲੀ' ਵਧੇਰੇ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਹੈ।

ਰੇਖਾ ਚਿੱਤਰ ਵੱਖਰੀ ਭਾਂਤ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਵਿਧਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਵਿਅਕਤੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਦੇ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਆਲੋਚਨਾਤਮਕ-ਕਲਪਨਾਤਮਕ ਢੰਗ ਨਾਲ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ ਵਰਣਨ ਨੂੰ ਨਿੱਜੀ ਛੋਹਾਂ ਨਾਲ ਜੋੜ ਕੇ ਸੰਖੇਪ/ਸੂਤਰਕ ਸੈਲੀ ਅਪਣਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਸੰਕੇਤਕ ਰਚਨਾ ਵਚਿ ਜਜ਼ਬਾਤੀ ਅੰਸ਼ ਵੀ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦੇ ਹਨ। ਰਸਦਾਇਕ ਰਚਨਾ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਭਾਸ਼ਾ/ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ ਬੜੀ ਸੂਝ ਨਾਲ ਵਰਤਣੀ ਪੈਂਦੀ ਹੈ। ਨੰਿਦਰ ਘੁਗਆਿਣਵੀ ਮਾਨ ਪੰਜਾਬ ਦੇ, ਸੱਜਣ ਮੇਰੇ ਰੰਗਲੇ, ਵੱਡਿਆ ਦੀ ਸੱਥ, ਫੱਕਰਾਂ ਜਿਹੇ ਫਨਕਾਰ, ਮੋਈ ਮਿੱਤਰਾਂ ਦਾ ਮੋਹ, ਭੁਲਦੇ ਨਹੀਂ ਭੁਲਾਏ, ਤੁਰ ਗਏ ਸੁਰ ਵਣਜਾਰੇ, ਆਦਿ ਪੁਸਤਕਾਂ ਵਚਿ ਸਾਹਤਿ, ਖੇਡ, ਸੰਗੀਤ, ਕਲਾ, ਸਭਿਆਚਾਰ, ਰਾਜਸੀ ਆਦਿ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤਾਂ ਦੇ ਰੇਖਾ ਚਿਤਰ ਚਤਿਰਦਾ ਹੈ। ਨੰਿਦਰ ਘੁਗਆਿਣਵੀ ਬਰਿਤਾਂਤਕ, ਵਅਿੰਗਾਤਮਕ, ਹਾਸ ਰਸ, ਕਾਵਕਿ ਅਲੰਕਾਰ ਸ਼ੈਲੀ ਰਾਹੀਂ ਪਾਤਰ ਦੀ ਰੇਖਾਕਾਰੀ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ ਵਿੱਚ ਹਿੰਦੀ, ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ, ਉਰਦੂ ਦੇ ਸ਼ਬਦ ਵਾਕਾਂ ਵਿੱਚ ਪਰੋਏ ਗਏ ਹਨ। ਪੈਰ੍ਹਿਆਂ ਦੀ ਸੁਚੱਜੀ ਵੰਡ ਵਿਚਾਰਾਂ ਵਿਚ ਲੜੀਬੱਧਤਾ ਬਰਕਰਾਰ ਰੱਖਦੀ ਹੈ। ਰੌਚਿਕਤਾ ਪਾਠਕ ਨੂੰ ਨੀਰਸ ਹੋਣ ਤੋਂ ਬਚਾਉਂਦੀ ਹੈ।

ਸੰਸਮਰਣ/ਯਾਦਾਂ ਵਾਰਤਕ ਦੀ ਜ਼ਿਕਰਯੋਗ ਵੰਨਗੀ ਹੈ। ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ 'ਰੈਮਨਿਸਿਸ' 'ਮੈਮੋਇਰ' ਸ਼ਬਦ ਨੂੰ ਵਿਧਾ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਤ ਕਰਦੇ ਹੋਏ 'ਬੀਤੇ ਨੂੰ ਯਾਦ ਕਰਨਾ' ਅਰਥ ਸਿਰਜੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਸੰਸਕ੍ਰਤਿ ਦਾ 'ਸਮਿਰਤੀ' ਸ਼ਬਦ ਵੀ ਯਾਦ ਨਾਲ ਜੁੜਵਾਂ ਹੈ। ਅਜਿਹੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ, ਯਾਦਾਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਭੁਲਾਉਣਾ ਔਖਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਸਿਰਜਣਕਾਰੀ ਦਾ ਅੰਗ ਬਣਦੀਆਂ ਹਨ। ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਰੇਡੀਓ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ ਯਾਦਾਂ ਨੂੰ 'ਮੇਰਾ ਰੇਡੀਉਨਾਮਾ' ਵਿਚ ਚਿਤਰਦਾ ਹੈ। ਇਉਂ ਬਾਪੂ ਖੁਸ਼ ਹੈ, ਅਵਤਾਰ ਬਰਾੜ ਦੀਆਂ ਅਭੁੱਲ ਯਾਦਾਂ, ਯਾਦਾਂ ਦੀ ਡਾਇਰੀ ਆਦਿ ਪੁਸਤਕਾਂ ਇਸ ਵਿਧਾ ਦੀ ਪੈਰਵੀ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਹ ਯਾਦਾਂ ਸਵੈ ਤੋਂ ਸਮੂਹ ਤੱਕ ਦਾ ਸਫ਼ਰ ਹੈ। ਸਵੈ-ਚੇਤਨਾ ਸਮੂਹਕਿ ਚੇਤਨਾ ਵਿੱਚ ਰੂਪਾਂਤਰ ਹੋ ਕੇ ਅਰਥ ਵਸਿਥਾਰ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਯਾਦਾਂ ਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਕਾਰੀ ਸਮੇਂ ਭਾਸ਼ਾ, ਘਟਨਾ, ਪਾਤਰ, ਬਰਿਤਾਂਤ, ਸਮੇ/ਸਥਾਨ ਨੂੰ ਬਾਰੀਕਬੀਨੀ ਨਾਲ ਵਉਿਂਤਦਾ ਹੈ। ਸਰਿਲੇਖ, ਭਾਸ਼ਾਈ ਮੁਹਾਵਰੇ, ਸ਼ੈਲੀ ਆਦਿ ਦੀ ਸਮੇਲਤਾ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। "ਸਾਰੀ ਰਾਤ ਪਾਸੇ ਲੈਂਦਿਆਂ ਲੰਘੀ ਸੀ। ਸੋਚੀ ਗਿਆ ਸਾਂ ਕਿ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਨੂੰ ਕੀ ਆਖਾਂਗਾ ਕਿ ਅਵਤਾਰ ਸਘਿ ਬਰਾੜ ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਜੀ ਦੇ ਪੀਏ ਨੇ ਘੱਲਿਆ ਐ ਮੈਨੂੰ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਫੋਨ ਵੀ ਕੀਤਾ ਐ ਸਰ ਮੇਰੀ ਖ਼ਾਤਰ। ਹੋ ਸਕਦੈ ਕਿ ਉਹ ਮੈਨੂੰ ਆਪਣੇ ਕਮਰੇ ਵਿੱਚ ਈ ਨਾ ਵੜਨ ਦੇਵੇ! ਅੱਗੋਂ ਕੀ ਆਖੇਗਾ ਡਾਇਰੈਕਟਰ, ਮੰਨੇਗਾ ਜਾਂ ਨਹੀਂ ਮੰਨੇਗਾ? ਕੀ ਹੋਣਾ ਹੈ ਮੇਰੀ ਬਹਾਲੀ ਦਾ? ਕੱਚੀ ਨੌਕਰੀ ਖ਼ਾਤਰ ਯਭ-ਖਬ ਰਿਹਾ ਸਾਂ। ਮਾਨਸਕਿ ਤੌਰ 'ਤੇ ਵੀ ਉਖੜਿਆ ਫਿਰ ਰਿਹਾ ਸਾਂ..ਅਣਦੱਸੇ ਰਾਹਾਂ ਉੱਤੇ "[5]

ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਘੁਮੱਕੜੀ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਹੈ। ਉਸਦਾ ਜਗਿਆਸੂ ਸੁਭਾਅ, ਖੋਜ ਪ੍ਰਵਿਰਤੀ, ਸਫ਼ਰ/ਯਾਤਰਾ ਕਰਨ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਤਿ ਕਰਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਉਹ ਕੈਨੇਡਾ, ਅਮਰੀਕਾ, ਆਸਟਰੇਲੀਆ ਆਦਿ ਮੁਲਕਾਂ ਦੀ ਯਾਤਰਾ ਕਰ ਚੁੱਕਾ ਹੈ। ਯਾਤਰਾ ਦੌਰਾਨ ਅਨੁਭਵ ਕੀਤੇ ਅਨੁਭਵਾਂ ਨੂੰ 'ਠੰਡੀ ਧਰਤੀ ਤਪਦੇ ਲੋਕ', 'ਵੱਖਰੇ ਰੰਗ ਵਲੈਤ ਦੇ', 'ਦੇਖੀ ਤੇਰੀ ਵਲੈਤ', 'ਮੇਰੀ ਅਮਰੀਕਾ ਫੇਰੀ' ਸਫ਼ਰਨਾਮਿਆਂ ਵਿੱਚ ਉਲੀਕਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਫ਼ਰਨਾਮੇ ਪੰਜਾਬ-ਪਰਵਾਸ ਦਾ ਤੁਲਨਾਤਮਕ ਅਧਿਐਨ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੇ ਵਕਤ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਵਾਤਾਵਰਣ, ਰਹਿਣ-ਸਹਿਣ, ਖਾਣ-ਪੀਣ, ਪਰਵਾਸ ਮੁਸ਼ਕਿਲਾਂ, ਭੂ-ਹੇਰਵਾ, ਪੀੜ੍ਹੀ-ਪਾੜਾ, ਆਰਿਥਕ ਵਖਰੇਵਾਂ ਆਦਿ ਸਰੋਕਾਰਾਂ ਉੱਤੇ ਫੋਕਸ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਪ੍ਰਤੀਕਾਤਮਕ ਸਰਿਲੇਖ, ਨਕਿੇ ਤਖਿੇ ਵਾਕ, ਚੁਸਤ ਕਾਵਿਕ ਵਿਅੰਗ, ਵਰਣਨਾਤਮਕ ਸ਼ੈਲੀ ਵਚਿ ਸਰਿਜੇ ਦ੍ਰਸ਼ਿ ਵਰਣਨ ਵਦਿੇਸ਼ ਦੀ ਸੈਰ ਕਰਵਾਉਂਦੇ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਸਰਲਤਾ, ਸੰਜਮਤਾ, ਉਤਸੁਕਤਾ ਆਦਿ ਜੁਗਤਾਂ ਪਾਠਕਾਂ ਨੂੰ ਕੀਲਦੀਆਂ ਹਨ। ਭੂਗੋਲਿਕ ਤੇ ਇਤਿਹਾਸਕ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਾ ਵਵਿਰਣ ਦਲਿਚਸਪ ਹੈ।

ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕਾਰੀ ਵਿੱਚ ਤੂੰਬੀ, ਛੱਪੜ, ਪਸ਼ੂ, ਪੰਛੀਆਂ ਆਦਿ ਦਾ ਮਾਨਵੀਕਰਨ ਖਿੱਚ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬਣਦਾ ਹੈ। ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦਾ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਗਾਇਨ

ਸ਼ੌਕ ਕਲਾਕਾਰਾਂ ਦੀ ਜੀਵਨ-ਸ਼ੈਲੀ ਨੂੰ ਜਾਣਨ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਦਾ ਵਿਹਾਰਕ ਰੂਪ ਵਿਭਨਿ ਵਾਰਤਕ ਰੂਪਾਂ ਵਿੱਚੋ ਸਹਿਜੇ ਵੇਖਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਇਕੋ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ ਉੱਪਰ ਨਬਿੰਧ, ਰੇਖਾ ਚਤਿਰ, ਸੰਸਮਰਣ, ਜੀਵਨੀ ਆਦਿ ਲਖਿਣ ਦੀ ਮੁਹਾਰਤ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਅਜਿਹਾ ਕਰਦੇ ਵਕਤ ਵਚਿਾਰ/ਘਟਨਾ ਦੇ ਦੁਹਰਾਅ ਦੀ ਸੰਭਾਵਨਾ ਵੀ ਬਣੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ।

ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਤੇਜੀ ਨਾਲ ਲਿਖਣ ਵਾਲਾ ਵਾਰਤਕਕਾਰ ਹੈ। ਉਹ ਵਾਰਤਕ ਦੀਆਂ ਵਿਭਨ ਵਿਧਾਵਾਂ ਨੂੰ ਅਨੇਕਾ ਸਰੋਕਾਰਾਂ ਰਾਹੀਂ ਰੂਪਮਾਨ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਸਰੋਕਾਰਾਂ ਦੇ ਤਕਨੀਕੀ ਪ੍ਰਬੰਧ ਵਿੱਚ ਭਾਸ਼ਾ, ਵਿਚਾਰ, ਰੌਚਿਕਤਾ, ਕਾਵਿਕਤਾ, ਮੁਹਾਵਰੇ, ਅਖਾਣ ਆਦਿ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਬਣਦਾ ਹੈ। ਆਧੁਨਕਿ ਪੰਜਾਬੀ ਵਾਰਤਕ ਸਾਹਿਤ ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਤੋ ਢੇਰ ਉਮੀਦਾਂ ਰੱਖਦਾ ਹੈ।

ਹਵਾਲੇ

1. ਪ੍ਰਰਿੰ. ਸਰਵਣ ਸਿੰਘ (ਸੰਪਾ.), ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਪੜ੍ਹਦਿਆ, ਲੋਕਗੀਤ ਪ੍ਰਰਕਾਸ਼ਨ, ਚੰਡੀਗੜ੍, 2022, ਪੰਨਾ 16
2. ਉਹੀ, ਪੰਨਾ 12
3. ਅਨੇਸ਼ ਸ਼ਰਮਾ, ਨਿੰਦਰ ਘੁਗਿਆਣਵੀ ਦੀ ਵਾਰਤਕ ਜਗਤ ਦਾ ਅਧਐਿਨ, ਕੁਰੂਕਸ਼ੇਤਰ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਕੁਰੂਕਸ਼ੇਤਰ, 2012, ਪੰਨਾ 33
4. ਨਦਿਰ ਘੁਗਆਿਣਵੀ, ਮੈ ਸਾਂ ਜੱਜ ਦਾ ਅਰਦਲੀ, ਚੇਤਨਾ ਪ੍ਰਰਕਾਸ਼ਨ, ਲੁਧਆਿਣਾ, 2001, ਪੰਨਾ 71
5. ਉਹੀ, ਅਵਤਾਰ ਸਿੰਘ ਬਰਾੜ ਦੀਆਂ ਅਭੁੱਲ ਯਾਦਾਂ, ਆੱਟਮ ਆਰਟ, ਪਟਿਆਲਾ, 2022, ਪੰਨਾ 34

ਨਵਜੋਤ ਕੌਰ (ਖੋਜਾਰਥਣ)
ਰੋਲ ਨੰਬਰA 216811003
ਗੁਰੂ ਕਾਸ਼ੀ ਯੂਨੀਵਰਸਟਿੀ, ਤਲਵੰਡੀ
ਸਾਬੋ (ਬਠਿੰਡਾ)

15

भारत के बदलते आर्थिक परिदृश्य का विश्लेशण

डॉ0 बबली चंद्रा

सारांश

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों यथा कृषि उद्योग एवं सेवा क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों को लिया गया। आर्थिक विकास के संदर्भ में कृषि उद्योग धंधे, रोजगार, शिक्षा आदि के प्रोत्साहन में वृद्धि करना है तथा बेरोजगारी कुपोषण, निरक्षरता, विषमता आदि को प्रगतिशील रूप से कम करना है तथा अंतिम रूप से समाप्त करना है। न्यू इंडिया वर्तमान समय में अपने सामर्थ्य के अनुसार अपने संसाधनों पर भरोसा करके आगे बढ़ रहा है UNCTAD कि वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट के मुताबिक भारत निवेश के लिए दुनिया के पसंदीदा देशों में से एक है। दुनिया की टॉप 3 अर्थव्यवस्था में भारत का नाम है। न्यू इंडिया ने डिजिटल के माध्यम से देश का आर्थिक विकास बढ़ाया है आज न्यू इंडिया दुनिया की खुली अर्थव्यवस्था में से एक है।

मुख्य शब्द– GDP विकास, GVC, PLI स्कीम, PMKVY, आर्थिक सर्वेक्षण 2022–23, डिजिटल इंडिया, पी एम विश्वकर्मा योजना, मानवीय पूंजी का इस्तेमाल, निष्कर्ष–

<u>प्रस्तावना</u>–स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रमुख क्षेत्रों यथा कृषि उद्योग एवं सेवा क्षेत्र में होने वाले महत्वपूर्ण परिवर्तनों एवं आर्थिक विकास के क्रमो को प्रस्तुत करते हुए आर्थिक विकास की भूमिका को स्पष्ट किया गया है विभिन्न अंतरराष्ट्रीय विकास संगठनों के द्वारा की गई रिपोर्ट एवं सूचकांक के माध्यम से भारत सहित विश्व के प्रमुख देशों की आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन का भी विश्लेषण किया गया है। नए भारत में आर्थिक विकास परिमाणात्मक तथा गुणात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तनों से संबंधित है आर्थिक विकास तभी कहा जाएगा जब जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो आर्थिक विकास का प्रमुख लक्ष्य कुपोषण, निरक्षरता, बेरोजगारी, विषमता आदि को प्रगतिशील रूप से कम करना तथा अंतिम रूप से समाप्त करना है। भारत में आर्थिक विकास में कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र का एक प्रमुख घटक है, स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीय कृषि अत्यंत पिछड़ी अवस्था में थी उस समय कृषि में श्रम तथा भूमि की उत्पादकता कम थी। किसान परंपरागत कृषि पद्धतियों से कृषि करते थे कृषि कार्य केवल जीवन निर्माण हेतु किए जाते थे उन दिनों बड़े पैमाने पर कृषि का वाणिज्यकरण भी नहीं हुआ थाद्य स्वतंत्रता प्राप्ति के समय सकल घरेलू उत्पाद में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों का योगदान लगभग ५० प्रतिशत था लेकिन वर्तमान भारत में सकल घरेलू उत्पाद में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों का योगदान लगभग बढ़ता जा रहा है नए भारत में आर्थिक विकास विशेषकर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के विकास हेतु कृषि क्षेत्र का विकास अत्यंत आवश्यक है। यह आर्थिक विकास का सबसे बड़ा असंगठित क्षेत्र है। अकेला भारत देश है जो आर्थिक विकास सामाजिक क्षेत्र के विकास तथा समावेशी विकास को सम्मिलित किए हुए हैं नए भारत के आर्थिक विकास में सामाजिक, सांस्कृतिक ,राजनीतिक तथा आर्थिक परिवर्तन भी सम्मिलित है जो कि भौतिक उन्नति में योगदान देते हैं स नए भारत में आर्थिक विकास पूरे विश्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका दे रहा हैस पिछले वर्षों में भारत ने अपने साथ–साथ पूरी दुनिया की आर्थिक प्रगति को मजबूती दी है स आज भारत जैसे देश में विदेशी मुद्रा का भंडार लगभग 300 बिलीयन डॉलर से बढ़कर 419 बिलीयन डॉलर के स्तर पर पहुंच गया है यह सब बदलाव भारत में संस्कृति की वजह से आ रहा है। आज देश अपने सामर्थ्य अपने संसाधन पर भरोसा करके न्यू इंडिया के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। UNCTAD की वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट के मुताबिक भारत निवेश के लिए दुनिया के पसंदीदा देशों में से एक है दुनिया की तेजी से उभरती टॉप 3 अर्थव्यवस्था में भारत का भी नाम है आज नया भारत 142 से 100 वे नंबर पर पहुंच चुका है द्य वर्तमान समय में नया भारत दुनिया की सबसे खुली अर्थव्यवस्था में से एक है।

भारतीय अर्थव्यवस्था एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है, जिसमें भौगोलिक, गतिशीलता का पूर्ण अभाव पाया जाता है। हमारे देश में शारीरिक श्रम से जुड़े उद्योगों को सामाजिक प्रस्थिति की दृष्टि से सम्मानजनक नहीं माना जाता। अतएव शारीरिक श्रम से जुड़े कार्यों को पिछड़ी दृष्टि से देखा जाता है परंतु नए भारत में आर्थिक विकास का पैमाना बढ़ा दिया है। वर्तमान समय में भारत ने विकास को डिजिटल से जोड़ दिया है, जिससे नये भारत का विकास पहले की अपेक्षा तीव्र गति से हो रहा है। देश के राष्ट्रीय उत्पादन एवं निर्यात में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है। देश की लगभग 52.4 प्रतिशत कार्यरत जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है। इसमें 42 प्रतिशत कृषक के रूप में और सिर्फ कृषि श्रमिक के रूप में कार्य करती है। परंतु वर्तमान में नए भारत के आर्थिक विकास को दृष्टिगत रखते हुए स्वतंत्रता के पश्चात कृषि को देश की आत्मा के रूप में स्वीकार करते हुए एवं खेती को आर्थिक विकास का स्वरूप माना है नये भारत में आत्मनिर्भर अभियान के तहत कृषि के क्षेत्र में अनेक बड़ी घोषणाएं की गई हैं।

वर्तमान समय में नये भारत में आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से जीएसटी ने देश को एक बेहतर कर व्यवस्था दी है, जिससे कम लागत में सामानों की आवाजाही तेज हुई है जिससे निर्यात में प्रतिस्पर्धा का माहौल बना है। नये भारत में आर्थिक वृद्धि को लेकर पूरे देश के लिए एक कर के विचार के साथ 2017 में भारत में माल एवं सेवा कर पेश किया गया। इसलिए इसे भारत के आर्थिक विकास में एक बहुत अच्छा कर सुधार माना गया है। जिससे कर व्यापक सुधार की तरफ है।

जीएसटी ने देश का एक सुव्यवस्थित ढांचा प्रस्तुत किया है क्योंकि जीएसटी अकेला कर है इसलिए विभिन्न आपूर्ति श्रंखला स्तरों पर कणों की गणना करना अधिक सरल हो गया है इसलिए नये भारत के आर्थिक विकास में जीएसटी का महत्वपूर्ण योगदान है इसलिए भारत पर जीएसटी के प्रभाव को सकारात्मक माना गया है। ग्राहक और निर्माता दोनों देख सकते हैं, कि उनसे कितना कर लिया जाएगा तथा अधिकारी भी करो को अब दूसरे पर नहीं डाल सकते हैं।

नए भारत के दृष्टिकोण में डिजिटल इंडिया ने आर्थिक विकास को सशक्त समाज और ज्ञान की अर्थव्यवस्था में बदलने के कार्यक्रम को मंजूरी दी गई है। भले ही भारत को सॉफ्टवेयर के पावर हाउस के रूप में जाना जाता है, फिर भी नागरिकों के लिए इलेक्ट्रॉनिक सरकारी सेवाओं की उपलब्धता तुलनात्मक रूप से कम है। डिजिटल इंडिया विजन इस पहल के लिए तीव्र गति प्रदान कर रहा है और यह समावेशी विकास को बढ़ावा देगा। नए भारत ने देश की 21 वी सेंचुरी को अपने नागरिकों की आकांक्षा को पूरा करने का प्रयास किया है, जहां तक सरकार और इसकी सेवाएं नागरिकों तक पहुंचे। जिससे देश का सकारात्मक विकास हो,

तथा देश के विकास में अपना योगदान प्रदान करें। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का उद्देश्य नए भारत के विकास इंजन के रूप में आईटी का लाभ उठाकर भारत को डिजिटल रूप में सशक्त समाज और अर्थव्यवस्था में बदलना है वर्तमान समय में भारत,आर्थिक विकास के टॉप पर पहुंचने की कगार पर है। नए भारत को डिजिटल रूप में सशक्त समाज और ज्ञान की अर्थव्यवस्था में बदलना है।

नए भारत में आर्थिक विकास में अवरोध में महंगाई सबसे बड़ी समस्या है। केंद्रीय बैंक के लिए महंगाई अभी भी बड़ी समस्या बनी हुई है, इसके पीछे कई कारण है इस समस्या का स्वरूप तीन आयामी है पहला ईंधन, दूसरा खाद्य समस्या, तीसरा कोर इन्फ्लेशन यानी मुद्रा स्फीति। यह तीनों पहलू ही मिलकर महंगाई की दशा और दिशा का संकेत करते हैं।

नई भारत में आर्थिक विकास पूरे विश्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका दे रहा है। पिछले 3000 वर्षों में भारत ने अपने साथ–साथ पूरी दुनिया के आर्थिक विकास को मजबूती प्रदान की है। आज भारत के 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य की चर्चा करती है। अब दुनिया भारत के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती है। वर्तमान समय में नए भारत अर्थव्यवस्था के विकास में 7 गुना ज्यादा योगदान कर रहा है चाहे मुद्रा स्फीति या चालू खाता घाटा, जीडीपी विकास दर या परामीटर में नया भारत बेहतरीन प्रदर्शन कर रहा है। आज देश में विदेशी मुद्रा का भंडार लगभग 300 से बढ़कर 419 बिलियन डॉलर के स्तर पर पहुंच गया है। भारत में यह सब बदलाव संस्कृति की वजह से आ रहा है अपने संसाधन पर भरोसा करके भारत आगे बढ़ रहा है। वर्तमान समय में भारत ने जितनी तरक्की करी हो शायद ही कोई और करें।

वित्तीय वर्ष 2023–24 की पहली तिमाही में 7.8 प्रतिशत के विकास दर के साथ भारत (G20 में सबसे तेज रफ्तार से बढ़ता देश) की अर्थव्यवस्था के 2026–27 तक 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर को पार करने की उम्मीद है, अपने आर्थिक विकास की यात्रा में भारत एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है जहां अलग–अलग फैक्टर की गतिशील परस्पर क्रिया उसके आर्थिक परिदृश्य और जनसांख्यिकीय (डेमोग्राफिक) संरचना को नया आकार देती है। कई प्रमुख फैक्टर भारत के मौजूदा आर्थिक परिदृश्य को चिन्हित करते हैं, GDP विकास के बारे में 2022–23 के आर्थिक सर्वे के अनुमानों से संकेत मिलता है कि भारत वित्तीय वर्ष 2023–24 में वास्तविक रूप से 6.5 प्रतिशत के बेसलाइन GDP विकास के साथ 6 प्रतिशत से 6.8 प्रतिशत के बीच आर्थिक विकास का अनुभव करेगा, हालांकि भारत की अर्थव्यवस्था के लिए महंगाई लगातार एक चिंता बनी रही है, हाल की वित्तीय और मौद्रिक नीतियों में महंगाई को काबू में रखने की कोशिशें साफ तौर पर दिखी हैं जिसके तहत 2022 में प्रमुख ब्याज दरों में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के द्वारा बढ़ोतरी की गई है, भारत ने आर्थिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए वित्तीय नीतियों को भी सक्रिय रूप से लागू किया है। भारत की अर्थव्यवस्था के लिए महंगाई लगातार एक चिंता बनी रही है, हाल की वित्तीय और मौद्रिक नीतियों में महंगाई को काबू में रखने की कोशिशें साफ तौर पर दिखी हैं जिसके तहत 2022 में प्रमुख ब्याज दरों में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के द्वारा बढ़ोतरी की गई है। मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर ग्लोबल वैल्यू चेन (GVC) में जुड़ने का भरोसा रखता है लेकिन उसके सामने श्रम आवश्यकताओं के साथ उत्पादन के पैमाने को संतुलित करने की चुनौती है, इस संदर्भ में ये पता लगाना जरूरी हो जाता है कि भारत इन अवसरों का लाभ कैसे उठा सकता है और अपनी बढ़ती आबादी के लिए सतत आर्थिक विकास एवं ज्यादा रोजगार के अवसरों को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से संबंधित चुनौतियों का समाधान कैसे कर सकता है। भारत में सर्विस सेक्टर पूर्वी एशियाई देशों की तुलना में कम लोगों को रोजगार देता है लेकिन ये राष्ट्रीय ग्रॉस वैल्यू एडेड (GVA) में लगातार योगदान दे रहा है, कंस्ट्रक्शन उद्योग ने भी औद्योगिक सेक्टर में उल्लेखनीय भरोसा दिखाया है और पिछले दो दशकों के दौरान इसमें काम करने वाले लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, बैंकिंग सेक्टर 16 लाख लोगों को रोजगार देता है और इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा (49.1 प्रतिशत) सरकारी क्षेत्र के बैंकों में काम करता है. इसके अलावा, गिग वर्कर्स (अस्थायी कामगार), जो कि कुल वर्क फोर्स में फिलहाल 1.5 प्रतिशत हैं, की संख्या 2029–30 तक बढ़कर कुल रोजगार में 4.1 प्रतिशत हिस्सा होने की उम्मीद है। भारतीय घरेलू मैन्युफैक्चरिंग के पास GVC के भीतर अपनी स्थिति मजबूत करने का सुनहरा अवसर है. इस तरह इसके काम–काज का पैमाना बढ़ जाएगा. फिर भी, मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर ज्यादा कैपिटल–इंटेंसिव (पूंजी पर निर्भर) बनने की और बढ़ रहा है

जिससे कैपिटल– आउटपुट रेशियो में गिरावट आएगी और इसके परिणामस्वरूप श्रम के लिए मांग कम होगी, मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में काम–काज बढ़ाने और सरप्लस लेबर फोर्स को संभालने के बीच संतुलन स्थापित करना आने वाले दशक में एक महत्वपूर्ण चुनौती होगी। जैसे–जैसे भारत अपनी आर्थिक विकास की यात्रा में आगे बढ़ रहा है, ये अवसर पैदा करने वाले सेक्टर भारत के रोजगार के परिदृश्य को निर्धारित करने में एक बुनियादी भूमिका अदा करने के लिए तैयार हैं। मैन्युफैक्चरिंग के भीतर लेबर–इंटेंसिव (श्रम पर निर्भर) सब–सेक्टर (उप क्षेत्र) इस बदलाव के दौरान उत्पादकता में शुद्ध बढ़ोतरी हासिल करने में एक अहम भूमिका अदा कर सकते हैं, भारत का निर्यात बास्केट, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, आयरन और स्टील का बढ़ रहा हिस्सा शामिल है, उत्पादन और प्रतिस्पर्धी रिफाइनिंग सेवाओं के लिए अधिक क्षमता का प्रतीक है. खिलौना, कपड़ा, फुटवियर और फर्नीचर जैसे श्रम पर निर्भर निर्यात सेक्टर घरेलू नौकरियां पैदा करने में बहुत ज़्यादा संभावना रखते हैं और विकास के लिए इनको प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

सरकार के कदम भारत में जीवंत (वाइब्रेंट) और गतिशील वर्क फोर्स (श्रम बल) के साथ सरकार की पहलों और नीतियों में आपसी साझेदारी नौकरियां पैदा करने के लिए एक प्रेरक माहौल का रास्ता तैयार कर सकती है, जैसे–जैसे भारत अपनी आर्थिक विकास की यात्रा में आगे बढ़ रहा है, ये अवसर पैदा करने वाले सेक्टर भारत के रोजगार के परिदृश्य को निर्धारित करने में एक बुनियादी भूमिका अदा करने के लिए तैयार हैं. इसमें सरकार की पहल के रणनीतिक समर्थन और कदमों से प्रेरणा मिलेगी, कुछ प्रमुख सरकारी पहलों में शामिल हैं:

डिजिटल इंडिया प्रोग्राम 2015 में शुरू डिजिटल इंडिया प्रोग्राम भारत को एक नॉलेज इकोनॉमी (ज्ञान पर आधारित अर्थव्यवस्था) में बदलने की एक व्यापक सरकारी पहल है. डिजिटल पहल पर जोर देकर ये प्रोग्राम डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देता है, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर का विस्तार करता है और ई–सरकारी सेवाओं को बढ़ाता है, इस तरह ये एक डिजिटल इकोसिस्टम को बढ़ावा देता है, डिजिटल इंडिया की व्यापक छतरी के तहत सरकार ने छोटे शहरों में इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी और इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी–इनेबल्ड सर्विसेज में रोजगार पैदा करने के लिए इंडिया BPO प्रमोशन प्रोमोशन स्कीम और नॉर्थ–ईस्ट BPO प्रमोशन प्रोमोशन स्कीम की शुरुआत की और पहले ही 52,000 नौकरियां दे चुकी है।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना कौशल विकास पर केंद्रित प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) भारत में एक बुनियादी सरकारी पहल है जिसकी शुरुआत 2015 में हुई थी, इसके तहत मुफ्त में कम समय के स्किल ट्रेनिंग कार्यक्रम की पेशकश की जाती है और स्किल सर्टिफिकेट मिलने के बाद पैसे के रूप में प्रोत्साहन मुहैया कराया जाता है, इस तरह वर्क फोर्स के हुनर को उद्योग की जरूरत के साथ जोड़ा जाता है और लोगों को रोजगार के ज्यादा योग्य बनाया जाता है, PMKVY रोजगार क्षमता को बेहतर करके और अच्छी नौकरियों के अवसरों तक भागीदारों की पहुंच को सशक्त बनाकर रोजगार हासिल करने में आ रही दिक्कतों को दूर करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और भारत के राष्ट्रीय कौशल विकास की कोशिशों में अहम योगदान देती है।

स्टार्टअप इंडिया स्टार्टअप इंडिया पहल की शुरुआत 2016 में हुई थी जिसका मकसद रजिस्ट्रेशन को आसान बनाकर, टैक्स छूट देकर और एक विशेष (डेडिकेटेड) फंड बनाकर स्टार्टअप का समर्थन करना है, इसने रेगुलेटरी माहौल में सुधार किया और स्टार्टअप्स के लिए रुकावटों को दूर किया, सबसे बड़े स्टार्टअप इकोसिस्टम में से एक को सक्षम बनाकर भारत ने उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (डिपार्टमेंट फॉर प्रमोशन प्रोमोशन ऑफ इंडस्ट्री एंड इंटरनल ट्रेड) से मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स में 9 लाख से ज़्यादा नौकरियों के अवसर पैदा किए।

रणनीतिक सेक्टर में प्रोडक्शन–लिंक्ड इंसेंटिव इन्सेंटिव (उत्पादन से जुड़ा प्रोत्साहन):

2020 में शुरू भारत की प्रोडक्शन–लिंक्ड इंसेंटिव इन्सेंटिव (PLI) स्कीम रणनीतिक तौर पर महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उत्पादन को बढ़ावा देने की एक महत्वपूर्ण पहल है, इसका मुख्य उद्देश्य अलग–अलग क्षेत्रों जैसे कि इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्युटिकल्स, ऑटोमोबाइल, टेक्सटाइल, सोलर और टेलीकम्युनिकेशन में घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना और रोजगार पैदा करना है, इसके अलावा ये लागत के मामले में प्रतिस्पर्धा में सुधार करके, विश्व व्यापार संगठन (WTO) की प्रतिबद्धताओं का पालन करके और निर्यात को बढ़ावा देकर भारतीय उत्पादन को वैश्विक स्तर पर रेस में लाने की कोशिश करती है. PLI स्कीम की वजह से 2021–22 में मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में 76 प्रतिशत की महत्वपूर्ण बढ़ोतरी हुई और इसमें 2021–22 से शुरू होकर पांच वर्षों में 60 लाख नौकरियां पैदा करने की क्षमता है। योग्य लाभार्थियों को बिना कुछ गिरवी रखे 3 लाख रुपये तक का कर्ज मिल सकता है, इस तरह वो अपने व्यवसाय को शुरू कर सकते हैं या बढ़ा सकते हैं।

पीएम विश्वकर्मा योजना सितंबर 2023 में शुरू पीएम विश्वकर्मा योजना लोहे का काम करने वालों, स्वर्णकारों, मिट्टी के बर्तन बनाने वालों, कारपेंटर और मूर्ति बनाने वालों जैसे परंपरागत कारीगरों और शिल्पियों को वित्तीय सहायता और कौशल विकास का समर्थन मुहैया कराने की एक सरकारी पहल है, योग्य लाभार्थियों को बिना कुछ गिरवी रखे 3 लाख रुपये तक का कर्ज मिल सकता है, इस तरह वो अपने व्यवसाय को शुरू कर सकते हैं या बढ़ा सकते हैं,

डॉ0 बबली चंद्रा (असिस्टेंट प्रोफेसर)
अर्थशास्त्र विभाग,
बाई. एम.
एस. (पी. जी.) कॉलेज मंडी
धनौरा, अमरोहा

परंपरागत कारीगरों को सशक्त बनाकर और उनके हुनर को बढ़ावा देकर ये पहल पारंपरिक उद्योगों के संरक्षण में योगदान देती है और उद्यमशीलता (एंटरप्रेन्योरशिप) को आसान बनाती है. इस तरह भारत में स्वरोजगार और आजीविका से जुड़े दूसरे अवसरों को बढ़ाती है।

मानवीय पूंजी का इस्तेमाल एवं निष्कर्ष जनवरी 2023 में भारत ने चीन को पीछे छोड़कर दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी वाले देश का दर्जा हासिल कर लिया. चीन की 1.412 अरब आबादी की तुलना में भारत की आबादी 1.417 अरब हो गई, जनसंख्या में इस बदलाव ने भारत के द्वारा अपनी घरेलू अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और दुनिया में एक प्रमुख देश के तौर पर खुद को स्थापित करने के लिए अपने व्यापक मानव संसाधन, विशेष रूप से अपनी युवा जनसंख्या, के इस्तेमाल की भारत की क्षमता की तरफ दुनिया का ध्यान आकर्षित किया है। कुल जनसंख्या के 52 प्रतिशत से ज्यादा लोगों के 30 साल से कम उम्र के होने और उल्लेखनीय रूप से 43 प्रतिशत लोगों तक इंटरनेट की पहुंच के साथ भारत अच्छी संभावना रखता है. अंत में, जनसंख्या की विकास दर जहां कम हो गई है, वहीं उम्र का बंटवारा अवसर और चुनौतियां पेश करता है. शिक्षा, कौशल विकास और नई नौकरियों के जरिए भारत के इस डेमोग्राफिक डिविडेंड का फायदा उठाने से आर्थिक विकास में बढ़ोतरी हो सकती है लेकिन इसके लिए बढ़ते वर्क फोर्स के मुताबिक प्रभावी संसाधन प्रबंधन और अवसर के प्रावधान की भी आवश्यकत पूरे विश्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका दे रहा है। पिछले 3000 वर्षों में भारत ने अपने साथ–साथ पूरी दुनिया के आर्थिक विकास को मजबूती प्रदान की है। आज भारत के 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य की चर्चा करती है। अब दुनिया भारत के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती है। वर्तमान समय में नए भारत अर्थव्यवस्था के विकास में 7 गुना ज्यादा योगदान कर रहा है चाहे मुद्रा स्फीति या चालू खाता घाटा, जीडीपी विकास दर या परामीटर में नया भारत बेहतरीन प्रदर्शन कर रहा है। आज देश में विदेशी मुद्रा का भंडार लगभग 300 से बढ़कर 419 बिलियन डॉलर के स्तर पर पहुंच गया है। भारत में यह सब बदलाव संस्कृति की वजह से आ रहा है अपने संसाधन पर भरोसा करके भारत आगे बढ़ रहा है। वर्तमान समय में भारत ने जितनी तरक्की करी हो शायद ही कोई और करें।

संदर्भ सूची

1. दत्त एवं सुंदरम ,भारतीय अर्थव्यवस्था पृष्ठ संख्या– 428
2. मिश्र, डॉ कैलाश– भारत एक परिचय पृष्ठ संख्या– 23
3. केंद्रीय बजट 2023 –24
4. आर्थिक सर्वेक्षण–2022–23
5. मानवीय वित्त मंत्री का भाषण– केंद्रीय बजट
6. आरबीआई बुलेटिन जनवरी–2024
7. आर्थिक सवृद्धि एवं विकास, डा. वीसी सिन्हा– 5, 37, 38, 39।

16

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति

डॉ0 प्रिया सिंह

शोध सारांश

महिला एक अदभुत और अलौकिक शक्ति है तथा साथ ही महिला सृष्टि की सबसे सुन्दर रचना है, जो न सिर्फ केवल अपने कुल एवं परिवार का विकास करती है बल्कि अन्य लोगों का भी विकास करती है। महिला के बिना समाज की सारी क्रियायें अधूरी मानी जाती हैं। लेकिन आजादी के 75 साल बाद भी भारत में महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं कहीं जा सकती है। किसी भी समाज में महिलाओं की स्थिति को वहाँ रहने वाली महिलाओं की स्थिति को देखकर ज्ञात किया जा सकता है। समय परिवर्तन के साथ–साथ महिलाओं की स्थिति में भी परिवर्तन होता रहा है। भारतीय समाज में अनेक परिवर्तन हुये जिससे महिलाओं की स्थिति में दिन प्रतिदिन गिरावट आती गई, जिसका प्रभाव गरीब महिलाओं पर सबसे अधिक पड़ा। समाज के निर्माण में महिलाओं की भूमिका उसी प्रकार महत्वपूर्ण है जिस प्रकार शरीर को जीवित रखने के लिए जल, हवा, भोजन महत्वपूर्ण है। भारतीय समाज की परंपरागत व्यवस्था में महिलायें आजीवन पिता, पति तथा पुत्र के संरक्षण में जीवन यापन करती रही हैं। भारतीय संविधान में पुरुषों एवं महिलाओं को समाज में समान अधिकार मिलने के बाद भी इस तथ्य को झूठ लाया नहीं जा सकता कि विकास और सामाजिक दृष्टि के स्तर से महिलायें अभी भी पुरुषों से बहुत पीछे हैं। भारतीय समाज में आज भी महिलायें कमजोर वर्ग में शामिल हैं। जबकि महिला परिवार की आधारशिला होती है, और सामाजिक विकास भी उसी के सदकर्मों से ही संभव होगा। अतः जिस समाज की महिलायें अपेक्षा और तिरस्कार का शिकार होती हैं, ऐसे समाज का विकास असंभव है।

मुख्य बिंदुरू रू महिला की स्थिति, आर्थिक विकास, श्रम शक्ति, शिक्षा, आत्मनिर्भरता, समानता

प्रस्तावना

हमारे देश को आजाद हुए लगभग 75 साल पूर्ण हो चुके हैं फिर भी हमारे देश की महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं कहीं जा सकती है। आधुनिकता में वृद्धि के साथ–साथ दिन प्रतिदिन बढ़ते महिलाओं के प्रति अपराधों की संख्या के आंकड़े चौंकाने वाले सामने आये हैं। महिलाओं के ऊपर धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, व्यवसायिक एवं अन्य अनेक ऐसी निर्योग्यतायें थोप दी गई हैं जिसके कारण उन्हें जीवन में आगे बढ़ने तथा व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास का अवसर प्राप्त नहीं हो पाता है। ये निर्योग्यतायें महिलाओं के जीवन में बहुत बड़ी समस्या तथा चुनौतियाँ बनकर उभरी हैं। जिसके कारण कार्य में दक्ष, योग्यता तथा कुशलता होने के बाद भी महिलाओं को न तो सार्वजनिक क्षेत्र में अपना योगदान दे सकती थी और न ही शिक्षा प्राप्त कर सकती थी, न उच्च संस्थानों में नौकरी कर सकती थी, और न ही किसी प्रकार का धार्मिक कार्य बिना पुरुष के कर सकती थी। महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा के दरवाजे बंद थे जिसकी वजह से वह घर की चार दिवारी में ही बंद रह जाती थी।

आधुनिकता में वृद्धि के साथ–साथ देश में दिन प्रतिदिन महिलाओं के प्रति अपराधों की संख्या में बढ़ोतरी होती गई है और आंकड़े भी बताते हैं कि महिलाओं के प्रति अपराधों में लगातार वृद्धि हो रही है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो की रिपोर्ट के मुताबिक 2014 में प्रतिदिन 100 महिलाओं का रेप हुआ और 364 महिलायें यौन उत्पीड़न की शिकार हुई। 2014 वर्ष केवल बलात्कार के 36735 केस दर्ज किये गये,जो 2012 में दर्ज (24923) केसों से कहीं ज्यादा अधिक थे। यूनिसेफ की रिपोर्ट हिडेन इन प्लेन साइट के अनुसार भारत में 15 वर्ष से 19 वर्ष की उम्र वाली 34ः विवाहित महिलायें ऐसी हैं जिन्हें अपने पति व साथी के हाथों यौन हिंसा का सामना करना पड़ा है। इंटरनेशनल सेंटर – रिसर्च ऑन वीमेन के अनुसार भारत में 10 में से 6 पुरुषों ने कभी न कभी पत्नी अथवा प्रेमिका के साथ हिंसक व्यवहार किया है। गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक 2014 से 2016 के बीच देश भर में बलात्कार 1,10,333 केस दर्ज किये गये हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के अनुसार प्राचीन भारत में महिलाओं के साथ हुये अत्याचारों में दो –गुने से ज्यादा वृद्धि हुई है। इस संबंध में देश में प्रत्येक घंटे लगभग 26 आपराधिक मामले दर्ज किये जाते हैं। यह स्थिति बहुत ही भयावह है। महादेवी वर्मा पुरुष की मानसिकता पर लिखती हैं कि –" भारतीय पुरुष जीवन में महिला का जितना ऋणी है उतना कृतज्ञ नहीं हो सका है। आज का यथार्थ यदि सनातन अकृतज्ञता का ब्यौरेवार इतिहास बनकर तथा पुराने अपकारों की नवीन आवृत्ति वर्तमान स्थिति में आत्मघात सिद्ध हो सकती है।3 एक तरफ जहाँ नारी को पूजा योगनीय माना जाता है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ' लेकिन वहीं दूसरी तरफ उसे भोग की वस्तु माना जाता है और वास्तविकता को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि महिला का अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है, परन्तु समय बदलने से अथार्त वर्तमान में महिलाओं के प्रति किये जा रहे व्यवहार में परिवर्तन हुआ है। वर्तमान समाज में महिला का विकास हुआ है लेकिन इनके प्रति मनुष्य की सोच अभी पूर्णतया नहीं बदली है, यही कारण है कि समाज में आज भी चारों ओर दुराचार फैला है।4

प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति

प्राचीन भारत में यदि महिलाओं की स्थिति का अध्ययन किया जाये तो यह पता चलता है कि वह समय महिलाओं के लिए स्वर्णयुग के समान था। प्राचीन भारत में महिलाओं को महत्व दिया जाता था तथा उन्हें देवी का रूप मानकर आदर और सत्कार किया

जाता था। उसे समय महिलाओं के लिए शिक्षा, व्यापार, स्वास्थ्य तथा साहित्य सहित सभी क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों के जैसे ही समान अधिकार प्राप्त थे। जिससे महिलायें हर क्षेत्र में पुरुषों के जैसी भूमिका निभाती थी। प्राचीन भारत में महिलाओं और पुरुषों में भेदभाव नहीं किया जाता था अर्थात उस समय कोई भी 88वीं लैंगिग भेदभाव के आधार पर नहीं बाँटा जाता था। प्राचीन भारत में मैत्रीय, लोपामुद्रा, गार्गी आदि महान उच्च शिक्षित महिलाओं का उल्लेख मिलता है।4

मध्ययुगीन भारत में महिलाओं की स्थिति

इस युग में महिलाओं की स्थिति ज्यादा संतोषजनक नहीं रही क्योंकि मध्ययुगमें महिलाओं और पुरुषों में भेदभाव किया जाने लगा था। इसमें महिलाओं को उनके अधिकारों से उन्हें वंचित रखा गया। इस युग से ही सती प्रथा, बाल – विवाह, दहेज प्रथा जैसी कुप्रथाओं का जन्म हुआ। न जाने कितनी महिलाओं को इन कुरीतियों का शिकार होना पड़ा और आज तक इसी वजह से महिलायें अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रही हैं अर्थात लड़ाई लड़ रही हैं। मध्ययुगीन भारत में रानी दुर्गावती, अहिल्याबाई, लक्ष्मीबाई, मीराबाई, सरोजिनी नायडू जैसी कई महिलाओं ने पुरुष प्रधान देश में अपने साहस और शक्ति का परिचय दिया और नारी शक्ति का अहसास कराया है।

वर्तमान में महिलाओं की स्थिति

मध्ययुगीन भारत में महिलाओं की खराब स्थिति को देखते हुए तथा स्थिति में सुधार करने के उद्देश्य से 19वीं शताब्दी में राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, महात्मा ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई सहित कई समाज के सुधारक आगे आये और महिलाओं के विकास और उत्थान के लिए अनेक कार्य किये। जिससे धीरे–धीरे महिलाओं की स्थिति में सुधार आने लगा परंतु आज भी महिलाओं के प्रति लोगों की विचारधारा पूर्णतया से नहीं बदली है, जो महिलाओं के विकास में बाधक बन रही है। यह कहना गलत नहीं होगा कि जब तक महिलाओं का विकास नहीं होगा तब तक देश का विकास भी संभव नहीं है क्योंकि महिलायें देश की आधी शक्ति हैं और जब हमारे देश की आधी शक्ति ही सक्षम नहीं होगी तो देश का विकास भी असंभव है। भारत के महान दार्शनिक और समाज सुधारक स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि,

"नारी जब अपने ऊपर थोपी हुई बेड़ियों एवं कुरीतियों को तोड़ने लगेगी तो विश्व की कोई शक्ति उन्हें रोक नहीं पायेगी।"

शिक्षा तथा साक्षरता की आवश्यकता

शिक्षा सभी दोषों से दूर करने का आधारभूत साधन है। एक शिक्षित महिला न केवल अपना बल्कि परिवार की तीन पीढ़ियों के व्यवहार में बदलाव लाती है अर्थात तीन पीढियों में सुधार आता है। अतः शिक्षा को केंद्र बनाकर तथा समुचित साधन और कानून का पालन सुनिश्चित करके देश को महिला अपराध मुक्त बनाया जा सकता है। वैदिक युग में स्त्रियों तथा पुरुषों को बराबर के अधिकार प्राप्त थे। स्त्रियों को यज्ञों में शामिल होने वेदों का पाठ करने तथा शिक्षा प्राप्त करने की आजादी थी। ऋग्वेद और उपनिषद से गार्गी, अपला, घोषा, मैत्रेयी जैसी कई विदुषी महिलाओं के बारे में जानकारी मिलती हैं। प्राचीन भारत में मान्यता थी कि – यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमंते तत्र देवता। अर्थात जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है, वहाँ देवता रहते हैं। एक दशक पहले किये गये सर्वेक्षण से पता चला कि शिक्षा में महिलाओं की हिस्सेदारी 55.4: थी जो अब बढ़कर 69.5: तक पहुँच गई है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की साक्षरता दर लगभग 74.07: है। यह 9.5: दशकीय विकास 2001–2011 से बढ़ रही है। सबसे चिंता जनक स्थिति यह है कि महिलाओं और पुरुषों की साक्षरता दर में बहुत बड़ा अंतर है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में पुरुषों की साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत है, जबकि महिलाओं की साक्षरता दर 65.50: है। जिससे पता चलता है कि हमारे समाज में आज भी महिलाओं की शिक्षा तथा साक्षरता दर बहुत कम है।

भारत के पाँच राज्यों (केरल, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल तथा महाराष्ट्र) में महिला साक्षरता दर सबसे अधिक है और इन्हीं राज्यों में महिला उद्यमी की संख्या भी अधिक है। आंकड़ों से पता चलता है कि देश भर में महिलाओं द्वारा चलाये जा रहे कारोबार में इन पाँचो राज्यों की 53: हिस्सेदारी है। 2012 की आर्थिक जनगणना के अनुसार तमिलनाडु जो कि केरल और महाराष्ट्र के बाद तीसरा बड़ा राज्य है जिसके अंदर शिक्षित महिलाओं की संख्या 73.5:है। तमिलनाडु के बाद दूसरा स्थान केरल का आता है, यहाँ 90: महिलायें साक्षर हैं । केरल में महिलाओं द्वारा चलाये जा रहे उद्योग में महिलाओं की हिस्सेदारी 11: है। इन सब के पीछे मुख्य वजह समाज में शिक्षा का बढ़ता प्रसार – प्रचार है। सरकार द्वारा चलाया जा रहा "सर्व शिक्षा अभियान" एवं 'साक्षर भारत अभियान' आदि योजनाओं की सहायता से महिला साक्षरता दर में वृद्धि हुई है। आज संसार में भारत ऐसा शीर्ष देश है जिसमें सर्वाधिक महिलायें कार्यरत हैं तथा अलग – अलग क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं। महिलायें आज अपनी बेड़ियाँ तोड़कर, अपने देश एवं विदेश में अपनी नई पहचान बना रही हैं। आज के समय में मुश्किल से ही ऐसा कोई क्षेत्र होगा जहाँ पर भारतीय महिलाओं ने अपना कदम नहीं रखा होगा। अब बात चाहे राजनीति की हो, मनोरंजन की, खेल की तथा तकनिकी की ही क्यों न हो, महिलाओं ने हर कदम पर सिद्ध किया है कि वो भी किसी से कम नहीं है।

महिला श्रम बल भागीदारी

2011की जनगणना के अनुसार, देश में महिलाओं की साक्षरता दर 66.1:थी। जबकि 2011में महिलाओं की कुल श्रम– शक्ति में भागीदारी 26: थी। जबकि 1999 में महिलाओं की भागीदारी 34.2: थी। जिसमें पता चलता है कि महिलाओं की श्रम – शक्ति की भागीदारी में गिरावट आई, वहीं यह 2014 में गिरकर 27.2: देखी गई। वर्तमान में महिला श्रम – शक्ति में वृद्धि हुई है, परन्तु दूसरे देशों की तुलना में भारत की महिलाओं की श्रम – शक्ति में भागीदारी

कम देखी गई। नेपाल में लगभग 80:, श्रीलंका में लगभग 36: तथा बांग्लादेश में लगभग 58: श्रम – शक्ति में महिलाओं की भागीदारी देखने को मिलती है। हमारे देश में सबसे अधिक महिलाओं उद्यमियों की संख्या तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र पश्चिम बंगाल तथा आंध्र प्रदेश में है, महिला साक्षरता दर भी इन्हीं राज्यों में सबसे अधिक है। विश्व बैंक की 2014 की रिपोर्ट बताती है कि महिलाओं की वित्तीय सेवाओं तक सीमित पहुँच के पीछे वित्तीय शिक्षा का अभाव है। शिक्षा पूर्ण करने वाली महिलाओं की सबसे अधिक संख्या केरल, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश राज्यों में है। महाराष्ट्र महिला उद्यमियों में पांचवें स्थान पर है। जबकि बिहार में उद्यमी महिलाओं की भागीदारी 1.9: है और यह सभी राज्यों के बीच 14वें स्थान पर है। यह वृद्धि महिलाओं के रोजगार और कार्यबल में वृद्धि करने के लिए सकारात्मक संकेत है। सरकार ने कौशल विकास, उद्यमिता सहायता एवं कार्य स्थल सुरक्षा नीतियों सहित महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कार्यक्रम लागू किये हैं। इन उपायों का उद्देश्य आरामदायक कामकाजी माहौल सुरक्षित करते हुए, महिलाओं की रोजगार क्षमता, आर्थिक स्वतंत्रता तथा आत्मनिर्भरता में सुधार करना है।

अक्टूबर 2023 को सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा जारी आवधिक श्रम बाल सर्वेक्षण रिपोर्ट 2022–23 से ज्ञात होता है कि हमारे देश में महिला श्रम बल भागीदारी दर 'सामान्य' के अनुसार 2023 में 4.2: अंक से 37 : तक का उल्लेखनीय सुधार हुआ। महिला श्रम बल भागीदारी दर में यह महत्वपूर्ण वृद्धि उनके दीर्घकालिक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास के उद्देश्य से नीतिगत पहलों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा निर्धारित निर्णायक एजेंडे का परिणाम है। सरकार की पहल महिलाओं के जीवनचक्र तक फैली हुई है, जिसमें बालिकाओं की शिक्षा, कौशल विकास, उद्यमिता सुविधा तथा कार्य स्थल में सुरक्षा के लिए बड़े पैमाने पर पहल शामिल है। इन क्षेत्रों में नीतियाँ तथा कानून सरकार के 'महिला नेतृत्व वाले विकास' एजेंडे को आगे बढ़ा रहे हैं। जो महिलाओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

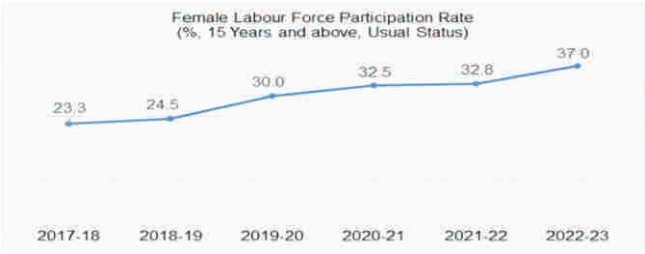

स्रोत : आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2022–23

इंटीग्रेटेड मार्केटिंग कम्युनिकेशन फर्म बीकनेक्ट कम्युनिकेशन की संस्थापक नेहा बाहरी कहती हैं कि "लैंगिक सामानता एक न्यायपूर्ण और प्रगतिशीलता समाज की आधारशिला है। यह समावेशिता को बढ़ावा देता है, और यह सुनिश्चित करता है कि लिंग की परवाह किये बिना सभी व्यक्तियों को समान अवसर, अधिकार और उपचार मिले। यह हानिकारक रूढ़िवादिता को समाप्त करता है, जिसमें व्यक्तियों को बिना किसी बाधा के अपनी आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। यह कहती हैं कि "लैंगिक समानता कार्यबल की पूरी क्षमता का प्रयोग करके आर्थिक विकास को गति प्रदान करते हैं।" भिन्न –भिन्न समाज में विकास के भिन्न–भिन्न स्तर व भौगोलिक परिस्थितियों के कारण अलग–अलग अवसर होते हैं। शहरी क्षेत्र में मानसिकता और बौद्धिकता के विभिन्न स्तर होने के कारण महिलाओं के लिए कार्य के अवसर तथा उनके सपने भी अलग होते हैं। दूसरी तरफ ग्रामीण क्षेत्र में निम्न जातीय समाज की महिलायें जो खुद कमाने वाली होती हैं परंतु आर्थिक रूप से कमजोर होती हैं, इनके कार्य के अवसर व सपने शहरी स्त्रियों से अलग होते हैं। अतः रोजगार ही महिलाओं की मुक्ति का शस्त्र है, क्योंकि रोजगार उन्हें स्वावलम्बी बनाता है।5

किसी देश की स्थिति का पता आप उस देश की महिलाओं की स्थिति को देखकर लगा सकते हैं। परंतु इस बात को भी हम अनदेखा नहीं कर सकते कि महिलाओं को कार्यक्षेत्र में उपलब्धियों के अतिरिक्त भी एक पत्नी तथा एक माँ के रूप में भी अपनी जिम्मेदारियाँ निभाना भी जरूरी होता हैं। जिसे देखकर हम कह सकते हैं कि अभी भी लोगों का दृष्टिकोण बहुत ज्यादा नहीं बदला है। वर्तमान में भी कानून उम्र से पहले ही लड़कियों का विवाह किया जा रहा है। बहुत कम संख्या में महिलायें ही संगठित क्षेत्रों से जुड़ी हुई हैं तथा आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं। हमारे देश में अधिक संख्या में महिलायें घरेलू कार्य में ही लगी हुई हैं और साथ ही पुरुषों द्वारा उनका शोषण किया जाना कोई अचरज की बात नहीं है। सरकार के द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए किये जा रहे प्रयासों के साथ–साथ हमारे समाज के लोगों को भी अपनी दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता है जो सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है।

सुझाव एवं निष्कर्ष

महिलाओं के विकास का मार्ग बाधाओं तथा गड्ढों से भरा हुआ है। वर्षों के प्रयासों के बाद भी महिलाओं के प्रति मानसिक परिवर्तन में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ है। महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों (भ्रूण हत्या, दहेज, बलात्कार आदि) में कमी नहीं हुई बल्कि इनमें वृद्धि ही देखने को मिलती है। महिलाओं की शिक्षा, विकास तथा गरीबी उन्मूलन के लिए सरकार ने जो योजनायें बनाई हैं, उन योजनाओं को अच्छे से चलाने के लिए हमें प्रत्येक स्तर पर प्रयास करने होंगे, सर्वप्रथम बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देना बहुत आवश्यक है, जिसके अंतर्गत यह कोशिश की जानी चाहिए कि सभी बालिकायें स्कूल जायें और शिक्षा प्राप्त करें। घरेलू हिंसा और सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने के लिए कानूनी नियम बनाये जाये तथा सख्ती के साथ उन्हें समाज में लागू किया जाये। पुराने समय को देखते हुए वर्तमान में महिलाओं की स्थिति में सुधार तो हुआ है परंतु यह भी सत्य है कि यह मार्ग अभी बहुत लंबा और

संघर्षों से भरा हुआ है। महिलायें काम के लिए घर से बाहर तो जाती हैं परंतु बाहर एक अत्यधिक क्रूर तथा शोषणकारी समाज उनकी प्रतीक्षा कर रहा होता है तथा ऐसे समाज में उसे अपनी योग्यता साबित करनी होती है, जो समाज उसे भोग की वस्तु तथा वंश वृद्धि करने वाली मशीन से अतिरिक्त कुछ नहीं समझता। महिलाओं के विकास में साक्षरता, शिक्षा,अच्छा स्वास्थ्य, रोजगार के अवसर तथा सुरक्षा प्रदान करते हुये महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में योगदान देना होगा। अतः महिलाओं की स्थिति में सुधार होने से ही देश के आर्थिक विकास में वृद्धि संभव है क्योंकि जिस प्रकार एक रथ को आगे बढ़ाने के लिए उसके दोनों पहियों को एक साथ चलाने की आवश्यकता होती है उसी तरह देश के विकास रूपी रथ को आगे बढ़ाने के लिए महिला और पुरुष को संयुक्त रूप से एक साथ चलने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. संतोष खन्ना, महिला सशक्तिकरण एवं कानून, महिला विधि भारती, नई दिल्ली
2. समाज कल्याण रिपोर्ट, भारत सरकार
3. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, जगदीश्वर चतुर्वेदी, पृ. सं 101
4. यंग नॉर्थवस्तु पूजयते पृष्ठ प्रकाशकीय सास्ता साहित्य मएडल, नई दिल्ली,यशपाल जैन
5. स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास, रमणिका गुप्ता, सामयिक प्र काशन,नई दिल्ली संस्करण – 2014, पृ. सं.102 –03
6. भारत की जनगणना 2011
7. पत्रिका न्यूज़,2015
8. राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो
9. गृहमंत्रालय भारत सरकार
10. इंटरनेट
11. http:@@hindi-webdunia-com@women&articles
12. http:@@hindi--webdunia@women&authority

डॉ0 प्रिया सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
अर्थशास्त्र विभाग
वाई.एम.एस. पी.जी. कॉलेज, मंडी धनौरा, अमरोहा
ईमेल : dr.priyasingh202@gmail-com

17

मन्नू भंडारी की कहानियों में कामकाजी महिलाओं की स्थिति

रचना रश्मि

सारांश–

मन्नू भंडारी हिंदी साहित्य का एक चर्चित नामहै। जिनकी लेखनी से कहानी, उपन्यास, संस्मरण आदि निकले हैं। यह कृतियाँ पाठकों द्वारा बहुत पसंद की गई हैं। मन्नू भंडारी स्त्री विमर्श पर बहुत कुछ लिख चुकी हैं। उनकी कहानी संग्रहों में कई ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें स्त्री पात्र को प्रमुख स्थान प्राप्त है और पूरी कहानी उसके इर्द–गिर्द ही घूमती है। ऐसी ही कहानियों में कुछ की स्त्री पात्र कामकाजी हैं, इनमें से कुछ ने पारिवारिक जिम्मेदारियों की वजह से घर से बाहर निकल कर काम की तो कुछ की महत्वाकांक्षा ने उनसे काम करवाया। परिस्थिति जो भी रही हो महिलाओं ने जिस काम को अपने हाथों में लिया उसे पूरा कर दिखाया। इन कहानियों में स्त्री की संवेदनाओं और भावनाओं का चित्रण हुआ है। यह कामकाजी महिलाएं एक बार अपने कर्मभूमि पर उतरीं तो फिर पीछे पलट कर नहीं देखा। अपनी कर्मठता और धैर्य का परिचय देते हुए निरंतर आगे बढती रही।

शब्द कुंजी – कहानी, स्त्री, पात्र, कामकाजी ।

प्रस्तावना–

मन्नू भंडारी हिंदी साहित्य का वह चमकता सितारा है जिनकी पहचान उनकी लेखन से बनी और साहित्य जगत में एक अमिट छाप छोड़ गई। उनके लेखन से समाज में फैली गरीबी, भ्रष्टाचार और महिलाओं की स्थिति ज्ञात होती है। मन्नू भंडारी ने अपने लेखन में महिलाओं की सामाजिक, पारिवारिक और कार्यस्थल की स्थिति को अपने लेखन में विशेष स्थान दिया है। उनकी कहानियों की नायिकाएं घरेलू, कामकाजी, अनपढ़ और बहुत अधिक पढ़ी–लिखी भी हुई है। सभी की अपनी समस्याएं है और महिलाओं को उन विषम परिस्थितियों से लड़ते दिखाया गया है।

मन्नू भंडारी के लेखन में उनकी सूझ, और गहरी सोच दिखती है। मन्नू भंडारी ने अपने लेखन के केंद्र में महिलाओं को रखा हैं। उन्होंने महिलाओं की उस संवेदना को रेखांकित किया है जिसमें महिलाओं की घर –परिवार एवं कार्यस्थल में उनकी स्थिति का पता चलता है। उनकी नायिका महत्वाकांक्षी भी दिखती है और ऐसा प्रतीत होता है कि अब वह किसी मजबूरी या दबाव में आकर कदम पीछे नहीं लेंगीं। उनकी कहानियों में स्त्रियों के मन की उस छटपटाहट तक पहुंचने का प्रयास किया गया है जो अब पुरुष की भौतिकतावादी दृष्टि के लिए खुद की बलि चढाने को तैयार नहीं है, बल्कि वह अपना भविष्य खुद लिखना चाहती है और इसके लिए वह निरंतर प्रयासरत भी है।

मन्नू भंडारी की कहानियों में कई ऐसी स्त्री पात्र हैं जो अपनी एक अलग पहचान बनाने में सफल होती हैं। इस तरह की कहानियाँ महिलाओं के लिए एक प्रेरणा है जिसे पढ़ कर महिला पाठकों को नई हिम्मत मिलती है और वे फिर से पूरी तैयारी के साथ अपने लक्ष्य तक पहुंचने का प्रयास करती हैं और सफल भी होती है।

मन्नू भंडारी की कुछ ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें कामकाजी महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। इस आलेख में ऐसी ही कुछ कहानियों का उल्लेख किया जा रहा है जो कामकाजी महिलाओं के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके जीवन के संघर्षों से परिचय कराती हैं।

क्षय–कुंती नाम की लड़की इसकी नायिका है, जिसके पिता क्षय जैसी असाध्य बीमारी से ग्रस्त है और उसके ऊपर पिता की बीमारी, छोटे भाई की पढ़ाई और घर खर्च चलाने की जिम्मेदारी है। वह छोटी उम्र में ही अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करती है। उसके पिता अपनी बीमारी से लाचार है और पूरी जिम्मेदारी कुंती पर है। कुंती जिम्मेदारियों के नीचे दबकर अपने शौक भी भूल जाती है।

वह एक स्कूल में पढ़ाती हैं जिस से उसे कुछ पैसों की आमदनी हो जाती है लेकिन उतने पैसे कम पड़ते हैं इसलिए कुंती सावित्री नाम की लड़की को ट्यूशन पढ़ाने उसके घर जाने लगती है। कुंती से सावित्री की मां अपने घर के अन्य काम भी लेने लगती है जैसे–अपने बेटे के लिए स्वेटर बुनने को कहना, बच्चों को ले जाकर बाज़ार से जूते दिलवाना इत्यादि। कुंती न चाहते हुए भी यह सब काम करती है। सावित्री पढने–लिखने में कमजोर थी, उसे परीक्षा में उर्त्तीण होने लायक बनाना, किसी चुनौती से कम नहीं था, लेकिन कुंती यह चुनौती स्वीकार करती है। कुंती पूरी लगन के साथ सावित्री को पढ़ाती है लेकिन सावित्री में बहुत अधिक सुधार नहीं आता है, इधर सावित्री की मां लगातार कुंती पर सावित्री के अच्छे परीक्षा परिणाम के लिए दबाव बनाती रहती है। कुंती को अपने उसूलों से समझौता कर सावित्री के लिए पैरवी भी करना पड़ता है और यह बात कुंती को अन्दर तक झकझोर देती है।

स्त्री सुबोधिनी–'स्त्री सुबोधिनी' एक लड़की की कहानी है जो कामकाजी है। दफ्तर में उसके बॉसका नाम शिंदे है, जो दिल फेंक किस्म का इंसान है लेकिन उसकी बातें नायिका को आकर्षित करती है। नायिका की विवाह की आयु निकल रही थी और उसके ऊपर अपने तीन छोटे भाई–बहनों और मां की जिम्मेदारी थी। शिंदे ने नायिका को साफ़ संकेत दिया कि वह उसे पसंद करता है। नायिका को शिंदे

के रूप में अपना भविष्य दिखने लगा क्योंकि शिंदे ने उससे कहा था कि वह अपनी शादी से खुश नहीं है और वह जल्द इस शादी से बाहर निकल कर उससे विवाह कर लेगा। नायिका शिंदे की बातों और मोहक कविताओं में ऐसी गुम हुई कि उसके आठ साल शिंदे के पीछे निकल गये और उसे तब होश आया जब उसे इस बात का विश्वास हो गया कि शिंदे कभी उससे विवाह नहीं करेगा। नायिका बुरी तरह शिंदे द्वारा छली जाती है।

इस कहानी के माध्यम से मन्नू भंडारी कुंवारी लड़कियों को सावधान करती हैं और यह बताने का प्रयास करती हैं कि वे किसी शादी–शुदा मर्द के झांसे में न आये क्योंकि ऐसे मर्द केवल कुंवारी लड़कियों के तन और मन से खेलते हैं और बाद में उन्हें दुनिया की भीड़ में अकेला छोड़ देते हैं।

ए खाने आकाश नाई–इस कहानी में दो मुख्य महिला पात्र है जो कामकाजी है। वे कलकत्ता शहर में रहती हैं। लेखा की ससुराल गाँव में है जहाँ वह छुट्टियों में जाया करती है। लेखा पढ़ीं–लिखी, कॉलेज में पढ़ाती है इसलिए उसे हमेशा ससुराल में विशेष दर्जा दिया गया। ससुराल वाले उसका बहुत ख्याल रखते है और वह भी घरवालों के प्रति संवेदनशील है। लेखा के दोस्त कहते हैं कि वह बहुत कमजोर हो गई है। दिनेश ने भी महसूस किया की लेखा को आराम करना चाहिए।

सुषमा दूसरी कामकाजी महिला पात्र है और जिसके ऊपर घर की जिम्मेदारियां है इसलिए उसके घर वाले उसका विवाह नही करना चाहते लेकिन सुषमा महीप से प्रेम करती है और वह घर वालों के खिलाफ जाकर महीप से कोर्ट मैरिज करना चाहती है।

इनकम टैक्स और नींद–इस कहानी में महिमा एक डॉक्टर है और शहर में अपना दवाखाना चलाती है। बहुत कम आयु में उसने यह उपलब्धि पा ली है और उसकी सोच बहुत आधुनिक है। वह चाहती है कि प्रत्येक लड़की अपने पैरों पर खड़ा होने का अवसर मिलना चाहिए। वह अपने चाचा दयाल की कई बातों से सहमत नहीं होती। दयाल पारम्परिक सोच के व्यक्ति थे और उसे महिमा की बात अजीब लगती है। दयाल को महिमा की फीस अधिक लगती है और वह उसे इस बात के लिए टोकते हैं लेकिन महिमा को ऐसा नहीं लगता और वह यह मानती है कि आरामदायक जिन्दगी के लिए हमें भी कुछ चाहिए।

जीती बाजी की हार – इस कहानी की तीन स्त्री पात्र हैं जिनको जिन्दगी में कुछ बनना है लेकिन इन तीनों में से दो लड़कियों की शादी हो जाती है और वे अपनी गृहस्थी में लग जाती हैं। मुरला और आशा के बीच बाज़ी लगती है कि मुरला कभी विवाह नहीं करेगी और वह एक दिन शिक्षा विभाग में अधिकारी बन जाती है, वर्षों बाद जब मुरला आशा की बेटी को देखती है तो उसे लगता है कि वह यह बाज़ी आशा से जीत कर भी हार गई है।

कमरे, कमरा और कमरे– नीलू इस कहानी की नायिका है जिसे पूरे घर की देख–भाल करनी होती है। नीलू को दिल्ली में कॉलेज में नौकरी लग गई और वह अपने घर को छोड़ दिल्ली चली आई। यहाँ हॉस्टल का दो कमरा नीलू को बहुत रास आया वह अपने घर के पांच कमरों को ठीक करते हुए ऊब चुकी थी। नीलू धीरे–धीरे सफलता की ओर बढ़ रही थी, लेकिन अपने घर से दूर होती जा रही थी। अब घर जाने के पीछे अपनेपन की भावना कम और कर्तव्य भावना ज्यादा रहती थी। लेकिन इस पूर्णता में उसे अब अपूर्णता का बोध होने लगा, अब वह अपने अकेलेपन से उबने लगी थी इसलिए जब उसकी पहचान श्रीनिवास से हुई तो धीरे–धीरे वह उसके करीब आती गई और एक दिन उससे शादी कर अपने कॉलेज और हॉस्टल को छोड़ कर वह उसके फ़्लैट में रहने चली आई अब वह श्रीनिवास के काम को भी संभालने लगी।

यह एक ऐसी लड़की की कहानी है जो एक मध्यमवर्गीय परिवार से सम्बन्ध रखती है, लेकिन उसके जीवन में भी कई बदलाव आये पहले उसने नौकरी की और बाद में उसने पति का व्यवसाय संभाल लिया।

अभिनेता–रंजना इस कहानी की नायिका है जो एक सिने तारिका है। रंजना का उसके काम की वजह से बहुत नाम हो चुका है। दिलीप नाम का युवक उसकी जिन्दगी में आता है और दोनों एक दूसरे को चाहने लगते है लेकिन एक दिन दिलीप रंजना से बारह हजार रूपये लेकर अपने पिता से मिलने जा रहा हूँ बोल कर चला जाता है और काफी दिन गुजर जाने के बाद पता चलता है की दिलीप शादी शुदा है और उसकी एक बेटी भी है साथ ही उसने किसी वकील साहब के बारह हजार रूपये कर्ज़ के अपने पास दबारखे है। रंजना को जब यह बात पता चली तो उसके पैरों तले की जमीन खिसक गई। रंजना एक मशहूर सिने तारिका होने के बावजूद एक पुरुष द्वारा ठगी का शिकार हुई उसने एक कागज पर लिखा "दिलीप मैं तो केवल रंगमंच पर ही अभिनय करती हूँ लेकिन तुम्हारा तो सारा जीवन ही अभिनय है। बड़े ऊँचे कलाकार और सधे हुए अभिनेता हो तुम मेरे दोस्त।"

निष्कर्ष–उपरोक्त कहानियों में जिन स्त्री पात्रों की चर्चा हुई हैं वे सभी कामकाजी हैं और उन सभी की अपनी–अपनी समस्याएं हैं। यह पात्र अपने कर्म से पीछे नहीं हटती और समय आने पर कठोर परिस्थितियों में भी धैर्य का परिचय देते हुए समस्याओं का सामना करती हैं। यह स्त्री पात्र अपने परिवार के लिए संबल है जो परिवार के बुरे वक्त में हमेशा खड़ी रहती हैं। इन महिलाओं को कभी घर के अन्दर तो कभी बाहर चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं

लेकिन वे अपने कर्त्तव्य पथ से डिगती नहीं हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मन्नू भंडारी, मैं हार गई (कहानी संग्रह) राधाकृष्ण प्रकाशन, छठा संस्करण 2022
पृष्ठ सं– 91, 37
मन्नू भंडारी,एक प्लेट सैलाब,(कहानी संग्रह) राधाकृष्ण प्रकाशन,पांचवां संस्करण, 2022,पृष्ठ सं– 116
मन्नू भंडारी,यही सच है,(कहानी संग्रह) राधाकृष्ण प्रकाशन, पांचवां संस्करण,2022 ,पृष्ठ सं –11,105
मन्नू भंडारी,त्रिशंकु, कहानी संग्रह) राधाकृष्ण अक्षर प्रकाशन,प्रथम संस्करण, 1978 पृष्ठ सं– 65,177

रचना रश्मि
शोधार्थी (विद्यासागर विश्वविद्यालय)
ईस्ट प्लांट बस्ती, पंजाबी लाईन के नजदीक
डाक–बर्मामाइंस, जमशेदपुर, जिला– पूर्वी सिंहभूम,
झारखंड, पिन कोड– 831007
दूरभाष– 9304544685

18

समाज में व्याप्त कुरीतियाँ : लहणाा सिंह अत्री

बबली मोरवाल

सारांश :–

पंडित लहणा सिंह अत्री समाज की सुखद तथा दुखद अनुभूतियों को सांग तथा रागनियों के माध्यम से वर्णित करते हैं। संकुचित और कुंठाहीन सामाजिक जीवन को यहाँ प्रस्तुत करके जीवन के भाव तरंगों को वाणी देते हुए भी दिखाई देते है। भूलतः लहणा सिंह अत्री हरियाणवी समाज और संस्कृति को अखण्डित तथा प्रभावान्वित अभिनिवेश देने का सफल प्रयास अपनी रचना–धर्मिता के माध्यम से करते हैं।

हरियाणवी समाज में व्याप्त विकृतियों को बिना उपस्तरण के सीधे–सीधे पाठकों के सामने प्रेषित करते हैं। लहणा सिंह अत्री का युगबोध बड़ा प्रबल है। इन्होंने अपनी मुक्तक रचनाओं में सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और दार्शनिक परिस्थितियों पर प्रमाणिक प्रकाश डालने का प्रयास किया है। रचनाकार ने प्राचीन भारतीय संस्कृति की महिमा का वर्णन करते हुए आधुनिक, सामाजिक विकृतियों, विद्रूपदाओं तथा विसंगतियों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। भारत की वर्तमान दुर्दशा को देखकर कवि के मन में एक टीस उत्पन्न होती है। कवि समाज में व्याप्त हर प्रकार की विकृतियों, पाखंडों तथा बुराइयों पर प्रहार करने का प्रयास करते हैं। समाज में प्रचलित भ्रूण हत्या, बेटी की उपेक्षा बेटे को अधिक महत्व देना, बुजुर्गो की दुर्दशा, दहेज प्रथा तथा बलात्कार आदि विकृतियों का वर्णन करते है। अत्री जी अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों पर करारा व्यंग करते है। आधुनिक युग की समस्याओं का सशक्त चित्रण तथा लोक चेतना को जागृत करने का प्रयास करते है। अपनी रचनाओं के माध्यम से आधुनिक समाज का चित्रण बेबाक एवं निष्पक्ष भाव से किया है। लहणा सिंह अत्री ने समसामयिक समस्याओं का और युगीन परिस्थितियों का बखूबी चित्रांकन किया है। अपनी रचनाओं में अत्री जी ने निरीह जनता की विवशता तो कही ज्वलंत परिवेश से जन्मी कुण्ठा, आक्रोश, पीड़ा, टीस, अन्तर्द्वन्द्वतथा सामान्य जन की घुटन–टुटन का मार्मिक चित्रण किया है। एक तरफ इन रचनाओं ने जनमानस की अन्तरचेतना को झंझोडने का प्रयास किया है तो दूसरी तरफ इन रचनाओं ने यथार्थ का बोध कराया है।

कन्या भ्रूण हत्या समाज में फैली एक ऐसी विकृति है जिससे पूरे राष्ट्र का लिंगानुपात बिगड़ गया और इसके कारण सामाजिक ताना–बाना कमजोर हो गया। संबंधों की संवदेना कही खत्म सी हो गई है, ऐसे में अविवाहित युवकों की समस्या निश्चित रूप से एक गंभीर चिन्ता का विषय है। इसके दुष्परिणामों से अत्री जी भली–भांति परिचित है। अत्री जी अपनी वेदनाओं को व्यक्त करते हुए लिखते है।

''बेटी की सुणो पुकार, मात क्यूँ बणग्यी हत्यारी,
मनै मरवाणा चाहवै सै।।
मात मनै देखण दे संसार,
तू मतन्या करिये अत्याचार,
तार शीश का भार, तेरी क्यूँ अक्त गई मारी,
मेरी क्यूँ बलि चढ़ावै सै।।
बेटा आवते द्रव कमावै,
के बेटी घर तै बाहर बगावै,
खावै बेटी तै इसी खार, तेरी के होग्यी लाचारी,
मात क्यूँ पाप कमावै सै।।
मैं कर्मा की हेंठी,
मात न बणिये इतनी ढेठी,
बेटी–बेटा एकसार, प्रभु नै मैं कित तै तारी,
तेरे किसी पापण जावै सै।।
क्यूँ हो गयी मतिमंद
कटै कद फांसी यम को फंद,
लख्मी चंद का तावेदार, गुरू नै ज्ञान करया जारी,
''अत्री शुक्र मनावै सै।'' (1)

अंधविश्वास हमारे समाज को अन्दर से खोखला करता जा रहा है। अंधविश्वास के कारण ही समाज उन्नति नहीं कर पा रहा है। आज के आधुनिक युग में मनुष्य ढोंगी फकीरों की बातों में आते है और कोई ना कोई अप्रिय घटना कर बैठते है। लोग मानते है कि किसी बांझ के सामने अपने से, खाली घड़ा मिलने से, कोतरी के बोलने, बिल्ली के रोने से हमारे साथ कुछ न कुछ बुरा जरूर होगा। लहणा सिंह अत्री ने अपनी रचनाओं में इस प्रकार की समस्याओं को उठाया है। लहणा सिंह अत्री इस प्रकार के अंधविश्वास का खंडन करते है। अत्री जी लिखते है–

''करता मैं बकवास कोन्या और चीज की ख्यास कोन्या।
रोटी की भी आस कोन्या, जब आगै बाँझ लुगाई आज्या।।
सुबह उठ चुचकारै धरती, लावै काम करण की सुरती,
ये सभी कुदरती होवै बिमारी, मनवा रंज मानता भारी।
मन म्हँ चिन्ता होज्या जारी, जब रोवती बिलाई आज्या।
करते काम रोज कूड़े के, ढोते बोझ फिरै फूहड़े के,
चूहड़े के आच्छे सोण मानते, पढ़े लिखे इनै गौण, मानते।
अनपढ़ लोग कसोण मानते, साँप है काट्टी राही आज्या।।
या मन म्हँ माच्चै धूक्कल,
देख कै मन में उठठै कूक्कल,
बूक्कल जो सुअर न खोलै, झोटे पै चढ़ पाली डोलै।
तड़के तड़क कोतरी बोलै, मन म्हँ सहम खटाई आज्या।। (2)

पं0 लहणा सिंह अत्री ने समस्याओं, विकृतियों से घिरे समाज का अपने साहित्य में समावेशन किया है। फिर चाहे ये समस्याओं सामाजिक के साथ–साथ राजनीतिक और धार्मिक, आर्थिक ही क्यूँ ना हो। राजनीतिक समस्याओं में भ्रष्टाचार, उग्रवाद, नेताओं का जनता के प्रति बुरा व्यवहार आदि की समस्या को उठाया है। अत्री जी ने अपनी रचनाओं में समसामयिक समस्याओं का सटीक वर्णन किया है। लहणा सिंह अत्री की सघन संवेदना परक अनुभूतियों की गर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। वैश्विकरण से प्रभावित बदलती सामाजिक व्यवस्थाओं, राष्ट्रीय और आर्थिक नीतियों तथा उपभोक्तावादी संस्कृति आदि के दबाव और समाज में फैली बिद्रूपदाएँ संवदेनशून्यताँ, सामाजिक और राजनीतिक हस्तक्षेप तथा फिर इनसे मुक्ति पाने की विवश्ता ऐसे बिन्दु हैं जो लहणा सिंह अत्री की रागनियों के विषय बनकर उभरे है।

ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य एक समान है, परन्तु हमने अपनी सुविधा के अनुसार समाज को अनेक वर्गों में बांट दिया है। हजारों वर्षों पहले किए गए इस वर्ग विभाजन या यूँ कहें कि जाति विभाजन को आज भी उसी रूप में मानते आ रहे है। यदि कोई भी नीची जाति का युवक आगे बढ़कर कुछ भी करना चाहता है तो उसकी जाति सबसे पहले उसके मार्ग की बाधा बनती है। इसमें सन्देह नहीं की समाज में रहने वाले किसी भी व्यक्ति का विकास उस पूरे समाज और राष्ट्र का विकास होता है। इस प्रकार की संकुचित विचारधाराओं से पूरा राष्ट्र प्रगति से वंचित हो जाता है।

''ईश्वर के घर जाति कोन्या या बणा दई हम सारयाँ नै।
मेरे देश का नाश करया इन धर्म के ठेकेदारां नै।''(3)

अत्री जी का मानना है कि ईश्वर ने हमें जातियों में नहीं बांटा है। ये हम मनुष्यों का ही कार्य है। हमने ही समाज को जातियों में बांट रखा है। किसी को ऊँची जाति का माना जाता है तो किसी को नीची जाति का माना जाता है।

लहणा सिंह अत्री जनसंख्या वृद्धि पर चिंता व्यक्त करते है क्योंकि जनसंख्या वृद्धि हमारे समाज की एक ऐसी समस्या है जो दिन–प्रदिन बढ़ती ही जा रही है। इस समस्या का समाधान हमारे ही हाथ में है किन्तु अज्ञानवश तथ अशिक्षा के कारण हम इस ओर ध्यान ही नहीं देते है। मूलतः जनसंख्या वृद्धि समाज की सभी समस्याओं का कारण है। हमारे साधन सीमित होते जा रहे है परन्तु जनसंख्या वृद्धि दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। जिसके कारण हम बहुत सी सुविधाओं से वंचित रहते है। यदि हमें अपने समाज को समृद्ध और खुशहाल बनाना है तो जनसंख्या वृद्धि को रोकना होगा। अत्री जी जनसंख्या वृद्धि पर व्यंग करते हुए अपनी एक रागनी शिर्षक (बड़ा कुटुम्ब महा दुःखी) में लिखते है–

''म्हारे कैसा इस दुनिया में और नहीं कोय दुखियारा,
बैठ अकेली रो कर्मा नै तूं न्यारी और मैं न्यारा।।
किस–किस नै काबू राखूं, ये इतने ऊत मलंग होग्ये,
चोबीस घण्टे खैड बाजती, झोटया आले ढंग होग्ये,
अगड–पड़ौसी लोग गाम के देख तमाशा दंग होग्ये,
बुद्धि काम करै कोन्या मेरे सब राहया चित भंग होग्ये,
उमर बड़ेरी गोडे टूटे, दूभर टूक होया म्हारा।
बैठ अकेली रो कर्मा नै तूं न्यारी और मैं न्यारा।''(4)

अत्री जी कहते है कि अज्ञानता के कारण माता–पिता इतनी सन्ताने कर लेते है कि बाद में उनका भरण–पोषण करना भी दुभर हो जाता है। इतने बच्चों को पूरी सुविधाएँ भी वो नहीं दे पाते है जिससे परिवार में कलह की स्थिति बनी रहती है।

दहेज प्रथा ने भी नारी समाज को असहनीय पीड़ा दी है। कितनी ही महिलाओं को दहेज के कारण जिन्दा जला दिया जाता है। समाज फिर भी इसकी तरफ से आँखे मुदकर बैठा है और यह कुप्रथा आज भी जस की तस है। लहणा सिंह अत्री दहेज प्रथा पर कुठारा घात करते हुए कहते है कि–

''धन खर्चे पाछै भी चिन्ता बेटी ब्याही थ्याई की,
दहेज बीमारी बड़ी जगत म्हँ, बूटी नहीं जड़ी देखी।।
सारी चीज खत्म होज्याँ, ना चिन्ता की कटी लड़ी देखी।।'' (5)

निष्कर्ष :

यदि हम अपने समाज का कल्याण चाहते है तो हमारा भी कर्तव्य बनता है कि इन सामाजिक कुरीतियों, विकृतियों को खत्म करने का प्रयास करें। अत्री जी समाज को चेताने का प्रयास अपनी रचनाओं के माध्यम से करते है। लहणा सिंह अत्री ने समाज में व्याप्त हर प्रकार की कुरीतियों को वर्णित करने तथा उनके समाधान का प्रयास भी किया है। अत्री जी इस प्रकार की कुरीतियों पर करारा व्यंग करते है। इन समस्याओं को अपनी रागनियों और सांगो के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास करते है।

संदर्भ सूची

1. लहणा सिंह अत्री, चाल दिखाद्यूँ अजब नजारा, आचार्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2015, पृ0 38
2. लहणा सिंह अत्री, त्रिवेणी, टैगोर प्रकाशन नारनौद (हिसार), प्रथम संस्करण, 2018, पृ0 67, 68
3. लहणा सिंह अत्री, त्रिवेणी, टैगोर प्रकाशन नारनौद (हिसार), प्रथम संस्करण, 2018, पृ0 116
4. लहणा सिंह अत्री, चाल दिखाद्यूँ अजब नजारा, आचार्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2015, पृ0 120
5. लहणा सिंह अत्री, चाल दिखाद्यूँ अजब नजारा, आचार्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2015, पृ0 58

बबली मोरवाल
शोधार्थी :
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
रोहतक
संपर्क सूत्र 8813914768

19

सरोज दहिया के साहित्य में नारी चित्रण (कहाँ–कहाँ पैबं दलगाऊँ)

अनीता

सारांश –

प्रस्तुत आलेख में सरोज दहिया के साहित्य में नारी चित्रण का वर्णन किया गया है। आदिकाल में स्त्रियों को देव तुल्य माना जाता था। कहा जाता था की जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है। वहां देवता निवास करते और जहाँ स्त्रियों पर अत्याचार होता हैं। वहां अधंकार का वास होता है। परंतु मानव जितना आधुनिक होता जा रहा है उसके विचार परिवर्तित होते जा रहे हो आज समय ऐसा आ गया है कि मनुष्य स्वयं से ज्यादा किसी को महत्व नहीं देता वही स्थिति समाज में नारी की है आदि काल के बाद जैसे–जैसे समय परिवर्तित हो तो गया समाज में स्त्री की स्थिति बतर होती चली गई और वर्तमान समय में भी यह स्थिति बनी हुई है यह स्थिति ने केवल ग्रामीण स्तर पर है अपितु नगरीय स्तर पर भी देखी जा सकती है। नारी भले ही जागरूक हो रही हो अपने अधिकारों से परिचित हो रही हो फिर भी प्राचीन परंपराओ, रूढ़ियों से दो दो हाथ होना ही पड़ता है ।उसे अधिकारों की जानकारी होते हुए भी उसे कभी परिवार के लिए कभी संतान के लिए और कभी समाज के लिए स्वयं के कदम पीछे हटने ही पड़ते हैं। यही स्थिति है स्त्री की हर स्तर पर आज भी वह स्वयं के निर्णय स्वयं नहीं ले सकती उसके भी माता–पिता, कभी पति,कभी संतान की तरफ रखना पड़ता है।

प्रस्तावना

प्रकृति ने सभी रिश्तों को भूमिकाएं प्रदानकी है प्रकृति ने जिसे जो भूमिकादी है।उसका निवाह मनुष्य उसी रूप में करता है। उसमें नारी भी एक ऐसा ही पात्र है।जो इस संसार में आने के बाद अनेक किरदारों में अपनी भूमिका का निर्वाह करती है ।कभी बेटी, कभी माँ, कभी पत्नी के रूप में, मर्यादा के रूप में आदि। स्त्री के कर्तव्य शायद पुरुषों के अपेक्षा ज्यादा है। प्रकृति ने मानव जातिमें सबसे अधिक सहनशील स्त्री को बनाया है फिर भी स्त्री की दुर्गति होती है। नारीका जन्म जब एक बेटी की भूमिका के रूप में होताहै। तो उसे लाखों का खर्च बताया जाता है ।जैसे–जैसे वह बड़ी होती है। तो माता–पिता व अन्य परिवार वालों को उसके विवाह की चिंता सताने लगती हैं।उपन्यास में सुजाता के पिता चौधरी हर दयाल सिंह को भीय ही चिंता सतार ही थी और स्वयंको अच्छे घर पर तलाश करने में असमर्थ महसूस कर रहा था। क्यों कि गरीबी में वह दोष है कि अच्छे–अच्छे गुणवान व्यक्तियों को निचल स्तर पर लाकर खड़ा कर देती है।इसके विपरीत पैसा, अमीरी, मूर्ख को भी बुद्धि दे दिया करती है।वे कहते हैं," रमेन्द्र लड़का था। उसकी उन्हें इतनी चिंता नहीं थी लेकिन सुजाता तो बेटी की जात,उसे कब तक रखा जा सकता है। पिता जहाँ भी वर देखने जाते, उनके हाथ निरा शाही लगती थी। कहीं दहेज की मांग, कहीं लड़की का सावला रंग आडे आ जाता कोई लड़का पसंद नहीं आता तो कहीं गोत्र रोडा बन जाता। अंत में उन्होंने निश्चय किया की बेटी की शादी किसी ऐसे घर में की जाए जहाँ ज्यादा खर्च भी न करना पड़े और लड़का कुछ करने लायक भी हो"(1) अतः बिना दहेज विवाह करने का स्वप्न प्रत्येक माता–पिता का होता है।परंतु शायद ही किसी माता–पिता का ये स्वप्न पूरा होता होगा। नारी चित्रण का दूसरा कारण लड़के व लड़की में भेद है।जो जन्म से ही आरंभ हो जाता है ।यह भेद केवल घर के भीतर चार दिवारी में हीन ही किया जाता है। अपितु बाह्य स्तर पर भी देखने का मिलता है। जैसे खाने– पीने, ओढने –पहनने में यहां तक के शिक्षा में भी लड़कों को अच्छे से अच्छी शिक्षा देने का प्रयत्न किया जाता है।तो लड़कियों को स्कूल के दर्शन भी नसीब नहीं होते। यही सोच थी चौधरी गंगा राम की लेखिका लिखती है," चौधरी गंगा राम पुराने जमाने के आदमी थे, सीधे– सादे इंसान पांच पुत्र और एक पुत्री के पिता, सभी बेटोंको अपनी है सियत के अनुसार शिक्षा दिलाने में कसर नहीं छोड़ी रखी थी, परंतु बेटी की पढ़ाई तो किसी और के ही काम आएगी यह सोच कर बेटी को स्कूल के दर्शन नहीं होने दिये थे। आज जब उन्ही के घर एक शिक्षित बहू के आनेकी संभावना बन रही होतो वेभला रंग के सांवलेपन पर ध्यान क्यों करते?"(2) समाज में एक आदर्श पत्नी की परिभाषा है पत्नी संस्कारी हो, मर्यादाका ध्यान रखें, परिवार को बंधकर रखें ,कोई ऐसा कामना करें जिससे परिवार की मान मर्यादा को ठेस पहुंचे भले ही पति कैसा भी हो पर पत्नी को संस्कारी व पतिव्रता होना चाहिए। ऐसी ही स्थिति सुजाता की थी "जब उसका रिश्ता तय हुआ था तभी सुजाता ने पति के नाम को अपने दिल में रामनाम बनकर धारण कर लिया था। शादी के बाद चाहे नरेंद्र का व्यवहार कितना ही रुखा– सूखा क्यों ना रहा हो वह उसे चलता–फिरता भगवान ही मानती रही थी"। (3) पति अपनी इच्छा से कोई भी निर्णय ले परंतु पत्नी को अधिकार नहीं है कुछ भी कहने का जब सुजाता अपने पति से कुछ भी बात करना चाहती तो वह उसे बीच में हीटा क देता कहता "बस–बसमें ज्यादा सुनने का आदि नहीं हूँ। जो मेरे मन में आताहै। उसमे मै किसी की सलाह का इंतजार नहीं करता। कल सुबह हम तीनों जा रहे हैं और तुझे मां के साथ रहना है यह साठ सालकी हो चुकी है। अब इस के बस का अकेली रहकर घर संभाल नहीं है बस"। (4) इस प्रकार पतिव्रता सुजाता के भगवान करवट बदलकर गहरी निंद्रा में सो गये।

कुदरत ने स्त्री को सबसे सहनशील, साहसी ,धैर्यवान, कर्तव्य निष्ठ बनाया है स्त्री की तुलना भगवान से की जाती है कहते हैं कि भगवान सभी जगह नहीं हो सकते इसलिए भगवान ने नारी रूपी पात्र का निर्माण किया। परंतु धैर्य की भी एक सीमा होती है। यदि

पत्थर पर बार–बार प्रहार किया जाए तो अंत में वह भी टूट ही जाता है। ऐसी स्थिति उपन्यास में सुजाताकी थी। पति नरेंद्र अलग शहर में कमरा लेकर रह रहा था ।शनिवार, रविवार को घर आता था।सुजाता सुबह से ही खुश थी और शाम काइंतजार कररहीथी। 6रू00 बजे बस भी आई अन्य सभी सदस्य घर आए पर जिसका इंतजार था। वह नहीं आया। मांने छोटे बेटे को अकेला देखकर पूछा ,"नरेंद्र और विमल कहाँ है? मदनने जवाब दिया विमला अपनी ससुराल गई है और नरेंद्र उसके साथ गयाहै।"(5) यह देखकर व सुनकर सुजाता पर मानो वज्रपात हो गया ।उसकी प्रत्येक उम्मीद ,आशा निराशा में परिवर्तित हो गई। उसके हृदय में जोर से दर्द हुआ।ऐसा दर्द जिसमें वह कराह भी नहीं सकती थी और किसी का बता भी नहीं सकती थी ।पति व्यवहार का ऐसा दर्द उसे अंदर ही अंदर तोड़ रहा था। फिर भी वह स्वयं को दिलासा देती है स्वयं को समझती है की ऊंचाई से गिरता हुआ पानी हमेशा झील में ही आकर रूकता है। अभियान का सिर हमेशा नीचे होताहै। यह स्थिति केवल एक सुजाता की नहीं समझ में न जाने कितनी सुजाता ओकी है जो इस स्थिति का शिकार बनी हुई है। " मौन रहकर सह रही है, मौन में हीहै, बात अपनी घोंट लेती,हरकदम अपमान है,

मौन की यह साधना ही, बल सदा देती रही,

मौन केबल आपनारी ,सब सदा सहती रही।"(6) आज के समय में नारी नारी के शत्रु बनी हुई है। एक नारी दूसरी स्त्री को आगे बढ़ता हुआ नहीं देख सकती केवल माँ ही है जो केवल अपनी संतान को आगे बढ़ता हुआ देखना चाहती और अन्य कोई ऐसा पात्र समाज में दिखाई नहीं देता जब एक स्त्री विवाह के बाद नए परिवेश, नएघरमें आती है। तो सास एक ऐसा पात्र होती है। जिसके साथ विवाहिता को ज्यादा समय व्यतीत करना पड़ता है। परंतु सास ही बहू को पसंद ना करें और उसके सहाय ताना करेतो उसका नए परिवेश में समा योजन कर पाना कठिन होजाताहै। जब सुजाता को नौकरी के फॉर्म भरने केलिए कुछ पैसे की जरूरत थी तो सास ने झट से उसे कह दिया "एक काम कर अपने भाई के पास सु जानपुर चलीजा। वह सारा काम वही करवा देगा"(7) जिम्मेवारी नरेंद्र की थीऔर उसकी सास ने डालदी सुजाता के भाई के कंधों पर सुजाता की सास ने उसका साथ नहीं दिया सास आगे बढी," बदजबान, तेरी जबान खीं चली जाएगी"।(8) जिस स्त्री के पति के संबंध अन्य स्त्री के साथ हो तो ऐसी स्थिति में उसे स्त्री का घर परिवार मे टीका नहीं हो सकता । सभी उसे घर में ही न समझते हैं कोई उसका साथ नहीं देता है यहां तककी सास ,जेठानी, देवरानी ,नंद कोई भी नहीं ये सभी नारी होते हुये भी नारी की भावनाओं को नहीं समझ सकते बल्कि उसे प्रताड़ित करतेहै । कोई भी अवसर नहीं छोड़ते उसे प्रताड़ित करने का सांस कहती है सुजाता से "क्यों जाये हम तेरे साथ, जब हम तुझे रखना ही नहीं चहाते, तूह मारे पीछे क्यों पड़ी है? इतनी बड़ी दुनिया में और ठिकाना नहीं है क्या तुझे?"(9) "तेरे बाप ने जबरदस्ती चिपकाया है तुझे मैंने खोलकर बता दिया था कि नरेंद्र शादी नहीं करना चाहता।"(10) नारी कामा त्रृत्व रूप भी विचित्र है।नारी जब तक शांत रहती है जब तक उसके मान सम्मान की बात होती है। परंतु जब बात उसके संतान पर आ जाती है तो वह चंडी रूप धारण कर लेती है। मां सब कुछ सहनकर सकती हैं। परंतु अपन बच्चों पर आँच तक नहीं आने देती। सुजाताने अपने बच्चों को बचाने के लिए रात में ही घर छोड़ने का फेसला कर लिया था ।कुछ समय के बाद सु जाता एक पुत्र को जन्म दिया वह नौकरी के साथ है। ममता का दायित्व भी निभाना है अब कैसे करें कहते बुरे समय में सभी साथ छोड़ देते हैं ।परंतु माँ एक ऐसी शक्ति है ।जो अपने बच्चों को कभी नहीं छोड़ती सुजाताने अपने बच्चों को क्रैच मे छोड़ने का फैसला लिया ।किंतु सुजाता की मां ने हिम्मत दिखाई और कहा" नहीं बेटी नहीं क्रैंचमें नहीं छोड़ना इसे नशीली चीज देकर सुला देंगे वे लोग"।(11)

" भूल जा अब बात सारी, बस इसी पर ध्यान दे, मात्रृत्व का सुख बड़ा है, आप यह पहचान ले,"(12) नई केवल बेचारी नहीं है अपित निडर भी है वह अपने अधिकारों को जानती है पहचानती है।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है की नारी में त्यागशीलता, सहनशीलता, कोमलता, ममता, प्रेम आदि गुणो के भंडार होते हुए भी उसे संघर्षों का सामना करना पड़ता है। नारी के आंचल में दूध होता फिर भी उसकी आंखेनम रहती है। क्योंकि भगवान ने कसे ऐसे ही बनाया है। नारी अनेक रूपों में भूमिका निभाती है। संतान को जन्म दे करउ न्हें परिस्थितियों से लड़ना सिखाती है। पति का स्वाव लंब बनती है ।उसकी प्रेरणा शक्ति बनती है ।लेखिका की नारी पात्र भी रूढियों से बंधी हुई नहीं है ।वे अपने अधिकारों के लिए लड़ना भी जानती है और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना भी। उनकी मानसिकता व आधुनिकता को बड़ी गहराई से उभारा गया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 सरोज दहिया,कहाँ–कहाँ पैबंद लगाऊँ,प्रकाशन वर्ष 2010, पृष्ठ स०6,7

2 सरोज दहिया,कहाँ–कहाँ पैबंद लगाऊँ, प्रकाशन वर्ष2010, पृष्ठ संख्या 8

3 सरोज दहिया, कहाँ– कहाँ पैबंद लगाऊँ, प्रकाशन वर्ष2010, पृष्ठ संख्या 54

4 सरोज दहिया, कहाँ– कहाँ पैबंद लगाऊँ, प्रकाशन वर्ष 2010,पृष्ठ संख्या 55

5 सरोजदहिया,कहाँ–कहाँ पैबंद लगाऊँ, प्रकाशन वर्ष 2010,पृष्ठ संख्या 56

6 सरोजदहिया,प्रेम–परी(खण्डकाव्य),प्रकाशन वर्ष 2020,पृष्ठ संख्या 67

7 सरोज दहिया, कहाँ–कहाँ पैबंद लगाऊँ, प्रकाशन वर्ष 2010, पृष्ठ संख्या 63

8 सरोज दहिया, कहाँ–कहाँ पैबंद लगाऊँ ,प्रकाशन वर्ष2010,पृष्ठ

संख्या 115

9 वहीं पृष्ठ संख्या 115

10 वहीं पृष्ठ संख्या 115

11 सरोज दहिया, कहाँ–कहाँ पैबंद लगाऊँ, प्रकाशन वर्ष 2010,पृष्ठ संख्या 145

12 सरोज दहिया, प्रेम परी (खण्डकाव्य), प्रकाशन वर्ष 2020, पृष्ठ संख्या 48

अनीता

शोधकर्ता– हिन्दी विभाग

बाबा मस्तनाथ विवविद्यालय (रोहतक)

गाँव–थानाखुर्द

तहसील–खरखौदा

पोस्टआफिस–थानाकला

जिला– सोनीपत (हरियाणा)

मो.न. 8307030572

पिन कोड–131402

20

मन्नू भण्डारी की "मैं हार गई" कहानी में चित्रित राजनीतिक मूल्य

स्निग्ध सिंह

सारांश –

विज्ञान, प्रौद्योगिकी व तकनीक के इस युग में भावनाओं तथा संवेदनाओं का ह्रास उत्तरोत्तर देखने को मिल रहा है। इसके बावजूद जीवन तथा मानव– मूल्यों की शिक्षा एवं प्रेरणा हमें संस्कार से निरंतर मिलती रही है। समान्यतः "मूल्य" शब्द जितना सरल प्रतीत होता है, उतना है नहीं। इसकी अवधारणा परिवर्तनशील है, इसका प्रमुख कारण तद्युगीन परिस्थितियाँ और विचारधाराएं होती हैं। चेतना व धारणा की तरह ही 'मूल्य' भी अमूर्त है। यह उस अदृश्य आदेश की तरह हैं जिनका पालन अपने आप होता रहता है।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के कवि रामधारी सिंह दिनकर ने मूल्यों के संदर्भ में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किया है–

"मूल्य वे मान्यताएँ हैं, जिन्हें मार्ग– दर्शक ज्योति मान कर सभ्यता चलती रही है और जिसकी उपेक्षा करने वालों को परंपरा अनैतिक या बागी कहती है। किन्तु कभी– कभी ऐसा भी होता है की पुराने मूल्यों को मिटा कर, उनकी जगह नए मूल्यों की प्रतिष्ठा करने वाले व्यक्ति भगवान बन जाते हैं।"[1]

कविवर दिनकर के इस कथन के आधार पर उदाहरण स्वरूप यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार पहले सती प्रथा जैसे अमानवीय कृत्य को सामाजिक रूप से स्वीकृति प्राप्त थी परंतु कालांतर में राजा राममोहन राय द्वारा इसका विरोध एक प्रकार से समाज में नए मूल्य कि स्थापना की ओर एक बड़ा कदम रहा। उनके अथक प्रयास द्वारा तत्कालीन ब्रिटिश भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिक ने 1829 ई. में बंगाल सती रेग्युलेशन पास किया। परिणामतः सती प्रथा को इंसानी प्रकृति की भावनाओं के विरुद्ध बताकर इस पर रोक लगा दी गई अर्थात जो मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त थी उसके विरोध में नए मूल्य की स्थापना करने वाले राजा राममोहन राय को स्त्रियों द्वारा ईश्वर रूप में पूजा जाने लगा क्योंकि उन्होंने सती प्रथा जैसे नृशंस कृत्य को रोकने का प्रयास किया। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि मूल्य की परिभाषा समय व परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती है।

मूल्य को कई वर्गों में विभाजित किया गया है। जैसे पारिवारिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य, राजनीतिक मूल्य आदि।इसमें से राजनीतिक मूल्यों ने सदा मानव जीवन को प्रभावित किया है। स्वस्थ राजनीतिक मूल्यों में जनता का स्थान सर्वोत्तम होता है। आदर्श राज्य निर्माण के लिए राजनेता को देशभक्त, ईमानदार, बलिदानी व उज्ज्वल चरित्र का होना अनिवार्य है। किन्तु वर्तमान में राजनीति में भ्रष्टाचार, बेईमानी, रिश्वतख़ोरी, भाई– भतीजावाद व परिवारवाद आदि व्यापक रूप में फैली हुई है। इसका चित्रण हिन्दी साहित्य में बढ़– चढ़कर किया गया है।

हिन्दी कथा– साहित्य की मूर्धन्य लेखिका मन्नू भण्डारी एक जागरूक व क्रांतिकारी साहित्यकार थीं और उन्होंने स्वयं अनेक आंदोलनों में भाग भी लिया इसलिए उनकी रचनाओं में राजनीतिक चेतना की अभिव्यक्ति मिलती है। इन्होंने राजनीति पर बड़े ही करारे व्यंग्य किए हैं। उदाहरण के लिए इनकी कहानी "मैं हार गई" में भ्रष्ट राजनीति के माहौल में एक रचनाकार की प्रतिबद्धता के साथ– साथ उसके कुछ न कर सकने की असमर्थता का जीवंत वर्णन मिलता है। किस प्रकार राजनीति मानव कल्याण के स्थान पर समाज के लिए अभिशाप बनकर रह गया है, इसका मार्मिक चित्रण इस कहानी में किया गया है। इस कहानी की शुरुआत में ही राजनेताओं की कथनी– करनी में अंतर को दिखाया गया है। उदाहरण के लिए–

"उस सम्मेलन की अंतिम कविता थी 'बेटे का भविष्य'। उसका सारांश कुछ इस प्रकार था, एक पिता अपने बेटे के भविष्य का अनुमान लगाने के लिए उसके कमरे में एक अभिनेत्री की तस्वीर, एक शराब की बोतल और एक प्रति गीता की रख देता है और स्वयं छिपकर खड़ा हो जाता है। बेटा आता है और सबसे पहले अभिनेत्री की तस्वीर को उठाता है। उसकी बाछें खिल जाती हैं। बड़ी हसरत से वह उसे सीने से लगाता है, चूमता है व रख देता है। उसके बाद शराब की बोतल से दो– चार घूँट पीता है। थोड़ी देर बाद मुँह पर अत्यंत गंभीरता के भाव लाकर, बगल में गीता दबाए वह बाहर निकालता है। बाप बेटे की यह करतूत देखकर उसके भविष्य की घोषणा करता है, "यह साला तो आजकल का नेता बनेगा!"[2]

उपर्युक्त उद्धरण में 'आजकल का नेता' कहने का अर्थ यह हुआ कि भौतिक जगत व विलासी जीवन के प्रति आकर्षण आजकल के नेताओं की प्राथमिकता बन गयी है। नेता व्यक्तिगत जीवन में मूल्यहीन होते हुए भी समाज के समक्ष आदर्श रूप में उपस्थित होते हैं, जो उनके कथनी करनी में अंतर को प्रदर्शित करता है। समाज को व्यवस्थित करना, सेवा एवं त्याग के द्वारा राजनीतिक मूल्यों की स्थापना होती है व एक स्वस्थ समाज व राष्ट्र का निर्माण होता है।

यह कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी है। कहानी की शुरुआत में लेखिका के एक कवि सम्मेलन में उपस्थित होने व 'बेटे का भविष्य' नामक कविता, जिसका उल्लेख उपर्युक्त उद्धरण में किया जा चुका है का पाठ होने के उपरांत अपने मित्र से बहस हो जाती है। लेखिका का कहना है कि राजनेता को मूल्यहीन, बेईमान, भ्रष्टाचारी आदि ही समझना कहाँ तक सही है। वह सोचती है कि क्या नेता सर्वगुणसंपन्न नहीं हो सकता और इसी प्रेरणा के साथ वह कॉपी– कलम लेकर एक आदर्श नेता के निर्माण में लग जाती है। सबसे पहले वह महान नेताओं की जीवनियाँ पढ़ती है। उसके उपरांत यह धारणा

बनाती है कि अच्छे नेता का जन्म गरीब परिवार में ही होता है एवं उसी अनुसार उसके कल्पित नेता की कहानी आगे बढ़ती जाती है। नेता जहाँ कहीं भी अत्याचार देखता उसे दूर करने के लिए हजारों संकल्प करता है। समाज में हो रहे अन्याय के विरुद्ध लड़ने को उत्सुक रहता है। वह भावी नेता को उसके कर्तव्य के प्रति हर प्रकार से प्रोत्साहित करती है –

"तुम नेता होने जा रहे हो या कोई मज़ाक है? जानते नहीं, नेता लोग अपने परिवार के बारे में नहीं सोचते, वे देश के, सम्पूर्ण राष्ट्र के बारे में सोचते हैं। तुम्हें मेरे आदेश के अनुसार चलना होगा। जानते हो, मैं तुम्हारी स्रष्टा हूँ, तुम्हारी विधाता!"[3]

लेकिन इन सबके बावजूद वह अपने परिवार को सबसे ऊपर रखता है और जब उसके सामने नौकरी की समस्या उत्पन्न होती है तो नायिका(मैं) उसकी नौकरी अपने पिताजी के विभाग में लगवाना चाहती है। लेकिन वहाँ भी भाई– भतीजावाद की स्थिति देखने को मिलती है। पूरा विभाग उसके परिवार के सदस्यों से ही भरा रहता है। यह दृश्य राजनीतिक मूल्यों के ह्रास को दृष्टिगत करता है। जिन नेताओं के हाथों में देश का भविष्य है, वह किस प्रकार सेअपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए हैं। नेताओं के इसी मूल्यहीनता के कारण देश का विकास अवरुद्ध होता है और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। एक नेता तभी देश या राष्ट्र के प्रति समर्पित हो सकेगा जब वह परिवारवाद से दूर होगा। राजनीति में आयी भ्रष्टता का एक व्यापक कारण परिवारवाद भी रहा है।

लेखिका द्वारा बनाया गया कल्पित नेता जब बहन के इलाज़ में नाकामयाब हो जाता है और इस असफलता का कारण भी उसकी गरीबी होती है, तो उसके मन में विद्रोह की भावना उत्पन्न हो जाती है। इन सबके उपरांत जब वह अपने परिवार की गरीबी को दूर करने के लिए चोरी करने का रास्ता अपनाता है तो, उसकी नैतिकता का यह पतन देख लेखिका काँप उठती है और उस कागज़ के पन्नों के टुकड़े– टुकड़े कर देती है जिसपर वह अपने भावी राजनेता को गढ़ रही थी।

इसके उपरांत नायिका(मैं) के अंतर्मन में कई प्रश्न उत्पन्न होते हैं, जैसे कि एक आदर्श नेता के सभी गुणों से परिपूर्ण होने के बावजूद भी उसका कल्पित नेता चोरी करने की ओर क्यों प्रवृत्त होता है? बहुत सोचने के उपरांत वह इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि गरीबी ही वह कारण रहा जिससे उसके नेता की नैतिकता का पतन हुआ। परिणामतः लेखिका ने एक बार फिर अपनी कलम पकड़ी और इस बार उसका नेता किसी गरीब घर में पैदा न होकर करोड़पति घर में जन्म लेता है। जीवन में किसी भी प्रकार के अभाव से दूर, हर प्रकार के सुविधाओं के बीच बड़ा होता है। उसका नेता अत्याचार के विरूद्ध आवाज़ उठाना, उत्साहवर्द्धक भाषण देना, गरीबों के प्रति दया भाव, गरीब बच्चों को पढ़ाना और सादगी भरा जीवन बीताना आदि– आदि विशेषताओं से संतृप्त होता है। लेकिन समय के साथ– साथ उसमें रईसी के गुण हावी होने लगते हैं और सारी नैतिकता धरी की धरी रह जाती है। उसका आधे से अधिक समय कॉफी हाउस, जुओं के अड्डो, शराब की दुकानों में बीतने लगते हैं। उसकी नैतिकता का यह ह्रास देख नायिका(मैं) खुद को रोक नहीं पाती व उसे समझाने की कोशिश करती है किन्तु उसका सारा प्रयास असफल होता है। इसके उपरांत उसके द्वारा निर्मित नेता गुस्से में आकर कहता है कि– "तुमने तो मेरी नाक में दम कर रखा है। ऐसा करो, वैसा मत करो। मानो मैं आदमी नहीं, काठ का उल्लू हूँ। सो बाबा ऐसी नेतागिरी मुझसे निभाए न निभेगी। यह उम्र, दुनिया की रंगीनी और घर की अमीरी! बिना लुत्फ उठाए यों ही जवानी क्यों बर्बाद की जाए? यह करके क्या नेता नहीं बना जा सकता?"4

उपरोक्त कथन द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति नेता बनने के साथ– साथ भोग– विलास का भी आनंद उठाना चाहता है। वह यह भूल जाता है की नेता का कर्तव्य अपने सुखों का त्याग कर समाज व राष्ट्र की उन्नति के लिए समर्पित होना है न कि निम्नवर्ण, दीन– दुखी, शोषित, उपेक्षित वर्गों के प्रति अपने कर्तव्यों को भूलकर भोग– विलास में डूब जाना है।

एक आदर्श नेता के निर्माण में लेखिका को दुबारा हार का सामना करना पड़ता है। कहानी में अंततः लेखिका द्वारा आत्मग्लानि का वर्णन मिलता है–

" उसने तो अपने किए का फल पा लिया, पर मैं समस्या का समाधान नहीं पा सकी। इस बार की असफलता ने तो बस मुझे रुला ही दिया। अब तो इतनी हिम्मत भी नहीं रही कि एक बार फिर मध्यम वर्ग में अपना नेता उत्पन्न करके फिर से प्रयास करती। इन दो हत्याओं के भार से मेरी गर्दन टूटी जा रही थी, और हत्या का पाप ढोने कि न इच्छा थी न शक्ति ही। और अपने सारे अहं को तिलांजलि देकर बहुत ही ईमानदारी से मैं कहती हूँ कि मेरा रोम– रोम महसूस कर रहा था कि कवि भरी सभा में शान के साथ जो नहला फटकार गया था, उस पर इक्का तो क्या, मैं दुग्गी भी न मार सकी। मैं हार गई, बुरी तरह हार गई।"5

निष्कर्ष–

नेताओं का व्यक्तित्व प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जनता को प्रभावित करता है। इनका चयन जनता की सेवा के लिए होता है, किन्तु वे अपना कर्मक्षेत्र भूलकर अपनी स्वार्थपूर्ति में लगे रहते हैं। 'मैं हार गई' कहानी में लेखिका ने कल्पना का सहारा लेकर नेताओं की पोल खोलकर रख दी है। निर्मित आदर्श नेता के नैतिक उत्थान में हार के साथ–साथ लेखिका को भी अंततः निराशा ही हाथ लगती है और साथ ही उसे समाज में राजनीतिक मूल्य के पतन की यथार्थता का बोध भी होता है।

संदर्भ सूची–

1. डॉ. मार्तंड सिंह, आधुनिक कथा साहित्य में मानव मूल्य, संस्करण 2021, अकादमिक बुक्स इंडिया, पृष्ठ सं.– 22
2. मन्नू भण्डारी, मैं हार गई, संस्करण 2022, राधाकृष्ण पेपरबैक्स, पृष्ठ सं.–155

3. मैं हार गई, पृष्ठ सं.–158

4. वही, पृष्ठ सं.–162

5. वही, पृष्ठ सं.–164

स्निग्ध सिंह
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर
सचल भाष– 7439481553
snigdhasingh099@gmail-com

21

पानीपत शहर में ठोस अपशिष्ट का निष्पादन

डॉ0 संदीप कुमार यादव, नीलम कुमारी

शोध सारः

ठोस अपशिष्ट पानीपत शहर की एक ज्वलंत समस्या है। नगरीय क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट भी पर्यावरण प्रदूषण का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन चुका है। नगरीय क्षेत्रो में वृद्धि के साथ –साथ इसकी मात्रा में अत्यधिक वृद्धि होती जा रही है जिसके कारण प्रशासकों के सामने इसके उपयुक्त प्रबन्धन की समस्या उत्पन्न हुई है। इससे अनेक पर्यावरणीय समस्याएं उभरकर सामने आई है। औद्योगिकीकरण के बढ़ने तथा जनसंख्या में हो रही लगातार वृद्धि के कारण शहरों में पर्यावरण बिगड़ता जा रहा है। इस कारण, ठोस अपशिष्ट,पॉलीथीन के बढते प्रयोग, अस्पतालों द्वारा निष्प्रयोजन सामग्री तथा अन्य कारणों से बढ़ती जा रही गन्दगी के कारण नगर में पर्यावरण असंतुलन तेजी से बढा है।

शब्द कुंजी: ठोस अपशिष्ट, प्रबन्धन, पर्यावरणीय समस्याएं, औद्योगिकीकरण, सामग्री

प्रस्तावनाः ठोस अपशिष्ट तत्व उन पदार्थों को कहते है जो उपयोग के बाद निरर्थक एवं बेकार हो जाते है यथाः समाचार पत्र, विभिन्न प्रकार के डिब्बे तथा कनस्तर, बोतल, टूटे कांच के सामान, प्लास्टिक के डिब्बे, पॉलीथीन के थैले, राख, आवासीय कचरा आदि। उपयोग के बाद परित्यक्त इन ठोस पदार्थों का विभिन्न नाम से जाना जाता है जैसे– कचरा, उछिच्ट, ठोस अपशिष्ट, आदि । इन ठोस अपशिष्ट पदार्थों को समुचित डम्पिंग तथा निस्तारण के लिए पर्याप्त स्थान की आवश्यकता होती है। विश्व में बढ़ती जनसंख्या तथा औद्योगिक एवं नगरीकरण में तजी से वृद्धि के साथ–साथ ठोस अपशिष्ट पदार्थों द्वारा उत्पन्न पर्यावरण प्रदूषण की समस्या भी विकराल एवं असाध्य होती जा रही है। ठोस अपशिष्ट पदार्थो की मात्रा में सतत् वृद्धि के फलस्वरूप विकसित देशो के लिए ही नही बल्कि कई विकासशील देशों के लिए भी सिर दर्द बन गई है। उदाहरण के लिए अकेला न्यूयार्क महानगर प्रतिदिन 2500 ट्रक भार के बराबर ठोस अपशिष्ट पदार्थों (बीयर, एवं अन्य पदार्थों के डिब्बे, दूध की बोतले, अन्य प्रकार की बोतले, कागज समाचार पत्र, प्लास्टिक के समान, डिब्बे एवं कनस्तर, इत्यादि) का उत्पादन करता है। अर्थात इस महानगर से प्रतिदिन 25000 टन ठोस अपशिष्ट पदार्थ निकलते है। वास्तव में विकसित एवं विकासशील देशों में परित्यक्त स्वचालित वाहनों के अनेको कब्रिस्तान देखने को मिलते है। राष्ट्रीय पर्यावरण शोध नागपुर के अनुसार भारत के नगरों एवं महानगरों में प्रतिदिन कचरे / ठोस अपशिष्ट का उत्पादन 500 ग्राम प्रतिव्यक्ति माना गया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि केवल नागरिकों में जागरूकता लाकर ही इस भीषण समस्या पर नियंत्रण किया जा सकता है। तेजी से बढते ठोस अपशिष्ट व अवैध रूप से बढती जा रही है। कॉलोनियों तथा झुग्गी–झोपडियों के कारण भी पर्यावरण असंतुलन तथा गन्दगी को बढावा मिला है। इस बढ़ते ठोस अपशिष्ट के कारण ही शहरो में भयानक बीमारियों का प्रकोप होता है। प्रतिदिन उत्पन्न होने वाले ठोस अपशिष्ट में से लगभग 50 प्रतिशत ही बायो संयंत्रो द्वारा परिष्कृत किए जाने योग्य माना जाता है चालीस प्रतिशत को पुनः शोधित किया जा सकता है। झुग्गी झोंपडियों की वृद्धि अपर्याप्त कोष तथा भ्रष्ट नौकरशाही व कर्मचारियों तथा नागरिकों की पर्यावरण के प्रति घोर उदासीनता के कारण ही नगर गन्दगी के ढेरों में परिवर्तित होते जा रहे है। निष्प्रयोजन सामग्री तथा कूडे–करकट के लिए एक केन्द्रीय व्यवस्था की आवश्यकता है। जिससे निष्प्रयोजन सामग्री तथा कूड़े करकट को विभिन्न माध्यमों द्वारा परिष्कृत करके ही जहां तक हो सके उपयोग में पुनः लाया जाये तथा शेष सामग्री को उचित विधियों से निपटाया जाये लोकप्रिय जागरूकता के प्रभाव को इस समस्या का निदान कर पाना दुष्कर होता जा रहा है। यदि नागरिक जागरूकता के साथ अपना कर्तव्य प्रत्येक व्यक्ति समझे ओर इस कार्य में आये तो इस समस्या से काफी हद तक छुटकारा पाया जा सकता है लेकिन प्रशासन की उदासीनता एवं निष्क्रियता ही उसके लिए दोषी है। पर्यावरण की रक्षा के लिए कानूनों की कोई कमी नहीं है। देश में करीब 200 ऐसे कानून है जिनका पर्यावरण की रक्षा के लिए किसी न किसी रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। किन्तु दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि जितने अधिक कानून है प्रदूषण फैलाने वाले व्यक्ति उद्योग व अन्य कारखाने उतने ही निर्भिकता का परिचय दे रहे है।

अध्ययन क्षेत्र : प्रस्तावित शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र पानीपत नगर है। यह भारत के हरियाणा राज्य में स्थित पानीपत जिले का एक नगर है। 1 नवंबर 1989 को तत्कालीन करनाल जिले से पानीपत जिला बनाया गया था। 24 जुलाई 1991 को इसे फिर से करनाल जिले में मिला दिया गया था। 1 जनवरी 1992 को यह फिर से एक अलग जिला बन गया। पानीपत हरियाणा के पूर्वी भाग में ग्रैंड ट्रंक रोड पर स्थित है। पानीपत नगर का भौगोलिक विस्तार 29°09″ 15″ उत्तरी अक्षांश से 29°27′ 25″ उत्तरी अक्षांश तथा 76°17′ 06″ पूर्वी देशांतर से 76 18″15″ पूर्वी देशांतर है। यह राज्य की राजधानी चंडीगढ़ से लगभग 165 कि. मी. दक्षिण और दिल्ली से लगभग 85 किमी उत्तर में है। पानीपत नगर निगम का कुल क्षेत्रफल 62 वर्ग किलोमीटर है जिसमें 32 नगर वार्ड में 2,94,292 (2011 की जनगणना) जनसंख्या निवास करती हैं।

मानचित्र 1: अध्ययन क्षेत्र की स्थिति

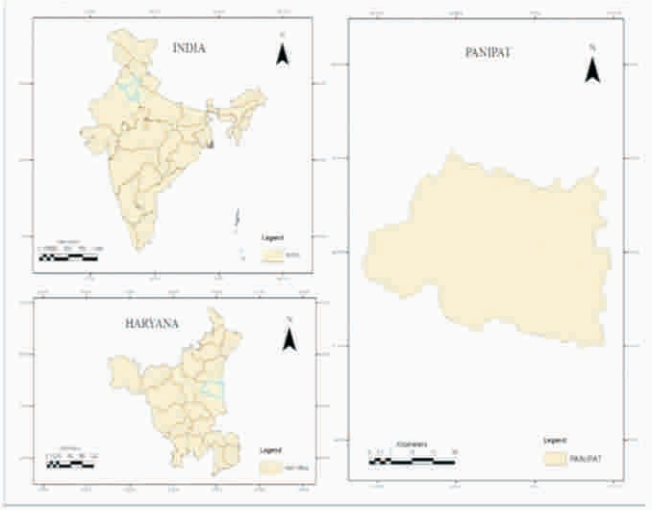

स्रोत : शोधार्थी द्वारा आर्क जी आई एस की सहायता से निर्मित

1976 में संविधान के 42वें संशोधन के तहत पर्यावरण सम्बन्धी मुद्दों को शामिल किया गया है। पहली बार संविधान में पर्यावरण सुरक्षा का उल्लेख हुआ है। अतः इस समस्या के समाधान के लिए नागरिकों को शिक्षित करना होगा साथ ही नागरिकों को हमें अपने व्यवहार में भी परिवर्तन लाना होगा। प्रारम्भ में यह व्यवस्था की जा सकती है जब लोग बाजार जाये तो प्लास्टिक और पॉलिथीन बैग का प्रयोग कम से कम करें और कूड़ा निश्चित स्थान पर डालें इस प्रकार अपशिष्ट पदार्थों से पर्यावरण दूषित न होगा और और इसका हमारे स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव भी नहीं पडेगा इसके लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है ।

घरेलू कचरा निष्पादन :

(अ) नगर निगम स्तर पर कार्य योजना तैयार की जानी चाहिए जिसके अन्तर्गत पालिका कर्मियो द्वारा घरेलु कचरे की छंटनी की जाये जिससे ठोस व्यवस्था अलग व जैविक अपघटनीय अलग कर उनका भण्डारण विपणन व निष्पादन किया जाना चाहिए ।

(ब) निगम द्वारा कार्ययोजना प्रस्तावित की जानी चाहिए जिसके द्वारा घरेलु अपशिष्ट संग्रहणकर्ताओं का एक दल प्रशिक्षित किया जाये।

(स) नगर निगम द्वारा संरक्षण किया जाना चाहिए।

(द) नगर निगम द्वारा ऐसी योजनाए लागू करनी चाहिए जिसमें बीमा व चिकित्सा सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाये।

(य) अच्छे कार्य के लिए पुरस्कार व रोजगार के अच्छे अवसर दिये जाने चाहिए।

(र) कार्य योजना को लागू करने के लिए दो प्रकार के थैलों का निर्माण किया जाये ।

(क)हरा थैला: हरे रंग के थैले का प्रयोग जैविक अपघटनीय पदार्थों के लिए किया जाये ।

(ख) लाल थैला : लाल रंग के थैले का प्रयोग ठोस अपशिष्ट पदार्थो के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

इसका प्रयोग सर्वप्रथम नगर के प्रबुद्ध आवासित क्षेत्रो से आरम्भ किया जाये इन क्षेत्रों में मुख्य प्रबुद्ध क्षेत्र, शास्त्री विहार, सैनिक कालोनी, बसंत विहार ,शिव कालोनी, प्रताप नगर, राजपूत कालोनी, मान नगर, आदि क्षेत्र है। इन थैलो के लिए व संगहण के लिए 20 से 40 रूपये प्रतिमाह कचरा टैक्स के रूप मे लिया जा सकता है। जिसका प्रयोग कचरे को इकट्ठा करने के लिए परिवहन व प्रबन्धन में किया जाना चाहिए।

इस नई शुरूआत से घरेलु अपशिष्ट का सड़कों पर पड़ा होने से वातावरण का दूषित व दुर्गन्धयुक्त होना व संकमित होकर रोगो का पैदा होना कम हो सकेगा व नगर निगम की आय में भी वृद्धि होगी। जिसमें ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन को मूर्त रूप दिया जा सके और पानीपत का सपना साकार हो सकेगा।

औद्योगिक कचरा निष्पादन :

औद्योगिक विकास ने जहां एक ओर दुनिया की आर्थिक सामाजिक व्यवस्था को नया आयाम दिया है वहीं ऐसी कठिनाइयां भी दी है जिनके निवारण आज विकराल रूप ले चुका है। औद्योगिक प्रतिष्ठानों से सामान्यतः ठोस कचरा प्लास्टिक पैकिंग का सामान पॉलीथीन, कार्ड बोर्ड, चूना, राख, खोई, इत्यादि निकलता है। इसके लिए भी कार्ययोजना की आवश्यकता है।

१. सर्वप्रथम उद्योगों को प्रदूषण नियंत्रण किया के प्रभावी ढंग से लागू किया जाना चाहिए जिससे उद्योगो से शून्य उत्प्रवाह हो जिससे औद्योगिक कचरे की समस्या उत्पन्न ही न हो सके।

२. उद्योगों के लिए यह नियम होने चाहिए कि वो अपने कचरे का निष्पादन प्रतिष्ठानों के अन्दर ही करें उस कचरे को प्रतिष्ठान से बाहर न डालें।

३. यदि यह कचरा निष्पादनीय नहीं है तो इसे उच्च दहनीय तकनीक से प्रतिष्ठान के अन्दर दहनीकरण किया जाये यह तकनीक भी प्रदूषण रहित व आधुनिक होनी चाहिए यदि उपरोक्त दोनों अपरिहार्य हों तो निस्तारित कचरा सीधे पुर्नचकण इकाइयों के पास भेजा जाना अनिवार्य है।

४. प्रदूषण इकाइयां अथवा आवासीय क्षेत्रों से बाहर हों ताकि उनके किसी भी प्रकार के प्रदूषण का प्रभाव मानवीय स्वास्थ्य पर न पड़े एवं निकाला गया कचरा सामान्य जीवन में कोई व्यवधान अथवा व्याधि उत्पन्न न करें।

५. सभी औद्योगिक इकाइयों के औद्योगिक स्थान के संस्थान में स्थापित होना चाहिए यदि ऐसा नहीं है तो आवासीय क्षेत्र से स्थानान्तरित कर नगरीय औद्योगिक प्रदूषण से मुक्त करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

ठोस कचरा निष्पादन :–

आधुनिक समाज विशेषकर नगरों में रहने वाले लोगों

द्वारा उत्पन्न ठोस अपशिष्ट प्रदूषण का कारण बनता जा रहा है। घर के कूड़े कचरे से लेकर मोटर कार और ट्रक तक स्थल पर परित्यक्त किये जाते हैं। नगरों में ये समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। नगर निगम क्षेत्र सड़क मार्ग ट्रांसपोर्ट नगर मोटर कार, मैकेनिक क्षेत्र रिपेयरिंग क्षेत्र, इलेक्ट्रॉनिक मार्किट, लोहा बाजार, कबाडी बाजार जैसे क्षेत्रों में भी ठोस अपशिष्ट का उत्पादन होता है। नट बोल्ट, लोहे की पत्तियां व छोटी छोटी कतरनें टूट फूटकर सामान, पुराने वाहनों के पहिये के टुकडे आदि अनेक सामान होते हैं यद्यपि इस अपशिष्ट को चुने के लिए संग्रहणकर्मी समूह जो चुम्बक के द्वारा लोहे के बारीक से बारीक कणों को इकट्ठा कर बेचते हैं परन्तु इसका अतिरिक्त बहुत बड़ा भाग नालियों व कार्य क्षेत्र में दब जाता है। जो भूमि की गुणवत्ता में बाधा पहुचाता है। अतः अपशिष्ट पदार्थो का पुर्नचक्रण कर रद्दी कागज से कागज लोहे की कतरनों से लोहा आदि बनाने की समुचित व्यवस्था की जाये इस प्रकार उद्योगों को जो वर्तमान में कार्यरत है उन्हें ओर विकसित किया जाना चाहिए जिससे ठोस अपशिष्ट के निस्तारण एवं पर्यावरण सुरक्षा में सहायक हो ।

रासायनिक कचरा निष्पादन :

आधुनिक औद्योगिक विकास ने अधिक उत्पादन के लिए नित नये प्रयोग, शोध ओर तकनीकी सुधार के कारण औद्योगिक क्रांति का जन्म हुआ है। इस विकास ने मानव प्रकृति के साथ मानव का सम्बन्ध इतना बिगड़ा गया है कि औद्योगिक विकास अभिशाप लगने लगा है। प्रकृति अपने ढंग से पर्यावरण का नियमन करती है तथा उसके तत्वों की एक निश्चित सहन सीमा होती है। उत्पादन बढाकर अधिक भौतिक तत्वों को प्रदूषित कर दिया है। लगभग हर उद्योगों से घातक अपशिष्ट पैदा होता है। विभिन्न रसायनों की फैक्टरियों से घातक अपशिष्ट बिना ट्रीटमेंट के ही अपशिष्ट पैदा होता है। विभिन्न रसायनों की फैक्टरियों से घातक अपशिष्ट के कारण मृदा, वायु, सतही जल तथा भूमिगत जल के प्रदूषित होने का खतरा बढ गया है। मृदा प्रदूषण के कारण उन पर स्थायी रूप से रहने वाले जीव तथा पौधे भी प्रभावित हुए है। घातक कचरे की घातकता को कम करने के लिए सबसे पहला कदम उनके उत्पादन को कम किया जाना यदि ऐसा संभव न हो तो उनसे कम घातक तत्वों को उनके स्थान पर इस्तेमाल करना चाहिए।

(अ) एकत्रक समूह का गठन : नगर निगम द्वारा अपशिष्ट एकत्र करने वाले समूह का गठन किया जाना चाहिए जो प्रतिदिन उत्पन्न होने वाले ठोस अपशिष्ट को इनके द्वारा बीना जा सकता है। जिससे निष्प्रयोजन सामग्री तथा कूड़े–करकट को विभिन्न माध्यमों द्वारा परिष्कृत करके ही पुनः प्रयोग में लाया जा सके तथा शेष सामग्री का उचित विधियो से निपटाया जाये।

(ब).प्रोत्साहन : नगर निगम द्वारा कूडा करकट उठाने वाले कर्मियो को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए और प्रोत्साहित होकर वे इस कार्य को रुचिपूर्वक करेंगे और उन्हें निगम द्वारा प्रोत्साहन के रूप में पुरस्कार व अतिरिक्त छूट व सुविधाएं प्रदान की जाये ।

(स).सामूहिक खरीद : निगम कर्मियों द्वारा एकत्र छंटनीकृत अपशिष्ट को अलग अलग करके जिसमें लोहे का कचरा अलग, कागज व गत्ता तथा प्लास्टिक आदि अपशिष्ट को विभिन्न वर्गों द्वारा अपनी–अपनी आवश्यकतानुसार अपशिष्ट को विक्रय कर दिया जाना चाहिए जिससे नगर निगम की आय में अतिरिक्त बढोत्तरी होगी।

(द). कचरा विपणन : इस कचरे का विपणन किया जाना चाहिए जिसे विभिन्न वर्गों द्वारा खरीद लिया जाता है। इससे निगम की आय में वृद्धि होगी च अपशिष्ट पदार्थों मे कमी व उनकी समुचित व्यवस्था होगी जिससे एक नई दिशा प्रदान होगी ।

(य). लाभ में समूह की हिस्सेदारी: निगम द्वारा समूह के गठन द्वारा जो लाभ प्राप्त होगा उसमें समूह की 60 प्रतिशत हिस्सेदारी होनी चाहिए और अतिरिक्त 40 प्रतिशत धन निगम को अपने यंत्रो व अन्य सामान पर खर्च किया जाना चाहिए जिससे वे अपना कार्य सुचारू रूप से करते रहेंगे।

(र). जीवन बीमा, स्वास्थ्य आदि की निशुल्क व्यवस्था : निगम द्वारा समूह कर्मियों को अतिरिक्त निशुल्क सेवाएं प्रदान की जानी चाहिए क्योंकि ये कर्मी गन्दगी के सम्पर्क में अधिक रहते है। जिससे उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए इन कर्मियों का जीवन बीमा, तथा स्वास्थ्य सेवाएं आदि निशुल्क प्रदान की जायें। इस कार्य की प्रगति के साथ साथ नगर निगम की आय में वृद्धि होगी तथा कार्य सुविधाजनक होगा।

(ल). पुर्नचकीय यंत्रो की स्थापना : प्रतिदिन उत्पन्न कूड़े–करकट को बायो संयंत्रो द्वारा परिष्कृत किया जाना चाहिए ओर पुर्नचकीय विधि अपनाकर नई वस्तुए तैयार की जानी जाहिए जिससे वे बार बार उपयोग में लाये जाने चाहिए ओर इस तरह के उद्योगों को जो वर्तमान में कार्यरत हैं उन्हें और विकसित किया जाना चाहिए

(व). कम्पोस्टिंग पिटों का निर्माण : नगरीय अपशिष्टों से खाद बनाने के लिए कम्पोस्टिंग पिटों का निर्माण किया जाना चाहिए जिससे नगरीय अपशिष्टों को भूमि में सड़ा कर गलाकर उत्तम उर्वरक बनाया जा सकता है। जो विशेषकर सब्जियों का उत्पादन में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होता है। इस विधि से अपशिष्टों से खाद तैयार होती है और इस खाद को विकय कर दिया जाये जिससे निगम की आय में बढोत्तरी होगी अपशिष्ट पदार्थो के निस्तारण की समुचित व्यवस्था होगी।

10. पुर्नचकीय पदार्थों के प्रयोग को सरकारी प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए जिससे अपशिष्ट पदार्थो का प्रयोग भविष्य में बार–बार किया जा सके ओर उनके निस्तारण की भी समस्या पैदा न होगी इस प्रकार सरकार को वे सभी तकरीकें प्रदान करने चाहिए जो

अपशिष्टों के निस्तारण एवं पर्यावरण सुरक्षा में सहायक हों ।

सन्दर्भ सूची :

1. अल्ताफ, एम. ए. और देशाजो, जे आर (1996). हाउसहोल्ड डिमांड फॉर इंप्रूव्ड सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंटः ए केस स्टडी ऑफ गुजरांवाला, पाकिस्तान, वर्ल्ड डेवलपमेंट, वॉल्यूम 24, (5), पृष्ठ संख्या 857–868.

2. आलम, पी. और अहमद, के (2013). स्वास्थ्य और पर्यावरण पर ठोस अपशिष्ट का प्रभाव, सतत विकास और हरित अर्थशास्त्र (आईजेएसडीजीई) के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल का विशेष अंक, वॉलयूम 2. आईएसएसएन संख्याः 2315–4721.

3. अग्रवाल, रेखा (2021) ठोस अपशिष्ट और उनका प्रबंधन. वन संगयान, वॉल्यूम 8, (7). पृष्ठ संख्या 32–34,

4. कासिम, एस. एम. (2009). नगर निगम के ठोस अपशिष्ट संग्रह में निजी क्षेत्र की स्थिरताः क्या यह संभव है ? 34वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, अदीस अबाबा, इथियोपिया.

5. बनर्जी, जे. भार्गव, आर. गर्ग, पी. के. सिंघला डी. सी. (2002) जी–आईएस पर्यावरण में अपशिष्ट निपटान साइट चयन जी–आईएस इंडिया, पृष्ठ संख्या 12–15

6. भट्ट, अहमद, रऊफ और अन्य (2018). नगरपालिका ठोस अपशिष्ट उत्पादन और भारत में इसके प्रबंधन का वर्तमान परिदृश्य विज्ञान और इंजीनियरिंग में उन्नत अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय र्जनल, वॉल्यूम 7. पृष्ठ संख्या 419–431.

7. भारती, पी. के. और अन्य (2016) अंटार्कटिका में अपशिष्ट उत्पादन और प्रबंधन, एल्सेवियर वॉल्यूम 35, पृष्ठ संख्या 40–50.

8. मिश्रा, गिरीश (1988) दिल्ली में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याएं, नगरलोक, 20 जनवरी–मार्च.

9. राठी, एस. (2006) भारत में बेहतर नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोण, अपशिष्ट प्रबंधन, मुंबई, वॉल्यूम 26, पृष्ठ संख्या 1192–1200,

10. शेखर, ए. वी. कृष्णास्वामी, के. एन. टिकेकर, वी. जी. (1991). भारत में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए दीर्घकालिक योजना. अपशिष्ट प्रबंधन और अनुसंधान, वॉल्यूम 9. पृष्ठ संख्या 611–523.

डॉ0 संदीप कुमार यादव
एसोसिएट प्रोफेसर
भूगोल विभाग
अस्थल बोहर, रोहतक
नीलम कुमारी
शोधार्थी
भूगोल विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर, रोहतक।

22

बिहारी के काव्य में भाव और काव्य सौंदर्य का अनूठा संगम

ज्योति कुमारी

सारांश

कविवर बिहारी जी रीतिकाल के सर्वलोकप्रिय रचनाकार है।बिहारी जी की लोकप्रियता का आधार उनकी एक मात्र कृति 'सतसई' हैं। इसमें रसोत्कर्ष की जो उत्कृष्टता दिखाई देती है वह अन्य कवियों के कवित, सवैयोंजैसे बङे बङे छंदों में भी दृष्टिगोचर नहीं होती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'बिहारी सतसई' की ख्याति और उत्कृष्टता पर अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है कि"श्रृंगार रस के ग्रंथो में जितनी ख्याति और जितना मान बिहारी सतसई को प्राप्त हुआ उतना और किसी को नहीं इसका एक एक दोहा हिंदी साहित्य में रत्न माना जाता है। इन के दोहे क्या है? रस की छोटी छोटी पिचकारियां हैं, वे मुँह से छूटते ही श्रोता को सिक्त कर देते हैं।"

भाव यदि कविता का प्राण है तो भाषा,अलंकार,छंद आदि इसका शरीर है। काव्य का सौंदर्य भाव और अभिव्यक्ति के माध्यम से दोनों पर ही निर्भर रहता है। काव्य का शारीरिक सौंदर्य (कला सौंदर्य) उसके भावों को उत्कर्ष पर पहुंचाता हैं।बिहारी के काव्य में भाव और कला सौंदर्य दोनों का अद्भुत समन्वय हुआ है।

बिहारी के काव्य की भाव पक्ष विशेषताएँ

बिहारी मुख्यतः श्रृंगार के कवि है।यद्यपिवीरता, नीति, भक्ति संबंधी दोहे भी उन्होंने लिखे हैं लेकिन नायिका सौंदर्य और उसके अनुभवों का वर्णन उनका प्रिय विषय रहा है।श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों में उनका मन 'संयोग वर्णन' से अधिक है। शिव कुमार शर्मा के शब्दों मेंरू–"वे अनुराग की कवि हैं और उनके वृति अनुराग के मिलन पक्ष में खूब रमी है। संयोग पक्ष की कोई ऐसी स्थिति नहीं है, जो बिहारी की दृष्टि से बची हैं रूप दर्शन से आकर्षण होता है। रूप का ये वर्णन स्वाभाविक था पर बिहारी ने ऐसा नहीं किया।नायिका ही कविकी दृष्टि बिंदु है।"

(1) रूप वर्णन

बिहारी ने नायिका का रूप वर्णन किया है जो नखशिख वर्णन के अंतर्गत आता है उसमें उसके अंगाग,वेशभूषा का वर्णन आदि समाविष्ट है।इनका नेत्रवर्णन, मुख सौंदर्य वर्णन, वेशभूषा वर्णन बहुत प्रसिद्ध है। नेत्र वर्णन का सुप्रसिद्ध उदाहरण दृष्टव्य हैरू–

(अ) नेत्र वर्णन

"रससिंगार मंजन किए, कंजन भंजन दैन।
अंजन रंजन हू बिना, खंजन गंजन नैन।।"

श्रृंगार में नहाए नेत्र सुंदरता में कमलों का भी मान– मर्दन करते हैं। वे अंजन के अभाव में सहज कजरारे है और इतने चंचल है कि अपनी चंचलता के कारण खंजन को नीचा दिखाते हैं।

(ब) वेशभूषा(कंचुकी वर्णन)

"दुरत न कुच विष कंछुकी चुपरी सादी सेद।
कवि अंकन के अरथ लौं, प्रकट दिखाई देत।।"

सुगंधित सादी और श्वेत कंचुकी में नायिका के स्तन छिपाए नहीं छिपते। कविता के अर्थ के समान स्पष्ट दिखाई देते हैं।

(2)भक्ति भावना

कविवर बिहारी ने अपनी काव्य कृति 'सतसई' के प्रारंभ में ही अपनी आराध्य देवी 'राधानगरी' के प्रति अपनी भक्ति भावना को अभिव्यक्त करते हुए लिखा है किः–

"मेरी भव बाधा हरौं,राधा नागरि सोई।
जातन की झाँई परै, श्याम हरि दुतिहोइ।।"

बिहारी ने प्रधानतया भगवान कृष्ण को अपना उपास्य माना है। यद्यपि कुछ दोहों में अन्य देवी– देवताओं की भी अर्चना की है किंतु उनका मूल उद्देश्य भगवान श्रीकृष्ण की उपासना ही है–

"सीस मुकुट कटि कांछनी, कर मुरली उरमाल।
यहि बानिक मोमन बसौ, सदा बिहारीलाल।।"

(3)प्रेम वर्णन

नायक– नायिका की प्रेम वर्णन में कवि ने इसकी पूरी सामग्री परोस दी। नायक को देखने झरोखे पर जाती लज्जाशील नायिका का यह चित्र प्रस्तुत हैः–

(अ)चेष्टा

"सटपटाती सी ससिमुखी मुख घूंघट पर ढांकि।
पवक– झर सी झमकिकै गई झरोखा झाकि।।"

नायिका की अभिलाषा दशा का चित्रण है। वह लपककार झरोखे से

नायक की छवि देख जाती है, इसलिए सटपटाती है। लज्जा के कारण झांकनेमें हिचकिचाती भी है।यहाँ अनुभवों की संपर्क की योजना हैं। त्रास, बीड़ा, उत्सुकता आदि संचारी भाव हैं।

(ब)प्रेम क्रीड़ा

"बतरस लालच लाल की मुरली धरती लुकाय।
सौंह करे भौंहनु हंसे, देन कहे नट जाए।।"

पर स्वर हास परिहास से भी प्रेम का प्रसार होता है। राधा बात करने के लालच से मोहन की मुरलिया छिपा देती है। मांगने पर कसम खाना,भौंहों से हँसना, मांगने पर इन्कार करना आदि चेष्टाओं, भंगिमाओं से मोहन को रिझाने कीचेष्टाएं करते हुए प्रियतम से बात करने का अवसर बढ़ा देती है।

(4)वियोग वर्णन

विरह के अनेक हृदयकारी चित्र बिहारी ने उकेरे हैं पर उनकी

अधिकांश उक्तियाँऊहात्मक एंव अतिश्योक्तिपूर्ण हो गई है परंतु भावप्रवण चित्रों की भी कमी नहीं हैं। इन पदों में विरह वर्णन स्वभाविक, प्रभावोंत्पादक और मनोवैज्ञानिक बन पड़ा है।

(5) प्रकृति चित्रण

बिहारी में प्रकृति के कुछ सुन्दर आलम्बनात्मक एवं उद्दीपक दोनों प्रकार के चित्रों का चित्रांकन किया है"–

(अ)उद्दीपक रूप

बिहारी ने चमत्कार प्रियता तथा परंपरा पालन के लिए प्रकृति का उद्दीपन रूप अभिचित्रित किया है।संयोग में जो प्रकृति उल्लास की मणियाँ बिखेरतीं प्रतीत होती हैं, वहीं दुख में आठ– आठ आंसू बहाती दिखाई देती है। चौत्र– मास की चांदनी जो पहले प्रिय– मिलन के आनंद को द्विगुणित किया करती थी, अब विरहिणी की चेतना को लुप्त किये देती हैः–

"हौं ही बौरी विरह–बस,कै बौरी सब गाऊँ।
कहा जानि ये कहत हैं,ससिहिसीतकर नाऊँ।।"

(ब)आलंबन रूप

बिहारी के आलम्बनात्मक वर्णन पारंपरिक है। उनके प्रकृति सौंदर्य की यथार्थ अनुभूति मिलती है। कवि ने रूपक बांधकर प्रकृति का मानवीकरण सुंदर रूप में प्रस्तुत किया है। कवि ने छाँह द्वारा भी छाँह को ढूंढने के रूप में गर्मी की वास्तविकता का अप्रत्यक्ष रूप से सुंदर वर्णन किया हैः–

"बैठी रही अति सघन बन,पैठिसदन तन माँह।
देखी दुपहरिया जेठ की,छाहौंचाहतिछाँह।।"

बिहारी का कला पक्ष भाषा,शैली शब्द–गुण,छंद वअलंकारयोजना आदि सभी दृष्टियों से संपन्न है।

(1)भाषा

महाकवि बिहारी की भाषा में वे सभी गुण विद्यमान हैं, जिनकी काव्य भाषा के लिए आवश्यक होती है। शब्दों का प्रयोग बड़े ही अनूठे ढंग से किया गयाहै। उनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ– साथ बुंदेली के शब्दों को भी इन्होंने अपनाया है। बिहारी के कटु आलोचक मिश्रबंधु ने भी उनकी भाषा की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि "कुछ बातों पर ध्यान देने से विदित होता है बिहारीलाल की भाषा बहुत मनोहर है इन्होंने सभी स्थानों पर लहलाप्रात, मलमलात, जगमगात आदि ऐसे बढ़िया और सजीव शब्द रखे हैं कि दोहा चमचमा उठता है।

(2) शैली

बिहारी अपनी सामाजिक शैली के लिए प्रसिद्ध है।उन्होंने कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक भावाभिव्यक्ति कर दोहों में अद्‌भुत कसावट और जड़ावट ला दी है।उनमें गागर में सागर भर देने की अनुपम कला है। उनकी इस सफलता का कारण इनके द्वारा सामान्य प्रसंगों को स्वीकृति है। बिहारी ने प्रेम के दैनिक जीवन से ऐसे आकर्षक चित्र लिए है, जिनकी दो– तीन शब्दों को पढ़ते ही पाठक विषय– सामग्री के साथ हो लेता है और पर्याप्त अर्थ समझ लेता है।

(3)माधुर्य गुण

बिहारी की कविता माधुर्य गुण से पूरित है। उनकी कविता में कोमलकांत पदावली संजोयी गयी हैं। फलतरू उनके दोहेमाधुर्य–गुण से लबालब भरे हुए हैं और ऐसा लगता है कि जैसे वे माधुर्य की पिचकारी–सीचलाते हैं। एक उदाहरण प्रस्तुत हैरू–

"अधर धरत हरिके परत,ओठदीठ पट जोति।
हरित बांस की बांसुरी, इंद्रधनुष रंग होति।।"

(4)लाक्षणिकता और मुहावरे

लाक्षणिकता भाषा का श्रेष्ठ गुण माना जाता है। इसमें अपनी बात सीधे रूप में न कहकर कुछ भिन्न रूप में व्यक्त करता है। उनकी लाक्षणिक भाषा का प्रयोग कुछ इस प्रकार हैः

"तन्त्री नाद कवित–रस,सरसरागरति– रंग।
अनबूढ़े,बूडे,तरे जे बूडे सब अंग।।"

(5)ध्वन्यात्मकता

बिहारी के काव्य में ध्वन्यात्मकता का गुण विद्यमान है। भाषा के प्रयोग में ऐसा प्रतीत होता है कि मानव शब्दों में से कोई ध्वनि उत्पन्न हो रही है। यह शब्द ध्वनि तीन प्रकार की होती हैरू–

१)रणनात्मक शब्द ध्वनि

२)अनुकरणात्मक शब्द ध्वनि

३)व्यंजक शब्द ध्वनी

(6) चित्रोपमता

बिहारी की भाषा चित्रोपम हैं। वे अपनी भाषा के द्वारा पाठक के सामने शब्दचित्र खड़े कर देते हैं। राधा कृष्ण की मुरली छिपाकर रख देती हैं, क्योंकि वे कृष्ण से बात करना चाहती है। इस दोहे में बिहारी का शब्दचित्र इस प्रकार प्रस्तुत हैरू–

"बतरस लालच लाल की मुरली धरती लुकाइ।
सौंह करे भौंहनु हंसे, देन कहे नट जाए।।"

(7)छंद योजना

कविवर बिहारी द्वारा प्रयोग छंदयोजना छंद'– दोहा और सोरठा हैं। उन्होंने दोहे रुपीस्तवक में सारी भाव– सुषमा को भर दिया हैं। इनकी भाषा की समास– पद्धति और विचारों की समाहार शक्ति दोनों ही उत्कृष्ट रूप से दोहे छंद के लिए सहायक सिद्ध हुए हैं। इस प्रकार से इन्होंने मुक्तकाव्यानुकूल छंदों का प्रयोग किया है।

(8) अलंकारयोजना

बिहारी रीतिकालीन कवि थे उनके अलंकार भावों के उत्कर्ष सहायक होकर ही आये है। उन्होंने उनका प्रयोग चमत्कार प्रदर्शन मात्र के लिए नहीं किया है।डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में "बिहारी ने अर्थ की रमणीयता का ध्यान बराबर रखा

इसलिए उन के अलंकार रसोद्रेक सहायक बराबर आए हैं।"

बिहारी के काव्य में शब्दालंकारों में अनुप्रास, यमक और ष्लेष का प्रचुर प्रयोग हुआ है।यमक का एक उदाहरण पर प्रस्तुत हैः–

"तौ पर उरबासी,सुनूराधिके सुजान।
तू मोहन के उर्वशी, है हैउरवसी समान।।"

बिहारी की उत्प्रेक्षाएँ बहुत मार्मिक है। उत्प्रेक्षा योजना में वही कवि सफल हो सकता है जिसकी निरीक्षण शक्ति तीव्र हो, जिसकी कल्पना उन्मुक्त विचरण करना जानती हो। इस दृष्टि से उत्प्रेक्षा का निम्न उदाहरण इस प्रकार हैः–

"सोहत ओढे पीतपट, श्याम सलोने गात।
मनुहूं नील मणिसैल पर आतप परयौ प्रभात।।"

निष्कर्षः

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि बिहारी अलंकारयोजना के धनी थे। पंडित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने बिहारी के अलंकार योजना की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि "बिहारी अलंकारयोजना शास्त्र में प्रवीण थे कहीं–कहीं अलंकारों का ऐसा चमत्कार है जो लक्षण– ग्रंथ लिखने वालों को नसीब नहीं हैं।अलंकारों की सफाई बिहारी को रीतिकाल का प्रतिनिधि सिद्ध करती है।"

इस प्रकार उपर्युक्त कथ्योंसे स्पष्ट है कि बिहारी के काव्य में भावपक्ष और कला पक्ष का सुंदर समन्वय हुआ है और वे उच्च कोटि के सिद्धस्त कवि थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शुक्ल आचार्य रामचंद्रः हिंदी साहित्य का इतिहास जय भारती प्रकाशन, पृष्ठ सं० – 176
2. लालबिहारीः बिहारी सतसई,पृष्ठ सं– 4
3. डा० नगेन्द्रः, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,पृष्ठ सं–285

ज्योति कुमारी
शोधार्थी, हिंदी विभाग
राँची विश्वविधालय, राँची
नेट उत्तीर्ण
राज्य– बिहार
जिला– कटिहार
पता– लंगडा बगान
क्वार्टर न० 977डी
पिन कोड– 854105
मो० न०– 8210690051

23

रीतिकाल में बिहारी का श्रृंगार रस

डॉ0 श्याम मिश्रा

सारांश

रीतिकाल के श्रृंगारी कवियों में जिस स्थान को बिहारीलाल ने प्राप्त किया है, उस स्थान पर अभी तक कोई कवि नहीं पहुँचा है। बिहारीलाल ने 'बिहारी सतसई' की रचना की है। इसमें 713 दोहें है। इन दोहों की गम्भीरता और अर्थ की व्याख्या करने पर बिहारीलाल के काव्य–कौशल का पता चलता है। इसी कारण इनके दोहों के बारे में कहा गया है–

" सतसैया के दोहरे, अरू नावक के तीर
देखन में छोटे लगे, घाव करे गम्भीर।।"

जब रीतिकाल में श्रृंगार रस के नाम पर साहित्य में अश्लीलता परोसी जा रही थी, उस समय बिहारी लाल श्रृंगार रस के दोहों के माध्यम से अश्लीलता के कीचड़ में शालीनता रूपी कमल का पुष्प खिला रहे थें। इसी कारण इनको रसराज की उपाधि प्रदान की गई। बिहारी के श्रृंगार रस को समझने के पहले हमें भारतीय काव्यशास्त्र में संस्कृत आचार्यों द्वारा श्रृंगार रस की परिभाषा को समझना पड़ेगा।

भारतीय काव्य शास्त्र में आचार्य भरत मुनि ने काव्य की आत्मा रस को माना है। भरत मुनि ने अपने सुप्रसिद्ध रस–सूत्र–

1 "विभावानु भाव व्यभिचारी संयोगा द्रसनिष्पतिः"

में इस बात को रस सम्प्रदाय में कहा है।

यदि हम काव्य के आत्म के बिषय में गहन–अध्ययन एवं चिंतन करें तो इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि काव्य में यदि रस न हो तो उसमें नीरसता का समावेश हो जाता है। आगे चलकर इसी बात को आचार्य अभिनव गुप्त ने स्पष्ट करते हुए कहा है–

2 " काव्यार्थान भावयन्ति इति तत्काव्यार्थों रसः।"

अर्थात् काव्यगत रमणीय अर्थ का भावना होता है और इसे ही रस मानना उचित है।
संस्कृत व्याकरण में इसे 'सरते इति रसः' अर्थात् जो बहे वह रस है।
भारतीय काव्यशास्त्र में 'रस' मूलतः आठ (8) माने गये हैं।

3 "श्रृंगार हास्य करूण रौद्र वीर भयानकाः।
वीभत्साद्भुत संज्ञौचेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।"
श्रृंगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स तथा अद्भुत।

दण्डी ने भी आठ (8) रसों का ही उल्लेख किया है। किन्तु आगे चलकर उद्भट के समय तक शान्त नामक 9वें रस की कल्पना की जाने लगी।

परन्तु जब हिन्दी काल का स्वर्ण युग भक्ति काल शुरू हुआ तो उस समय के कृष्ण काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि सूरदास ने श्री कृष्ण की बाल–लीला का इतना मनमोहक वर्णन किया कि एक नए रस वात्सल्य को भी 10वें रस के रूप में मान्यता प्रदान की गई।

बिहारीलाल रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते है। बिहारीलाल विलक्षण काव्य प्रतिभा के धनी थे। एक बार जब विहारी लाल जयपुर गये और वहाँ पर महाराज जय सिंह अपनी नव–विवाहिता रानी के प्रेम में पड़ कर राज्य के दरबार में आना बन्द कर दिया, तो उस समय बिहारीलाल ने राजा के पास एक दोहा लिखकर भेजा–

4 "नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल
अली कली ही सों बिंध्यों, आगे कौन हवाल।"

बिहारीलाल के इस दोहे का ऐसा प्रभाव पड़ा कि महाराज जय सिंह पुनः अपने रात–काज में लग गये।

रीतिकाल में रीति श्रृंगार की रचना प्रचुर मात्रा में हुई। इसका प्रभाव यह पड़ा कि रीतिकाल में काव्य में अश्लीलता का भरमार हो गया और नायिका को भोग का वस्तु मान कर काव्य रचना कवियों द्वारा किया जाने लगा। परन्तु इसमें विहारीलाल अपवाद के रूप में देखे जा सकते है। बिहारी ने श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों का वर्णन किया है।

बिहारी ने अपने दोहे में सारगर्भित शब्दों का चयन करके अपने काव्य को रोचक बना दिया। अधिकांश आश्रय प्राप्त कवियों ने रीतकाल में अपने आश्रय दाता राजाओं की प्रशंसा के साथ–साथ लक्षण ग्रन्थों का निर्माण किया और संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर छन्द, अलंकार, रीति, गुण, नायिका–भेद आदि के लक्षण उदाहरण पूर्ण ग्रन्थ लिखे गये। इन लक्षण ग्रन्थों के निर्माण से कवि वर्ग को दो लाभ हुआ। एक तो यह कि उसे शुद्ध काव्य परम्परा में रचना का अवसर प्राप्त हुआ और कोरी राज–प्रशंसा अथवा आध्यात्मिक काव्य रचना का अभाव हुआ। दूसरा यह कि कवि गण को राज दरबार में अपनी विद्वता और प्रतिभा दोनो को प्रदर्शित करने का मौका मिला। स्थाई भावों में 'रति' सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाव है। यह भाव इतना व्यापक और अन्तरव्यापी है कि मनुष्य से लेकर पंक्षी तक में यह समाहित है। बिहारीलाल ने लिखा है–

5 "छकि रसाल सौरभ सने, मधुर माधवी गंध
ठौर–ठौर झूलत झपत, भौंर झौंर मधु अन्ध।"

बिहारीलाल ने दाम्पत्य रति को अपने काव्य में इस तरी से उकेरा है कि उनके काव्य की शोभा में व्यापकता का समावेश हुआ। व्यापकता के कारण ही साहित्य मर्मज्ञों ने श्रृंगार को रसराज की पदवी प्रदान की है। कविवर बिहारी ने अपनी सतसई में श्रृंगार के दोनो पक्षों का सूक्ष्म और अत्यंत कलात्मक चित्रण करके रसराज की पदवी को सार्थक कर दिया।

6 "कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात
भरे भौन में करत है, नैनन ही सौ बात।"

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से साहित्य में शृंगार रस को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है– संयोग एवं वियोग। संयोग में नायक–नायिका अथवा प्रिय और प्रिया के मिलन प्रसंगों और उनकी केलि–क्रीड़ाओं, वार्तालाप, मनोभाव तथा उनकी विविध अभिव्यक्तियों का चित्रण होता है, जबकि वियोग पक्ष में प्रिया विरह के अन्तर्गत पुर्वानुराग, मिलनोत्कठां, प्रवास आदि का करूण चित्र उपस्थित किया जाता है। वस्तु का प्रेम के क्षेत्र में विरह वह पवित्र अग्नि है जिसमें तप कर रति भाव तपत कंचन की तरह विशुद्ध वरेण्य हो जाता है। इस रति के प्रभाव में जब हृदय ईश्वर की ओर उन्मुख होता है तो दिव्य काम की सृष्टि होती हैं और जब लौकिक होता है तो लौकिक प्रेम के प्रवाह में वह डूब जाता है। बिहारी का शृंगार वर्णन पूर्णतया लौकिक है। बिहारीलाल के श्रृंगारी काव्य को लेकर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं–

7 "शृंगार के संचारी भावों की व्यंजना भी ऐसी मर्मस्पर्शिनी है कि कुछ दोहे सहृदयों के मुँह से बार–बार सुने जाते है।" इस स्मरण में कैसी गंभीर तन्मयता है–

"सघन कुंज, छाया सुखद, सीतल मंद समीर
मन हवै जात अजौं वहै, वा जमुना के तीर।"

प्रेम की यह अवस्था विचित्र होती है, नायक से जुड़ी हुई हर वस्तु नायिका को अपना लगने लगता है।

"उड़ित गुड़ि लखि ललन की अगनाँ–अगनाँ माँह
बोरी लौ दौंरी फिरत, धुवति छवीली छाँह।"

रीतकाल में शृंगार की रचनायें लिखने में बिहारीलाल ने जीवन की सामान्य घटनाओं को भी काव्य का रूप देकर उस समय की कल्पना को कितना रोचक बना दिया इसका एक उदाहरण इस दोहे में देखा जा सकता हैः–

"दृग मीचत मृगलोचनी, भरयौ उलटि भुज बाथ
जनि गई पिय नाथ के, हाथ परस हौ हाथ।"

इसी प्रकार प्रिय से मिलने के बाद नायिका की स्थिति के बारे में बिहारीलाल कहते हैः–

8 "या अनुरागी चित की, गति समुझै नहिं कोय
ज्यौं ज्यौं बूड़ै स्याम रंग, त्यौं त्यौं उज्जवल होय।"

इससे स्पष्ट होता है कि बिहारीलाल ने रीतिकाल में शृंगार रचनायें जरूर लिखी है, परन्तु समाज में उन कविताओं को पड़ने और बोलने पर स्वयं को लज्जित नहीं होना पड़ेगा इस बात का भी ध्यान रखा है। छायावाद के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पंत के शब्दों में–

"वह हृदय नहीं जिसमें प्रियतम की चाह नहीं
वह प्रणय नहीं जिसमें विरहानल दाह नहीं।"

स्पष्ट है कि विरह के बिना प्रेम का महत्व उतना नहीं होता है जितना होना चाहिए। यदि राधा और श्री कृष्ण का विरह नहीं होता तो सूरदास का भ्रमर गीत सार का क्या महत्व होता। यदि नागमती का वियोग वर्णन न होता तो जायसी के पद्मावत की ख्याति उतनी ही होती, जितना कि उन्हें प्राप्त हुआ?

कहने का तात्पर्य यह है कि प्रेम का महत्व विरह से और भी बढ़ जाता है। परम्परा में उपलब्ध वियोग शृंगार में प्रणय वियोग की मुख्य तीन अवस्थायें मानी जाती है।

(1) वियोग मिलन के पूर्व का विरह जो अभिलाषा हेतु होता है, जिसे पूर्व राग कहते है।
(2) मान, यह दो प्रकार का होता है– प्रणय मान तथा ईर्ष्या मान। ईर्ष्या मान भी तीन प्रकार का
होता है– दृष्ट, श्रुत तथा अनुमति।
(3) प्रवास वियोग जिसमें प्रियतम किसी कारण वश प्रवासी होता है। यह भी मान तीन प्रकार का
होता है– भावी, भवन और भूत।
भारतीय काव्यशास्त्र में वियोग शृंगार को दस दशाओं में विभक्त किया हैः–
अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुण, कथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, संज्वर, जड़ता तथा मरण।
बिहारीलाल ने काव्य में प्रेम और विरह की सभी अवस्थाओं का वर्णन किया है।

प्रणय–पत्रिका के प्रसंग में बिहारी ने मार्मिक चित्रण किया है। नायिका हृदय प्रिय के भावों से भरा हुआ नहीं है, लिखते समय नायिका के नेत्रों से आँसुओं की धारा बहने लगती है। नायिका के मनोदशा का वर्णन बिहारी ने इस दोहे में किया है–

9 "कागद पर लिखत न बनत, कहत संदेश लजात
कहि है सब तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात।"

प्रियतम के पत्र को ही प्रियतम समझकर नायिका उसे हृदय से लगा लेती हैः–

"करि लै चूमि चढ़ाई सिर, डर लगाइ भजु भेटि
लहि पाती पिय को तिया, बाँचति धरति–समेट।"

निष्कर्षः

इस प्रकार हम देखते है कि बिहारीलाल ने जीवन के विविध प्रसंगो को माध्यम बनाकर विरह की वेदना को व्यक्त करने का प्रयास किया है, किन्तु बिहारी का संयोग पक्ष जितना प्रभावी है,

उतना वियोग पक्ष नहीं है। युग परम्परा में बंधे होने के कारण इन प्रसंगो में बिहारीलाल आकाश में उड़कर लौट आयें है। यद्यपि इन प्रसंगो में उनके महाकवित्व और मौलिक भावनाओं की स्वतंत्र झलक अवश्य दिखायी पड़ती है। निःसंदेह बिहारीलाल रीति कालीन प्रणयानुभूति के प्रतिनिधि कवि है।

सन्दर्भ सूची

(1) भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्य–चिन्तन, डॉ सभापति मिश्र, प्रकाशक– जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या–70

(2) भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्य–चिन्तन, डॉ सभापति मिश्र, प्रकाशक– जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या–70

(3) भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्य–चिन्तन, डॉ सभापति मिश्र, प्रकाशक– जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या–70

(4) हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपादक– डॉ नगेन्द्र, डॉ हरदयाल, मयूर बुक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–324

(5) काव्य–कलश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–64

(6) काव्य–कलश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–64

(7) हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्री प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या–177

(8) काव्य–कुंज, प्रकाशक–भाषा, राँची, पृष्ठ संख्या–48

(9) काव्य–कुंज, प्रकाशक–भाषा, राँची, पृष्ठ संख्या–48

डॉ० श्याम मिश्रा (सहायक प्राध्यापक)संत तुलसीदास महाविद्यालय रेहला, पलामू (झारखण्ड) पिनः–822124 मो० सं०–8873174637

पत्राचार का पताः–

डॉ० श्याम मिश्रा

(सहायक प्राध्यापक)

सेक्टर–2बी, क्वाटर नं०– 2–403,

बेकारो स्टील सिटी,

बोकारो– 827001 (झारखण्ड)

मो० सं०–8873174637

24

हिंदी साहित्य में संत निश्चल दास और गुरु ब्रह्मानंद सरस्वती का योगदान

श्रीमती मनजीत

सारांश–

किसी भी देश का साहित्य उस देश की अमूल्य निधि होता है जिस पर प्रत्येक देशवासी गर्व करता है। किसी भी साहित्य को संजोने में किसी एक विशेष व्यक्ति का योगदान नहीं होता है, बल्कि अनेक साहित्यकार, रचनाकार , विद्वान इसमें अपना सहयोग देते हैं । हमारा हिंदी साहित्य एक ऐसी अमूल्य निधि है जिसको पढ़कर हम आज भी गौरवान्वित महसूस करते हैं। विशेष रूप से संतो के द्वारा रचा गया वह साहित्य जिसके आधार पर हमारे साहित्य का मध्यकाल स्वर्ण युग कहलने का अधिकारी है। संतों की अंतःकरण से निकली हुई उस पवित्र वाणी ने उस समय समस्त भारत वर्ष को अमृत की वर्षा से भिगो दिया था। संतो के इस योगदान को हम कभी नहीं भूल सकते जिन्होंने अपने ज्ञान व उपदेशों से समाज को एक नई दिशा दी थी ।

भूमिका–

भारतवर्ष की भूमि प्राचीन काल से ही ऋषि–मुनियों,संतों, महात्माओं की पुण्य भूमि रही है जिन्होंने अपने अथाह ज्ञान से हमारे देश को विश्व में सिरमौर होने का दर्जा दिलाया है। हमारा हिंदी साहित्य जिसमें ज्ञान राशि का संचित कोष साफ व पवित्र जल से निरंतर गतिमान रहती हुई नदी के समान समाया हुआ है , उसमें हमारे संतों की वाणी का अमूल्य योगदान है । उनके इस ज्ञान राशि के भंडार के कारण ही हिंदी साहित्य अपनी एक अलग पहचान रखता है । यह हमारे संतो की वाणी का ही प्रभाव है कि हिंदी साहित्य का मध्यकाल 'स्वर्ण काल' जैसी विभूति से अलंकृत है। संतों की वाणी और उनके द्वारा समाज सुधार की दिशा में उठाए गए प्रयासों का ही परिणाम था कि उन्हें संत होने के साथ–साथ समाज सुधारक भी कहा गया ।

हिंदी साहित्य में अपना अमूल्य योगदान देने वाले संत कवियों की श्रृंखला बहुत लंबी है जिसमें नामदेव, ज्ञानदेव, जयदेव, कबीर,धन्ना , रविदास, निश्चल दास , गरीबदास , गुरु ब्रह्मानंद सरस्वती आदि का नाम बड़े आदर के साथ लिया जा सकता है। इन्होंने अपनी वाणी व उपदेशों के द्वारा निराशा के अंधकार में डूबे जा रहे समाज को प्रकाश की एक किरण दिखाने का सफल प्रयास किया । धार्मिक आडंबरों, विभिन्न प्रकार की कुरीतियों से जूझ रहे समाज को ज्ञान के मार्ग पर लाने की अथाह कोशिश की गई। यह संतों की निःस्वार्थ भावना और उनके अंतःकरण से निकली वाणी का ही प्रभाव था कि जो साहित्य उन्होंने अपने सुख के लिए लिखा था वह समाज के सुख का पर्याय बन गया ।

जब हम संतों के इस असीमित योगदान की बात करते हैं तो सबसे पहले संत शब्द के गूढ़ अर्थ को समझने का प्रयास करते हैं –

'संत' शब्द की व्याख्या–

वैदिक काल से ही हम 'संत'शब्द के प्रयोग को देखते आ रहे है। 'ऋग्वेद ' और ' तैतिरीयोपनिषद् ' में भी इस शब्द का प्रयोग 'एकमेव अद्वितीय 'और परम तत्व' के लिए एक वचन के रूप में किया गया है।[1]

'संत' शब्द हिंदी भाषा के अंतर्गत एक वचन के रूप में प्रयुक्त होता है लेकिन अगर हम संस्कृत भाषा में देखते हैं तो यह 'सन्' बहुवचन के रूप में प्रयोग किया जाता है। वैदिक साहित्य में 'सत्' शब्द का प्रयोग बहुधा बृह्म व परमात्मा के लिए किया गया है। तुलसीदास, गरीबदास जैसे प्रसिद्ध महात्मा भी संत और परमात्मा में कोई मौलिक भेद स्वीकार नहीं करते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं '' संत को अनंत के समान ही जानो।''[2]

'संत' शब्द का प्रयोग सामान्यतः बुद्धिमान, पवित्र आत्मा, सज्जन व परोपकारी व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसने अपने निजी स्वार्थ व सुख सुविधाओं को त्याग कर अपना संपूर्ण जीवन मानवता के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया हो । 'संत' शब्द को अंग्रेजी भाषा के 'सेंट' का समानार्थी भी समझ लिया जाता है जो कि लैटिन"दबपव के आधार पर बने शब्द"दबजने से बना है, जो ईसाई धर्म के प्राचीन महात्माओं के लिए पवित्र आत्मा के संबंध में प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार अगर हम देखें तो संत शब्द का प्रयोग प्रायः सज्जन, बुद्धिमान, परोपकारी और आदर्श महापुरुषों के संदर्भ में किया जाता है जो समाज में रहते हुए निःस्वार्थ भाव से विश्व कल्याण में प्रवृत्त रहते हैं ।

संत निश्चल दास–

संत बड़े ही यायावरी प्रवृत्ति के होते हैं । उनका कोई निश्चित ठौर ठिकाना नहीं होता , वह तो बड़े जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं और अपनी जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं । उनकी इसी यायावरी प्रवृत्ति के कारण ही कई बार उनके जन्म स्थान , माता–पिता , शिक्षा के बारे में साक्ष्य जुटाना बड़ा ही दुष्कर कार्य हो जाता है ।

संत निश्चल दास के जन्म और जन्म स्थान के विषय में भी अनेक मत प्रचलित हैं । कई विद्वान इनको कुगंड़ निवासी बताते हैं तो किसी ने इनका जन्म स्थान धनाणा स्वीकार किया है और उनका मानना है कि इनका जन्म विक्रम संवत् 1849 को हुआ था। लक्ष्मी नारायण चोपड़ा ने इस संबंध में लिखा है – '' निश्चल दास पंजाब देश (वर्तमान हरियाणा) के धनाणा नामक ग्राम के विक्रम संवत् 1849 श्रावण कृष्ण आठ (श्री कृष्ण जन्माष्टमी) जैसी पुण्यतिथि को जाट जाति में अवतरित हुए और उनके पिता का नाम मुक्त जी था ''[3]

मंगलदास स्वामी भी इनका जन्म काल संवत् 1848– 49 ही

स्वीकार करते हैं । एकमत यह भी है कि उनके जन्म के कुछ समय बाद उनकी माता का देहांत हो गया इनके पिता गरीब थे और इस संसार में अकेले रह गए थे , इसलिए वह इनको संवत् 1862 में दिल्ली में खारी बावड़ी बाजार के भवानी शंकर छत्ते में दादू पंथियों के यहां लेकर आ गए। कुछ समय पश्चात ये बनारस चले गए और उस समय उनकी आयु 15 –16 वर्ष की थी । इस हिसाब से तो इनका जन्म संवत् 1848 स्वीकार किया जाना चाहिए। इसके साथ ही हरियाणा में किंवदन्तियों के अनुसार भी इनका जन्म संवत् 1848 ही स्वीकार्य है। संत निश्चल दास ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा वहीं भवानी शंकर छत्ते में दादू पंथियों के आशीर्वाद से करी थी। ये बहुत ही प्रतिभाशाली और जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे। अपने जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए व शास्त्रों का अध्ययन करने के लिए इन्होंने दिल्ली, जालंधर, कपूरथला, लाहौर आदि अनेक स्थानों की यात्रा की । धीरे–धीरे इन्होंने पाया कि शिक्षा को भी जातिगत आधार पर तोला जाता है। इसलिए वेद, वेदांग ,व्याकरण ,न्याय आदि का गूढ़ ज्ञान प्राप्त करने के लिए इन्होंने अपनी जाति को छुपाना पड़ा और स्वयं को ब्राह्मण बताकर संस्कृत का अध्ययन किया। अपनी इस कड़ी मेहनत को उन्होंने कुछ इस तरह शब्दों में पिरोया है –

सांख्य न्याय में श्रम कियो , पढ़ि व्याकरण अशेष ।
पढ़े ग्रंथ अद्वैत के रह्यो न एकहु शेष ।।
कठिन जु और निबंध हैं ,जिनमें मत के भेद ।
श्रम ते अवगाहन किए , निश्चल दास सवेद।।4.

संत निश्चल दास ने अपने इस गूढ़ ज्ञान को अपने लिखे हुए ग्रंथों के माध्यम से व्यक्त किया है। उन्होंने 'विचार सागर', 'वृत्ति प्रभाकर' और 'युक्ति प्रकाश' नामक ग्रंथों की रचना करके जन सामान्य पर ऐसा उपकार किया है कि जो संस्कृत भाषा का अध्ययन करने में असमर्थ थे , वो भी वेद ,वेदांग, न्याय, दर्शन जैसे विषयों के सार तत्व को अपने जीवन में उतार सकते थे।

संत निश्चल दास का हिंदी साहित्य में योगदान –

जब हम अपने हिंदी साहित्य के इतिहास की पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं की मध्यकाल जो कि स्वर्ण काल की उपाधि से अलंकृत है , इसमें अनेक संतों और भक्त कवियों ने अपनी वाणी के माध्यम से समाज को अंधकार से निकाल कर प्रकाश की तरफ ले जाने का कार्य किया है। अगर हम संतों की इस अथाह काव्य परंपरा को देखें तो संत निश्चल दास ही एक ऐसे दार्शनिक विद्वान नजर आते हैं जिन्होंने शंकर अद्वैत को हिंदी साहित्य में लाने का शुभ कर्म किया है । उन्होंने 'विचार सागर' , 'युक्ति प्रकाश' व 'वृत्ति प्रभाकर' ग्रंथ लिखकर हिंदी साहित्य में अपना विशेष योगदान दिया है । संत निश्चल दास ने वेदांत को जन सामान्य के पास लाकर हिंदी साहित्य में एक नई चेतना जागृत करने का कार्य किया । शांकर अद्वैत के विषय में विचार सागर की पांचवी तरंग में उन्होंने लिखा है –

वेदअर्थमैं यू अज्ञाना । नसि है श्री संकरव्याख्याना ।।
चारयार मध्वादिक जे हैं । वेद विरुद्ध कहत सब ते हैं ।।
यामैं व्यास वचन सुनि लीजै । संकरमतहि प्रमान करीजै ।।
कलिमैं वेद अर्थ बहूकरि है । श्रीसंकरसिव तब अवतरि है ।।
श्रीसंकर अद्वैत हि गान्यो। तिनको मत यह हेतु प्रमान्यो ।।
उत्तरमीमांसा उपदेसा । वेद बिरुद्ध न जामैं लेसा ।।[5].

संत निश्चल दास ने सबसे पहले संस्कृत में लिखे हुए वेदांत साहित्य को हिंदी में अवतरित करने का कार्य किया ताकि यह जनमानस तक पहुंच सके और सामान्य मानव भी इसको समझ सके। यह आज के साहित्यकारों और आलोचकों के लिए भी एक नई दिशा वह प्रेरणादायक कार्य था।

सभी संत व भक्त कवियों की भांति निश्चल दास का भी एक ही उद्देश्य था केवल लोक मंगल की कामना करना । उन्होंने आजीवन मानव कल्याण के लिए ही कार्य किये और साहित्य सृजन में भी इसी दृष्टिकोण को मुख्य स्थान दिया। गोपनीय तत्व, पीयूषवर्षी उपदेश करते हुए वह लिखते हैं –

जाके हिये ज्ञान उजियारो , तम अंधियारो खरो विनास ।
सदा असंग एकरस आतप , ब्रह्मरूप सो स्वयंप्रकाश ।।
ना कुछ भयो न है नहिं ह्वै है , जगत मनोरथ मात्र विलास ।
ताकि प्राप्ति निवृत्ति न चाहत, ज्यूं ज्ञानीके कौउ न आस ।।

जिस प्रकार कबीर नानक रविदास आदि संतों का मानना है कि अगर मनुष्य को जीवन मरण के चक्कर से युक्त इस संसार से निवृत्ति पानी है तो उसे ब्रह्म में लीन होना पड़ेगा , यही विचार संत निश्चल दास जी के भी हैं। संत निश्चल दास जी का मानना है कि उस ईश्वर का ज्ञान व प्राप्ति भी वेदांत शास्त्रों के अध्ययन, मनन से ही संभव हो सकती है, इसलिए मनुष्य को एकाग्रचित होकर वेदांत शास्त्र का अध्ययन करना चाहिए। लेकिन आम जनमानस के लिए, जिसे संस्कृत भाषा का गूढ़ ज्ञान नहीं है, यह सरल नहीं है क्योंकि वेदांतशास्त्र के ग्रंथ जैसे गीता–भाष्य, उपनिषद–भाष्य , षडदर्शन आदि संस्कृत में ही हैं।

संत निश्चल दास जी का हिंदी साहित्य को सबसे बड़ा योगदान यही है कि इन्होंने 'विचार सागर' और 'वृति प्रभाकर ' यह दो ग्रंथ हिंदी भाषा में लिखे हैं ताकि आमजन भी इस गूढ़ विषय को सरलता से समझ सकें। संत निश्चल दास में यह प्रतिभा थी कि वह कठिन से कठिन विषय को भी सरलता के साथ समझने का प्रयत्न करते थे। अब सामान्य जनमानस के लिए ब्रह्मा जैसे तत्वज्ञान को समझने के लिए किसी व्याकरण या न्याय शास्त्र आदि का अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं थी–

बिन व्याकरण न पढ़ सकै , ग्रंथ संसकृत मंद ।
पढ़ै याहि अनयास हीं , लहै सु परमानन्द ।। [6].

ठीक इसी प्रकार से हिंदी साहित्य में उत्कृष्ट स्थान वृत्ति प्रभाकर का भी है।

वृत्ति प्रभाकर में संत निश्चल दास जी ने संस्कृत ग्रंथों में लिखे हुए दुरुह विषयों को अपनी विद्वता से एक ही स्थान पर अत्यंत सरल भाषा में समेट दिया है।

वृत्ति प्रभाकर हिंदी साहित्य की ऐसी अमूल्य भेंट है जिसके मनन से ही सभी शास्त्रों का ज्ञान हो जाता है और अद्वैत विषयक संशयों की अपने आप निवृत्ति हो जाती है।

परशुराम चतुर्वेदी 'विचार सागर'के विषय में विचार प्रकट करते हुए लिखते हैं – '' सोलहवीं शताब्दी के मधुसूदन सरस्वती की अद्वैत सिद्धि और तुलसीदास के रामचरितमानस के पश्चात यदि कोई महत्वपूर्ण और मौलिक ग्रंथ भारत की किसी भाषा में लिखा गया है तो वह विचार सागर है। यह ग्रंथ हिंदी पद्य तथा गद्य में लिखा गया है। इसकी मौलिकता इस बात में भी आंकी जा सकती है कि इसके अनुवाद मराठी, गुजराती, बंगाली, उर्दू , संस्कृत और अंग्रेजी में हो चुके हैं। ''[7].

विचार सागर के प्रभाव को स्वामी विवेकानंद ने कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है –

''भारत में जितना प्रभाव इस पुस्तक विचार सागर का है उतना पिछली तीन शताब्दियों में किसी भी भाषा में लिखी गई दूसरी किसी पुस्तक का नहीं है।''

निश्चल दास जी ने अपने तीसरे ग्रंथ युक्ति प्रकाश में भी जीव के ज्ञान में दृष्टि को अधिक स्पष्ट करने का प्रयास किया है । प्राणी मात्र को ज्ञान का बोध कराते समय उन्होंने अनेक युक्तियों का सहारा लिया है ताकि जनमानस तक अपनी बात को वे आसानी से पहुंचा सकें ।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि निश्चल दास एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी हैं जिन्होंने वेद,वेदांग, न्याय ,व्याकरण,आदि का गहन अध्ययन करने के पश्चात अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर भी साहित्य रचना करके हिंदी साहित्य को अमूल्य धरोहर भेंट की।

गुरु ब्रह्मानंद सरस्वती–

भारतवर्ष की पावन धरा पर ऐसी विलक्षण प्रतिभा के धनी संतों ने जन्म लिया है जिनके संघर्षों और प्रयत्नों से मानवता के दग्ध हृदय को शीतलता मिली है। मनुष्य के हृदय के अंदर जो अज्ञान रूपी अंधकार छाया होता है जिसके कारण वह इस मिथ्या एवं क्षणभंगुर संसार को ही सत्य मानने लगता है , संत उसके इस अंधकार को हटाकर उसमें ज्ञान का प्रकाश भरते हैं। कुछ ऐसे ही संत थे ब्रह्मानंद सरस्वती जिन्होंने अपने ज्ञान के प्रकाश से समाज के लोगों के लिए सन्मार्ग पर ले जाने का मार्ग प्रशस्त किया।

गुरु ब्रह्मानंद सरस्वती का जन्म पोषसुदी प्रतिपदा विक्रम संवत् 1965 (24 दिसंबर सन 1908 ई.) को वीरवार के दिन धर्मनगरी कुरुक्षेत्र के समीप चूहड़माजरा गांव में, रोड़ क्षत्रिय वंश में हुआ था। उनके पिता का नाम बादामा और माता का नाम रामी था [8].

ब्रह्मानंद सरस्वती जी का व्यक्तित्व बाद ही धार्मिक था और इसका मुख्य कारण इनके पूर्वजों में परिजनों की गहरी धार्मिक आस्था का होना था। ब्रह्मानंद सरस्वती जी बाल्य काल से ही चमत्कारी बालक रहे और अपने चमत्कारों से उन्होंने सभी को आश्चर्यचकित कर दिया था।

वैराग्य का भाव इनमें बाल्य काल से ही दिखाई देने लगा था क्योंकि यह सामान्य बालकों की तरह खेल कूद न करके एकांत में बैठकर चिंतन मनन किया करते थे। वैराग्य की ओर झुकाव ने इनको ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने व इस लोक से विरक्त होने पर मजबूर कर दिया और वे शास्त्रों का अध्ययन करने के लिए कुरुक्षेत्र चले गए। इसके पश्चात इन्होंने हरिद्वार के मोहन आश्रम में रहकर वेद, उपनिषद , व्याकरण व आयुर्वेद का अध्ययन किया।

सरस्वती जी ने हिमालय के प्राकृतिक एवं सौंदर्य व शांति भरे वातावरण में निरंतर तप किया और सांसारिक विषय वासनाओं से स्वयं को दूर रखा ।

अपना संपूर्ण जीवन मानवता समाज व देश कल्याण को समर्पित करके ,16 मई सन् 1973 , बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर ओंकार का उच्चारण करते हुए इस महान योगी ने अपना शरीर त्याग दिया और परम तत्व में विलीन हो गए।

गुरु ब्रह्मानंद सरस्वती का हिंदी साहित्य में योगदान –

निःसंदेह सरस्वती जी का उद्देश्य साहित्य सृजन करना नहीं था लेकिन संतों की अंतःकरण से निकली उस मंत्र मुग्ध कर देने वाली वाणी का कोई–न–कोई माध्यम आवश्यक होता है। उन्होंने 'श्री सतगुरु ब्रह्मानंद पचासा', 'श्री सतगुरु ब्रह्मानंद ब्रह्म–विचार', 'श्री सतगुरु परमानंद नीति – विचार', 'श्री सतगुरु ब्रह्मानंद शारीरिकोपनिषद्', 'गौ–रक्षा' आदि की रचना करके हिंदी साहित्य को अमूल्य निधि से नवाजा है।

'ब्रह्मानंद–पचासा' में जहां वेद वेदांतों का सार निहित है जिसको सरस्वती जी ने लोक भाषा में वर्णित किया है तो 'ब्रह्म–विचार' ब्रह्म के सर्व व्यापकता पर प्रकाश डालते हुए वेदांत और दार्शनिक चिंतन को वर्णित करता है। नीति विचार इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि वेदांत का ज्ञाता होने के साथ–साथ नीति शास्त्र में भी पारंगत थे। शारीरकोपनिषद् व गौ– रक्षा ग्रंथ इस बात को प्रमाणित करते हैं कि उन्होंने केवल वेद, वेदांत, व्याकरण व शास्त्रों का केवल अच्छा ज्ञान ही प्राप्त नहीं किया बल्कि उसे व्यावहारिक रूप भी प्रदान किया। उन्होंने समाज के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए शिक्षा को ही आधार बनाया व अनेक गुरुकुलों व आश्रमों की स्थापना की। 'गौ– रक्षा' के माध्यम से लोगों को गाय के आर्थिक लाभों के बारे में बताते हुए गाय की सेवा रक्षा करने के उपदेश दिए। उनका एकमात्र लक्ष्य सामाजिक उत्थान करना था ताकि लोगों का पिछड़ापन दूर हो सके।

निःसंदेह हम कह सकते हैं कि सरस्वती जी द्वारा रचित यह ग्रंथ हिंदी साहित्य के साथ–साथ समाज के लिए भी संचित पूंजी हैं जिनका उपयोग करके मानव अपने जीवन में काफी बदलाव ला सकता है।

निष्कर्ष –

अंत में हम कह सकते हैं कि संतों के द्वारा रचित साहित्य ,उनकी वाणी व उपदेशों ने हमारे समाज में पनप रही अनेक रूढ़ियों , विसंगतियों, बाह्य आडम्बरों को रोकने का सराहनीय प्रयास किया । उनके उपदेशों व समाज सुधार की दिशा में किए गए अनेक कार्यों का ही परिणाम था कि हमारा समाज उस कीचड़ से निकलकर एक नई दिशा की और अग्रसर होने में सफल रहा ।

संदर्भ

1. तैतिरीयोपनिषद 2–6–1
2. जानेसु संत अनंत समाना– 'रामचरितमानस' उत्तरकांड
3. युक्ति प्रकाशः साधु निश्चल दास जी का जीवन चरित्र, पृष्ठ 8 ।
4. विचार सागर वेंकटेश्वर प्रेसः अंतिम दोहा 7.–110, 111
5. विचार सागर, पांचवी तरंग
6. विचार सागर– 7.–114
7. परशुराम चतुर्वेदी, उत्तरी भारत की संत परंपरा ।(लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल,दरबारी बिल्डिंग , महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज – 211 001)(2019)
8. डॉ. बाबूराम , संत शिरोमणि : ब्रह्मानंद सरस्वती(साहित्य संस्थान ,ई– 10–660, उत्तरांचल कॉलोनी, लोनी बॉर्डर, गाजियाबाद) (2019) पृष्ठ 40

श्रीमती मनजीत

पी.एच.डी शोधार्थी (बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
अस्थल बोहर, रोहतक,
हरियाणा।)
सहायक प्रवक्ता हिंदी,
(राजकीय महिला महाविद्यालय,
सोनीपत,131001,हरियाणा)
मो. नं.– 9992324246
म. नं. 748.–20 ओल्ड डी.सी. रोड़ ,
शंकर कॉलोनी,
सोनीपत।

25

गिजुभाई की बाल शिक्षा में निर्मितवाद

चित्रलेखा शर्मा

सारांश

वर्तमान में हम जिस विद्यालयी व्यवस्था को अपनाए हुए हैं उसमें एक कठोरता है।हमारे विद्यालयों से निकलने वाला बालक केवल किताबी ज्ञान रखता है।वर्तमान शिक्षा प्रणाली बालक के भविष्य को लेकर चिन्तित है। इसीलिए 2020राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा का उद्देश्य बालकों को इतना सक्षम बनाना हैकि वह अपने जीवन का अर्थ समझ सकें, अपनी योग्यताओं का विकास कर सकें, अपने जीवन का उद्देश्य समझ सकें और उन्हें पूरा करने का प्रयास कर सकें।गिजुभाई की बाल शिक्षा में निर्मितवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। निर्मितवाद एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ बालक पूर्व ज्ञान से नवीन ज्ञान सीखते हैं।निर्मितवाद और गिजुभाई की बाल शिक्षा का उचित समावेश करने के पश्चात हम बालक में अवगुणों के स्थान पर बालक के पूर्व ज्ञान को उसके अनुभव के आधार पर नवीन ज्ञान से जोड़ने में सक्षम होंगे। बालक तर्क करना, प्रश्न करना और अपने साथियों के साथ सहयोग करना सीखता है। बालक स्वयं सीखने और अपने ज्ञान को विकसित करने में भूमिका अदा करते हैं। यदि वर्तमान परिवेश में निर्मितवाद और गिजुभाई की बाल शिक्षा को शिक्षक पूर्णरुप से अपना ले तब वह दिन दूर नहीं जब धरती पर देव खेलने लगेंगे और चिर स्थायी ज्ञान का विकास होगा।

शब्द संकेत –

गिजुभाई की बाल शिक्षा – पूर्वप्राथमिक / प्राथमिक शिक्षा

निर्मितवाद–ऐसी व्यवस्था जहाँ बालक पूर्व ज्ञान से नवीन ज्ञान सीखते हैं

प्रस्तावना

गांधीवादी शिक्षाविद् गिजुभाई बधेका का शिक्षा के क्षेत्र में वही स्थान है जो समाज सेवा के क्षेत्र में गांधीजी का ,15 नवम्बर 1885 को चित्तल सौराष्ट्र (गुजरात) में जन्में गिजुभाई का जीवन शिक्षा के क्षेत्र में नये–नये प्रयोग करते हुए व्यतीत हुआ। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में जिन शिक्षाविदों ने मौलिक कार्य किया है। उसमें गिजुभाई का नाम अग्रणी है, उनके बारे में स्वयं गांधीजी ने लिखा है "गिजुभाई के बारे में कुछ लिखने वाला मैं कौन हूँ? उनके कार्यों ने तो मुझे सदैव मुग्ध किया है।मुझे द्दृढ़ विश्वास है उनका काम उग निकलेगा।"

बालशिक्षा के प्रति उनके इस लगाव का कारण मनोवैज्ञानिक था। उन्होंने अपने बचपन में जिस प्रकार शिक्षा प्राप्त की थी उसका अनुभव. बहुत यातना पूर्ण था उन्हें अपने बचपन में शिक्षा प्राप्ति के दौरान डॉट–डपट तथा मारपीट सहन करनी पड़ी ।इन्हीं कटु अनुभवों ने उन्हें बाल शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा दी गिजुभाई की मान्यता थी कि बच्चो को कठोर अनुशासन मेंरखकरअच्छी तरह शिक्षित नहीं किया जा सकता लेकिन वर्तमान में भी बालकों को अनदेखा किया जा रहा है।वर्तमानमें हम जिस विद्यालयी व्यवस्थाको अपनाए हुए हैं उसमें एक कठोरता है।हमारे विद्यालयों से निकलने वाला बालक केवल किताबी ज्ञान रखता है।वर्तमान शिक्षा प्रणाली बालक के भविष्य को लेकर चिन्तित है। इसीलिए 2020राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा का उद्देश्य बालकों को इतना सक्षम बनाना हैकि वह अपने जीवन का अर्थ समझ सकें, अपनी योग्यताओं का विकास कर सकें, अपने जीवन का उद्देश्य समझ सकें और उन्हें पूरा करने का प्रयासकर सकें।आज आवश्यकता है निर्मितवादी शिक्षण प्रक्रियामान्यताओं को अपनाने की। निर्मितवाद आते ही हमारे समक्ष कुछ प्रश्न आते हैं –

' निर्मितवाद क्या है?

निर्मितवाद एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ बालक पूर्वज्ञान से नवीन ज्ञानसीखते हैं।

' निर्मितवाद क्यों महत्वपूर्ण है ?

निर्मितवाद अधिक महत्वपूर्ण इसलिए माना जा सकता है, क्योंकि यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा –2005 केउद्देश्यों को पूर्ण करने में बहुत हद तक सहायक है।

' निर्मितवाद में कक्षा का वातावरण कैसा होगा ?

जहाँ परंपरागत शिक्षण में कभी कक्षा का वातावरण अत्यधिक नीरस हो जाता है, वहीं निर्मितवादी अधिगम में कक्षा का वातावरण शिक्षक और विद्यार्थी के पारस्परिक सहयोग पर आधारित होता है। क्योंकि इसके अंतर्गत शिक्षक और विद्यार्थी दोनों सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

' निर्मितवाद में शिक्षक की भूमिका क्या होगी ?

हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली पाठ्यपुस्तक और शिक्षक पर पूर्ण रूप से निर्भर है। शिक्षक व्याख्या द्वारा अपने ज्ञान का हस्तांतरण करता है और विद्यार्थी उसे ग्रहण करते हैं। परंपरागत शिक्षण में शिक्षक सक्रिय भूमिका निभाता है, जबकि विद्यार्थी निष्क्रिय भूमिका निभाते हैं। कई बार तो कक्षा अत्यधिक नीरस लगती है। निर्मितवादी कक्षा में केवल शिक्षक ही सक्रिय नहीं रहता, यहाँ पर शिक्षक और विद्यार्थी दोनों सक्रिय भूमिका निभाते हैं। शिक्षक के निर्देशन में विद्यार्थी अपने पूर्व ज्ञान तथा अनुभवों के आधार पर सीखते हैं और कक्षा में सामाजिक वातावरण में नवीन ज्ञान का निर्माण करते हैं।

गिजुभाई की बाल शिक्षा निर्मितवाद के अनुकूल है इसी वाक्य को ध्यान में रखते हुए शोधपत्र को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

शोध समस्या का शीर्षक–

प्रस्तुत शोध अध्ययन का औपचारिक शीर्षक षगिजुभाई की बाल शिक्षा में निर्मितवादष्है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य –

1– गिजुभाई की बाल शिक्षा में निर्मितवाद

2– बाल शिक्षा में निर्मितवाद का महत्व

3– बाल शिक्षा में कक्षा का वातावरण और निर्मितवाद

4– निर्मितवादमें बाल शिक्षा और शिक्षक की भूमिका

शोध अध्ययन का परिसीमन –

चूंकि गिजुभाई ने बाल शिक्षा तक ही अपने शिक्षण को सीमित रखा है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययनबाल शिक्षा तक ही सीमित है।

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में दार्शनिक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में गिजुभाई द्वारा रचित ग्रंथों(हिन्दी अनुवाद) और शोधार्थियों की टीकाओं एवं निर्मितवाद पर लिखे गये लेखों का प्रयोग शोधपत्र को पूर्ण करने में किया गया है।

शोध अध्ययन के स्रोत–

प्राथमिक स्रोत–

– बाल शिक्षण जैसा मैंने समझा

– शिक्षकों से

– ऐसे हो शिक्षक

– प्राथमिक विद्यालय में व्यावसायिक शिक्षा

– माण्टेसरी पद्धति

द्वितीयक स्रोत–

– गिजुभाई के शैक्षिक विचार और प्रयोग – एन०सी०ई०आर०टी०समकालीन शैक्षिक चिन्तन और संगीत शिक्षण– सुषमा शाह

– सिंह पी०डी० 2014 टीचर इन सर्च ऑफ न्यू पर्स पेक्टिव्स टीचर्स टुडे जनवरी–मार्च अंक सेकेन्डरी एजुकेशन, बीकानेर,राजस्थान।

शोध परिणाम–

गिजुभाई की बाल शिक्षा में निर्मितवाद है।ऐसा निम्नलिखित निष्कर्षो से ज्ञात होता है।

निर्मितवाद के अनुसार ज्ञान अर्थ सीखने वाले के पूर्व अनुभवों के अनुरूप भिन्न–भिन्न होता है। निर्मितवाद अधिगम ज्ञान प्रदान करने व स्वीकार करने की प्रक्रिया को न मानते हुए अधिगमकर्ता की सक्रिय भागीदारी व अनुभवों का लाभ लेते हुए बाल विकास को निर्मित करने पर बल देता है। वही गिजुभाई भी मानते हैं कि बालक की अन्तःशक्तियों के विकास में आने वाले अवरोधों का दूर कर उनके विकास को सकारात्मक गति प्रदान करना ही शिक्षा है।

निर्मितवाद और गिजुभाई की बाल शिक्षा–

–निर्मितवाद और गिजुभाई की बालशिक्षामें विद्यार्थी कक्षा में अत्यधिक सक्रिय रहते हैं।

– इनकी कक्षाओं में रटने की प्रवृत्ति नहीं होती है।

–किसी भी समस्या का समाधान संवाद व अन्तःक्रियाद्वारा निकाला जाता है।

– यहाँ पर सहयोग द्वारा कार्य किया जाता है ।

– अपने अनुभवों के आधार पर नया अर्थ ग्रहण करते हैं।

निर्मितवाद और गिजुभाईकी बाल शिक्षा का महत्व–

– निर्मितवाद शिक्षण प्रणाली और गिजुभाई की बाल शिक्षा दोनों ही रटंत प्रणाली को अच्छा नहीं मानती हैं।

– यह दोनों ही कक्षा–कक्ष में गतिविधियों के आधार पर शिक्षक को शामिल करते हुए बालक को स्वतन्त्र वातावरण में शिक्षा देने के पक्षधर हैं।

– निर्मितवाद और गिजुभाई दोनों ही बालकों की विषय के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करते हैं और चिन्तन के अवसर प्रदान करते हैं जिससे बालक विषय को गहराई से समझ सके।

निर्मितवाद और गिजुभाई की बालशिक्षा के सिद्धान्त–

– बालक निष्क्रिय श्रोता नहीं है। बल्कि ज्ञान के सर्जन में सक्रिय भागीदार होता है।

– ज्ञान सामाजिक वातावरण में विकसित होता है।

– ज्ञान देने और लेने की वस्तु नहीं है जिसमें शिक्षक देनेवाला और बालकलेने वाला हो। इसमें अधिगम वातावरण लोकतान्त्रिक एवंभयरहित होता है।

– शिक्षक का उत्तरदायित्व अधिगम को दिशा देनेवाला तथा सहयोग देने वाला होता है।

– अधिगम प्रक्रिया स्वचालित एवं बाल–केन्द्रित होती है।

– संप्रेषण, समूह में सीखना तथा विचारों का आदान–प्रदान निर्मितवाद और गिजुभाई की बाल शिक्षा में महत्वपूर्ण है।

निर्मितवाद और गिजुभाई की बाल शिक्षा में प्रयुक्त विधियाँ–

– प्रयोगः– बालक छोटे–छोटे प्रयोगों को कर निष्कर्ष प्राप्त करते हैं।

– समस्या समाधानः–बालक के समक्ष समस्याएँ दैनिक जीवन से जुड़ी हुई प्रस्तुत की जाएँ और बालक समाधान प्राप्त करें।

– वार्तालापः– किसी समस्या के समाधान हेतु कक्षा में वार्तालाप व मष्तिष्क उद्वेलन कराया जाता है।

– शैक्षिक भ्रमणः– बालक स्वयं स्थलों का भ्रमण कर अपने पूर्व ज्ञान के साथ नवीन अनुभवों को जोड़घ ते हुए नये ज्ञान का सर्जन करते हैं।

– प्रोजेक्टः– विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्ट निर्माण मेंआने वाली बाधाओं का समाधान करते हुए स्वयं की गति और प्रयास से अधिगम किया जाता है।

– सहगामी शिक्षणः–इसमें बालक समस्या समाधान,चर्चा या गतिविधि छोटे–छोटे समूहमें करता है।

निर्मितवाद और गिजुभाई की बालशिक्षा में कक्षा–कक्ष वातावरण–

– निर्मितवाद और गिजुभाई की बाल शिक्षा दोनों में ही कक्षा का वातावरण शिक्षक और बालक के पारस्परिक सहयोग पर आधारित होता है।

निर्मितवाद और गिजुभाई की बालशिक्षाका शिक्षक–

– शिक्षक अपनी बात को अत्याधिक सहज व सरल तरीके से विद्यार्थियों के समक्ष रखता है।

– शिक्षक छात्रों द्वारा दिए गये विचारों को धैर्यपूर्वक सुनता है और अंतःक्रिया द्वारा उस समस्या का समाधानप्राप्त करताहै।

इस प्रकार निर्मितवाद और गिजुभाई का बाल शिक्षा का शिक्षक एफसुविधा प्रदाता, सहायकमार्गदर्शकपुजारी के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है।

निष्कर्ष–

गिजुभाई की बाल शिक्षा और निर्मितवाद दोनों का अध्ययन करने के पश्चातइस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यदि गिजुभाई की बालशिक्षा में निर्मितवादी शिक्षण का उचित समावेश हो जाए तब राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 की बाल शिक्षा में सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होंगे।

संदर्भसूची

1. झबधेका, गिजुभाई, माण्टेसरी शिक्षा पद्धति (गुजराती से अनुवाद), दीनानाथ दवे, अनु० जयपुरः अकित पब्लिकेशन, 2001
2. झबधेका, गिजुभाई, प्राथमिक विद्यालय में व्यावसायिक शिक्षा (गुजराती से अनुवाद), दीनानाथ दवे. अनु० जयपुर अकित पदिनकेशन, 2001
3. झ कोका गिजुभाई बाल शिक्षण चौसा मैंने समझा (गुजराती से अनु०) दीननाथ दबे, अनु० जयपुर अकित पब्लिकेशन, 2005
4. झबधेका गिजुभाई, प्राथमिक शाला में शिक्षक (गुजराती से अनु०), दीनानाथ दवे अनु० जयपुर गीतांजलि प्रकाशन, 2005
5. झछाबरा, रजनी, 2012. चौलेंजिंग रोल ऑफ टीचर इन मॉडर्न पर्सपेक्टिव्स, टीचर्स टुडे, अक्तूबर–दिसंबर अंक सेकां एजुकेशन, बीकानेर, राजस्थान.
6. झसिंह, पी. डी. 2014. टीचर इन सर्च ऑफ न्यू पर्सपेक्टिव्स टीचर्स टुडे, जनवरी–मार्च अंक सेकंडरी एजुकेशन, बीकानेर, राजस्थान.

चित्रलेखा शर्मा
शोधार्थिनी,
भगवन्त यूनिवर्सिटी, अजमेर,
राजस्थान, भारत
डॉ० प्रताप सिंह राणा
शोधनिदेशक
भगवन्त यूनिवर्सिटी,
अजमेर, राजस्थान, भारत
मोबाइल नं0 7534089365

26

राम जनम के हेतु अनेका

डॉ0 जंग बहादुर पाण्डेय

सारांश

गोस्वामी तुलसीदास का श्रीरामचरितमानस भारतीय वांग्मय का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। इसमें ज्ञान, भक्ति और कर्म की त्रिवेणी प्रवाहित है।मानस के प्रतिपाद्य प्रभु श्रीराम हैंरू–

जेहि महं आदि मध्य अवसाना।
प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना।

और वे बुद्धि और वाणी से अतर्क्य हैं,ऐसी घोषणा ज्ञान घाट के श्रेष्ठ वक्ता भूत भावन महादेव ने की हैरू–

राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी।
मत हमारअस सुनहु भवानी।

आज अखिल ब्रम्हांड के नायक, जन सुखदायक, प्रनतपाल भगवंता, सहज कृपाला , दीन दयाला, अविनाशी, घट–घट वासी, भय–भव भंजन, परमानन्दन, सच्चिदानंद स्वरूप प्रभु श्री रामचंद्र जी का अवतरण दिवस है। वैसे तो उनके जन्म के अनेक हेतु हैं और उनका वर्णन करना आसान नहीं है; इसकी पुष्टि स्वयं भूतभावन भगवान भोले नाथ ने माता पार्वती से की हैरू–

सुनु गिरिजा हरि चरित सुहाए।
बिपुल बिसद निगमागम गाए।।
हरि अवतार हेतु जेहि होई।
इदमित्थं कहि जाइ न सोई।।

वैसे तो वेदशास्त्रों ने हरि के अवतार के बड़े ही सुंदर ,निर्मल और विस्तृत वर्णन किये हैं। तुलसी ने अपने मानस में इसका संकेतन किया हैरू–

राम जनम के हेतु अनेका।
परम विचित्र एक ते एका।
जन्म एक दुइ कहहुं बखानी।
सावधान सुनु सुमति भवानी।
मानस–1/122/2–3

पर उनमें से किसी एक को उनके अवतार का कारण मान लेना उचित नहीं। मानस में प्रभु श्रीराम के प्राकट्य के 6 कारण दिये हुए हैं:–

1 प्रथम कारणरू (जय–विजय का श्राप)– वैकुंठ में भगवान विष्णु के दो द्वारपाल थे– जय और विजय।एक बार उनके मन में ऐसा विचार आया कि सभी भगवान विष्णु की ही पूजा आरती करते हैं,हमारी कोई नहीं करता।आज जो पहले हमारी पूजा आरती करेगा,उसे ही भीतर जाने देंगे।उस दिन संयोग से सनकादिक आ गये।जय –विजय ने उन्हें भीतर जाने से रोक दिया,तो उन्होंने दोनों को शाप दे दिया कि तुम दोनों निशाचर हो जाओ।फलतरू ऋषि श्राप के कारण दोनों ही हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष नामक दैत्य हो गये। प्रार्थना करने पर भगवान के हाथों उद्धार का वरदान मिला।उनको मुक्त करने के लिए भगवान को अवतार लेना पड़ारू–

द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ।
जय अरु विजय जान सब कोऊ।
विप्र श्राप तें दूनउ भाई।
तामस असुर देह तिन्ह पाई।
कनककसिपु अरु हाटक लोचन।
जगत विदित सुरपति मद मोचन।
बिजई समर बीर बिख्याता।
धरि बराह बपु एक निपाता।
होई नरहरि दूसर पुनि मारा।
जन प्रह्लाद सुजस बिस्तारा।
भए निशाचर जाइ तेहि, महावीर बलवान।
कुंभकरन रावण सुभट,सुर बिजई जग जान।
मानस –1/122,4–8

तीन जन्म तक जय और विजय निशाचर बनते रहे तथा अवतार लेकर भगवान उन्हें मुक्त करते रहे ।

मुकुत न भए हते भगवाना।
तीनि जन्म द्विज बचन प्रवाना।
एक बार तिनके हित लागी।
धरेउ शरीर भगत अनुरागी।

2 द्वितीय कारण (वृंदा का श्राप और जलंधर का उद्धार)रू–जलंधर के उद्धार के लिए भगवान को अवतार लेना पड़ा। जालंधर की पत्नी वृंदा परम सती और पतिव्रता थी। उसके सतीत्व और पातिव्रत्य धर्म के कारण कोई उसे युद्ध में पराजित नहीं कर सकता था।तुलसी ने मानस में इसका संकेतन किया हैरू–

एक कलप सुर देखि दुखारे।
समर जलंधर सन सब हारे।
शंभु कीन्ह संग्राम अपारा।
दनुज महाबल मरइ न मारा।
परम सती असुराधीप नारी।
तेहि बलु ताहि न जितहिं पुरारी।
छल करि टारेउ तासु व्रत,प्रभु सुर कारज कीन्ह।
जब तेहि जानेउ मर्म तब,श्राप कोप करि दीन्ह।
मानस –1/123

वृंदा के सतीत्व के प्रताप से जलंधर को कोई मार नहीं सकता था। भगवान शंकर भी उसे नहीं मार पाये। देवताओं के अनुरोध पर तब भगवान विष्णु ने जलंधर का शरीर धारण कर वृंदा का सतीत्व हरण किया और तब जलंधर मारा गया। जलंधर अगले जन्म में रावण

बना,जिसको मारने के लिए प्रभु श्रीराम को अवतार लेना पड़ारू–
छल करि टारेउ तासु व्रत, प्रभु सुर कारज कीन्ह।
जब तेहि जानेउ मरम तब, श्राप कोप करि दीन्ह।
जासु श्राप हरि दीन्ह प्रमाना।
कौतुक निधि कृपाल भगवाना।
तहां जलंधर रावन भयऊ।
रन हति राम परम पद दयऊ।
एक जनम कर कारण ऐहा।
जेहि लगि राम धरि नर देहा।

3 तृतीय कारण (नारद–श्राप):–प्रभु श्री राम के अवतार का तीसरा कारण देवर्षि नारद का श्राप भी है।नारद के श्राप के कारण भगवान को नर शरीर धारण करना पड़ा।जब भगवान् शंकर ने नारद द्वारा शाप देने की बात कही,तो गिरिजा चकित हो गईं। उन्होंने कहा कि नारद जी भगवान् के परम भक्त और ज्ञानी थे। अतः उनके द्वारा शाप दिया जाना असंभव प्रतीत होता है, फिर भी उनके द्वारा शाप क्यों दिया गया,पार्वती को यह जानने की उत्सुकता हुईरू–
नारद श्राप दीन्ह एक बारा।
कलप एक तेहि लगि अवतारा।
गिरिजा चकित भईं सुनि बानी।
नारद विष्णु भगत पुनि ग्यानी।
कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा।
का अपराध रमापति कीन्हा।
यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी।
मुनि मन मोह आचरज भारी।
बोले बिहंसि महेश तब,ग्यानी मूढ़ न कोइ।
जेहि जस रघुपति करहिं,जब सो तस तेहि छन होइ।
मानस –1/124–5–8

इस प्रसंग में भगवान् शंकर ने एक अटल सिद्धांत का प्रतिपादन किया। वे बोले कि इस संसार में न तो कोई ज्ञानी है न मूढ़। यह तो भगवान् की लीला है,जब जिसे चाहें ज्ञानी बना दें या ज्ञानी को मूढ़ बाद दें। पुनः विस्तार पूर्वक भगवान् शंकर श नारद मोह श की कथा पार्वती को प्रेम पूर्वक सुनाते हैं।नारद श्राप भी देते हैं और वरदान भीः–

बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा।
सोई तनु धरहुं श्राप मम ऐहा।
कपि आकृति तुम्ह कीन्ह हमारी।
करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी।
मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी।
नारि बिरह तुम्ह होब दुखारी।।
श्राप सीस धरि हरषि हिय,प्रभु बहु बिनती कीन्ह।
निज माया के प्रबलता,करषि कृपानिधि लीन्हि।

4 चतुर्थ कारण (मनु–शतरूपा का तप)रू–मनु शतरूपा को दर्शन देने के लिए भगवान ने नर शरीर धारण किया। भगवान शंकर ने पार्वती को कथा सुनाते हुए आगे कहा है किरू–
अपर हेतु सुनु शैल कुमारी।
कहहुं विचित्र कथा विस्तारी।
जेहि कारण अज अगुन अरूपा।
ब्रह्म भयउ कोशलपुर भूपा।

मानवी सृष्टि के आदिम पिता मनु ने हजारों वर्ष तक राज्य किया, किंतु उनके मन में अभी वैराग्य उत्पन्न नहीं हुआ।अपने भोगमय जीवन पर उन्हें ग्लानि हुई। अतः एक दिन अपने बड़े पुत्र को बरबस राज्य देकर वन में तपस्या करने चले दिये। महारानी शतरूपा भी उनके साथ नैमिषारण्य पहुंचीं।मनु की मानसिक स्थिति का बड़ा ही मार्मिक वर्णन तुलसी ने मानस में किया हैरू–
होई न विषय विराग,भवन बसत भा चौथपन।
हृदय बहुत दुख लाग,जन्म गयउ हरि भगति बिनु।
बरबस राज सुतहि तब दीन्हा।
नारि समेत गवन बन कीन्हा।
तीर्थ बर नैमिष बिख्याता।
अति पुनीत साधक सिधि दाता।
मानस–1/142–1–2
मनु शतरूपा ने कठोर तपस्या की।उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर विधि,हरि ,हर अनेक बार मनु को वरदान देने आये,किंतु मनु ने आंखें नहीं खोलींरू–
विधि हरि हर तप देखि अपारा।
मनु समीप आये बहु बारा।
मांगहु वर बहु भांति लोभाए।
परम वीर नहिं चलहिं चलाए।
अंत में जब प्रभु उनके समक्ष प्रगट हुए,तो मनु ने वरदान मांगा कि मुझे आप जैसा एक पुत्र चाहिएरू–

दानि सिरोमणि कृपा निधि नाथ कहउँ सतिभाउ।
चाहउँ तुम्हहि समान सुत, प्रभु सन कवन दुराउ।
देखि प्रीति सुनि बचन अमोले।
एवमस्तु करुणानिधि बोले।
आपु सरिस खोजौ कहं जाई।
नृप तव तनय होड़ मैं आई।

अर्थात् भगवन ने कहा मैं अपने जैसा कहाँ खोजूगा?मैं स्वयँ आपके पुत्र के रुप में आऊँगा।इस प्रकार राजा मनु के वरदान को पूर्ण करने के लिए भगवान को नर शरीर धारण करना पड़ा।

5 पंचम कारण (भानु प्रताप के उद्धार हेतु)रू–राजा सत्यकेतु के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भानु प्रताप का उद्धार करने के लिए भगवान को नर शरीर धारण करना पड़ा।भानु प्रताप अत्यंत प्रतापी और धार्मिक राजा थे। निष्काम भाव से उन्होंने अनेक यज्ञ किये।उनके प्रताप से पृथ्वी धन धान्य से परिपूर्ण हो गई।एक दिन शिकार खेलते हुए भानु प्रताप जंगल में भटक गये। रात्रि में उन्हें बाहर आने का मार्ग नहीं मिला।इसी बीच जंगल में उन्हें एक कपटी मुनि का आश्रम मिला।कपटी मुनि के चक्कर में उनका बहुत बड़ा नाश हो गया।

ब्राह्मणों के श्राप के कारण उन्हें निशाचर (रावण)बनना पड़ा;जिनको मुक्त करने के लिए भगवान को नर शरीर धारण करना पड़ा।रावण शरीर धारण कर भानु प्रताप ने नाना प्रकार के अत्याचारों से गाय, ब्राह्मण,देवता और पृथ्वी को त्रस्त कर दिया। रावण के अत्याचारों का वर्णन विस्तार पूर्वक मानस में किया गया है।एक झांकी प्रस्तुत हैरू–

जेहि विधि होई धरम निर्मूला।'
सो सब करहिं वेद प्रतिकूला।
जेहि जेहि देश धेनु द्विज पावहीं।
नगर गांव पुर आग लगावहीं।
सुभ आचरन कतहुं नहिं होई।
देव विप्र गुरु मान न कोई।
बरनि न जाइ अनीति,घोर निशाचर जो करहिं।
हिंसा पर अति प्रीति,तिन्ह के पापहि कवन मिति।
मानस –1/183–5–7

रावण के अत्याचारों से संत्रस्त देवताओं ने पृथ्वी समेत ब्रह्मा जी से अपनी मुक्ति के लिए प्रार्थना की। शिव जी के आदेशानुसार ब्रह्म आदि सभी देवों ने भगवान की स्तुति की। स्तुति से प्रसन्न होकर भगवान ने आकाशवाणी कीरू–

जनि डरपहुं मुनि सिद्ध सुरेसा।
तुम्हहि लागि धरिहहुं नर बेसा।
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा।
लेहउं दिनकर बंस उदारा।
कस्यप अदिति महा तप कीन्हा।
तिन्ह कहुं मैं पूरब बर दीन्हा।
ते दशरथ कौशल्या रूपा।
कोशलपुरी प्रगट नरभूपा।
तिन्ह के गृह अवतरिहहुं जाई।
रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई।
मानस –1/187–1–5

इस प्रकार अपनी वाणी को निभाने के लिए भगवान ने भाइयों के साथ अयोध्या में अवतार लिया। भगवान के अवतार की घोषणा करते हुए गोस्वामी जी ने लिखा है किरू

जब–जब होहि धरम कै हानी।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।
करहिं अनीति जाई नहिं बरनी।
सीदहि बिप्र धेनु सुर धरनी।
तब–तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।
विप्र धेनु सुर संत हित,लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार।

इस प्रकार भक्तों के प्रेम के वशीभूत होकर समष्टि को व्यष्टि, निर्गुण को सगुण और निराकार को साकार बनना पड़ा तथा बालक बनकर माता कौशल्या की गोद का आश्रय लेना पड़ा।

6 षष्ठ कारण (संत हित उद्धार)रू–उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त भगवान प्रभु श्रीराम ने अपने भक्त विभीषण को बतलाया कि मैं तुम्हारे जैसे संतों के कल्याण के लिए भी अवतार ग्रहण करता हूं।मेरे अवतार का अन्य कोई प्रयोजन नहींरू–

तुम्ह सारीखे संत प्रिय मोरे।
धरउं देह नहिं आन निहोरे।
मानस 1/5–48–8

इस प्रकार राम जन्म के अनेक कारण हैं।पर इनमें से सबसे प्रमुख कारण समस्त मानवता का कल्याण है। राम मर्यादापुरुषोत्तम के रुप में जग मंगल के लिए भारत जैसे धराधाम पर नौमी तिथि मधुमास पनीता को अवतरित हुए रू–

नौमी तिथि मधुमास पुनीता।
शुक्ल पक्ष अभिजित हरि प्रीता।
मध्य दिवस अति शीत न घामा।
पावन लोक दायक विश्रामा।

राम एक आदर्श पुत्र, आदर्श मित्र, आदर्श भ्राता, आदर्श पति, आदर्श राजा और मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।इसलिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने डंके की चोट पर घोषणा की है किरू–

को रघुबीर सरिस संसारा।
सीलु सनेह निबाहन हारा।।

कुल मिला जुलाकर हम कह सकते हैं कि भगवान राम का जन्म किसी खास जाति, समाज या संप्रदाय के लिए नहीं हुआ है।।उनके चरित्र में समस्त मानवता का कल्याण समाविष्ट है। राम सबके हैं ,सब राम के हैं।कविवर राजेश जैन राही के शब्दों में रू–

पग पग पै हैं,रग –रग में हैं राम,
राम का प्रमाण पूछ देश न लजाइए।
शबरी के भाव में हैं,केवट की नाव में हैं ,
राम जी दिखेंगे आप खुद को जगाइए।
राम सुप्रभात में हैं,राम मीठी बात में हैं,
भरत सरीखे भाई आप बन जाइए।
राम संस्कार में हैं,आपस के प्यार में हैं,
राम राम बोल जग अपना बनाइये।

आज विश्व कई समस्यों से जुझ रहा है।पूरे विश्व में शांति,सद्भाव और भाईचारा का उत्तरोत्तर ह्रास होता चला जा रहा है,संसार के माथे पर तृतीय विश्व युद्ध का संकट मंडरा रहा है।वैसे आज का मानव अगर प्रभु श्री राम के आदर्शों पर चले तो सारे संकट टल सकते हैं।सुरसावत समस्याओं के समाधान के लिए हमें पवनतनय बनना पड़ेगा।क्योंकि राम का जन्म ही जग मंगल के लिए हुआ हैरू–

सत्यसंध पालक श्रुति सेतू।
राम जन्म जग मंगल हेतू।।

डॉ0 जंग बहादुर पाण्डेय
पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची–8
चलभाष –9431595318
8797687656,9386336807
द्रुतडाक –pandey–ru05@yahoo.co.in

सत्यमेव जयते

डॉ0 चंद्र मणि किशोर

सारांश

अंतिम सांस गिन रहे जटायु'ने कहा कि मुझे पता था कि मैं 'रावण से नही जीत सकता लेकिन तो भी मैं लड़ा ..यदि मैं नही लड़ता तो आने वाली पीढियां मुझे कायर कहती

जब रावण ने जटायु के दोनों पंख काट डाले... तो काल आया और जैसे ही काल आया ...
तो गिद्धराज जटायु ने मौत को ललकार कहा, ——

ष खबरदार ! ऐ मृत्यु ! आगे बढ़ने की कोशिश मत करना... मैं मृत्यु को स्वीकार तो करूँगा... लेकिन तू मुझे तब तक नहीं छू सकता... जब तक मैं सीता जी की सुधि प्रभु ष श्रीराम ष को नहीं सुना देता.

तब कह गीध बचन धरि धीरा
सुनहु राम भंजन भव भीरा
नाथ दसानन यह गति कीन्ही
तेहि खल जनक सुता हरि लीन्ही

मौत उन्हें छू नहीं पा रही है... काँप रही है खड़ी हो कर...
मौत तब तक खड़ी रही, काँपती रही... यही इच्छा मृत्यु का वरदान जटायु को मिला।क्योकि

जल भरि नयन कहहि रघुराई
तात कर्म ते निज गति पाई
परहित बस जिनके मन माहीं
तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ टछु नाहीं
तनु तजि तात जाहु मम धामा
देऊँ काह तुम्ह पूरनकामा

जटायु को राम की कृपा से स्वर्ग मिला
किन्तु महाभारत के भीष्म पितामह छह महीने तक बाणों की शय्या पर लेट करके मौत का इंतजार करते रहे... आँखों में आँसू हैं ... रो रहे हैं... भगवान मन ही मन मुस्कुरा रहे हैं...!
कितना अलौकिक है यह दृश्य ... रामायण मे जटायु भगवान की गोद रूपी शय्या पर लेटे हैं...
प्रभु श्रीराम रो रहे हैं और जटायु हँस रहे हैं...
वहाँ महाभारत में भीष्म पितामह रो रहे हैं और भगवान ष श्रीकृष्ण ष हँस रहे हैं... भिन्नता प्रतीत हो रही है कि नहीं... ?

अंत समय में जटायु को प्रभु श्रीराम की गोद की शय्या मिली... लेकिन भीष्म पितामह को मरते समय बाण की शय्या मिली....!
जटायु अपने कर्म के बल पर अंत समय में भगवान की गोद रूपी शय्या में प्राण त्याग रहा है....
प्रभु श्रीराम की शरण में..... और बाणों पर लेटे लेटे भीष्म पितामह रो रहे हैं....
ऐसा अंतर क्यों?...

ऐसा अंतर इसलिए है कि भरे दरबार में भीष्म पितामह ने द्रौपदी की इज्जत को लुटते हुए देखा था... विरोध नहीं कर पाये थे ...!
दुःशासन को ललकार देते... दुर्योधन को ललकार देते... तो
द्रौपदी का चीर हरण नहीं होता । लेकिन द्रौपदी रोती रही... बिलखती रही... चीखती रही... चिल्लाती रही... लेकिन भीष्म पितामह सिर झुकाये बैठे रहे... नारी की रक्षा नहीं कर पाये...!

उसका परिणाम यह निकला कि इच्छा मृत्यु का वरदान पाने पर भी बाणों की शय्या मिली और ....
जटायु ने नारी का सम्मान किया...
अपने प्राणों की आहुति दे दी... तो मरते समय भगवान ष श्रीराम ष की गोद की शय्या मिली...!

जो दूसरों के साथ गलत होते देखकर भी आंखें मूंद लेते हैं ... उनकी गति भीष्म जैसी होती है ...
जो अपना परिणाम जानते हुए भी...औरों के लिए संघर्ष करते है, उसका माहात्म्य जटायु जैसा कीर्तिवान होता है।

सदैव गलत का विरोध जरूर करना चाहिए।सत्य परेशान जरूर होता है, पर पराजित नहीं

सत्यमेव जयते
जय श्रीराम जी

डॉ0 चंद्र मणि किशोर
वरीय हिंदी शिक्षक
जिला स्कूल रांची 834001
चलभाषः—7979852019
9431595318,8797687656

28

सचमुच तुम मर्यादा पुरुषोत्तम हो राम

डॉ0 श्रीमती तारा मणि पाण्डेय

सारांश

एकटक देर तक उस सुपुरुष को निहारते रहने के बाद बुजुर्ग भीलनी के मुंह से बोल फूटेः

कहो राम! शबरी की डीह ढूंढ़ने में अधिक कष्ट तो नहीं हुआ?

राम मुस्कुराएरू ष्यहां तो आना ही था मां, कष्ट का क्या मूल्य...?

जानते हो राम! तुम्हारी प्रतीक्षा तब से कर रही हूँ जब तुम जन्में भी नहीं थे। यह भी नहीं जानती थी कि तुम कौन हो? कैसे दिखते हो? क्यों आओगे मेरे पास..? 'बस इतना ज्ञात था कि कोई पुरुषोत्तम आएगा जो मेरी प्रतीक्षा का अंत करेगा...

राम ने कहाः 'ष्तभी तो मेरे जन्म के पूर्व ही तय हो चुका था कि राम को शबरी के आश्रम में जाना है।

एक बात बताऊँ प्रभु! 'भक्ति के दो भाव होते हैं। पहला मर्कट भाव, और दूसरा मार्जार भाव। बन्दर का बच्चा अपनी पूरी शक्ति लगाकर अपनी माँ का पेट पकड़े रहता है ताकि गिरे न... उसे सबसे अधिक भरोसा माँ पर ही होता है और वह उसे पूरी शक्ति से पकड़े रहता है। यही भक्ति का भी एक भाव है, जिसमें भक्त अपने ईश्वर को पूरी शक्ति से पकड़े रहता है। दिन रात उसकी आराधना करता है.....

.....पर मैंने यह भाव नहीं अपनाया। 'मैं तो उस बिल्ली के बच्चे की भाँति थी जो अपनी माँ को पकड़ता ही नहीं, बल्कि निश्चिन्त बैठा रहता है कि माँ है न, वह स्वयं ही मेरी रक्षा करेगी, और माँ सचमुच उसे अपने मुँह में टांग कर घूमती है... मैं भी निश्चिन्त थी कि तुम आओगे ही, तुम्हे क्या पकड़ना...।

राम मुस्कुरा कर रह गए।

भीलनी ने पुनः कहाः सोच रही हूँ बुराई में भी तनिक अच्छाई छिपी होती है न... कहाँ सुदूर उत्तर के तुम, कहाँ घोर दक्षिण में मैं। तुम प्रतिष्ठित रघुकुल के भविष्य, मैं वन की भीलनी... यदि रावण का अंत नहीं करना होता तो तुम कहाँ से आते?

राम गम्भीर हुए। कहाः

भ्रम में न पड़ो मां! राम क्या रावण का वध करने आया है?

..... अरे रावण का वध तो लक्ष्मण अपने पैर से बाण चला कर कर सकता है।

..... राम हजारों कोस चल कर इस गहन वन में आया है तो केवल तुमसे मिलने आया है मां, ताकि हजारों वर्षों बाद जब कोई भारत के अस्तित्व पर प्रश्न खड़ा करे तो इतिहास चिल्ला कर उत्तर दे कि इस राष्ट्र को क्षत्रिय राम और उसकी भीलनी माँ ने मिल कर गढ़ा था।

..... जब कोई भारत की परम्पराओं पर उँगली उठाये तो काल उसका गला पकड़ कर कहे कि नहीं! यह एकमात्र ऐसी सभ्यता है जहाँ..... एक राजपुत्र वन में प्रतीक्षा करती एक दरिद्र वनवासिनी से भेंट करने के लिए चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार करता है।

..... राम वन में बस इसलिए आया है ताकि जब युगों का इतिहास लिखा जाय तो उसमें अंकित हो कि सत्ता जब पैदल चल कर समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे तभी वह रामराज्य है।

..... राम वन में इसलिए आया है ताकि भविष्य स्मरण रखे कि प्रतीक्षाएँ अवश्य पूरी होती हैं। राम रावण को मारने भर के लिए नहीं आया मां...!

शबरी एकटक राम को निहारती रहीं।

राम ने फिर कहाः

ष्राम की वन यात्रा रावण युद्ध के लिए नहीं है माता! राम की यात्रा प्रारंभ हुई है भविष्य के लिए आदर्श की स्थापना के लिए।

..... राम निकला है ताकि विश्व को बता सके कि माँ की अवांछनीय इच्छओं को भी पूरा करना ही राम होना है।

..... राम निकला है कि ताकि भारत को सीख दे सके कि किसी सीता के अपमान का दण्ड असभ्य रावण के पूरे साम्राज्य के विध्वंस से पूरा होता है।

..... राम आया है ताकि भारत को बता सके कि अन्याय का अंत करना ही धर्म है,

..... राम आया है ताकि युगों को सीख दे सके कि विदेश में बैठे शत्रु की समाप्ति के लिए आवश्यक है कि पहले देश में बैठी उसकी समर्थक शूर्पणखाओं की नाक काटी जाय, और खर–दूषणों का घमंड तोड़ा जाय।

.....और,

..... राम आया है ताकि युगों को बता सके कि रावणों से युद्ध केवल राम की शक्ति से नहीं बल्कि वन में बैठी शबरी के आशीर्वाद से जीते जाते हैं।

शबरी की आँखों में जल भर आया था। उसने बात बदलकर कहारू ष्बेर खाओगे राम?

राम मुस्कुराए, षबिना खाये जाऊंगा भी नहीं मां...

शबरी अपनी कुटिया से झपोली में बेर ले कर आई और राम के समक्ष रख दिया।

राम और लक्ष्मण खाने लगे तो कहाः मीठे हैं न प्रभु?

यहाँ आ कर मीठे और खट्टे का भेद भूल गया हूँ मां! बस इतना समझ रहा हूँ कि यही अमृत है... ।

शबरी मुस्कुराईं, बोलींरू 'सचमुच तुम मर्यादा पुरुषोत्तम हो, राम!
सच ही कहा गया हैः
बिना राम के आदर्शों का,चरमोत्कर्ष कहा है?
बिना राम के इस भारत में भारतवर्ष कहा है?
जय श्रीराम

डॉ0 श्रीमती तारा मणि पाण्डेय
कृतकार्य वरीय शिक्षिका, महारानी प्रेम मंजरी
प्रोजेक्ट बालिका उच्च विद्यालय,रातू, रांची 835222
चलभाषः9386336807
9431595318,8797687656

29

मानसिक मंदित बालकों की अभिभावकों की चुनौतियों का अध्ययन एंव हस्तक्षेपण कार्यक्रम द्वारा समाधान हेतू प्रयास

प्रियंका मल्होत्रा, डॉ. विष्णु शर्मा

सारांश

मानसिक मंदित बालक एक व्यक्ति होता है जिसकी मानसिक स्वास्थ्य में कोई समस्या होती है। यह समस्याएँ उनके व्यवहार, भावनाओं, और सामाजिक या शैक्षिक स्थिति पर असर डाल सकती हैं। मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ कई प्रकार की हो सकती हैं, जैसे डिप्रेशन, एक्सायटी, बीडीएचडी, और अन्य विकार। इन समस्याओं के कारण और उपचार विभिन्न हो सकते हैं, और उन्हें ठीक करने के लिए व्यक्तिगत परामर्श और सहायता की आवश्यकता होती है। इसमें परिवार, स्कूल, और समुदाय का साथ बहुत महत्वपूर्ण होता है, जिससे बच्चे को सही दिशा देने और उन्हें सहायता प्राप्त करने में मदद मिल सके। मानसिक मंदित बालकों के अभिभावकों को मानसिक मंदित बालकों के पालन–पोषण में बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिसके बारे में शोधार्थी अपने शोधपत्र में बताने का प्रयास कर रही है।

मुख्य बिन्दु– मानसिक मंदिता, अभिभावक, मानसिक स्वास्थ्य ।

परिचय

माता पिता के लिए उनका हर बच्चा अनमोल होता है। कोई भी अभिभावक नहीं चाहता कि उसके बच्चे में बौद्धिक विकासात्मक, शारीरिक या मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में कोई कमी हो लेकिन कुछ बच्चों में अस्थायी या स्थायी विकलांगता या विकार होता है। यह विकासात्मक अवधि के दौरान शुरू होने वाला एक विकार है। जिसमें वैचारिक, सामाजिक और बौद्धिक और अनुकूली कामकाज दोनों की कमी शामिल है।

मानसिक मंदिता का अर्थ

मानसिक मंदिता मस्तिश्क की अवस्था या अपूर्ण विकास है जो 18 वर्ष की आयु में विद्यमान होता है।

मानसिक मंदिता के प्रकार

	मंदिता का स्तर	बुद्धिलब्धि
1.	सौम्य मानसिक मंदित	50–70
2.	मध्य मानसिक मंदित	35–50
3.	गंभीर मानसिक मंदित	20–35
4.	अति गंभीर मानसिक मंदित	20 से कम

जन्म से पूर्व के कारण

- अनुवांशिक गुण दोष
- विटामिन की कमी
- मानसिक मंदिता के कारण
- जन्म के बाद मानसिक मंदिता के कारण
- मानसिक मंदिता का वर्गीकरण
- चिकित्सीय वर्गीकरण

मानसिक मंदिता की रोकथाम

1. **जन्म के पूर्व रोकथाम**– बार बार गर्भपात गर्भवती महिला का तनाव, एक्स रे का ज्यादा उपयोग भ्रूण पर घातक प्रभाव डालता है।
2. **प्रसव के समय रोकथाम**– प्रसव के समय सावधानी बरते समय आक्सीजन की उपलब्धता नैसथिसिया इंजेक्शन की मात्रा सभी प्रकार की प्रसव में औजार व दवाईयों की उपलब्धि।

मानसिक मंदित बालकों के अभिभावकों के समक्ष आने वाली चुनौतियाँ

मानसिक मंदित बालकों के अभिभावकों को अनेक प्रकार की समस्याओं (चुनौतियों) का सामना करना पड़ता है जो निम्न प्रकार से हैं–

1. **स्वीकृति** : अभिभावकों को जब अपने बच्चे के बारें में यह पता चलता है कि उनका बालक सामान्य बालक के अनुरूप व्यवहार नही कर रहा तो वो अपने बालक कई चिकित्सकों से संपर्क कर बालक का ईलाज करवाते हैं लेकिन यह स्वीकार नहीं करते कि उनका बालक विशेश है।
2. **सामाजिक दोषः** परिवार में मानसिक मंदित बच्चे का जन्म होने पर परिवार स्वयं को शर्मिदा महसूस करता है। इसी कारण वे अपने बालक को पारिवारिक समारोह, सार्वजनिक जगह के लिये बाहर नहीं ले जाते हैं।
3. **आत्मदोषः** अभिभावकों को यह लगता है कि ये कहीं पूर्व जन्म के कर्मों (पाप) का फल तो नही मिला जो इन्हें इस जन्म में भुगतना पड़ रहा है। वे अपने आप को ग्लानी और दोष देते है।
4. **शारीरिक थकावट व तनावः** मानसिक मंदित बालक को विशेष रूप से देखभाल की आवश्यकता (जरूरत) होती है। मानसिक मंदित बालकों का विशेष ध्यान रखना, खाना खिलाना, स्नान कराना, घूमाना और 24 घण्टे बालक पर ध्यान देना अभिभावक को शारीरिक थकान व तनाव, द्वन्द्वका कारण बनता है।
5. **सामाजिक, आर्थिक समस्याएंः** मानसिक मंदित बालकों की शिक्षा पर अधिक खर्च, समय–2 पर इनकी चिकित्सा देखभाल देने निजी शिक्षा टयूशन आदि से परिवार का आर्थिक व्यय बढ़ जाता है।
6. **परिवार की समस्या/वैवाहिकः** किसी भी परिवार में मानसिक मंदित बालक होने पर परिवार में हमेशा तनाव की स्थिति बनी रहती है। समाज में माता–पिता को भिन्न–भिन्न

सामाजिक तनाव को सहना पड़ता है। जिससे अभिभावक का वैवाहिक संबंध तनावपूर्ण हो सकता है और कभी माँ को ये लगता है कि मैं पूरा समय बच्चे की देखभाल करती हूँ पिता का कम सहयोग माँ को तनावपूर्ण बनाता है।

7. **सहयोग, ज्ञान की कमीः** अभिभावक को कभी–2 अपने मानसिक मंदित बालक के बारे में ज्ञान की कमी से और मानसिक मंदित बालक के लिये उपलब्ध संसधानो की जानकारी नहीं होती है जिससे उन्हें कई प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।
8. **भविष्य की योजनाः** मानसिक मंदित बालक के माता–पिता का मुख्य चिन्ता का कारण अपने बच्चे को लेकर होता है कि उनका बच्चा कब मर जाये। उन्हें लगता है बच्चे का जीवन कैसा होगा यही सोच कर वो बालक के लिये धन जमा करने का प्रयास करते हैं।
9. **भावनात्मक समस्याः** मानसिक मंदित बालकों के अभिभावक को तनाव व भावनात्मक समस्या का सामना करना पड़ता है। वे अपने बच्चे के भविष्य को लेकर चिन्तित होते हैं कि उनके मरने के उपरान्त उनके बच्चो की देखभाल कैसे होगी। उन्हें हमेशा यही डर रहता है कि बच्चे के साथ को शारीरिक रूप से दुर्व्यवहार ना हो।

समस्या कथन

मानसिक बालकों की अभिभावकों की चुनौतियो का अध्ययन एंव हस्तक्षेपण कार्यक्रम द्वारा समाधान हेतू प्रयास।

शोध में प्रयुक्त शब्दों की क्रियात्मक परिभाषा

अभिभावक को एक विशेष कार्यक्रम व राशि से अवगत कराके सीखाते हुए वे अपने बालकों के साथ अभ्यास करने मे सक्षम हो तथा इसकी प्रभावशीलता प्री–टेस्ट और पोस्ट–टेस्ट स्कोर की तुलना करके फालोउप द्वारा देखा गया इसमे अवलोकन क्षेत्र डायरी, उपाख्यान आदि थे। अभिभावकों के साथ साक्षात्कार और हस्तक्षेपण का उद्देश्य योजनबद्ध और संगठित प्रयासों को बढ़ाने से है।

शोध प्रश्न

- मानसिक मंदित बालकों के अभिभावकों को अपने पालन पोशण की क्या आवश्यकता है?
- क्या हस्तक्षेपण कार्यक्रम मानसिक मंदित बालकों के संबध में अभिभावकों को उनकी सोच का विस्तार बढ़ाने में सक्षम होगा?
- क्या हस्तक्षेपण कार्यक्रम विकसित करना कहां तक संभव हैं?
- क्या हस्तक्षेपण कार्यक्रम अभिभावकों के व्यवहार व पालन पोशण उनकी समस्याओ को हल कराने में जागरूक परिवर्तन ला सकते है?

अध्ययन के उद्धश्य

- एक हस्तक्षेपण कार्यक्रम के अंतर्गत मानसिक मंदित बालकों के अभिभावकों की जरूरतों चुनौतियों का आंकलन करना।
- अभिभावकों के लिए हस्तक्षेपण कार्यक्रम विकसीत करना तथा उसे लागू करना
- हस्तक्षेपण कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन करना अध्ययन की परीसीमा
- ये अध्ययन मानसिक मंदित बालकों के अभिभावकों तक सीमित है जो किसी संस्था/विशेश स्कूल में जा रहे है।

परिकल्पनाएं

- मानसिक मंदित बालकों के अभिभावकों की चुनौतियों का अध्ययन एक हस्तक्षेपण कार्यक्रम द्वारा समाधान हेतू प्रयास।
- हस्तक्षेपण कार्यक्रम अभिभावकों के तनाव, चिन्ता, को दूर करने में कितना कारागार साबित होगा।

शोध प्रारूपः

जनसंख्याः

इस अध्ययन में शोधार्थी ने हरियाणा में सिरसा जिले के दो विशेश स्कूल के 4 से 18 वर्श तक के मानसिक मंदित बालकों के अभिभावकों का चयन किया करके अध्ययन किया है। वर्तमान शोध जांच एक हस्तक्षेप अध्ययन है। अध्ययन का उद्देश्य नियोजित हस्तक्षेप कार्यक्रम के परिणामस्वरूप विशयों के फलस्वरूप विशयों के नमूनों पर परिवर्तनों का मूल्यांकन करना है। यह एक प्रायोगिक अध्ययन था। अध्ययन को निम्न पांच चरणों में विभाजित किया गया है–

न्यायदर्श और प्रतिदर्श की प्रक्रिया

अध्ययन में शोधार्थी में सिरसा जिले में दो स्कूलों में पढ़ रहे मानसिक मंदित बच्चों के 22 अभिभावकों का चयन किया है। अध्ययन के लिए उद्धेश्यपूर्ण न्यायदर्श विधि का उपयोग करके किया गया था।

- सिरसा जिले में मानसिक रूप से मद बालकों के चयनित न्यायदर्श
- दिशा संस्थान सिरसा, हरियाणा
- प्रयास मेंटली चैलेंज्ड चिल्ड्रेन स्कूल (सिरसा)**अध्ययन के पांच चरण**

1. चरण प्रथम – नमूना चयन
2. चरण द्वितीय– अभिभावकों में मूल्याकन की
3. चरण तृतीया– हस्तक्षेपण कार्यक्रम का विकास
4. चरण चतुर्थ– कार्यक्रम का क्रियान्वयन
5. चरण पंचम–हस्तक्षेपण कार्यक्रम की प्रभावशीलता

कार्यक्रम का क्रियान्वयन

यह कार्यक्रम 40 घंटों तक आयोजित किया गया साथ ही क्षेत्रीय दौरे भी किये हस्तक्षेपण कार्यक्रम में पाँच माडयूल शामिल थे। कार्यक्रम की रूपरेखा अभिभावकों तक पहुचाने के लिए उपयोग किए जाने वाले उद्धेश्य तरीके, प्रक्रिया/सहायक साम्रगी शामिल थी। कार्यक्रम को रोचक व प्रभावी बनाने के लिए फिल्म प्रदर्शन व रोल प्ले कई प्रकार की रणनीतियों का उपयोग किया गया। प्रमुख

निश्कर्श मानसिक मंदित बालकों में अभिभावकों की जरूरतों का आंकलन मानसिक मंदित बालकों में अभिभावकों की जरूरतों से सम्बन्धित आंकड़ों का मूल्यांकन किया व साथ ही अवलोकन अनुसूची अर्ध संरचित साक्षात्कार द्वारा माता–पिता को अवसाद से निकलने में सहायता कर सके।

निष्कर्ष

मानसिक मंदित बालकों के लिए सुझावः–

- अभिभावक के साथ साक्षात्कार करना साथ ही बच्चे का अवलोकन, बुद्धि और उसके अनुकूली व्यवहार का परीक्षण करना।
- मानसिक मंदित बालक की अक्षमताओं के बारे में जो कुछ सीख सकते है। उसे जानने का प्रयास करे जितनी उसके बारे में जानेगे बच्चे के लिये उतना ही बेहतर होगा।
- बच्चे की स्वतन्त्रता को प्रोत्साहित करे। मानसिक मंदित बच्चे को नई चीज सिखने को दे और उसे स्वयं करने के लिए प्रोत्साहित करे। समय–2 पर आवश्यकता हो तो उसे मार्गदर्शन करे जब तक बालक कुछ नया सीखता है तो उसे सकारात्मकता की अनुभूत कराये।
- मानसिक मंदित बालक को समूह गतिविधियों में शामिल करे। कक्षा में आर्ट या कक्षा की अन्य गतिविधियों में भाग लेने से बालक को सामाजिक कौशल विकसित करने काफी मदद मिलेगी।
- बच्चे की शिक्षकों के संपर्क में रहे साथ ही उसकी गतिविधियों व प्रगति पर नजर रखे स्कूल में बालक जो सीख रहा है। उसका अभ्यास घर पर जरूर कराये।

सुझाव

- अभिभावकों को चाहिये कि वो अपने मानसिक मंदित बच्चे के साथ अधिक से अधिक समय बीताये।
- अभिभावकों को मंदित बालक के विकास के लिये चिकित्सको/मनोचिकित्सको के सम्पर्क में रखना चाहिये ताकि बच्चे का सर्वांगिण विकास हो सके।
- माता–पिता को चाहिये कि वे परिवार में एक ऐसा सकारात्मक वातावरण बनकर रखे जिससे बच्चे का मानसिक विकास हो सके।
- अभिभावकों को चाहिये कि वे अपने बच्चे को विशिष्ठ शिक्षा भी प्रदान करने का प्रयास करे। ताकि भविष्य में बच्चे के रोजगार जीवनयापन की समस्याओं का समाधान किया जा सके।
- हमारा समाज प्रगतिशील / आधुनिक समाज है।
- प्रगतिशील समाज में समाज में सभी वर्गों को साथ लेकर चलना प्रगतिशील समाज का यह गुण है कि वह जन कल्याण में सभी वर्गों को साथ ले के चले।
- बौद्धिक विकलांगता की समस्या के समाधान के लिये इन पर दया, तरस इत्यादि की अपेक्षा उन्हें संबल, सक्षम बनाने का प्रयास किया जाना चाहिये।
- बालक का प्रारिम्भक गुरू माता–पिता ही होते है। इसलिये माता–पिता का अपने मंदित बच्चे की मानसिक विकलांगता को स्वीकार कर उसका सहयोग करना चाहिये।
- मंदित बालकों के लिये विशेष स्कूलों का निर्माण करना चाहिये। सामाजिक संस्थाओं को चाहिये कि वह मंदित बच्चों के लिये सहयोग प्रदान करे।
- मंदितों में समायोजन एवं पुनर्वास के लिये सरकार द्वारा भी सहयोग किया जाना चाहिये।

माता–पिता की जरूरतें और समस्याओं से निपटने के उपाय

मानसिक मंदित बालकों मे माता–पिता की सबसे बड़ी आवश्यकता बालक की जीवन के विभिन्न चरणो मे रचनात्मक, व्यवसाय परामर्श और अभिभावकों की अपनी व्यक्तिगत समस्याओ का उतर ढूंढने मे सक्षम बनाएगा।

सामाजिक मनौवैज्ञानिक, परामर्श व सहायता मानसिक मंदिता का प्रभाव न केवल प्रभावित व्यक्ति के संज्ञान पर पड़ता है बल्कि इससे उसकी सामाजिक, सामुदायिक सहभागि भी प्रभावित होती है। मंदित बालक को एंव उनके परिवार को आवश्यकतानुसार सामाजिक, मनोवैज्ञानिक सहयोग, परामर्श प्रदान किया जाए।

आगामी शोध हेतु सुझाव

- मानसिक मंदित बालकों के अभिभावकों की समस्याओं का अध्ययन के लिए हस्तक्षेपण कार्यक्रम बड़े रूप में किया जा सकता है।
- वर्तमान शोध अभिभावकों पर सीमित है। आगामी शोध मानसिक मंदित बालकों के परिवार के अन्य सदस्यों व अध्यापकों पर किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन स्वंय सहायता कौशल और अनुसूचि के माध्यम से किया जाता है, अवलोकन के दौरान अभिभावकों का बालक के प्रति व्यवहार उदासीन और सहानुभूतिपूर्ण था।

निष्कर्षः हस्तक्षेपण कार्यक्रम अभिभावकों के व्यवहार में बदलाव लाया क्योंकि कार्यक्रम में जागरूकता व कौशल वाछनीय परिवर्तन लाने के लिए ये हस्तक्षेपण कार्यक्रम ने अभिभावक को अपने बालक में विभिन्न जरूरतों को पहचान करने में सक्षम था तथा वे सामान्य व्यवहार संबधी समस्याओ और उनके कारणो को समझने में सक्षम हो सकते है।

संदर्भ सूची

- कुमारी जयबाला गुप्ता (2016). मंदबुद्धि बालकों की पहचान एवं शिक्षा व्यवस्था, इंटरनेशनल जरनल ऑफ मल्टीडिस्पलनरी रिसर्च एंड डेवलॉपमेंट, वाल्यूम 3, इश्यू 2, पृ. 57–58.
- मैथिली हजारिका (2019). बौद्धिक विकास संबंधी विकार वाले बच्चों और किशोरों के प्रति माता–पिता का रवैया, चाइल्ड डेवलपमेंट हेल्थ. 5(1): पृ. 11–21 ।

- डिव टी, हेरोन जे, ईवानस जे, ईमोनड ए (2008). दि इमपैक्ट ऑफ मैटेरनल डिप्रेशन इन प्रेगनेंसी ऑन अरली चाइल्ड डेवलोपमेंट", बीजेओजी, वाल्यूम 115 (8) पृ. 1043–1051.
- शुक्ला, संजीव कुमार (2014), विकलांगता की चुनौतियां, जर्नल ऑफ सोशियो–इकोनोमिक रिव्यु, माननीय कांशीराम शोध पीठ, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, वोल्यूम–2, अंक–1, अक्टूबर–2014, पृष्ठ 96–98।
- सरोज, मोनिका एवं मिश्रा, ऊषा (2013), ग्रामीण विकलागों हेतु रोजगार की जानकारी एवं जागरुकता, कुरुक्षेत्र, प्रकाशन विभाग, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, वर्ष–59, अंक–04, फरवरी–2013, पृष्ठ 26–30।
- डेविस शेरोन (1997). दि अर्च हयूमन जिनोमे एजूकेशन प्रोजेक्ट, यूएसए

प्रियंका मल्होत्रा
शोधार्थी
डॉ0 विष्णु शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
जयपुर नेशनल विश्वविद्यालय
जयपुर
(राजस्थान)

30

IMPACT OF ICT ON STUDENTS ACADEMIC PERFORMANCE

Ms. Manju, Dr. Sunita Bishnoi

ABSTRACT

Information and communication technology is known to as ICT. It deals with digital data storage, retrieval, manipulation, transmission, and receiving. ICT is a powerful tool that influences every facet of human existence. No sector is unaffected by the digital revolution. It also applies to education. ICTs are starting to play a major role in our educational system. Our educational system is now part of a knowledge and information society. It is now an important component of the teaching and learning process in our modern society. Giving pupils the chance to acquire and employ 21st century skills requires a lot of ICT use in the classroom. When more and more information is being shared digitally ICT is playing an ever-more-important role in education. An attempt has been made to address the impact of ICT on students' academic achievement in this study. This paper also discusses the problems and difficulties associated with integrating ICT into the classroom.

Keywords: Information Communication Technology, Education, Performance, Blended learning, Distance learning

INTRODUCTION

Information and communication technologies are referred to as ICTs. Information and communication technologies, or ICTs, offer communication-based information access. It bears similarities to IT, or information technology. However, it is mostly concerned with communication technology. This covers wireless networks, cell phones, the internet, and other communication mediums. ICT have given society access to a wider variety of new communication capabilities during the last few decades. "People can stay in touch and communicate regularly with people from all over the world using social networking websites like Facebook. People can also communicate in real time with people in different countries using technologies like voice over IP, video conferencing, and instant messaging." individuals now talk with individuals all over the world as if they were neighbors because to the development of the global village brought about by modern information and communication technologies. Over the past three decades, information and communication technology has become so widely available that it is impossible to imagine a world without it, whether it be in the corporate sector, the health sector, or the educational system. It has undoubtedly had an impact in a variety of fields, helping to redefine professional education at a time when education is seen as the cornerstone of national growth.

This is a result of the dynamic nature of both the domestic and international markets, which demand highly qualified and competent human resources. Without a question, the only countries that can survive in this cutthroat environment are those that have advanced technology and know how to apply them to a variety of developmental fields. Therefore, human resources—especially the youth of developing nations—must be trained based on professionalism on the framework of developed nations through technology courses so that they gain professional abilities to confront at various levels and advance the country.

Countries are currently competing with one another in the twenty-first century to get the advantage needed to achieve ongoing growth and development, whether it is social or economic. Therefore, by adhering to all those systems and procedures that put them on par with their rivals in other parts of the universe, endure the states in developing competitive economies that rely on the quality and competence of its human resources, which they acquire through higher education schemes. The use of information and communication technology in strategic sectors contributes to national development, which is of great significance to education planners. In recent times, technology has evolved in comparison to ICT. Perhaps the revitalization of outdated technologies by new ones has truly transformed the world into a global community where knowledge can be easily accessed with a single button press. These days, every aspect of a person's life—whether they are working, living, or learning—goes through stages of infiltration by information technology. The emergence of technology has brought about a significant transformation in various facets of life, including planning, policy formulation, and implementation (Bakshi, 2012). Over the past few decades, information and communication technology has undergone incredible transformations, purposefully paving the way for applications in corporate, pharmaceutical, and medical fields. The nation or society is changing very quickly as a result of the necessity for the youth generation to be prepared for society's needs before it can advance. Proficiency and expertise are important factors in achieving this goal. The fundamental requirement of a developed civilization in the global community is a skilled and competent labor force (Snehi, 2009). In today's knowledge-

based culture, it doesn't matter how much or what kind of knowledge a person possesses—what matters is how they apply their knowledge. The increasing global usage of technology calls on young people to possess the accuracy and proficiency that are considered to be the most important aspects of professionalism.

Types of ICT's Used in Education

Information and communication technologies, or ICTs for short, are a broad category of technological instruments and resources used for information creation, sharing, storing, and management as well as communication. "Computers, the Internet, radio and television broadcasting technologies, and telephony are among these technologies." The finest ways to use internet and computers to increase the usefulness and efficiency of education at each and every level and in both official and informal settings have garnered a lot of attention in recent years. "But ICTs are more than just these technologies; even though they receive less attention these days, older technologies like the telephone, radio, and televisions have a longer and richer history as teaching tools." For example, television and radio have been utilized for distance and open learning for more than 40 years, even if print is still the most affordable, most widely used, and hence most dominating delivery method in both developed and developing nations. Because of lacking of infrastructure and high connection fees, Internet usage and computer is still in its infancy in poor nations.

E-learning

Any formal or informal learning that uses an information network—the Internet, a local area network (LAN), a wide area network (WAN), or both—for interaction, assessment, facilitation, and/or course delivery is referred to as e-learning. The most common connections are with corporate training and postsecondary education. Some prefer to refer to it as "online learning." One subset of e-learning is called "web-based learning," which is basically learning via the Internet using a browser (such Internet Explorer, Firefox, or Chrome). It might also be thought of as electronic device-based learning.

Blended learning

Blended learning is another concept that is becoming more and more popular. "This refers to learning models that integrate e-learning resources with conventional classroom instruction." In a typical classroom, for instance, students may be given both print and online assignments, participate in online chat mentoring sessions with their teacher, and be added to the class email list. "Or, on occasion, in-person instruction can improve a web-based training course." The realization that not all learning is best accomplished in an electronically-mediated setting—especially one that completely eliminates the need for a live instructor—led to the development of blended learning. "Instead, to determine the best combination of instructional and delivery methods, consideration must be given to the subject matter, the learning objectives and outcomes, the characteristics of the learners, and the learning context."

Open and Distance learning

Open and distance learning is defined by the Commonwealth of Learning as a way to provide learning opportunities that center around the physical and/or temporal partition of the teacher and the student; learning that is recognized by an organization or institution; the use of electronic and print media; two-way interactions that help students and tutors interact; the possibility of occasional in-person meetings; and a specialized division of labor in the development and delivery of courses.

REVIEW OF LITERATURE

J.Jammeh et al(2023) recommended the framework, which offered a model of technological pedagogical content knowledge (TPACK), could be used in various aspects of the teaching and learning process. The findings showed that educators could create lessons where technology, pedagogy, and content interact, and they could also connect all areas of knowledge. But as the observed teachers pointed out, doing away with conventional teaching techniques is difficult.

Sinha and Bag(2023) examined the elements influencing college students' intentions regarding online learning. Additionally, the study emphasizes how crucial students' stability and resilience are to their perceptions of online education's utility and simplicity, which in turn shape their attitudes about it. The findings suggest that students' propensity to use online learning platforms is directly influenced by their perceptions of the platforms' perceived utility and ease of use. Additionally, students' attitudes are positively impacted by perceived utility and ease of use, and attitudes have a significant impact on students' intention to use online learning environments.

Farha et al(2022) demonstrated how widespread research on the effects of employees' heavy reliance on information and communication technology (ICT) has resulted from growing worry about this use. The study's goal was to investigate how ICT demand and use affect work-life balance, personal burnout, job satisfaction and desire to leave as employee-related outcomes. A survey questionnaire that was given to academics and

administrative staff in Qatar's higher education (HE) sector was used to assess the created model. The findings demonstrated that employee-related outcomes are highly influenced by ICT demand, which in turn is influenced by ICT use.

Gupta et al(2022) provide a numerical analysis of the academic literature on this subject. The study's goal was to identify how information and communication technology (ICT) tools are used in a variety of industries, including business, FMCG, education, healthcare, and entertainment, during the social distancing phase. The study's findings demonstrated how ICT helps the economy survive by fostering a virtual environment and enabling people to maintain social connections in the midst of the epidemic. Research is needed since the facts are not supported by any empirical data.

Shehzadi et al.(2020) examined how information and communication technology (ICT), e-service quality, and e-information quality affected university brand image by focusing on students' e-learning, e-word-of-mouth, and contentment. The target audience consisted of students enrolled in both public and private universities in Pakistan. The findings demonstrated that ICT, e-service quality, and e-information quality all have a favorable effect on students' e-learning, which in turn promotes positive e-word of mouth and student satisfaction. Concurrently, the results showed that electronic word-of-mouth and high levels of student satisfaction support the growth of a positive university brand image.

STATEMENT OF THE PROBLEM

With the introduction of Information Communication Technology, students now have extra sources of information other than to university libraries, which is crucial for their educational success. The effect of ICTs on pupils' academic performance is investigated in this study. Students have several difficulties, including issues with hearing, access to information, and English language proficiency.

OBJECTIVES

1. To know the impact of ICT on students academic performance
2. To know challenges and issues related to ICT in education

POSITIVE IMPACT OF ICT ON STUDENTS

1. Prepare students with technical skills

In today's time the use of computers in the classroom has grown to be both ubiquitous and important in the contemporary world. Because of the abundance of resources and available online support, students may easily research and become expert in any field they choose. The greater the extent to which students utilize the growing technological advancements, the more they equipped will be to manage the intricacies they would encounter in their work after graduation.

2. Enhances learning and facilitates students

The biggest advantage of technology for kids is that it greatly facilitates and improves their learning process. Every information of each subject is published online at different websites, which students can visit in case they run into trouble. The finest part of technology is that it is just a click away system. Students can deal with their work from anywhere because smart phones, computers, and iPads are now so widely available to take around thanks to technology. Additionally, 3D printers and smart boards have found their way into classrooms, allowing students to practically learn the things they are studying.

The COVID-19 epidemic has increased stress levels, which has made technology even more important than it was previously. Because more classes were being taught online throughout the pandemic, students are learning an increasing amount about technology and how to use it for their studies. COVID-19 has forced schools and colleges to use technology more often than they did previously in order to support student learning. Tech companies are trying to create instruments and technology that is easy to use so that people would utilize it even more.

3. Enhances the minds of students

Students' minds are their greatest tool when it comes to learning. Their ability to generate ideas and innovations increases with its use. In a couple of seconds, you may locate any paper, research article, journal, video, or audio on any topic online. Millions of books are available on numerous websites that don't require you to leave your home. There are also video games that you can play to increase mental productivity. These games highlighting tactics and difficulties that encourage you to think like a problem solver.

4. Positive effect of Chat GPT on students

Chat GPT, an AI language model, can significantly influence pupils by giving them immediate answers to their questions. With Chat GPT, students may ask questions, get clarifications, and pick up new ideas in a conversational way.

The following are the ways in which Chat GPT can effect students:

- **Improved Learning**: Chat GPT can give students access to a wealth of knowledge and information,

assisting them in understanding difficult subjects and picking up new ideas.

- **Better Problem-Solving**: Chat GPT can facilitate the students in problem-solving by giving them with one by one solution to their queries.
- **Saved Time**: By giving students immediate answers to their questions, ChatGPT can save their time by removing the necessity for them to spend hours looking for knowledge.

ADVERSE IMPACT OF ICT ON STUDENTS

1.Decline social skills and increases laziness

Because so much information is readily available online, students can stop being critical thinkers. It could seem like a laborious task to study and conduct research when information is instantly available to you. When you know you can finish your essay at the last minute by just searching it up online, you won't use your originality to make your work stand out, which also results in increasing lethargy. The high addictiveness of technology is another disadvantage. This encourages students to work alone and independently rather than studying and thinking as a group.

2. Can be very distraction

Although many kids will benefit from using technology, it is also incredibly simple to become sidetracked while doing so. Online, there are a plethora of improper and ill-fitting items that might draw in students. Students who use technology excessively may become accustomed to it and find it easy to obtain. These kinds of interruptions have an impact on children' learning and may even be morally risky. Technology use needs to be governed by tight guidelines set by parents and teachers. The ease with which movies, games, and videos may be found online may also be a source of distraction for pupils.

3. Technology affects health

Everything is now so easily available thanks to technology that it is no longer necessary to stand up and move about in order to find what you're looking for. The widespread use of technology has increased the frequency of health problems. It impacts not just your bodily but also your mental well-being.

The issue of having bad vision has become commonplace due to the screens on all smartphones, computers, and iPads. They also produce more frequent headaches due to the brightness they generate. Because of the way we must hold ourselves and the amount of time we spend sitting, neck and spine issues are becoming more common. Obesity is the most frequent way that technology negatively impacts human health. Since video games and movies require students to sit still and use only their hands, they can get carried away and spend hours sitting around eating junk food, watching movies, and playing video games. This may lead to a rise in weight, which exacerbates conditions including high blood pressure and heart disease. Incorrect neck curvature from sitting can also cause students to have poor posture.

4. Negative effects of ChatGPT on students

It is a constant task for societies to learn how to incorporate new technologies. Artificial intelligence (AI) is becoming more and more prevalent in our daily lives and is developing quickly. Teachers are attempting to stay up to date with the use of ChatGPT by students. The following are a few detrimental impacts of ChatGPT on students:

Responses of Chat GPT are not based on facts: When it comes to responses, ChatGPT can sound quite convincing, but they aren't always supported by evidence. ChatGPT's incapacity to understand the context of specific tasks or events may result in it providing unsuitable or inaccurate responses.

Education quality impact: ChatGPT use may lower educational standards if users are not properly taught or assessed.

Job loss: It's possible that human instructors will lose their jobs as a result of ChatGPT's introduction in the classroom, especially in areas like grading and evaluation.

Ethical concerns: Concerns have been raised about ChatGPT's potential to propagate social injustices and biases in the classroom if it isn't trained on a wide variety of data.

Lack of interaction among human: Students may develop a lack of empathy and understanding if ChatGPT replaces human interaction.

Limited creativity: It's possible that ChatGPT will reduce students' ability to think creatively because it can only respond to questions based on the data it was trained on.

Limited language comprehension: For non-native speakers, ChatGPT may have trouble comprehending idiomatic idioms or colloquial language.

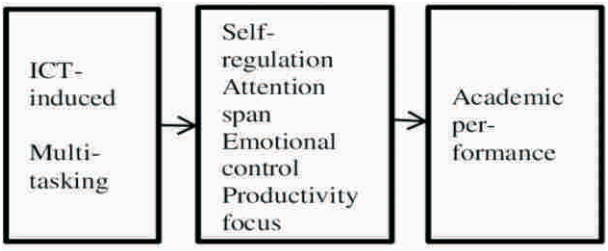

Figure 1: Conceptual framework for the effect of ICT-induced multitasking on student academic performance.

Source:

https://www.google.com/url?sa=i&url=https%3A%2F%2Fwww.semanticscholar.org%2Fpaper%2FEffect-of-

information-and-communication-on-academic-Jehopio Wesonga%2F7183e646f3c37c0aefaedc0fe81ca27a943ce130%2Ffigure%2F0&psig=AOvVaw30mylEipCL6YtJ9ebb5Ij&ust=1709702334073000&source=images&cd=vfe&opi=89978449&ved=0CBUQjhxqFwoTCJiL89Sv3IQDFQAAAAAdAAAAABAE

CHALLENGES AND ISSUES RELATED TO ICT IN EDUCATION

ICT is essential to enhancing our educational system. Even though ICT has enormous potential to enhance a country's educational system, this is not always the case in underdeveloped nations. When it comes to implementing ICT in education, our educational institutions face a number of significant problems and difficulties. The following are the problems and difficulties:

High Cost of ICT tools:- The primary obstacle to the effective integration of ICT in education is the high expense of ICT instruments. It is practically hard to buy the instruments needed to integrate ICT into education because of the high expense of those technologies compared to traditional face-to-face instruction.

Poor ICT Infrastructure:- A major obstacle to the effective use of ICT in education is a lackluster infrastructure. Inadequate hardware, software, internet connectivity, and other resources are needed to incorporate technology into teaching and learning, yet they are not enough in and of themselves.

Challenges of Language and Culture:- The majority of educational software created for the global market is available in English. The language most commonly used on the internet is English. The content on the internet is mostly in English. One major obstacle to maximizing the benefits of ICTs is the unsuitability of teaching and learning resources related to ICT in rural areas.

Lack of Technical Support:- Lack of technical support is another significant problem when it comes to ICT integration in education. For any educational institution to continue to be viable, technical assistance are necessary. Lack of specialized skill persons prevents educational institutions from integrating technology into their curricula.

Lack of Trained Teachers:- In order to integrate ICT in education, there is a shortage of qualified teachers. The usage of ICT in the classroom is not taught to teachers. In order to equip pupils with the talents they need for the twenty-first century, teachers must learn new abilities. as a result of inadequate instruction. Educators find it difficult to employ ICT resources to enhance teaching and learning.

Insufficient Funds:- ICT integration into the educational system necessitates a large amount of funding, infrastructure, and support services. However, the government does not provide enough funding for the use of ICT in education.

Weak Govt. Policies:- for the effective use of ICT in the classroom. The government needs policies badly. However, government policies are weak. Therefore, it is unlikely that ICT will be used in education.

- Conventional Curricular Frame work is also a barrier in integrating ICT in education.
- Poor attitude towards the use of technologies and unfavorable organizational culture is also a factor in integrating ICT in education.
- Lack of co-ordination among the agencies with the ICT responsibilities is also a obstacle in implementing ICT in education.

Conclusion: Overall, ICT impacts a lot both students as well as teachers. ICT has both advantages and disadvantages. It depends on the user that how they use the various tools of ICT. But in education ICT impact a lot the teaching and learning process of teachers and students. In education ICT provides a number of tools which enhances the students learning. With the help of ICT students academic performance increases rapidly in different aspects such as improved learning, better problem solving and saving of time. Teachers also enhance their teaching practices with the help of ICT tools such as MOOC's, You tube lectures, blended learning etc. In spite of some disadvantages we cannot ignore the role of ICT in education.

REFERENCES

Abe, T. O. & Adu, E.T. (2007). Impact of Information and Communication Technology (ICT) on Teacher Education in Ikere, *Journal of Education*, Ikere-Ekiti, vol. 5, pp. 169-175.

Arushanyan, Y., Ekener-Petersen, E., & Finnveden, G. (2014). Lessons learned–Review of LCAs for ICT products and services. Computers in industry, 65(2), 211-234.

Asongu, S. A., Le Roux, S., & Biekpe, N. (2018). Enhancing ICT for environmental sustainability in sub-Saharan Africa. Technological Forecasting and Social Change, 127, 209-216.

Bingimlas, K. A. (2009). Barriers to the successful integration of ICT in teaching and learning environments: A review of the literature. *Eurasia Journal of Mathematics, Science and Technology Education, 5* (3), 235-245.

Farha, A. K. A., Obeidat, S. M., & Al-Kwifi, O. S. (2022). ICT effect on employees-related outcomes: higher education as a context. *Journal of Systems and Information Technology*.

Gupta, S., Gupta, S., Kataria, S., & Gupta, S. (2022). ICT–a surviving tool for economy in the phase of social distancing: a systematic literature review. *Kybernetes*.

Jammeh, A. L., Karegeya, C., & Ladage, S. (2023). Application of technological pedagogical content knowledge in smart classrooms: views and its effect on students' performance in chemistry. *Education and Information Technologies*, 1-31.

Jazeel AM, Saravanakumar AR,Challenges for Improving Quality in Education at Primary and Secondary schools in India and Sri Lanka, Journal of Social Welfare and Management,vol:9,Iss:2,P-91, 2017.

Khattak, R., & Jan, R. (2015). The impacts of ICT on the students' Performance: A Review of Access to Information. *Research on Humanities and Social Sciences*, *5*(1), 85-94.

Namita Saxena , The role and impact of ICT in improving the quality of education: an overview international journal of engineering sciences & research technology, 2017.

Saha T(2023).The role of ICT in education: Challenges and Issues. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research*,10(2),794-801.

Shehzadi, S., Nisar, Q. A., Hussain, M. S., Basheer, M. F., Hameed, W. U., & Chaudhry, N. I. (2020). The role of digital learning toward students' satisfaction and university brand image at educational institutes of Pakistan: a post-effect of COVID-19. *Asian Education and Development Studies*.

Sinha, A., & Bag, S. (2023). Intention of postgraduate students towards the online education system: Application of extended technology acceptance model. *Journal of Applied Research in Higher Education*, *15*(2), 369-391

Ms. Manju
Research Scholar IMSAR, MDU/Assistant Professor,
Govt.PG College for Women, Rohtak
dhankharmanju1710@gmail.com
Dr. Sunita Bishnoi
Associate Professor DAVIM, Faridabad,
bishnoi.sunita@rediffmail.com

Ms. Manju
Govt. PG College for Women, Rohtak
Address- Vishal Nagar Near New Bus Stand, Rohtak
Mobile No.- 8708459860
Pin Code- 124001

31

RAJNITI KE BHEESHM PITAMAH : ATAL SADAIV ATAL

Dr. Renuka Poddar

ABSTRACT

25 December 1924 – 16 August 2018) was an Indian politician and poet who served three terms as the 10th Prime Minister of India, first for a term of 13 days in 1996, then for a period of 13 months from 1998 to 1999, followed by a full term from 1999 to 2004 . He was the first non-Indian national Congress prime minister to serve a full term in the office. Vajpayee was one of the co-founders and a senior leader of the Bharatiya Janata Party. He was a member of the RSS, a Hindu nationalist volunteer organisation. He was also a Hindi poet and a writer.

He was a member of the Indian Parliament for over five decades, having been elected ten times to the Lok Sabha, the lower house, and twice to the Rajya Sabha, the upper house. He served as the Member of Parliament from the Lucknow constituency, retiring from active politics in 2009 due to health concerns. He was among the founding members of the Bharatiya Jana Sangh, of which he was president from 1968 to 1972. The BJS merged with several other parties to form the Janata Party, which won the 1977 general election. In March 1977, Vajpayee became the Minister of External Affairs in the cabinet of Prime Minister, Morarji Desai. He resigned in 1979, and the Janata alliance collapsed soon after. Former members of the Bharatiya Jana Sangh formed the Bharatiya Janata Party in 1980, with Vajpayee its first president.

Janata Party and the BJP --1975-1995

Vajpayee was arrested along with several other opposition leaders during the Internal Emergency imposed by Prime Minister Indira Gandhi in 1975.[8][24] Initially interned in Bangalore, Vajpayee appealed his imprisonment on the grounds of bad health, and was moved to a hospital in Delhi.[25] In December 1976, Vajpayee ordered the student activists of the ABVP to tender an unconditional apology to Indira Gandhi for perpetrating violence and disorder.

Gandhi ended the state of emergency in 1977. A coalition of parties, including the BJS, came together to form the Janata Party, which won the 1977 general elections.

Gandhi ended the state of emergency in 1977. A coalition of parties, including the BJS, came together to form the Janata Party, which won the 1977 general elections. Morarji Desai, the chosen leader of the alliance, became the prime minister. Vajpayee served as the minister of external affairs, or foreign minister, in Desai's cabinet As foreign minister, Vajpayee became the first person in 1977 to deliver a speech to the United Nations General Assembly in Hindi.

He served as Member of Parliament, Lok Sabha, for various terms starting at Balrampur from 1957–1962. He served again from Balrampur from 1967–1971, then from Gwalior from 1971–1977, and then from New Delhi from 1977–1984. Finally, he served from Lucknow from 1991–2009.

He served as Member of Parliament, Lok Sabha, for various terms starting at Balrampur from 1957–1962. He served again from Balrampur from 1967–1971, then from Gwalior from 1971–1977, and then from New Delhi from 1977–1984. Finally, he served from Lucknow from 1991–2009.

Term1: May 1996

During a BJP conference in Mumbai in November 1995, BJP President Advani declared that Vajpayee would be the party's prime ministerial candidate in the forthcoming elections. Vajpayee himself was reported to be unhappy with the announcement, responding by saying that the party neThe BJP became the single largest party in Parliament in the 1996 general election, helped by religious polarisation across the country as a result of the demolition of the Babri Masjideded to win the election first.

Indian president Vajpayee was sworn in as the 10th prime minister of India,but the BJP failed to muster a majority among members of the Lok Sabha. Vajpayee resigned after 16 days, when it became clear that he did not have enough support to form a government.

Term 2: 1998–1999

dissolved and fresh elections were held. The 1998 general elections again put the BJP ahead of others. A number of political parties joined the BJP to form the National Democratic Alliance (NDA), After the fall of the two United Front governments between 1996 and 1998, the Lok Sabha was and Vajpayee was sworn in as the prime minister. The coalition was an uneasy one,[] as apart from the Shiv Sena, none of the other parties espoused the BJP's Hindu-nationalist ideology.Vajpayee has been credited for managing this coalition successfully, while facing ideological pressure from

the hardline wing of the party and from the RSS. Vajpayee's government lasted 13 months until mid-1999 when the All India Anna Dravida Munnetra Kazhagam (AIADMK) under J. Jayalalithaa withdrew its support .The government lost the ensuing vote of confidence motion in the Lok Sabha by a single vote on 17 April 1999. As the opposition was unable to come up with the numbers to form the new government, the Lok Sabha was again dissolved and fresh elections were held.

Nuclear tests

In May 1998, India conducted five underground nuclear tests in the Pokhran desert in Rajasthan, 24 years after its first nuclear test (Smiling Buddha) in 1974. Two weeks later, Pakistan responded with its own nuclear tests making it the newest nation with declared nuclear capability. While some nations, such as France, endorsed India's right to defensive nuclear power,others including the United States, Canada, Japan, Britain and the European Union imposed sanctions on information, resources and technology to India. In spite of intense international criticism and steady decline in foreign investment and trade, the nuclear tests were popular domestically.

Lahore summit

In late 1998 and early 1999, Vajpayee began a push for a full-scale diplomatic peace process with Pakistan. With the historic inauguration of the Delhi-Lahore bus service in February 1999, Vajpayee initiated a new peace process aimed towards permanently resolving the Kashmir dispute and other conflicts with Pakistan. The resultant Lahore Declaration espoused a commitment to dialogue, expanded trade relations and mutual friendship and envisaged a goal of denuclearised South Asia.

AIADMK's withdrawal from coalition

The AIADMK had continually threatened to withdraw from the coalition and national leaders repeatedly flew down from Delhi to Chennai to pacify the AIADMK general secretary J. Jayalalithaa. However, in May 1999,

Kargil war

In May 1999 some Kashmiri shepherds discovered the presence of militants and non-uniformed Pakistani soldiers (many with official identifications and Pakistan Army's custom weaponry) in the Kashmir Valley, where they had taken control of border hilltops and unmanned border posts. The incursion was centred around the town of Kargil, but also included the Batalik and Akhnoor sectors and artillery exchanges at the Siachen GlacieThe Indian army responded with Operation Vijay, which launched on 26 May 1999. This saw the Indian military fighting thousands of militants and soldiers in the midst of heavy artillery shelling and while facing extremely cold weather, snow and treacherous terrain at the high altitude.

After Pakistan suffered heavy losses, and with both the United States and China refusing to condone the incursion or threaten India to stop its military operations, General Pervez Musharraf was recalcitrant and Nawaz Sharif asked the remaining militants to stop and withdraw to positions along the LoC. The militants were not willing to accept orders from Sharif but the NLI soldiers withdrew The militants were killed by the Indian army or forced to withdraw in skirmishes which continued even after the announcement of withdrawal by Pakistan.

Prime Minster(1999-2004)

1999–2002

The 1999 general elections were held in the aftermath of the Kargil operations. The BJP-led NDA won 303 seats out of the 543 seats in the Lok Sabha, securing a comfortable and stable majority. On 13 October 1999, Vajpayee took oath as the prime minister of India for the third time.

A national crisis emerged in December 1999, when Indian Airlines flight IC 814 from Kathmandu to New Delhi was hijacked by five terrorists and flown to Taliban-ruled Afghanistan The hijackers made several demands including the release of certain terrorists like Masood Azhar from prison. Under pressure, the government ultimately caved in. Jaswant Singh, the minister of external affairs at the time, flew with the terrorists to Afghanistan and exchanged them for the passengers.

In March 2000, Bill Clinton, the President of the United States, paid a state visit to India.

In March 2001, the Tehelka group released a sting operation video named Operation West End which showed BJP president Bangaru Laxman, senior army officers and NDA members accepting bribes from journalists posing as agents and businessmen.

Vajpayee initiated talks with Pakistan, and invited Pakistani president Pervez Musharraf to Agra for a joint summit. President Musharraf was believed to be the principal architect of the Kargil War in India.

2001 attack on Parliament

On 13 December 2001, a group of masked, armed men with fake IDs stormed Parliament House in Delhi. The

terrorists managed to kill several security guards, but the building was sealed off swiftly and security forces cornered and killed the men who were later proven to be Pakistan nationals Vajpayee ordered Indian troops to mobilise for war, leading to an estimated 500,000[1] to 750,000 Indian soldiers positioned along the international border between India and Pakistan. Pakistan responded by mobilising its own troops along the border. A terrorist attack on an army garrison in Kashmir in May 2002 further escalated the situation. As the threat of war between two nuclear capable countries and the consequent possibility of a nuclear exchange loomed large, international diplomatic mediation focused on defusing the situation In October 2002, both India and Pakistan announced that they would withdraw their troops from the border.

5 Decisions by Atal Bihari to Change India

Atal Bihari Vajpayee remains the only non-Congress prime minister to have occupied the chair three times and only the third overall after Jawaharlal Nehru and Indira Gandhi. His first tenure was uneventful in terms of governance but the other two terms, which were consecutive, changed India forever in many aspects.

Telecom Revolution

When Atal Bihari Vajpayee assumed office in 1998, India's telecom sector was static and lacked almost any momentum. Though the first mobile phone call had been made in 1995, nothing much had happened thereafter. Vajpayee brought the new telecom policy and opened up the sector.

Connecting India

Atal Bihari Vajpayee envisaged a highway network to connect the corners of the country. This is the fifth largest highway project in the world. This project looks like an urban centre connection programme but it was actually a policy to give Rural India access to Urban India.

A total of around 6,000 km of the highway was built - completed in 2012, six years after the original deadline of 2006. It generated thousands of employment opportunities for Rural India. It was aimed at facilitating greater and faster access to produces of the villages and agricultural farms.

Rich And Healthy Government

The first serious attempt to make Indian government economically strong was made in 1991 when doors were opened to private sectors in all fields except those related to national security. But by the time, Atal Bihari Vajpayee became the prime minister, the government was still the single-largest job provider and guarantor of the economic well-being of the masses. Indian government never had the means to do the job.

Rich And Healthy Government

The first serious attempt to make Indian government economically strong was made in 1991 when doors were opened to private sectors in all fields except those related to national security. But by the time, Atal Bihari Vajpayee became the prime minister, the government was still the single-largest job provider and guarantor of the economic well-being of the masses. Indian government never had the means to do the job.

Education For All

For decades after Independence, the governments at the Centre had failed to find a way to give a big boost to school education and check drop-out rates. Atal Bihari Vajpayee government came up with a simple yet novel scheme called Sarva Shiksha Abhiyaan or campaign for universal education.

Policies

Vajpayee's government introduced many domestic economic and infrastructural reforms, including encouraging the private sector and foreign investments, reducing governmental waste, encouraging research and development and privatisation of some government owned corporations.

2004 General Election

In 2003, news reports suggested a tussle within the BJP with regard to sharing of leadership between Vajpayee and DIn 2003, news reports suggested a tussle within the BJP with regard to sharing of leadership between Vajpayee and Deputy Prime Minister .

However, the BJP could only win 138 seats in the 543-seat parliament,with several prominent cabinet ministers being defeated. The NDA coalition won 185 seats. The Indian National Congress, led by Sonia Gandhi, emerged as the single largest party, winning 145 seats in the election. Vajpayee was referred to as the *Bhishma Pitamah* of Indian politics by former prime minister Manmohan Singh during a speech in the Rajya Sabha, a reference to the character in the Hindu epic Mahabharata who was held in respect by two warring sides.

Positions held

Further information: Electoral history of Atal Bihari Vajpayee

Year	Position	Place	Party	Remark
1951	Founding-Member	Bharatiya Jana Sangh	Bharatiya Jana Sangh	
1957–1962	MP, Balrampur (Lok Sabha constituency)	2nd Lok Sabha	Bharatiya Jana Sangh	1st Term
1957–1977	Leader	Bharatiya Jana Sangh Parliamentary Party	Bharatiya Jana Sangh	
1962–1968	MP, Uttar Pradesh, Rajya Sabha	Rajya Sabha	Bharatiya Jana Sangh	1st Term (Resigned on 25 February 1967) Elected to Lok Sabha
1966–1967	Chairman	Committee on Government Assurances	Rajya Sabha	
1967	MP, Balrampur (Lok Sabha constituency)	4th Lok Sabha	Bharatiya Jana Sangh	2nd Term
1967–70	Chairman,	Public Accounts Committee	Bharatiya Jana Sangh	
1968–1973	President	Bharatiya Jana Sangh	Bharatiya Jana Sangh	
1971	MP, Gwalior (Lok Sabha constituency)	5th Lok Sabha	Bharatiya Jana Sangh	3rd Term
1977	MP, New Delhi (Lok Sabha constituency)	6th Lok Sabha (4th term)	Janata Party	(4th term)
1977–1979	Union Cabinet Minister,	External Affairs	Janata Party	
1977–1980	Founding Member	Janata Party	Janata Party	
1980	MP, New Delhi (Lok Sabha constituency)	7th Lok Sabha	Bharatiya Janata Party	(5th term)
1980–1986	President,	Bharatiya Janata Party	Bharatiya Janata Party	
1980–1984, 1986 and 1993–1996	Leader	Parliamentary Party	Bharatiya Janata Party	
1986	MP, Madhya Pradesh, Rajya Sabha	Rajya Sabha	Bharatiya Janata Party	2nd Term
1988–1989	Member,	General Purposes Committee	Rajya Sabha	
1988–1990	Member,	House Committee Member, Business Advisory Committee	Rajya Sabha	
1990–1991	Chairman,	Committee on Petitions	Rajya Sabha	
1991	MP, Lucknow (Lok Sabha constituency)	10th Lok Sabha	Bharatiya Janata Party	(6th term)
1991–1993	Chairman,	Public Accounts Committee	Lok Sabha	
1993–1996	Chairman,	Committee on External Affairs	Lok Sabha	
1993–1996	Leader of Opposition,	Lok Sabha	Bharatiya Janata Party	
1996	MP, Lucknow (Lok Sabha constituency)	11th Lok Sabha	Bharatiya Janata Party	7th Term
16 May 1996 – 31 May 1996	Prime Minister of India; and in charge of other subjects not allocated to any other Cabinet Minister	Bharatiya Janata Party	Bharatiya Janata Party	
1996–1997	Leader of Opposition,	Lok Sabha	Bharatiya Janata Party	
1997–1998	Chairman,	Committee on External Affairs	Lok Sabha	
1998	MP, Lucknow (Lok Sabha constituency)	12th Lok Sabha	Bharatiya Janata Party	8th Term
1998–1999	Prime Minister of India; Minister of External Affairs; and also incharge of Ministries/Departments not specifically allocated to the charge of any Minister	Bharatiya Janata Party	Bharatiya Janata Party	
1999	MP, Lucknow (Lok Sabha constituency)	13th Lok Sabha	Bharatiya Janata Party	9th Term
1999	Leader,	Parliamentary Party, Lok Sabha	Bharatiya Janata Party	
13 Oct.1999- May 2004	Prime Minister of India and also in charge of th Ministries/Departments not specifically allocated to the charge of any Minister	Bharatiya Janata Party	Bharatiya Janata Party	
2004	MP, Lucknow (Lok Sabha constituency)	14th Lok Sabha	Bharatiya Janata Party	10th Term
2004	Chairman,	Parliamentary Party	Bharatiya Janata Party & National Democratic Alliance (India)	

On 11 June 2018, Vajpayee was admitted to AIIMS in critical condition following a kidney infection. He was officially declared dead there at 5:05 pm IST on 16 August 2018 at the age of 93.

HONOURS AND AWARDS

1) PADMA BHUSHAN
2) BHARAT RATNA
3) BANGLADESH LIBERATION WAR HONOUR

Other achievements

- In 2012, Vajpayee was ranked number 9 in *Outlook* magazine's poll of *The Greatest Indian*.
- In August 2018, Naya Raipur was renamed as Atal Nagar.
- In October 2018, four Himalayan peaks near Gangotri glacier named after his name.

PUBLISHED BOOKS

Vajpayee authored several works of both Hindi poetry and prose. Some of his major publications are listed below. In addition to these, various collections were made of his speeches, articles, and slogans.

Prose

- *National Integration* (1961)
- *New Dimensions of India's Foreign Policy* (1979)
- *Gathbandhan Ki Rajniti*
- *Kuchh Lekh, Kuchh Bhashan* (1996)
- *Bindu-Bindu Vichar* (1997)
- *Decisive Days* (1999)
- *Sankalpakal* (1999)
- *Vichar-Bindu* (Hindi Edition, 2000
- *India's Perspectives on ASEAN and the Asia-Pacific Region* (2003
- *Na Dainyam Na Palayanam*
- *Nayi Chunauti : Naya Avasar*

Poetry

- *Qaidi Kaviraj Ki Kundaliyan*
- *Amar Aag Hai* (1994)
- *Meri Ikyavan Kavitaen* (1995)Some of these poems were set to music by Jagjit Singh for his album *Samvedna*.
- *Kya Khoya Kya Paya: Atal Bihari Vajapeyi, Vyaktitva Aur Kavitaen* (1999)
- *Values, Vision & Verses of Vajpayee: India's Man of Destiny* (2001)
- *Twenty-One Poems* (2003)
- *Chuni Hui Kavitaen* (2012)

REFERENCES

Singh, N. K (31 May 1996). "Atal Bihari Vajpayee: A private person with strong dislikes and few close friends". *India Today*. Retrieved 13 October 2023.

"The outliers who won the PMs post". Archived from the original on 12 November 2016. Retrieved 24 July 2017.

S, R.B. (2005). *Quintessence - Perspectives On Contemporary Issues*. ICFAI University Press. p. 277. ISBN 978-81-7881-514-5.

Sources

- *Current Biography Yearbook, vol. 61, H. W. Wilson Company, 2000*
- *Ahuja, M. L. (1998), Electoral Politics and General Elections in India, 1952–1998, Mittal Publications, ISBN 9788170997115*
- *Bose, Sumantra (2013), Transforming India, Harvard University Press, ISBN 978-0-674-72819-6*
- *Ch*itkara, M. G.; Śarmā, Baṃśī Rāma (1997), *Indian Republic: Issues and Perspective, APH Publishing, ISBN 9788170248361*
- *Dixit, J. N. (2 September 2003), Taylor & Francis Group, Routledge, doi:10.4324/9780203301104, ISBN 978-1-134-40758-3*
- *Dossani, Rafiq (2008), India Arriving: How This Economic Powerhouse Is Redefining Global Business, AMACOM Div American Mgmt Assn*
- *Guha, Ramachandra (2007), India after Gandhi: the history of the world's largest democracy, India: Picador, ISBN 978-0-330-39610-3*

Dr. Renuka Poddar
Assistant professor
Dept of Political .Science
drrenukapoddar@gmail.com
RKDF University,Ranchi
Jharkhand.

32

Enhancing Teacher Education: Strategies for Effective Pedagogy and Professional Development

Dr. Reena Rai

Abstract :

This paper explores strategies aimed at enhancing pedagogy and professional development in teacher education. Effective pedagogy is essential for preparing teachers to meet the diverse needs of students and to facilitate meaningful learning experiences. Professional development plays a crucial role in supporting teachers' ongoing growth and ensuring they remain current with best practices in education. This paper examines various strategies, including innovative teaching methods, technology integration, mentorship programs, collaborative learning communities, and reflective practices. By implementing these strategies, teacher education programs can empower educators to excel in their roles and positively impact student learning outcomes. Additionally, the abstract highlights the importance of research-based approaches and ongoing evaluation to continuously improve teacher education practices. Through a combination of theory and practical application, this paper provides valuable insights into enhancing pedagogy and professional development in teacher education.

Key Words : Mentorship programs, Collaborative learning communities, Reflective practices, Research-based approaches, Continuous improvement, Student learning outcomes

Introduction :

Enhancement of teacher education is crucial for several reasons:

Quality of Teaching: Enhanced teacher education ensures that educators are equipped with the knowledge, skills, and competencies needed to deliver high-quality instruction. Well-prepared teachers are more effective in facilitating student learning and promoting academic success.

Meeting Diverse Student Needs: Teacher education programs need to prepare educators to work with diverse student populations, including those from different cultural, linguistic, and socioeconomic backgrounds, as well as students with varying learning styles and abilities. Enhanced teacher education addresses the needs of all learners and promotes inclusivity in the classroom.

Keeping Pace with Changes in Education: The field of education is constantly evolving, with new research, technologies, and instructional strategies emerging regularly. Teacher education programs must stay current with these developments to ensure that educators are prepared to meet the demands of 21st-century teaching and learning.

Addressing Educational Challenges: Enhanced teacher education can help address various challenges facing the education system, such as achievement gaps, low student performance, and inequitable access to quality education. Well-prepared teachers are better equipped to address these challenges and promote positive change within schools and communities.

Professionalization of Teaching: Investing in the enhancement of teacher education contributes to the professionalization of the teaching profession. By providing rigorous and comprehensive training, teacher education programs elevate the status of educators and promote teaching as a respected and valued profession.

Promoting Lifelong Learning: Teacher education should not end with initial certification or licensure but should continue throughout educators' careers. Enhanced teacher education promotes a culture of lifelong learning among educators, encouraging them to stay current with best practices, pursue professional development opportunities, and continuously improve their teaching practice.

Global Competitiveness: In an increasingly interconnected world, education plays a vital role in preparing students to compete in the global marketplace. Enhanced teacher education helps ensure that educators are prepared to help students develop the knowledge, skills, and competencies needed to thrive in a globalized society.

Overall, the enhancement of teacher education is essential for promoting excellence in teaching and learning, addressing educational challenges, and preparing educators to meet the needs of diverse learners in today's dynamic and complex educational landscape.

Strategies for Effective Pedagogy and Professional Development" delves into the critical components of teacher education aimed at enhancing pedagogical practices and fostering ongoing professional growth among educators. Effective pedagogy is essential for creating engaging and impactful learning experiences for students, while continuous professional development ensures that teachers remain abreast of emerging trends and best practices in education. This paper explores various strategies, including innovative teaching methods, technology integration, mentorship programs,

collaborative learning communities, and reflective practices, to empower educators in their roles. By implementing these strategies, teacher education programs can cultivate a culture of excellence, equipping teachers with the skills and knowledge needed to drive positive outcomes in student learning.

Enhanced teacher education can be achieved through various strategies and approaches aimed at preparing educators to meet the diverse needs of students and excel in their roles. Here are some ways to enhance teacher education:

Comprehensive Curriculum: Develop a well-rounded and comprehensive curriculum that covers pedagogical theories, instructional strategies, subject-specific content knowledge, classroom management techniques, and assessment methods.

Experiential Learning Opportunities: Provide opportunities for prospective teachers to gain practical experience through fieldwork, student teaching placements, and internships in diverse classroom settings. This hands-on experience allows them to apply theoretical knowledge in real-world contexts.

Integration of Technology: Incorporate technology into teacher education programs to familiarize future educators with digital tools, online resources, and instructional technologies that can enhance teaching and learning in the classroom.

Culturally Responsive Pedagogy: Emphasize the importance of culturally responsive teaching practices that recognize and respect the cultural backgrounds, experiences, and identities of students. Teacher candidates should learn how to create inclusive and equitable learning environments that celebrate diversity.

Reflective Practice: Foster a culture of reflective practice where teacher candidates engage in critical self-reflection, assess their teaching practices, analyze student learning outcomes, and identify areas for growth and improvement.

Ongoing Professional Development: Provide opportunities for continuous professional development to support the lifelong learning and growth of educators. This may include workshops, seminars, conferences, webinars, and graduate courses that focus on emerging trends, research-based practices, and pedagogical innovations.

Collaboration and Networking: Encourage collaboration and networking among educators, both within teacher education programs and with practicing teachers in the field. Peer learning, mentorship, and professional learning communities can provide valuable support and resources for teacher candidates.

Assessment and Feedback: Implement a comprehensive system for assessing teacher candidates' performance and providing constructive feedback. This may include formal evaluations, classroom observations, portfolio assessments, and self-assessments.

Strategies for Effective Pedagogy in Teacher Education:

Active Learning Techniques: Encourage interactive and hands-on learning experiences to engage students actively in the learning process. This can include group discussions, case studies, role-plays, and problem-solving activities.

Differentiated Instruction: Recognize and accommodate diverse learning styles, abilities, and backgrounds among students by adapting teaching methods, materials, and assessments to meet individual needs.

Use of Technology: Integrate technology tools and resources to enhance instruction and student engagement. This can include multimedia presentations, educational apps, online resources, and virtual learning environments.

Collaborative Learning Communities: Foster collaborative learning environments where students work together to solve problems, share ideas, and learn from one another. This can be achieved through group projects, peer teaching, and cooperative learning activities.

Reflective Practices: Encourage teachers to engage in reflective practices to critically examine their teaching methods, assess student learning outcomes, and identify areas for improvement. This can involve journaling, self-assessment, and seeking feedback from colleagues and mentors.

Culturally Responsive Teaching: Recognize and respect the cultural diversity of students by incorporating culturally relevant content, perspectives, and experiences into the curriculum. This helps create inclusive learning environments where all students feel valued and respected.

Inquiry-Based Learning: Promote inquiry-based learning approaches that encourage students to ask questions, investigate real-world problems, and construct their understanding through hands-on exploration and discovery.

Continuous Professional Development: Provide opportunities for ongoing professional development to support teachers in staying current with research-based teaching practices, pedagogical trends, and advancements in their subject areas.

By implementing these strategies, teacher education programs can empower educators to create dynamic and effective learning experiences that meet the needs of all students and prepare them for success in the classroom and beyond.

Strategies for Professional Development in Teacher Education:

Collaborative Learning Communities: Foster communities of practice where teachers can collaborate, share best practices, and support one another in their professional growth. This can involve regular meetings, professional learning communities, and peer observations.

Mentoring and Coaching: Pair novice teachers with experienced mentors who can provide guidance, feedback, and support as they navigate their teaching careers. Coaching sessions can focus on specific areas of improvement identified through observation and feedback.

Action Research: Encourage teachers to engage in action research projects where they can investigate classroom practices, implement interventions, and assess their impact on student learning. This reflective process promotes continuous improvement and evidence-based decision-making.

Professional Learning Workshops: Offer workshops, seminars, and conferences that provide opportunities for teachers to deepen their subject knowledge, explore new teaching strategies, and learn from experts in the field.

Online Learning Platforms: Utilize online learning platforms and virtual professional development opportunities to provide flexible and accessible learning experiences for teachers. This can include webinars, online courses, and self-paced modules.

Reflective Practices: Encourage teachers to engage in reflective practices such as journaling, self-assessment, and peer observation to critically examine their teaching practices, identify areas for growth, and set professional goals.

Curriculum Development Projects: Involve teachers in curriculum development projects where they can collaborate with colleagues to design, revise, and implement curriculum materials that align with instructional goals and standards.

Feedback and Evaluation: Provide regular feedback and evaluation to teachers through formal observations, informal classroom visits, and peer reviews. This feedback should be constructive, specific, and focused on areas for growth.

By implementing these strategies, teacher education programs can support the ongoing professional development of educators, ultimately enhancing teaching effectiveness and improving student learning outcomes.

Conclusion :

Enhancing teacher education through strategies for effective pedagogy and professional development is crucial for improving teaching quality, promoting student learning outcomes, and addressing the diverse needs of learners. By implementing comprehensive curriculum, providing experiential learning opportunities, integrating technology, fostering culturally responsive pedagogy, encouraging reflective practice, offering ongoing professional development, promoting collaboration, and establishing robust assessment and feedback mechanisms, teacher education programs can prepare educators to excel in their roles. Ultimately, investing in the enhancement of teacher education supports the professionalization of the teaching profession, promotes lifelong learning among educators, and contributes to positive educational outcomes for all students.

References :

- Baylor, A. L. (2002). Expanding preservice teachers' metacognitive awareness of instructional planning through pedagogical agents. Educational Technology Research and Development, 50(2), 5–22. https://doi.org/10.1007/BF02504991
- Baylor, A. L., &Kitsantas, A. (2005). A comparative analysis and validation of instructivist and constructivist self-reflective tools (IPSRT and CPSRT) for novice instructional planners. Journal of Technology and Teacher Education, 13(3), 433–457.
- Becher, T. (1989). Academic tribes and territories: Intellectual enquiry and the cultures of disciplines. The Society for Research into Higher Education; Open University Press.
- Berry, R. Q., III, Rimm-Kaufman, S. E., Ottmar, E. M., Walkowiak, T. A., & Merritt, E. (2010). The Mathematics Scan (M-Scan): A measure of mathematics instructional quality. University of Virginia.
- Borko, H., Liston, D., & Whitcomb, J. A. (2007). Genres of empirical research in teacher education. Journal of Teacher Education, 58(1), 3–11. https://doi.org/10.1177/0022487106296220
- Boston, M. (2017). Instructional Quality Assessment in Mathematics Classroom Observation Toolkit. Duquesne University.
- Boyd, D. J., Grossman, P. L., Lankford, H., Loeb, S., & Wyckoff, J. (2009). Teacher preparation and student achievement. Educational Evaluation and Policy Analysis, 31(4), 416–440. https://doi.org/10.3102/0162373709353129
- Bravo, M. A., Mosqueda, E., Solís, J. L., &Stoddart, T. (2014). Possibilities and limits of integrating science and diversity education in preservice elementary teacher preparation.
- Fallon, D. (2009). Teacher education, schools of education, and universities: Recalibrating the

compass. Author: NYC. Gansle, K. A., Noell, G. H., & Burns, J. M. (2012). Do student achievement outcomes differ across teacher preparation programs? An analysis of teacher education in Louisiana. Journal of Teacher Education, 63(5), 304–317. https://doi.org/10.1177/0022487112439894

- Giebelhaus, C. R., & Bowman, C. L. (2002). Teaching mentors: Is it worth the effort? The Journal of Educational Research, 95(4), 246–254. https://doi.org/10.1080/00220670209596597
- Gonzalez, K.E. (2020). The influence of colleagues' participation in professional development on teacher classroom quality and child outcomes: Spillover effects and benefits to collective participation. Manuscript in preparation.
- González, G., & Eli, J. A. (2017). Prospective and in-service teachers' perspectives about launching a problem. Journal of Mathematics Teacher Education, 20(2), 159-201. Grossman, P. (2008). Responding to our critics: From crisis to opportunity in research on teacher education. Journal of Teacher Education, 59(1), 10–23.

Dr. Reena Rai
Education
Dr. Reena Rai
991-ASector Sudama Nagar
Main Road
Near - Smrati Dwar
Indore (M.P.)
Pin - 452009
Mob. 9584231840

33

A STUDY OF WOMEN EMPOERMENT AND ECONOMIC DEVELOPMENT IN HARYANA

Sarika Jain, Dr. Monika Narula

ABSTRACT –

The empowerment of women essentially refers to the feeling of awareness of one's own situation backed up with the knowledge, skill and information which could enable women to gain higher self- esteem and facilitate their role as decision makers in the current society where women have always been subordinate to men. The census 2011, counts women population @ 48.5% of the total population in India, in the changing dynamics of the society women empowerment is much relevant and very important. Honorable Prime Minister Shri Narender Modi ji has also spoken for women empowerment on 82ndedition of Mannki Baat. Education plays an important role in building self-confidence among women it also enables to change her status in the society. Skilling and micro financing can get women financially stable and therefore she is no longer dependent upon on others in the society. As the progress of humanity is incomplete without women therefore successive government has launched number of schemes for empowerment of women in male dominated society. In position of women in Haryana is miserable. In terms of sex ratio, they leg much behind with their counterparts' males with 877 females per thousand males in 2011 census. The level of literacy rate is also very low among females in comparison of male literacy rates. The level of women empowerment in Haryana is associated with lack of access to resources, harassment given to women in household, lack of finance, lack of support, less amount of nutrition etc. The paper is an attempt to analyze the status of women in Haryana with the help of sex ratio, women literacy and their work participation rate.

KEY WORDS: Women empowerment, Education, Socio-Economic Status.

INTRODUCTION –

India is known as a country of disparity in terms of social, cultural and wide economic variations due to the male dominance based social structure. This social and economic wellbeing and hence in the empowerment of women is crucial for the economic development of a country and bringing a change in society. In order to improve the socio-economic conditions of the population of any country, it has become important to empower women to the utmost level. Empowerment refers to an increase in the strength political and economic. Empowerment of women would necessarily mean redefining the notion of femineity and masculinity as well as changing men-women relationship. This is something more and more women are now talking about contrary to the rum ours which are spread, feminists are not against men. They want men who are gentle and carrying. The new models of goodmen for women are not muscular, aggressive and supermen but men like Mahatma Gandhi, Guru Nanak, Buddha etc. They want husbands who can not only act as father but also as a mother. Empowerment of women is not only the adult educators and activists who can go and empower other. It is a two-way process in which women empower and get empowerment. This is an ongoing journey for all the women. No one can become empowered for good and then become an expert in empowering others. As women account for more than half of the world's illiterate population achieving literacy could be one of the first steps or improving women to participate more in society and free themselves from economic exploitation and oppression. The empowerment of womenand the improvement of their status, particularly in respect of education, health and economic opportunity is a highly important end. In addition, this also enhances their decision-making capacity in vital areas, especially in the areas of reproduction. Education is one of the most important means of empowering women and of giving the knowledge, skill, and self- confidence necessarily, to be full partners in the development process.

OBJECTIVES OF THE STUDY-

The main objective of the present study is to analyze the status of women in Haryana through the variable of sex-ratio, gender differences in literacy and women work participation rates.

DATA-BASE AND METHODOLOGY

The present study is entirely based on secondary data. The required data has been collected from primary census abstracts of Haryana-state, various census publications of India. For representation of data, tables are used.For the completion of this research paper various tools like google scholar, Indian Journal, Economic Survey has been taken into consideration.

SEX RATIO IN HARYANA

As per the details from census 2011, Haryana has population of 2.54 crores, an increase from figure of 2.11 crore in 2001 census. Total population of Haryana as per latest census data is

25,351,462 of which male and female are 13,494,734 and 11,856,728 respectively. In 2001, total population was 21,144,564 in which male were 11,363,953while females were 9,780,611. The total population growth in this decade was 19.90 percent. Sex ratio in Haryana it was 28.06 percent. Sex ratio in Haryana is 879 i.e., for each 1000 male, which is below national average of 940 as per latest census. In 2001, the sex ratio of female was 861 per 1000 males in Haryana.

The gap between boys and girls in Haryana had been a cause for concern since 2011, when the census showed, that the state's sex ratio at birth of 834 was lowest in the country. This led to the state launching a stringent crackdown against female feticide. In 2015, it launched "Beti Bacho" with the center support to bring about social change. The campaign has shown results, from 876 that year, the state's sex ratio at birth climbed to 900 in 2016, followed by 914, After that, it saw a dip again- from 922 in 2020 to 914 in 2021.at 916 the SRB showed a slight improvement in2022 and continued to stay in the same mark last year as well. Meanwhile it has achieved till now. The health department said it has been carrying out awareness drive regularly, especially in rural areas. Experts said further strengthening the teams working at the group level is important to improve the sex ratio. "The government needs to further strengthen the PCPNDT Act and should take strong legal action against illegal abortion awareness drive and crucial, conducting such programs and monitoring the progress made at regular intervals is key," said D.V Sharan, former director of Haryana.

INITIATIVE BY THE GOVERNMENT FOR THE INCREASE OF SEX RATIO

The Ladli Scheme –

The scheme aims at curbing female feticide and improving the social state of the girl by supporting education and protecting them from discrimination. Sponsored by the state bank of India, in this scheme the account in the name of a girl child will be opened with the deposit of 10000 and subsequently with 5000 will be deposited with the girls.

Admission to classes –

Sable Scheme –

The main objective of this scheme is empowerment of adolescent girls. It includes bringing back the out of schoolgirls. It includes bringing back the out of schoolgirls. It includes bringing back the out of schoolgirls under the umbrella of formal and non-formal education. It would also contain information about important milestone of her life such as joining school, marriage etc.

Dhana Lakshmi Scheme –

Launched in2008. It is a conditional cash transfer scheme for child with insurance cover. It is aimed at providing cash transfer to the family of the girl child on fulfilling certain specific conditions such as birth and registration, immunization etc.

Table – 1

District wise data of population and sex ratio in Haryana (2011)

Districts	Male Population	Female population	Total Population	Sex ratio
Ambala	598703	529647	1128350	885
Panchkula	299679	261614	561293	873
Yamuna Nager	646718	567487	1214205	877
Kurukshetra	510976	4536789	964655	888
Kathal	571003	503301	1074304	881
Karnal	797712	707612	1505324	887
Sonipat	781299	668702	1450001	856
Rohtak	568479	492725	1061264	867
Jhajjar	554497	443738	958405	862
Faridabad	816690	843623	1809733	873
Palwal	571162	488211	1042708	880
Gurugram	474335	697743	15144322	854
Mewat	486665	518101	1089263	907
Rewari	474335	425997	900332	898
Mahendergarh	486665	435423	922088	895
Bhiwani	866672	767773	163445	886
Jind	713006	621146	133415	871
Hissar	931562	812369	1743031	872
Fateh Abad	495360	446651	942011	902
Sirsa	682582	612607	12951889	897

Source: National Commission for Women

The general sex ratio of Haryana in 1981 was 870 and the maximum sex ratio was recorded in Mahendergarh was 939 and the minimum sex ratio was recorded in Faridabad which was 811. During2001 census it was analyzed that the sex ratio of Haryana again decreased by 4 females (Per 1000). In 2001 it was 861 and the minimum sex ratio was recorded in Panchkula district and again the Mahendergarh district on the top.

FEMALE LTERACY RATE IN HARYANA –

A Chinese proverb aptly signifies the importance of female literacy as "If you plan for a few years, earn money; for ten years, then plant trees; but if you plan for a hundred years educate the women'. According to the census of India person who can read and right with understanding in any language aged above six years considered as literate. The population of women is almost half of the total population in Haryana. According to the census report 2011, the literacy rate in Haryana is 75.55% and 22nd rank in India. It has a wide gap between male and female literacy which accounts 84.06% and 65.94% respectively. Haryana main census is to tackle the problem of illiteracy among its female population. The data show that there is significant increase in female literacy rate. Data regarding female literacy in Haryana is obtained from census of India, statistical abstract of Haryana. The census year 2001 and 2011 is selected for the study.

Table – 2
District wise data of population and Literacy ratio (2011)

District	Male Population	Female Population	Total Population	Literacy ratio
Ambala	598703	529647	1128350	81.75
Panchkula	299679	261614	561293	81.88
Yamuna Nagar	646718	567487	1214205	77.99
Kurukshetra	510976	453679	964655	76.99
Kathal	571003	503301	1074304	69.15
Karnal	797712	707612	1505324	74.73
Panipat	646851	558580	1205437	75.94
Sonipat	781299	668702	1450001	79.12
Rohtak	568497	492725	1061204	80.22
Jhajjar	554497	443738	958405	80.65
Faridabad	816690	843623	1809733	81.70
Palwal	571162	488211	1042708	69.32
Gurugram	474335	697742	15144322	84.70
Mewat	486665	518101	1089263	54.88
Rewari	474335	425997	900332	80.99
Mahendergarh	486665	435423	922088	77.72
Bhiwani	866672	767773	163445	75.21
Jind	713006	621146	1334152	71.44
Hissar	931562	812369	1743931	72.89
Fateh bad	495360	446651	942011	67.92
Sirsa	682582	612607	1295189	68.82

Source: National Commission for women

During census year 2001 no. of district is found in very low female literacy category. Four districts namely (Kaithal, Jind, Fateh Abad, and Gurugram) lie in the category of low female literacy. In the category of moderate female literacy eight district (Karnal, Panipat, Sirsa, Hisar, Bhiwani, Jhajjar, Mahendergarh, Faridabad0lie in this category. Seven districts (Ambala, Yamuna Nagar, Kurukshetra, Sonipat, Rohtak, Rewari, Panchkula) are in the category of high female literacy in Haryana. The Main purpose of the study is to analyses the female literacy in Haryana. Almost all the districts show a positive change in female literacy. The data shows a continuously increasing literacy percent from55.7 percent to 66.8 percent respectively.

We need some policy to enhance the level of female literacy in the state of Haryana. Haryana is the forwarding state that has made the provision of free education for all girls studying at graduate level.

Women Work participation –

Despite being a financially successful Indian state, Haryana faces significant challenges when it comes to women. The state's socioeconomic status for women is shown by the tendency of female infanticide and the lowest sex ratio, notwithstanding claims made by the state administration that the sex Rekha: Female Work Force Participation as an Indicator of Development in Haryana 15 ratio has improved in recent years. (879 girls for 1000 males, according to the 2011 census). As of December 31, 2018, there were 924 females for every 1000 men, an increase from the gender ratio of 832 girls for every 1000 boys in 2012. (December 31, 2018; Times of India). Haryana, Punjab, Bihar, and Jammu & Kashmir have the lowest proportion of women working in both urban and rural regions when compared to the national average. (Department of Home Ministry, Registrar General and Census Commissioner, Ministry of Home Affairs, Government of India, 2013). Due to these factors. The state has a greater per capita income than the country. The government has become more active in the commercial and service sectors in recent years. The 2011 Indian Census indicates that 35.17 percent of the population is employed, with men making up 50.44 percent of the male population and women at 17.79 percent. A whopping 36.36 percent of all rural residents are employed. Male workers make up 50.05% of the male population in rural areas, whilst female employees make up 20.82% of the female population. Male workers make up 51.15 percent of the working male population and 12.10 percent of the working female population in urban regions, while the overall job participation rate is 32.95 percent. In India, 27.67% of the population is employed, 7.5% are marginal workers, and 64.83% are jobless, according to the 2011 Indian Census. Cultivators make up 27.82% of the workforce, followed by agricultural workforce (17.14%), home industry employees (2.94%), and other workers (52.1%). 32.78% of cultivators, 23.08% of agricultural workforce, 3.59% of domestic workers, and 40.55% of all other occupations are held by women. Men made up 55.68 percent of all employees, 2.74 percent of domestic workers, 15.3 percent of agricultural workers, 26.28 percent of cultivators, and 26.28 percent of agricultural workers. While Yamuna Nagar had the lowest rate of overall labour participation (25%) in 2011, Mahendergarh district had the highest rate (31.2%). (12 percent). Female workforce participation is greatest in Bhiwani district (25.1%) and lowest in Yamuna Nagar district. (8.3percent). The Sirsa district has the greatest rate

of male labour force participation (54.1%) while the Mewat region has the lowest rate. (39.3 percent). In Haryana, marginally working female workers make up about 79% of the total female population, and they hold 80.17 percent of the female employment. In the secondary market, 7.73% and 7.95%, respectively, are almost similar. Only 12.82% and 11.88% of women are employed in the postsecondary industry, correspondingly. In rural Haryana, more than 85% of poor women are employed in the agricultural industry, which accounts for 87.04% of all jobs. Both main and minor workers make up under 6% of the workforce in the intermediate and third sectors. In metropolitan Haryana, major economic workers make up 19.83% and 21.01% of peripheral female employees, whereas auxiliary workers make up 17% and 18.67%. Most of the underprivileged female workers in Haryana's metropolis labour in the secondary industry, which employs about 63.05% and 60.32% of female workers, respectively. Marginal female workers make up 17.11% and 18.67% of the tertiary industry, respectively. (Census of India, 2011).

FINDINGS AND SUGGESTIONS –

In order to fight against the socially constructed gender biases, women have to swim against the stream that requires more strength. Such a strength comes from the process of empowerment. Some of the empowerment mechanisms could be identified as follows-

- Literacy and higher education
- Better work participation in modernized sector.
- Higher age at marriage
- Necessarily financial support for self-employment
- Complete knowledge of her right: and above all
- Self-reliance, self-respect, and dignity of being a woman.

CONCLUSION-

By enhancing the participation of women in the mainstream of society, either through sex balancing or by providing the opportunity to women to have a higher involvement in workforce participation, we can rapidly change the picture of male dominance society of Haryana after 2001 census central govt. of India and Haryana like as, "Beti Bachao Beti Padhao" (Save daughter and educate daughter); "ladly Scheme", "Sukanya Dev Yojna" (money scheme for daughter); Kanya Kosh (funds for female); Dhana Lakshmi Scheme ,(a scheme for daughter,generally in India, girls one understood as "Dhanlaxmi that represent the goddess of wealth) and " Apni Bati Apna Dhan" (Our Daughter is our wealth). The Government of india also launched the national Mission for empowerment of women International Women's Day in 2010.

REFERENCES-

- www.inspirajournals.com
- www.worldwidejournals.com
- www.indiaonlinepages.com
- www.census2011.co.in
- www.shodhgangotri.inflibnet.ac.in
- Chowdhry, P. (1993). High participation, low evaluation: women and work in rural Haryana. Economic and Political Weekly, A135-A148.
- Appelbaum, R. P., & Robinson, W. I. (Eds.). (2005). Critical globalization studies. Psychology Press.
- Benería, L. (2012). The World Bank and gender inequality. Global Social Policy, 12(2), 175-178.
- World Bank. (2011). World development report 2012: Gender equality and development. The World Bank.
- Sinha, J. N. (1975). Female work participation: A comment. Economic and political Weekly, 672- 674.

Sarika Jain

9899994911

Monika Narula

9810675580

Address: Flat No. 301,

Narkana Apartment

Sector -31, Gurugram (Haryana)

Pin - 122001

34

(THE ROLE OF ADVERTISING)

Neetu

ABSTRACT –

Advertisements that make use of nonverbal communication techniques. Currently, the most important way to promote products is through advertising. Typically, a business uses various media channels to pay for information. The focus of advertisements is also on the purchasing habits of consumers. In this paper, quantitative research methodology was employed. Stated differently, advertising has consistently been a highly valuable instrument for companies to fulfill their marketing plans and strategies.

Increased sales and profit can result from businesses using advertising to promote their goods and services. A persuasive message about social issues can be persuaded by advertising, which can also increase awareness of significant issues and products.

1"The pressure of advertisement is growing every day. A significant amount of money is spent on advertising campaigns bringing to the companies multi-billion profits.

Moreover, it is a "product of the first necessity" for any enterprise, aimed at a commercial success, and it is becoming more and more expensive. According to statistics media the money spent on advertising in Finland was 1313,1 million euroin 2012 and 1206,7 million euro in 2013. (Finnish Advertising Council, TNS Gallup, Ad

Intelligence 2014)"

KEY WORDS:- Children, communication, economic, social ,life style, advertisment ,effectiveness ,recognition and recall .

INTRODUCTION

The role of advertisements in shaping consumers perceptions of products is crucial.

They must be memorable and convey pertinent information, and a deep understanding of consumer needs is crucial to producing effective advertisements. Approaching the correct audience: identify your target market and learn what they anticipate from your brand as a whole as well as your product. Never display anything that h might offend any religious group or community. Make sure the message is relevant and crisp .

Overload of information nullifies the effect and the advertisement might go unnoticed .

Do not try to confuse the consumers . They will never buy your product . Understand their psychologies well consumer perceive women girly s as a health and energy drink which is a must for all working women as well as expecting mothers for their overall well -being. It is illogical to target a female audience viewing an advertisement featuring a male model would never understand the product on a personal level. The ideal commercial would show a busy, trim woman who works in an office, drinks milkshakes meant for women, and then beams with enthusiasm and confidence. A tag Heuer ,Omega, Mercedes , I phone advertisment ought to be classy for people to recognize these products as status symbols . Focus on all high-end and exclusive brands by using pricey props and original idea.

ACT IN THE SOCIETY

Advertisements play an important role in creating a product image in the minds of customers. Advertising is a type of communication that usually seeks to convince prospective consumers to purchase and use products and services.2" Advertising works, but without our knowing that it's acting on us good advertising work with still greater are and calmness today advertisers have the capacity to be all invasive .Kim Rotzoll ,professor of advertising ,at university of Illinois says "advertisers don't have the facility to compel , irrespective of how vast their promotional efforts are .Businesses that use advertising to promote their products can see an increase in sales and pro fits. and services. The further more , some people criticize advertising on the grounds that it harms society by drawing attention to significant issues and goods. 3.Traditional media formats no longer dominate the UK advertising market as consumers increasingly rely on digital channels for information, communication, and entertainment. COVID-19 harmed traditional advertising channels the most because of increased internet usage caused by the pandemic. The advertising landscape in the United Kingdom has undergone a fundamental digital transformation in recent years. As a result of ongoing changes in consumer behaviour and the digitalization of daily life".

PROBLEM

While direct mail marketing and newspaper and magazine ads are still common ways to advertise, many people would prefer to invest their advertising budget in digital marketing. For enterprises to prosper usefully execute their arketing plans and strategies, advertisingtising has been and will continue to be a very helpful tool. It's way to get your company's message out to the general public and if done correctly can provide great ROI (Return on investment) Advertising can be very effective

in helping your brand develop it's market position or build a particular niche . You want a customer to understand that when they view your superior products, your company only produces the best items available. To that end, you want your advertising campaigns to reinforce this theme and highlight important features of your product or service. advertising efforts ,they will be able to associate quality wit h your company .

HFB ADVERTISING :- We help businesses like yours with advertising design print marketing creative services, printing, promotional item ,and all phases of SEO.

SOLUTION :-

• Identity the target audience .
• Analysis past market metrics.
• Perform a swot analysis.
• Define your marketing go also.
• Determine your marketing channels. Keep in mind the lifestyle stage and marketing funnel.
• Create a marketing plan.
• Report and measure progress.

POSITIVE IMPACT

Advertising has the benefit of alerting you to the existence of a goodor product. New and improved product are developed all the time and we be can't be expected to keep track of these development ourselves ,so it's manufactures helps us in our lack at awareness and tells us our new and improved product is now even better go out and but it.

Advertising can also be used to generate awareness among public that which product they can say no it can also be used to educate people about certain diseases and their problems .and all these credit goes to proper advertising . Diseases like polio could never been controlled If the timings for polio drops are not advertised regularly.

Aspiration well crafted advertisement often inspire youth to dream big and pursue their goals. By showcasing successful individuals can motivate young people to strive for greatness ,set goals and work hard advertising featuring accomplished athletes artists or entrepreneurs can be particularly impacts fit in instilling a sense of ambition and determination. Advertising reflect society values and can contribute to the preservation and celebration of diverse cultures by embracing multi culturalism and in cloak out advertising can help young people appreciate and respect different back ground festering a more tolerant and harmonious society .

NEGATIVE IMPACT

One of the most widely discussed negative effect of advertising is its influence on body image . Young people ,especially girls are often exposed to airbrushed and idealized portrayals of beauty leading to blow self-esteem, eating disorders, and body dissatisfaction. Ads that support limited definitions of beauty can be harmful to young people's mental and physical health. Youth are particularly vulnerable to the persuasive tactics employed in advertising .Flashy graphics, catchy slogans, and celebrity endorsements have the power to quickly sway people, which could result in rash and uniform decisions. Advertisement targeting children and teenagers often exploit their naivety and lack of critical thinking skills, potentially influencing them to adopt unhealthy habits or make poor choices. For example, promoting a weight -loss product with unrealistic claims of lose 10 pounds in one week or a skincare product claiming to magically remove all wrinkless overnight.

LITERATURE REVIEW

An overview of pertinent theories and models pertaining to advertising can be found in the literature review section. It also discuss previous studies and finding on the impact of adverting and pointing out limitations and research gaps in the body of current literature. Advertising has been around since the 3000s BC, when it was first discovered in the Babylonian empire. The first advertisment in English went into print in 1472, in order to sell a prayer book. Although it has undergone significant modification, the advertising profession started in the United States in 1841 and is still in use today .The literature review section provides an overview of relevant theories and models related to advertising. a of any kind is invariably accompanied by an abundance of commercials.

Everyone from psychologists to parents has an opinion about how the prominence of advertisements affects certain segments of society (such as children, women's image, or consumer society) and whether or not advertising is good for society. Unless they are a recluse, people will undoubtedly come across advertisements. The advertising profession began in the US in 1841 and is still in use today (Robbs 12).

CONCLUSION :-

Promotion is a critical component. both the positive and negative Undoubtedly, the media has become an indispensable component of American society, and free media in general is nearly invariably accompanied by a high volume of commercialising 4" today is tricky market condition, online advertisement has grown to be an imperative constituent of the modern business. Moreover, online advertisement playsan influential advantageous role

and responsibilities in the economic progress of a nation".Whether advertising has a positive or negative impact on society, and how it affects specific groups (like children, women's image, or consumer society), everyone has an opinion—from psychologists to parents. advertising's beneficial effects on society and how its widespread use affects specific social groups (like women, children, and the elderly, or consumer society). society, from psychologists to parents, and how the prevalence of advertisements affects particular groups in society (such as children, women's image, or consumer society). , it also carries the risk of feeding negative stereotypes, encouraging consumerism, and taking advantage of weaker social groups. Also, courses that instruct students in media literacy and critical thinking can provide inclusivity with the tools it needs to successfully navigate the advertising landscape.

Moreover, these programs can impart knowledge and skills to inclusivity.

REFERENCE

1. Svetlana frolova (the role of advertising in promoting a product)" thesis centria university of applied sciences degree programme in industrial management (may 2024)
2. International Journal of Advanced Research in Commerce, Management & Social Science (IJARCMSS) 253 ISSN : 2581-7930, Impact Factor : 5.260 , Volume 03, No. 04, October – December. 2020, (1)
3. World Journal of Social Science Research ISSN 2375-9747 (Print) ISSN 2332- 5534 (Online)Vol. 10, No. 2, 2023.
4. Journal of management research and analysis October - December 2018;(4):397- 400. Niyas A. M, Chiller M. P. A study of positive and negative role of online advertisements in the growth of modern business. J Manga Res Anal. 2018;5(4):397-400

Neetu

Assistant Professor (bljs College Tosham,bhiwani) ,department For. Commerce

Address – Vpo. Sagban Teh.tosham Dist.bhiwani

MOB. NO:- 7206350737

PIN CODE - 127040

THEBHARATIYANAGARIKSURAKSHA(SECOND)SANHITA,2023

[SeekstorepealTheCodeofCriminalProcedure1898 (CrPC)(Re-enactedin 1973)]

Ata Glance

- **The Code of Criminal Procedure (CrPC), 1973** at present is the general procedural law of Criminal Law in India. The CrPC for India can be traced back to 1861 when the British enacted the said Code in India, following the passage of the Indian Penal Code in 1860.
- Based on the recommendations of the 41st Report of Law Commission, the Code of Criminal Procedure was reenacted and came into force on 1 April 1974.
- The need to reform and rationalize the Code of Criminal Procedure, as also the need to undertake a comprehensive review the criminal justice system of the country has been expressed from many quarters.
- Earlier, theBharatiyaNagarikSurakshaSanhita,2023 wasintroducedinLokSabhaon11August 2023 by the Home Minister. The Rajya Sabha, Chairman referred the Bill, along with two other Bills to the Standing Committee on Home Affairs for examination on 18 August 2023.
- The Committee submitted its Report, with observations and recommendations, to Chairman, Rajya Sabha 10 November 2023 and forwarded to the Speaker, Lok Sabha on 10 November2023.
- On 12 December 2023, the Government had withdrawn three criminal law Bills and replaced it withthreenewBillsafterincorporatingthechanges recommended bya ParliamentaryCommittee that have been accepted by the Government.
- *The Bharatiya Nagarik Suraksha (Second) Sanhita, 2023* which seeks to replace the CrPC contains 531 Clauses and provides for the use of technology and forensic sciences in the investigation of crime and furnishing and lodging of information, service and summons, etc, through electronic communication, among other things.

Introduction

India's criminal justice system has been predominantly shaped by laws and regulationsin herited from the Britishcolonialera.In the post-Independence years, these legal foundations underwent alterations and amendments to align with the evolving requirements of modern times. The experience of over seven decades of Indian democracy calls for comprehensive review of our criminal laws, including the Code of Criminal Procedure and adopt them in accordance with the contemporary needs and aspirations of the people. The Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita (BNSS), which seeks to repeal CrPC address the challenges faced by the judiciary in the criminal justice system and would get rid of colonial legacy and bring an Indianised law more appropriate for modern India.[1]

Background

The evolution of the Criminal Procedure Code for India can be traced back to 1861, when the British rulers enacted the said Code in India, following the passage of the Indian Penal Code in 1860. In 1882, the Code of Criminal Procedure provideduni form procedures forall of India, including the Presidency-towns and mofussils, and was subsequently supplanted by the 1898 Code. The Code underwent multiple amendments. After Independence, the Law Commission conducted a thorough review of the old Code, resulting in recommendations detailed in their 41st report, which was submitted in September 1969. Based on these recommendations, the Code of Criminal Procedure was drafted,and cameint of orceon1April1974.Over the years,this legal -2-framework underwent a remarkable number of amendments, to align it with contemporary needs and practice[2].

In 2019, the Prime Minister of India advocated for the need to revamp all the legislation enacted across all departments during the British era. As informed by the Ministry of Home Affairs, 18 States, 6 Union Territories, the Supreme Court,16 High Courts, 5 Judicial Academies,22 Law Universities,142 Members of Parliament, around 270 MLAs and public have given their suggestions onthese new laws viz. the BNSS, the BNS and the Bharatiya Sakshya Bill, and intense discussions were held for about 4 years.[3]

The Bhartiya Nagarik Suraksha (Second) Sanhita, 2023 was introduced to replace the Code of Criminal Procedure (CrPC) on 12 December 2023. In the CrPCthereare 484 Sections,whereas in theBNSS,which is proposed to replace the CrPC there are 531 Clauses[4].

Needforthe' The Bharatiya Nagarik Suraksha(Second)Sanhita,2023[5]

Fast and efficient justice system is an essential component of good governance. However, delay in delivery of justice due to

complex legal
procedures, large pendency of cases in the Courts, low conviction rates, low level of uses of technology in legal system, delays in investigation system, complex procedures, inadequate use of forensics are the biggest hurdles in speedy delivery of justice, which impacts poor man adversely.

In order to address these issues, a citizen's centric criminal procedure is need of hour[6]. The experience of over seven decades of Indian democracy calls for comprehensivere view of our criminal laws, including the Code of Criminal Procedure and adopt them in accordance with the contemporary needs and aspirations of the people.The Law Commission of India in its various Reports has also recommended several amendments in the criminal laws. Also,Committees like Bezbaruah Committee, Vishwanathan Committee, MalimathCommittee, Madhava Menon Committee,etc.recommendedfor section-specific amendments in criminal laws and general reforms in criminal justice system.[7]

Objectivesofthe'TheBharatiyaNagarikSuraksha(Second)Sanhita,2023[8]'.

The Government with the mantra, "*Sabka Saath, Sabka Vikas, Sabka Vishwas and Sabka Prayas*" is committed to ensure speedy justice to all c itizensinconformitywith these constitutional democraticaspirations.The Government is committed to make comprehensive review of the frame work of criminal laws to provide accessible and speedy justice to all. In view of the above, the Bill sought to repeal the Code of Criminal Procedure, 1973 and enact a new law, namely, the Bharatiya Nagarik Suraksha (Second) Sanhita, 2023.

The BNSS provides for the use of technology and forensic sciences in the investigation of crime and furnishing and lodging of information, serviceof summons, etc., through electronic communication. Specific time-lines have been prescribed for time bound investigation, trial andpronouncement of judgments. Citizen centric approaches have been adopted for supply of copy of first information report to the victim and to inform them about the progress of investigation, including by digital means.

In cases where the punishment is seven years or more, the victims shall be given an opportunity of being heard before withdrawal of the case by the Government. Summary trial has been made mandatory for petty and less serious cases.Theaccused persons may beexamined through electronic

Some of theMajorChanges Introduced in the Bill[9]

Integration of Technology in Legal Processes- The Sanhita introduces the use of technology in various legal proceedings, such as serving summons *[Clause 63]*, notices, and warrants electronically *[Clause 227 (1)(b)]*, enhancing efficiency and reducing paperwork.

- **Introduction of Special Executive Magistrates**- The Sanhita allows the appointment of Executive Magistrate or police officers not below the rank of SP as Special Executive Magistrates for specific areas or functions *[Clause 15].*
- **Establishment of Directorate of Prosecutions**- The BNSS defines the roles and powers of the Directorate of Prosecutions, headed by a Director Prosecution, functioning under the administrative control of the Home Department of each state *[Clause 20].*
- **Arrest Procedures for Women**- The BNSS stipulates that information about the arrest of a woman must be provided to her relatives, friends, or designated individuals *[Clause 43* ***(1)].***
- **Use of Handcuffs during Arrests**-It provides guidelines for police officers touse handcuffs when making arrests, considering the nature and gravity of the offence *[Clause 43 (3)].*
- **Forfeiture of Property of Proclaimed Offenders who are staying Abroad**-The BNSS introduces provisions for identifying, attaching, and forfeiting the property of proclaimed offenders *[Clause 85].*The powers, duties and liabilitiesof a receiver appointed under this section shall be the same as those of a receiver appointed under the Code of Civil Procedure, 1908 [Clause 85 (6)].
- Videography of Search and Seizure Operations-It mandates the Audio-video electronic means of search and seizure operations, ensuring transparency and adherence to procedures *[Clause 105].*
- **Introduction of "Zero FIR"-** TheBNSS facilitatesthefilingof"ZeroFIRs"for offences occurring outside the jurisdiction of a police station but within the State *[Clause 173].*-5-***]***
- **Forensic Evidence Collection for Serious Offences**-It mandates forensic teams to visit the crime scene to collect evidence through electronic device for offences punishable by imprisonment of seven years or more *[Clause 176 (3)].*
- **Limitation on Police Custody Duration**- The BNSS sets limits on police custody, specifying maximum periods for detention during different stages of investigation *[Clause 187].*
- **Informing the Informants and Victims about Progress of Investigation**- The BNSS requires police officers to inform informants and victims about the progress of investigations, including through digital means *[Clause 193 (3)(ii)].*

Some important Clauses/Sections of haratiya Nagarik Suraksha (Second) Sanhita, 2023

Titles	Clause	provision
Definitions	*Clause2(2)*	Words and expressions used herein and not defined but defined in the Bharatiya Nyaya Sanhita, 2023 and Information Technology Act, 2000 have the meanings respectively assigned to them in that Act and Sanhita;
Whenpolice may arrest without warrant.	*Clause 35(7)*	No arrest shall be made without prior permission of an officer not below the rank of Deputy Superintendent of Police in case of an offence which is punishable for imprisonmentoflessthanthreeyearsandsuchpersonis infirmoris abovesixtyyears of age.
Arresthowmade	*Clause 43 (3)*	The police officer may, keeping in view the nature and gravity of the offence, use handcuff while making thearrest of a person or while producing such person before the court who is a habitual or repeat offender, or who escaped from custody, or who has committed offence of organised crime, terrorist act, drug related crime, or illegal possession of arms and ammunition, murder, rape, acid attack, counterfeiting of coins and currency notes, human trafficking,sexualoffenceagainstchildren,oroffence againsttheState.
Formof summons.	*Clause* 63	Every summons issued by a Court under this Sanhita shall (i) inwriting,induplicate,signedbythepresidingofficerof such Court or by such other officer as the High Court may, from time to time, by rule direct, and shall bear the seal of the Court; or (ii) inanencryptedoranyotherformofelectronic communicationandshallbeartheimageofthesealofthe Courtordigitalsignature.
Summonsto produce documentor other thing.	*Clause 94 (1)*	(*1*) Whenever any Court or any officer in charge of a police station considers that the production of any document, electronic communication, including communication devices, which is likely to contain digital evidence or other thing is necessary or desirable for the purposes of any investigation, inquiry, trial or other proceeding under this Sanhita by or before such Court or officer, such Court may issue a summons or such officer may, by a written order, either in physical form or in electronic form, require the person in whose possession or power such document or thing is believed to be, to attend andproduceit, or to produceit,at thetimeand place stated in thesummons ororder.
Persons bound to conformtolawful directions of police.	*Clause 172*	(1) All persons shall be bound to conform to the lawful directions of a police officer given in fulfilment of any of his duty under this Chapter. (2) A police officer may detain or remove any person resisting, refusing, ignoring or disregarding to conform to any direction given by him under *sub-section* (*1*) and may either take such person before a Magistrate or, in petty cases, release him as soon as possible within a period of twenty-four hours.
Procedure fo r investigation	Clause176 (3)	On receipt of every information relating to the commission of an offence which is made punishable for seven years or more, the officer in charge of a police station shall, from such date, as may be notified within a period of five years by the State Government in this regard, cause the forensics expert to visit the crimes scene to collect forensic evidence in the offence and also cause videographyof the process on mobile phone or any other electronic device: Provided that where forensics facility is not available in respect of any such offence, the State Government shall, untilthefacilityinrespectofthatmatterisdevelopedor made in t he State, notify the utilisation of such facility of any other State.
Prosecution o f Judges and Public Servants.	*Clause 218*	(1) When any person who is or was a Judge or Magistrate orapublicservant not removablefrom his officesavebyor with the sanction of the Government is accused of any offence alleged to have been committed by him whileacting or purporting to act in the discharge of his official duty, no Court shall take cognizance of such offence except withthepreviousanctionsaveasotherwiseprovidedinthe Lokpal and Lokayuktas Act, 2013— (a) in the case of a person who is employed or, as the case maybe,wasatthetimeofcommissionofthealleged offence employed, in connection with the affairs of the Union, of the Central Government; (b) in the case of a person who is employed or, as the case may be, was at the time of commission of the alleged offence employed, in connection with the affairs of a State, of the State Government: Provided that where the alleged offence was committed by a person referred to in clause (b) during the period while a Proclamation issued under clause (1) of article 356 of the Constitution was in force in a State, clause (b) will applyas if for the expression "State Government" occurring therein, the expression "Central Government" were substituted: ProvidedfurtherthatsuchGovernment shall take adecision within a period of one hundred and twenty days from the date of the receipt of the request for sanction and in case it fails to do so, the sanction shall be deemed to have been accorded by such Government: Provided also no sanction shall be required in case of a public servant accused of any offence alleged to have been committedundersection64,section65,section66,section 68,section69,section70,section71,section74,section 75,section76,section77,section78,section79,section 143, section 199, or section 200 of the Bharatiya Nyaya Sanhita, 2023.
Inquirytrialor judgment in absentia of proclaimed Offender.	*Clause 356**(1)***	(*1*) Notwithstanding anything contained in this Sanhita or inanyotherlawforthetimebeinginforce,whenaperson declared as a proclaimed offender, whether or not charged jointly, has absconded to evade trial and there is noimmediateprospectofarrestinghim,itshallbe deemed to operate as a waiver of the right of such person tobepresentand triedin person, andtheCourt shall,after recordingreasonsinwriting,intheinterestofjustice, proceedwiththetrialinthelikemannerandwithlike effectasifhewaspresent,underthisSanhitaand pronounce the judgment: Provided that the Court shall not commence the trial unless a period of ninety days has lapsed from the date of framing of the charge.
WitnessProtection Scheme	*Clause 398*	Every State Government shall prepare and notify a Witness Protection Scheme for the State with a view to ensure protection of the witnesses.
Mercy Petition in death sentence cases.	*Clause 472 (1)*	(*1*)Aconvict underthe sentence ofdeath or his legalheir or anyotherrelativemay,ifhehasnotalreadysubmitteda petitionformercy,fileamercypetitionbefore thePresident of India under article 72 or the Governor of the State under article 161 of the Constitution within a period of thirty days from the date on which the Superintendent of the jail,— (i) informs him about the dismissal of the appeal, review or special leave to appeal by the Supreme Court; or (ii) informs him about the date of confirmation of the sentenceofdeathbythe HighCourtandthetimeallowedto file an appeal or special leave in the Supreme Court has expired.

References

1. THECODEOFCRIMINALPROCEDURE,1973 https://www.indiacode.nic.in/bitstream/123456789/15272/1/the_code_of_criminal_procedure%2C_1973.pdf

2.THEBHARATIYANYAYA(SECOND)SANHITA,2023

3.https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1947941

4.THEBHARATIYANYAYASANHITA,2023https://www.livelaw.in/pdf_upload/the-bharatiya-nyaya-sanhita-2023-485731.pdf

5.https://thelegalquotient.com/ procedural-laws/crpc/history-amendments-and- scheme-of-crpc/1997

6.PIBPressReleasehttps://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1947941

7.https://sansad.in/rs/committees/15?departmentally-related-standing-committees(Report No. 247 - Report on The Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita, 2023)

Dr. Santosh Kumar Sharma (Ph.D)

M. COM, MBA, LLB, LLM WITH PhD.

Mo.-9899882948

santosh.sharma2013@gmail.com

H. No. 5113 Sector- 03, Faridabad (121004)

Socio-Economic Dynamics of a slum in a City: A Study of kaithal, Haryana

Sushma, Dr. Deepa

Abstract:-

India, the seventh-largest country by area and the second most populous in the world, predominantly comprises rural areas where the majority of the population resides. However, there is a significant trend of young people migrating to major cities in search of better employment opportunities, higher income, and an improved quality of life. Unfortunately, many of these migrants find it challenging to afford the high cost of urban living and consequently settle in slum areas.

According to the 2011 census, the population living in slums in India reached 29,18,38,124, marking a substantial increase from the 2001 census figure of 22,31,11,858. This surge indicates a growing prevalence and size of slum settlements, particularly in urban centers. Slums typically emerge in areas where residents lack access to basic amenities such as clean water, sanitation, and proper housing.

This study focuses on the socio-economic dynamics of an emerging slum in Huda Sector21, Kaithal city, located in the Kaithal district of Haryana. The objective is to examine the socio-economic conditions of slum residents and propose effective solutions to address their challenges. The study relies entirely on primary data collected through questionnaires during field surveys.

Introduction:-

Slums are characterized by informal settlements where housing conditions are substandard and living standards are extremely poor. These areas tend to be densely populated, with many people living in congested urban spaces. Slums typically emerge in locations where residents lack access to basic amenities such as clean water, proper sanitation, and adequate housing infrastructure. Consequently, individuals in slum areas face numerous challenges, including heightened risks of waterborne diseases like typhoid and cholera, particularly impacting women and children.

In addition to inadequate housing and essential services, slums are characterized by unsafe building structures, overcrowding, and insufficient sanitation facilities. Poverty and socioeconomic disparities are prevalent, contributing to issues such as unemployment, low living standards, and social exclusion. These conditions often lead to the fragmentation of families and exacerbate existing societal inequalities.

The emergence of slums is not a recent occurrence but has been intertwined with the history of urbanization and industrialization. As cities expanded during these periods, slums became a prevalent feature, largely due to the migration of rural populations seeking opportunities in urban areas. This influx of people often leads to rapid and uneven urban growth, characterized by non-inclusive patterns.

Urban expansion, driven by population growth, brings about various challenges such as deteriorating air quality, higher urban temperatures, increased surface runoff, heightened risk of flooding, loss of agricultural land, and depletion of natural vegetation and water bodies.

Given these complexities, meticulous local-level planning is essential to ensure systematic urban growth at both local and regional scales. Timely and accurate studies on slum dwellers' socioeconomic conditions are crucial for understanding their needs and circumstances. Implementing measures to prevent their social exclusion is imperative to mitigate the myriad of physical, economic, and social problems that arise in cities as a result.

Objective:-

To investigate the socio-economic conditions of slums in the study aera.

To give effective solutions to the various problems faced by the people.

Study Area:-

Kaithal city is somewhat compact shaped having a geographical area of 104.30 sq. km. It lies between 29˚30' 00" North to 30˚ 11' 19" North and 76˚ 09' 20" East to 76˚ 41' 19" East.

Kaithal has a Humid subtropical, dry winter climate (Classification: Cwa). The warmest month with the highest average high temperature is June 42.5. The coldest month with the lowest average low temperature in January 7.8.

Map 1: *Location of the Study Area*

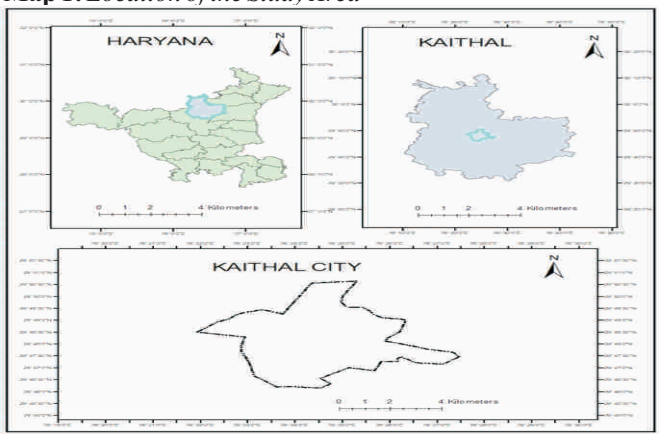

Source:- Prepared by Research Scholar with the help of Arc-GIS

Souraceof DataandMethodology:-

This study relied solely on primary data due to the absence of relevant secondary sources. To collect data, a questionnaire was designed and administered to respondents chosen through convenience sampling. Additionally, interviews were conducted when necessary. The collected data underwent processing, analysis, and interpretation using the percentage method. Various statistical diagrams such as pie charts and bar graphs were utilized to visually represent the data.

Discussion andResults:-

A. Availability of Basic Amenities in Slums

The study area exemplified typical characteristics of slums, characterized by unauthorized constructions and a lack of basic amenities and infrastructure. Despite these challenges, all households had access to electricity, although it was considered unauthorized by neighboring residential complexes. Poor drainage led to frequent waterlogging, particularly during rainy seasons, and the absence of proper toilet facilities resulted in open defecation among residents.

Notably, a community toilet was recently constructed by Ansal Housing Builders in response to complaints from nearby residents, yet issues with maintenance persisted according to slum residents. While municipal taps provided a daily water supply, open garbage disposal was common until the installation of collection bins by the Municipal Corporation.

Furthermore, while the roads within the study area remained unpaved, the surrounding major roads were properly constructed. These observations highlight the complex and varied challenges faced by residents in slum areas regarding infrastructure, sanitation, and urban planning.

Image 1: Poor Drainage of Slums Area

B. Demography Condition of Kaithal city Slums

Demographic conditions cover population characteristics like size, growth, distribution, and composition, crucial for policymaking. Factors such as age, gender, ethnicity, and socioeconomic status shape societal dynamics and resource needs. Analyzing these trends helps identify challenges and guide interventions for social welfare and development.

Table No. 1: Information about Family

Family Details	No. of Household	Percentage of Household(%)
Head of the Family		
Male	27	90
Female	3	10
Size of the Family		
Less than 4	5	16.66
4 to 6	19	63.33
More than 6	6	20
Type of Family		
Nuclear	10	33.33
Extended	17	56.66
Joint	3	10

Source: Based on Primary Survey

The data provides insights into the demographic composition and structure of households within a certain population. It indicates that the majority of households, around 90%, are headed by males, with only a smaller proportion, about 10%, headed by females. In terms of family size, the data reveals that approximately 16.66% of households have less than 4 members, while the majority, accounting for 63.33%, fall within the range of 4 to 6 members. A smaller portion, constituting 20%, comprises households with more than 6 members. When it comes to family types, the data shows that nuclear families make up 33.33% of the total, while extended families are predominant at 56.66%. Joint families represent a smaller proportion, making up 10% of the total. This data provides valuable insights into the social dynamics and structures of households within the studied population, highlighting patterns of family size and composition.

C. Socio-Economic Conditions

Slums are marked by poor living conditions and limited access to basic services, perpetuating cycles of poverty. Residents often face challenges such as inadequate housing, low incomes, and limited educational opportunities. Efforts to improve socioeconomic conditions in slums focus on providing access to basic services, upgrading infrastructure, and creating economic empowerment programs. Addressing root causes like urbanization and social marginalization is crucial for sustainable development in these areas.

Table No. 2: Occupation of Slum Households

Category	No. of Household	Percentage of Household(%)
Labour	20	66.6
Driver	5	16.6
Shopkeeper	1	3.3
Trashman	4	13.3

Source: Based on Primary Survey

The table provides a breakdown of household categories within a certain population, detailing the number of households and their respective percentages. The majority of households, comprising 66.6%, are categorized as "Labour," indicating that a significant portion of the population is engaged in various forms of manual or unskilled labor. Following this, 16.6% of households are occupied by "Drivers," suggesting a notable presence of individuals employed in transportation-related roles. "Shopkeepers" represent a smaller proportion, accounting for only 3.3% of households, indicating a limited number of households engaged in small business or retail activities. Lastly, "Trashmen" make up 13.3% of households, indicating a segment of the population involved in waste management or sanitation work. This breakdown provides insights into the occupational diversity within the population, highlighting the prevalence of labor-intensive occupations alongside other roles essential for community functioning.

Table 3: Type of House

Type of House	No. of Household	Percentage of Household(%)
Kutcha	29	96.7
Pucca	1	3.3

Source: Based on Primary Survey

The majority, 96.7%, of households live in Kutcha houses, typically constructed with impermanent materials like mud or thatch. Only 3.3% reside in Pucca houses, built with more durable materials such as brick or concrete. This data highlights significant disparities in housing conditions and underscores the need for initiatives to improve infrastructure and living standards within the community.

Table 4: Numbers of Rooms

No. of Rooms	No. of Household	Percentage of Household(%)
1	27	90
2	3	10
3	0	0

Source: Based on Primary Survey

Most households, 90%, have one room, indicating a prevalence of small living spaces. Only 10% have two rooms, with no households reported to have three rooms. This suggests limited housing options or specific preferences within the population.

Table 5: Toilet Facility

Toilet Facility	No. of Household	Percentage of Household(%)
Yes	0	0
No	30	100

Source: Based on Primary Survey

All households, totaling 100%, lack toilet facilities, indicating a significant absence of proper sanitation infrastructure within the population. This suggests a pressing need for initiatives aimed at improving access to sanitation facilities to address public health concerns and enhance overall living standards.

Conclusion:-

The collective data from the tables paints a vivid picture of living conditions within a slum area. Predominantly, households are characterized by low-income occupations such as labor and waste management, residing in predominantly Kutcha housing structures, often with limited room space. Notably, access to basic amenities like toilets is severely lacking, underscoring significant challenges in sanitation and public health. These findings underscore the urgent need for comprehensive interventions to address housing, infrastructure, and socioeconomic disparities within the slum area. Initiatives focused on improving housing quality, providing access to sanitation facilities, and creating economic opportunities are crucial for enhancing the well-being and quality of life for residents in these marginalized communities.

Reference:-

1. Roy, D. (2018). The socio-economic survey of 36 slums: A case study of Bangalore. *Scientific Data, 5,* 170-200.
2. Basu, M. (2016). The social and economic conditions of the slum-dwellers: A case study of Kolkata's two slums. *International Journal of Humanities & Social Science Studies (IJHSSS), 3*(2), 141-151.
3. Jha, D., & Tripathi, V. (2014). Quality of life in slums of Varanasi City: A comparative study. *Banaras Hindu University (BHU) Transactions, 36*(2).

Sushma
Research Scholar
Department of Geography
Baba Mastnath University
Asthal Bohar, Rohtak
sushmamor7@gmail.com

Dr. Deepa
Assistant Professor
Department of Geography
Baba Mastnath University
Asthal Bohar, Rohtak

37

LIFESTYLE OF BALMIKI COMMUNITY IN ROHTAK DISTRICT

Dr. Satyaveer Yadav, Sangeeta

Abstract:-

Among the social attributes of population, occupation is of paramount importance since it performs vital influence on many personal, social and demographic characteristics. The occupation is a reflection of variety of cultural traits of the workers. An analysis of the lifestyle pattern of the working force will give an idea of diverse demographic and cultural attributes and also provide knowledge for formulating future plans which represent their social and economic lifestyle and development.

Living in a lifestyle community means residents share similar social, recreational, and fitness interests and activities. And they get to enjoy amenities, facilities, and programs tailored to those interests. Lifestyle communities have features which are typically not fully available outside of a community. Life style also define the culture, food, marital status, educational attainment and the population characteristics.

Source of Data and Research Methodology

The study is based on primary and secondary data. The primary data has been collected by using well prepared scheduled and personal interviews have been conducted to the head of the family. The secondary data has been obtained from various published and unpublished records, books, district gazetteers and resource atlas of Rohtak district. For the present study Fifteen (15) villages has been selected of Rohtak District on the bases of percentage of scheduled caste population and the percentage of literacy rate. The data has been used to highlight the population characteristics of Rohtak District. To describe the population characteristics like population, age groups, sex ratio, literacy rate and educational attainment. Data has been collected from 460 households by selecting 50 households of each village to describe the income, expenditure use of modern assets and house types based on building materials. Finally, the data has been calculated, tabulated and mapped with the help of suitable cartographic techniques.

STUDY AREA

Location and boundaries

Rohtak district is located in central part of Haryana. It is bordered by Sonipat district in north and north-east, Jind district in the north, Jhajjar district in the south, Hisar district in the north-west and Bhiwani in the west. The district headquarter is Rohtak. Due to proximity to Delhi, the development activities are taking place very rapidly. The district has witnessed rapid industrialization, urbanization, diversification in agriculture and changes in occupation structure.

57.96 per cent population of Rohtak district lives in rural areas.

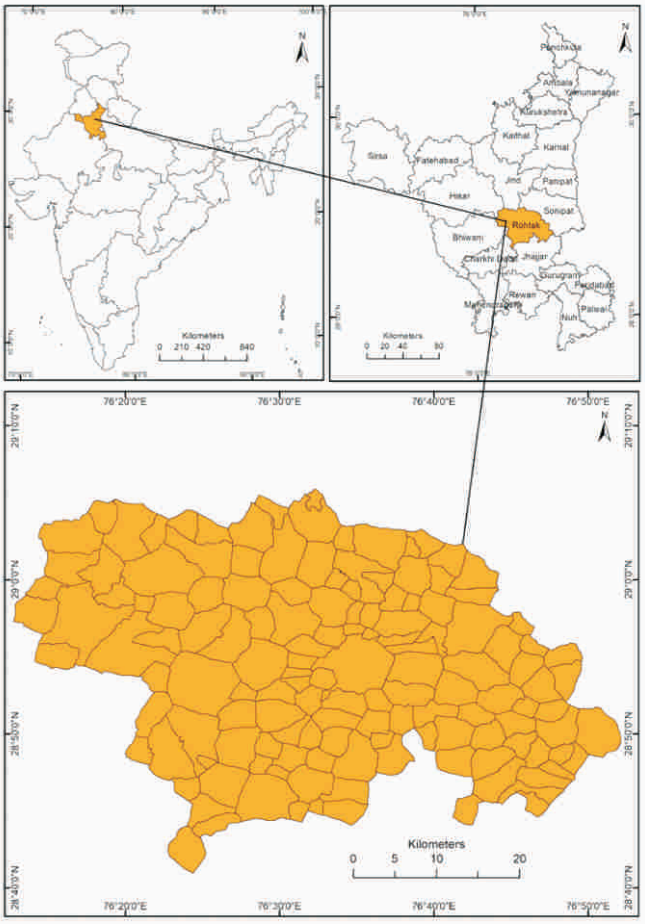

CASTE SYSTEM IN INDIA

The caste system in India is a system of social stratification which historically separated communities in to thousand of endogamous hereditary groups called Jatis, usually translated in to English “Castes”. The Jaties are thought of as being grouped into four varnas: Brahmins, Kshatriyas, Vaishyas and Shudras. Certain groups, now known as “Dalits”, were excluded from the Varna system altogether, ostracized as untouchables. Traditional scholars identified caste system with Hinduism in India, but the system is found in other religions on the Indian subcontinent, albeit at a smaller scale, including Buddhism, Christianity, Islam, Judaism and Sikhism.

ORIGIN OF BALMIKI CASTE

According to Badri (1965) the Balmiki caste is one of that lies in the bottom most rung of the lower caste in Hindu caste

hierarchy. It is considered to be highly polluting castes since its member are usually engaged in sweeping and cleaning. They are known by various names in different states for example in Punjab they are known as Chuhra; while in U.P Bihar and Rajasthan, they are known as Bhangi, Mehtar, Jharmali, Halalkhor, Raut ,Hela, Dom, Domar, Basor and Soon. In Punjab, some of the chuhras who have adopted Sikhism are known as Majhabi and Rangreta. The U.P Bhangi has started associating themselves with Balmiki, the writer of Ramyana, which is highly revered by the upper caste, in their oral tradition.

The fundamental and core feature of India's social structure is its caste system. Even after nearly sixty years of Indian independence, caste remains the symbol and essence of Indian society differentiating it from other society. This hierarchy, which accords some caste the privilege and the power to dominate over other castes, has been present in Indian history since time immemorial. The dominant Brahminical cultural code accords the so called lower caste, or Dalit as they prefer to be called, have always been marginalized by the upper caste, who have forced them to remain within the confines of their lowly birth based menial occupation.

Different Name of Balmiki Caste:

Singh (1994) described that Balmiki is also called Valmiki, Chuhra, Bhangi, Lalbegi, Khaqrobe. Chaudhary and jamadar are two title of this community; the latter is normally used for working class. Locally, they are called Chuhra. They claim to be the descendants of saint Balmiki, who wrote the epic Ramayana. Their other guru (teacher) is Lalbeg and it is after this guru that they also called Lalbegi. The Bhangi is a scheduled caste in Rajasthan, they have many synonyms viz. Churu, Mehtar, Harijan etc. According to their own history, Bhangi are the descendants of Brahman who carried away and buried a dog that died in the midst of Brahman assembly. The Bhangi hamlets are located on outskirts of all the cities. Their mohallas or bus tees (location) are called 'Bhangio-ka-mohalla' or 'Bhangio-ki-bastee'. There is a Marwari saying "jathi-jao-vathi-Bhangi" meaning "wherever you go you will see Bhangi".

The Balmiki has sub-caste. Within the sub-castes the social division exists at the clan's level. The common clane are Athwal, Gavri, Garu, Phuar, Kalyant, Chowhan, Khokar, Narwal, Chandale, Pariwar, Lohat, Kodli, Parmer, Kuar, Soneki and so on. These clans are of equal status and exogamous in nature. The Balmiki are conscious of their subordination to the other caste. They are aware of Varna system and consider themselves as Sudra. The other communities also consider them as Sudra.

POPUALTION CHARACTERISTICS

A study of the structure and characteristics of population is an important aspect of the study of population. The study of population attempt to answer the question: what kind of people are found in any region and how do those in one group different from those in another.

The people are important to develop the economy and society. The people make and use resources and are themselves resources with varying quality. Population is the pivotal element in social studies. It is the point of reference from which all other elements are observed and from which they derive significance and meaning. 'resources', 'calamities' and 'disasters' are all meaningful only in relation to human being. Human beings are producers and consumer of the earth's resources, therefore, it is important to know how many people are there in a country, where do they live, how and why their numbers are increasing and what are their characteristics. The census of India provides us with information regarding the population of our country. We are primarily concerned with three major questions about the population: (i) population size and distribution: how many people are there and where are they located? (ii) Population growth and processes of population change: how has the population grown and changed through time? (iii) Characteristics of quality of the population: what are their age, sex composition, literacy levels, occupational structure and health condition?

The study of the population characteristics from a geographical perspective is important because all issues or problems on the earth are somehow related to human activities. It is therefore essential to the study the human groups composed of man as the molecule demographic aspects. These entire features are closely related to the varying physical and cultural conditions.

Recently, population studies have been greatly emphasized because they provide a central theme around which revolve other geographic thoughts and ideas, hence population studies be placed in the fore front of geographical research. With the increase in population across space and time it is necessary to know not only the dynamic ideas about the place of population in geographic literature but also the quality and quality of population in different part of the world.

The most important aspect in Demography is the study of the structure and characteristics of the population. This includes the personal, social and economic characteristics including age, sex, nationality, religion, language, marital status, family composition, literacy and educational

attainments, employment status, occupation and income ,etc. each population may be classified into different groups, according to the above mentioned characteristics. For example, Indian population may be classified into males and females; Indian and foreigners; literate and illiterate; employed and unemployed; children, youth and old; Hindu, Muslim, Christians, Sikhs, Jains etc; married and unmarried; single or joint family; and groups speaking more than a dozen language recognized by constitution.

This chapter is an attempt to the study of selection criteria, categories of scheduled caste population, categories of literacy rate, sample villages of Rohtak District, household selection. In this chapter discussed the population characteristics, such as Gotra-wise Rural population, Gotra-wise age and sex structure, sex ratio in different age groups, Gotra-wise literacy rate, Gotra-wise male female literacy rate, Gotra-wise educational attainment and educational attainment:- among males and females.

On the basis of percentage of scheduled caste population and percentage of literacy rate 15 villages have been selected. As per village 50 households have been selected for field survey. Total 740 household have been selected in the present study.

According to field survey out of total 740 households, 50 households in Bhalot village, 50 household in Kansala village, 50 household in Nindana village, 50 household in Baland village, 50 household in Lahali village, 50 household have been selected in Bainsi village, 50 households in banyani, 50 Households in Anwal, 45 Village in Madina, 50 village in Mokhra khas, 50 households in Chandi, 45 households in Sunderpur, 50 households in Kherawar, 50 households in Pakasma and 50 households have been selected in Samchana village

Table No.: 1: District Rohtak: Village Wise Households and Population, 2023.

Village Name	No of Household	Total Pop.	Male	Female	Total Population in Per cent
Bhalot	50	251	137	114	7.28
Kansala	50	230	123	107	6.67
Nindana	50	244	136	108	7.08
Baland	50	230	130	100	6.67
Lahali	50	207	112	95	6.01
Bansi	50	245	136	109	7.10
Banyani	50	220	120	100	6.38
Anwal	50	251	139	112	7.28
Madina	45	184	97	87	5.34
Mokhra	50	234	129	105	6.78
Chandi	50	238	125	113	6.91
Sunderpur	45	222	119	103	6.43
Kherawar	50	216	113	103	6.26
Paksma	50	247	131	116	7.16
Samchana	50	229	125	104	6.65
Total	**740**	**3448**	**1872**	**1576**	**100**

Source: Field Survey, 2023.

Table 1 gives the information related to the total no of households and total population in 15 villages in rohtak district. It is noted that 50 households has been selected in per village except Madina and Sunderpur villages. The total population is 3448 persons comprising the 1872 males and 1576 females. The highest population is recorded in Bhalot and Anwal village. The Lowest population is recorded in Madina Khas village. .

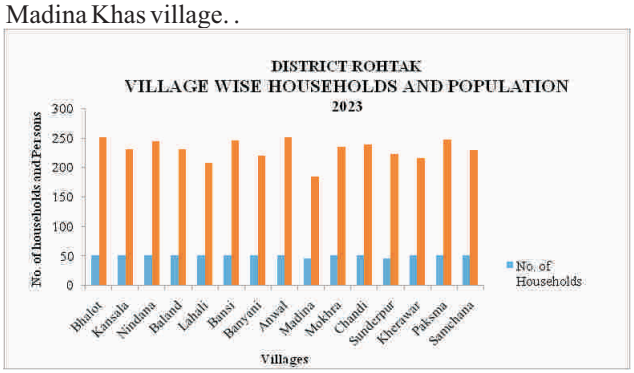

Fig-1.1

CULTURE

The Balmiki speak Haryanvi dialect in different parts of the state, that at their homes and with other communities. They also speak Hindi with other communities.

The community members wear the common attire of the state, that is men wear dhoti-kurta or kurta-pyjama and khes (blanket) in winter. Elderly men also wear a turban. Women wear lengha, kurta and odhni, the young wear salwar- kameez and chunni.

FOOD

The Balmikis, onion, garlic and egg-eaters are vegetarians. The community members eat non-vegetarian food almost regularly. They eat pork, chicken, fish and mutton. They consume Wheat, Rice, Jawar (minor millet), Bajra, Maize and Barley.

CLANS/GOTRAS

Small social divisions in the form of Gotra have been reported. The exact number of Balmiki gotras is not available, but there are about two dozen such as Pihwal, Dugalgach, Jingalia, Panche, Kunjinwal, Gaichand, Bagdi, Lohat, Lohaye, Chandalia, Athwal, Khekhra, Bhooranda, marriage between the same gotra is prohibited. One cannot marry within one's mother's or paternal grandmother's gotras. Gotras, which are used as surnames have undergone changes, e.g. Dugalgach has changed to Duggal, Chanwaria

to Chawla, Saudde to Sood, Dulgachh to Maharulia, Chandalia to Chaddha, Pihwal to Pihwar. The Balmiki are an endogamous community heaving village and gotra exogamy. In cities and towns, they marry in different mohallas (localities).

MARRITAL STATUS

The normal marriage age for boy is 20 years and for girls 18 years. The boy and the girl do not meet each other before marriage. Monogamy is the rule but there are certain exceptions. Sindur, cosmetics and glass bangles are considered marriage symbols. Frequency of divorce is very low. Mostly it is Biradari Panchayat that deals with cases of divorces.

JUSTICE SYSTEM

Among the Balmikis extended families still exist, but they are breaking in to nuclear ones. Usually, relations, between family members are cordial, but sometimes conflict and confrontations arise. These are on account of property, check on the freedom of youngsters and challenge to the authority of elders. It can also be due to lack of adjustment on the part of the daughter-in-law. Conflicts and confrontations are resolved through a familial compromise, or biradari penchayat, falling which the parties seek redress with the court of law.

WORK ACTIVITIES

They claim to give equal status to women. Women have an important role in agricultural operations. They have a role in social functions, rituals/ religious spheres, political activities such as lecturing and canvassing in election days. The women bring potable water and collect fuel and fodder. Some women also contribute to the family income by way of doing scavenging work.

The Balmiki are earning their livelihood by scavenging, working in the fields and at the construction sites. They are also engaged in animal husbandry, poultry and piggery. A few of them have land. The community's traditional primary occupation is scavenging including removal of night soil from the houses and offices. Their secondary occupations include manual work, playing the band, petty trade, hawking, vending of fruit and vegetables, selling of meat and eggs. Some also own small tea stalls and restaurants. They depend on the local market for their day-to-day needs. In towns and cities they transact business and hence work as labourers in agriculture, plantation and industry. Children below the age of 15 years also do scavenging work. They get their payment in cash and kind.

EDUCATION STATUS

The Balmiki community is in favors of children's education. The boys study up to the tenth or twelfth class. They drop out due to poverty. The girls study up to the seventh or eighth class and they drop out due to poverty, household chores and social reasons. Only a few children go in for higher education. Their attitude towards indigenous traditional Medicare is not favorable. But modern Medicare is accepted by them. Their attitude towards family planning is favorable. They are also use modern methods of family planning. Generally, women get sterilized. They claim to prefer two or three children. Drinking water is available in their localities. They have tap-water, hand pimp and wells. They get jobs under various rural employment programs such as the integrated rural development programs and district rural development agency which gives loans for raising piggery, buffalo, poultry, buffalo-carts and ton gas. Matriculations are given loans under employment guarantee schemes for auto-rickshaws or for opening a provisions shop. Cinema, radio, television facilities are available. Road, water and electricity facilities are also available for them. They use firewood/fuel wood, dung-cakes, coal, kerosene oil and liquefied petroleum gas for cooking. They also use organic manure. They make use of chemical fertilizers and insecticides. Integrated child development schemes are available and facilities of public distribution system exist. They get sugar, kerosene, rice and coarse cloth through the fair price shops**.**

Dalits are placed at the bottom of the caste hierarchy. In ancient times it has also been mentioned that the Shudras have remained socially, economically, educationally, culturally and politically dependent on the upper caste and they badly treated. They are reduced to a low status. Some of them are called untouchables. The term also includes scheduled caste, scheduled tribes and backward castes.

CONCLUSION:

. The occupation is a reflection of variety of cultural traits of the workers. An analysis of the lifestyle pattern of the working force will give an idea of diverse demographic and cultural attributes and also provide knowledge for formulating future plans which represent their social and economic lifestyle and development.

Living in a lifestyle community means residents share similar social, recreational, and fitness interests and activities. And they get to enjoy amenities, facilities, and programs tailored to those interests. Lifestyle communities have features which are typically not fully available outside

of a community.

The fundamental and core feature of India's social structure is its caste system. Even after nearly sixty years of Indian independence, caste remains the symbol and essence of Indian society differentiating it from other society. This hierarchy, which accords some caste the privilege and the power to dominate over other castes, has been present in Indian history since time immemorial. The dominant Brahminical cultural code accords the so called lower caste, or Dalit as they prefer to be called, have always been marginalized by the upper caste, who have forced them to remain within the confines of their lowly birth based menial occupation.

The people are important to develop the economy and society. The people make and use resources and are themselves resources with varying quality. Population is the pivotal element in social studies. It is the point of reference from which all other elements are observed and from which they derive significance and meaning. 'resources', 'calamities' and 'disasters' are all meaningful only in relation to human being. Human beings are producers and consumer of the earth's resources, therefore, it is important to know how many people are there in a country, where do they live, how and why their numbers are increasing and what are their characteristics. The census of India provides us with information regarding the population of our country. We are primarily concerned with three major questions about the population: (i) population size and distribution: how many people are there and where are they located? (ii) Population growth and processes of population change: how has the population grown and changed through time? (iii) Characteristics of quality of the population: what are their age, sex composition, literacy levels, occupational structure and health condition.

The study of the population characteristics from a geographical perspective is important because all issues or problems on the earth are somehow related to human activities. It is therefore essential to the study the human groups composed of man as the molecule demographic aspects. These entire features are closely related to the varying physical and cultural conditions.

The Balmiki community is in favors of children's education. The boys study up to the tenth or twelfth class. They drop out due to poverty. The girls study up to the seventh or eighth class and they drop out due to poverty, household chores and social reasons. Only a few children go in for higher education. Their attitude towards indigenous traditional Medicare is not favorable. But modern Medicare is accepted by them. Their attitude towards family planning is favorable. They are also use modern methods of family planning. Generally, women get sterilized. They claim to prefer two or three children. Drinking water is available in their localities.

REFERENCES

Brunches, J. (1920) **Human Geography,** Chicago, Rand Mc Nalley

Chandna, R.C. (2005) **Geography of Population**, Kalyani Publishers, New Delhi.

Kniften, A.K. (1985) Ballia District: A Study in Rural Settlement Geography, NGJI, andVaransi.

Mishra, H.N. (1983) "Informal Sector of Indian Cities: A Case Study of Rickshaw Pullers in Allahabad City", **Transaction Institute of Indian Geographers**, Vol. 5, No.2, pp283-286.

Shukla, N.K. (1976) **The Social Structure of an Indian Villag**e, Cosmo Publication, New Delhi.

Singh, Abha. (1992) "Scheduled Csate Working Population in the Urban Center, Varansi City Region: A Geographical Analysis", **Geographical Review of India,** Vol. 54, No.3, pp.330-337.

Unni, K.R. (1965) **Social Factor in Housing in the Rural Habitat**, (Eds) David Oakley, et.al, New Delhi.

Dr. Satyaveer Yadav
Professor
Department of Geography
Baba Mastnath university, Rohtak

Sangeeta
Research Scholar
Department of Geography
Baba Mastnath University, Rohtak

38

ACCOUNTING TREATMENT OF SINGLE ENTRY SYSTEM OR INCOMPLETE RECORDS

Ajay Kumar

Substance:-

This article defines the meaning and definition of single entry system, and define the method of accounting according to single entry system. The major differences between single entry system and double entry system. The objective and limitations of single entry system. And describe the reasons of incomplete records, and the need of this study.

Definition of Single Entry System or Incomplete Records:-

A single entry system of bookkeeping is where transaction of business affects only one account. I.e. only one accounts value will decrease or increase based on transaction amount. Under this system a cash book is prepared that shows the payment and receipts of the cash transactions. Under the single entry system of bookkeeping the cash book and the personal accounts of creditors. And debtors are maintained and no other ledger is maintained.

Introduction:-

Incomplete accounting records are those records which at present or not complete according to double entry principles. Many authors describe it as the single entry system but according to majority of accountants. It is appropriate to describe it as incomplete records because incomplete records contain:

1) Both the aspect of some of the transactions.
2) Only one aspect of some of the transactions.
3) No aspect of some of the transactions.

In other word the term single entry is applied to a method of accounting under which accounts are not maintained as per double entry system .under this method two aspects of every transaction are not recorded and trail balance cannot be prepared. Personal accounts of debtors and creditors of the trader are kept.

The usual subsidiary books are sometimes kept in just the same way as in double entry system but the posting are made therefrom of such entries as relate to personal accounts. Thus the entries from the cash book are posted only so far as they relate to moneys received from debtors and the payment made to creditors.

Cash book entries relating to accounts other than personal one are not posted to any ledger accounts. From the day and invoice books. The sales and purchases are charged and credited to personal respective accounts. But the periodical total of these books are not posted anywhere from the bill books also only the personal aspect of each transaction is posted to the ledger such a bookkeeping method is incomplete and unsatisfactory and it is clear that accurate information of the operation of the business is entirely lacking.

Reasons of Incomplete Record:-

Accounting records may be incomplete any one or more of the following reasons:

1) The businessman may be ignorant of the separate legal entity assumptions.
2) The businessman may be ignorant of the double entry accounting principles.
3) The businessman may not intentionally maintain proper accounts to evade taxation.
4) Destruction of books of accounts due to fire flood etc.
5) The businessman may be ignorant GAAP rules.
6) The businessman may be ignorant accounting standard rules (Indian A.S. or other).

Advantages of Single Entry System:-

1) Single entry system is very simple. A person not having complete knowledge of accounting can also maintain account books as per single entry system.
2) In case of small business and household accounting single entry system is much suitable.
3) All accounts as required under double entry system are not maintained under single entry system. Only personal accounts and cash book are maintained, therefore accounting work is minimized.
4) In single entry system when accounting work is minimized. Expenses involved in maintenance of accounts are also reduced. (Salary of account staff, stationary, etc.).
5) The single entry system is easy and less time consuming in preparation of accounts.

Disadvantages of Single Entry System or Incomplete Records:-

Maintenance of single entry system of accounting faced the following problems:

1) Arithmetical accuracy of accounts cannot be checked because no agreed trail balance can be prepared in single entry system.
2) In the single entry system true profit/loss cannot be ascertained because trading and profit &loss account cannot be prepared.
3) In the single entry system true financial position cannot be ascertained because balance sheet cannot be prepared.
4) It is difficult to conduct the audit such the records prepared in single entry system.
5) In the single entry system it is difficult to operate internal control system.
6) In this accounting system it is difficult to operate internal check system.
7) In this accounting system it is difficult to exercise control over assets.
8) In the single entry system difficult to detect fraud.
9) Single entry system are not recognized by the courts, sales tax, and income tax authorities.

10) As nominal accounts are not kept or if kept are generally of an incomplete character, interim accounts or comparative or other statistical information cannot be obtained.

11) Single entry system is unscientific method of accounting.

EXAMPLE OF SINGLE ENTRY SYSTEM

DATE	DESCRIPTION	INCOME	EXPENSES	BALANCE (in RS.)
01/01/2023	Balance b/d	50000	30000	20000
05/01/2023	Wages paid		5000	15000
10/01/2023	Electricity bill paid		5000	10000
11/01/2023	Stock purchase		9000	1000
25/01/2023	Sales	30000		31000
28/01/2023	Bank deposit	15000		46000
30/01/2023	Balance c/d	**95000**	**49000**	**46000**

Major Differences between Double Entry System and Single Entry System:-

BASIS	DOUBLE ENTRY SYSTEM	SINGLE ENTRY SYSTEM
1) Assumptions and principles	This is based on certain principles and assumptions.	This is not based on certain principles and assumptions.
2) Record of transactions	In double entry system both the aspect of all the transactions are recorded.	In single entry system there is no record of some transactions some transactions are recorded only one aspects. Where some other transactions are recorded both their aspects.
3) Ledger	Personal, real and nominal accounts prepared in double entry system.	Only personal and cash accounts are prepared in single entry system.
4) Type of recording	In this system complete recording of the accounts.	In single entry system record are incomplete.
5) Preferable for	It is preferable for big enterprises.	It is preferable for small enterprises.
6) Preparation of financial statement	Easy to prepare the financial statement.	Difficult to prepare financial statement.
7) Suitable for tax purpose	Yes, this is suitable for tax purpose.	No, this is not suitable for tax purpose.
8) Financial position	Can be ascertained easily.	Cannot be ascertained easily.

Conclusion:-

A person of less accounting knowledge can maintain records as per single entry system. But due to some shortcomings in this system. Double entry system evolved almost all the countries of the world have adopted double entry system for maintaining records.

PREPARATION OF ACCOUNTS FOR INCOMPLETE RECORDS

To ascertain the results of operations and the financial positions of the business, the information available from the incomplete records can be used in the following methods.

Statement of Affairs Method:-

The practical steps involved in the ascertainment of the profit or loss according to statement of affairs method is given below.

Step-1ascertain opening capital: by preparing a statement of affairs at the beginning of the year.

Step-2ascertain closing capital: by preparing a statement of affairs at the end of the account period.

Step-3add: the amount of drawing to the closing capital.

Step-4deduct: the amount of additional capital introduced from the closing capital.

Step-5ascertain profit or loss: by deducting opening capital from the adjusted closing capital.

Step-6make adjustment: for items not yet adjusted while calculating closing capital.

NOTE: ***-adjusted capital =closing capital +drawing –additional capital.***

Final Accounts Method:-

The practical steps involved in the preparation of the final accounts from incomplete records are given below.

Step-1 prepare cash and bank account summary to ascertain missing information (such as opening and closing balance, cash sales, cash purchases, drawing).

Step-2 prepare total debtors accounts to ascertain the missing information (such as opening and closing balance, B/R drawn, credit sales).

Step-3 prepare bills receivable account ascertain the missing information (such as opening/closing balance, B/R drawn, B/R collection, B/R endorsed).

Step-4 prepare total creditors account to ascertain the missing information (such as opening/closing balance, credit purchases, payments made, B/P accepted, B/R endorsed).

Step-5prepare bills payable account to ascertain the missing information (such as opening/closing balance, B/P accepted, B/P discharged).

Step-6 prepare stock accounts to ascertain the missing information (such as opening/closing stock, total purchases, cost of goods sold, and shortage).

Step-7 prepare revenue expense account to ascertain the missing information (such as opening/closing balance of outstanding, prepaid expenses, expense paid, current years expenses).

Step-8 prepare revenue income account to ascertain the missing information (such as opening/closing balance of accrued/unacccrued income, income received, and currentyear's income).

Step-9 prepared fixed assets account to ascertain the missing information (such as opening/closing balance purchases/sales, depreciation provided, profit/loss on sales).

Step-10 ascertain opening capital by preparing statement of affairs at the beginning of the opening period.

Step-11 prepare trail balance to check the arithmetical accuracy.

Step-12 prepare trading and profit and loss account and the balance sheet.

The help these steps can be prepared final accounts from incomplete records.

Needs of the Study:-

Single entry system is one of the unpopular method of accounting. But it is important in small business or firms. It is important to know how can be prepared accounts in single entry system. This is easy to prepare accounts in single entry system any normal person can be prepared account in this method. It is important to know how many types of accounting to prepare an account.

Objectives:-

Following are the main objectives of the study:

1)To identify the meaning of the single entry system or incomplete records.

2) To identify the method of accounting in single entry system.

3) To identify the how to prepare journal entry in single entry system.

4) To study the reasons of incomplete records.

5) To analyze difference between single entry system and double entry system.

6) To identify the legalities and illegalities of single entry accounting system.

7) To identify how to prepare the accounts from incomplete records.

8) To identify how to and how many methods of to prepare final accounts from missing information.

9) The objective of this system is to record the cash related transactions and information relating to debtors and suppliers. To determine the profit and loss and assets and liabilities, position with the help of available information.

10) To make record keeping economical and easy without adhering to the accounting principles and policies. To make the record keeping suitable for small business firms and sole trading concerns as they are not required to maintain complete books of account in a systematic manner.

Limitations of Single Entry System:-

1) Incomplete and unscientific method: this system is incomplete because real and nominal accounts are not prepared and also due to the fact that the debit and credit aspect of all transactions are not recorded.

2) Trail balance cannot be prepared: quit often this system does not record both the aspect s of transactions, therefore at the end of the year arithmetical accuracy of the books cannot be checked by preparing a trail balance.

3) Performance of business cannot be ascertained: trading and profit & loss account cannot be prepared and hence the gross profit, net profit on sales cannot be known.

4) True financial position cannot be ascertained: it is very difficult to prepare balance sheet so the true financial position cannot be ascertained.

5) Unacceptable to tax authorities: tax authorities do not accept accounts prepared according to single entry system for computation of tax.

6) Difficult to locate frauds: it is difficult to locate frauds under this system and so employees may become dishonest and negligent it encourages misappropriation fraud and carelessness.

References:-

1) B.M. Agrawal &Dr. M.P. Gupta, Advanced Accounting, - Shuchita Publication (P) Ltd. 25/19 L.I.C. Colony TagoreTown Allahabad – 211002,
I.S.B.N-81-7666-332-8, 3rd Edition July 2005,
Page- 14.1 - 14.70,

2) P.C.Tulsian, Financial Accounting,– Pearson India Education Center Pvt. Ltd.
CIN- U722200TN2005 PTC 057128
Sector 16 Noida 201301 U.P. India,
Page -15.1 – 15.81,

3) M.C Shukla And T.S Grewal And S.C. Gupta, Advanced Accounts, S. Chand And Company Ltd.
Head Office – 7361 Ram Nagar New Delhi 110055,
Page – 8.1-8.56,

4) Dictionary Of Commerce – Edited By M.C Maidan – Himalaya Publishing House Delhi "Pooja Apartments" 4-B Murari Lal Street Ansari Road Durga Ganj New Delhi 110002 Published In 2008,
Page – 4-5.

Ajay Kumar
Village and Post – Lauwar, Patti,
District – Pratapgarh, (U.P.)
Pincode:230134.
Mobile: 91-8765901355
Gmail:vermaajay102000@gmail.com

39

Adolescence-Challenges and Strategies for Success

Dr. Jai Parkash

Abstract:

Adolescence, a period of significant transition from childhood to adulthood is marked by numerous physical,emotional and social changes. This research article explores various stages and situations adolescents comeacross,along with a multitude of challenges they face. It sheds light from mental and physical health issues to social pressures, academic stress and behavioural changes.Furthermore,the exposure to technology and media adds another layer of complexity to their experiences. It also examines the impact on self esteem and behaviour ofadolescents.Thus, recognising the adolescent's heightened sense of self importance, the article provides strategies for self management, parental guidance, and school based interventions including counselling,co- curricular activities,and positive coping mechanisms. Adolescence can be empowered to navigate this challenging stage successfully through open communication, supportive environment and by focusing on their well being.The only possible way to mitigate these challenges and enable adolescents to lead fulfilling lives is to apply the above mentioned strategies quite meticulously.

Adolescence stands as a pivotal period in human development, characterized by profound physical, emotional, and social transformations. This comprehensive research article delves into the intricate stages and situations adolescents encounter, alongside a myriad of challenges they confront. It illuminates the landscape from mental and physical health tribulations to social pressures, academic strains, and behavioral metamorphoses. Moreover, it scrutinizes the ramifications of technology and media exposure on self-esteem and behavior. Recognizing adolescents' heightened sense of self-importance, the article furnishes an array of strategies encompassing self-management, parental guidance, and school-based interventions, including counseling, co-curricular activities, and positive coping mechanisms. By fostering open communication, nurturing supportive environments, and prioritizing their well-being, adolescents can be empowered to navigate this intricate stage successfully. The meticulous application of these strategies emerges as the quintessential approach to mitigating challenges and enabling adolescents to lead fulfilling lives.

Introduction :

Adolescence is a critical phase of development highlighted by rapid physical, emotional and social changes. It is a period of exploration,self- discovery, and identity formation; in a way , it is a period of immense growth and transformation. However, it is also accompanied by challenges and uncertainties that can have long lasting effects on an individual's well being. Various issues and challenges faced by adolescents, along with strategies to address them effectively will be explored in this article.

Adolescence, a critical juncture of development, is underscored by rapid physical, emotional, and social metamorphoses. It represents a period of exploration, self-discovery, and identity formation—a time of immense growth and transformation interwoven with challenges and uncertainties that wield profound effects on individuals' well-being. This article embarks on an exploration of various issues and challenges encountered by adolescents, along with strategies aimed at addressing them effectively.

Stages and situations:

During adolescence , individuals undergo several stages of development, including early adolescence (10 to 13 years), middle adolescence(14 to 17 years) and late adolescence (18 to 21 years). Each stage presents unique challenges as this age group children fight with a complex web of issues such as puberty, peer pressure, academic expectations, and identity formation. Additionally ,they are exposed to an array of situations, from familial conflicts to societal pressures, that shape their experiences during this period.Adolescence is a difficult time for anyone to live through. But in today's era of social media, easy access to substances, and unprecedented misinformation, the perils of being an adolescent can seem never-ending.

Challenges faced by adolescents:-

1. Mental and physical health issues: Adolescents may struggle with mental health disorders such as anxiety, depression, and eating disorders. During adolescence, the brain undergoes significant development, affecting emotional regulation and decision -making . Physical changes also bring challenges such as body image issues and concerns about sexual development.

Here are a few of the realities of being a teenager in 21st century :-

A survey from Harvard's Graduate School of Education found that the isolation spike during the COVID-19 pandemic was most intense for teenagers.

During this period ,teenagers on average, spend many hours per day on social media.

Also today's teens tend to get less sleep than teens of previous generations, and they have less social interaction.

All of this has led to an alarming spike in teenage mental health issues.

Adolescents often grapple with mental health disorders such as

anxiety, depression, and eating disorders, exacerbated by the significant developmental changes occurring in the brain. Concurrently, physical transformations introduce challenges like body image issues and concerns regarding sexual development. Notably, the isolation spike during the COVID-19 pandemic accentuated mental health struggles among teenagers, compounded by excessive social media usage and diminished social interaction.

2. Emotional and psychological challenges :-

Their quest for identity and independence also leads to emotional turmoil and confusion as adolescents navigate relationships and societal norms. The pursuit of identity and independence precipitates emotional turmoil and confusion as adolescents navigate relationships and societal norms, further complicating their journey through adolescence.

3. Social issues:-

The social landscape of adolescence is complex. The need for peer approval and acceptance intensifies, leading to pressure to conform to group norms. Bullying, social exclusion, and difficulty navigating romantic relationships are common issues. The social landscape of adolescence is intricate, characterized by a fervent need for peer approval and acceptance, culminating in pressure to conform to group norms. Bullying, social exclusion, and navigating romantic relationships emerge as prevalent challenges.

4. Peer pressure:-

The desire to fit in can lead to peer pressure influencing adolescence to engage in risky behaviours like substance abuse, unsafe sexual activity, or reckless driving. Recognising these pressures and developing healthy coping mechanisms is crucial. The desire for social acceptance often subjects adolescents to peer pressure, compelling them to engage in risky behaviors such as substance abuse, unsafe sexual activity, or reckless driving. Developing healthy coping mechanisms is imperative in resisting such pressures.

5. Academic pressure:-

Academic expectations can be a significant source of stress for adolescents .The pressure to excel, can lead to burnout and decreased motivation which can also take a toll on their mental well-being.

The weight of academic expectations looms large over adolescents, precipitating stress and burnout, which, in turn, can detrimentally impact their mental well-being and academic performance.

6. Stress Management:-

Adolescents face academic demands, social expectations, and evolving personal identities, leading to heightened stress levels. Managing stress effectively is a vital skill for adolescents which can be developed by using techniques like relaxation exercises, mindfulness practices and engaging in hobbies. Adolescents grapple with heightened stress levels stemming from academic demands, social expectations, and burgeoning personal identities. Equipping them with effective stress management techniques, including relaxation exercises and mindfulness practices, is paramount.

7. Behavioralissues:-

The quest for independence and the struggle with emotional regulation can manifest as behavioural changes in adolescents .This might take the form of rebellion, mood swings, or impulsive decision - making.

8. Technology and media influence:-

The digital age presents both opportunities and challenges social media can fuel feelings of inadequacy , social comparison, unrealistic body image expectations, and cyber bullying . However, it can also be a platform for connection and positive self expression. Parental guidance and open discussions about responsible technology used are important.

The omnipresence of digital media presents both opportunities and challenges for adolescents, engendering feelings of inadequacy, social comparison, and cyberbullying. Parental guidance and discussions regarding responsible technology usage are indispensable in navigating this digital landscape.

9. Identity formation:-

A central theme of adolescence is the exploration of self and identity. This involves exploring values, beliefs, and aspirations, and navigating societal expectations. Adolescents may experiment with different styles and social groups to define who they are. Encouraging them to explore their interests, values and beliefs fosters a healthy sense of self.

10. Emotional and psychological effects:-

The constant physical, social, and emotional changes have significant impact on an adolescent 's self esteem and emotional well being. Feelings of insecurity, confusion, and self- doubt are common .They may experience mood swings, feelings of isolation ,and difficulty controlling emotions. Creating a safe space for open communication

and offering emotional support are crucial for healthy development. The whirlwind of physical, social, and emotional changes exacts a toll on adolescents' self-esteem and emotional well-being, giving rise to feelings of insecurity, confusion, and self-doubt. Creating safe spaces for open communication and offering emotional support are imperative for nurturing healthy development.

11. Self importance:-

The adolescent brain undergoes development in areas related to self- evaluation leading to a heightened sense of self-importance .This egocentrism also fuels a desire for independence and self exploration. It can also lead to conflict and difficulty empathizing with others.
The adolescent brain undergoes significant development in areas pertaining to self-evaluation, fostering a heightened sense of self-importance and egocentrism. While this fuels a desire for independence and self-exploration, it can also precipitate conflict and hinder empathetic understanding.

Strategies to address Adolescent Challenges:-

1. Individual level:-

Developing healthy coping mechanisms is crucial for adolescents. Encourage adolescents to develop resilience and coping skills through mindfulness practices, self care activities, and positive affirmations. Providing access to mental health resources and support networks will also help.Talking to a trusted friend,family member or therapist can provide an outlet for emotions. Engaging in hobbies, sports, or creative activities can be sources of stress relief and foster positive self expression.
Encouraging the development of healthy coping mechanisms is paramount, involving mindfulness practices, self-care activities, and fostering positive affirmations. Providing access to mental health resources and support networks serves as a crucial pillar in adolescents' well-being.

2. Parental level :- Open communication and active listening play a significant role. Parents should create a safe space where adolescents feel comfortable discussing their concerns and seeking guidance.Providing support, guidance and clear expectations makes it easier for them .Also fostering independence is essential. Educate parents about adolescent development and the importance of realistic expectations as setting clear boundaries with love and understanding,modelling healthy behaviours, increasing positive self- esteem help adolescents fighting against challenges faced by them. Open communication and active listening serve as linchpins in parental guidance, fostering a safe space for adolescents to articulate their concerns and seek guidance. Educating parents about adolescent development and setting clear boundaries with love and understanding are essential in nurturing adolescents' well-being.

3. School level:-

Schools can play a significant role in supporting adolescent well being. Implementing programs on stress management, healthy relationships and cyber bullying awareness equip students with essential skills.Counselling services, peer support groups ,and extracurricular activities should be readily available to them to promote holistic development . Educational programs on mental health and well being can also be organised. Schools play a pivotal role in supporting adolescent well-being through the implementation of programs focused on stress management, healthy relationships, and cyberbullying awareness. Counseling services, peer support groups, and extracurricular activities serve as conduits for holistic development.

4.Community Level:-

Organise awareness campaigns, workshops and outreach programs to educate adolescents about healthy behaviours, risk prevention,and available resources. Engage community stakeholders in creating safe and inclusive environments for adolescents to thrive. Organizing awareness campaigns, workshops, and outreach programs facilitates adolescents' education on healthy behaviors, risk prevention, and available resources. Engaging community stakeholders in creating safe and inclusive environments fosters an ecosystem conducive to adolescents' flourishing.

Conclusion:-

Adolescence is a challenging period and this crucial stage only shapes adulthood. This is a transformative journey filled with challenges and triumphs. By addressing the multifaceted issues by adolescents at individual, parental,school, and community levels, we can empower them to overcome obstacles and realise their full potential. It is imperative to recognise the unique needs and experiences of adolescents and provide them with the resources and opportunities they need to flourish in today's complex world. By equipping teenagers with healthy coping mechanisms,open communication within families and schools ,and nurturing a supportive environment,we can empower them to navigate this crucial stage and emerge as resilient and well-rounded personalities. Our collective efforts and targeted strategies can create a more supportive environment for the next generation. Adolescence epitomizes a transformative journey filled with challenges and triumphs, delineating the trajectory towards adulthood.

By addressing the multifaceted issues faced by adolescents at individual, parental, school, and community levels, we can empower them to surmount obstacles and realize their full potential. It is imperative to recognize adolescents' unique needs and experiences, furnishing them with the requisite resources and opportunities to flourish amidst the complexities of the modern world. Through the cultivation of healthy coping mechanisms, fostering open communication within families and schools, and nurturing supportive environments, adolescents can navigate this crucial stage and emerge as resilient and well-rounded individuals. Our concerted efforts and targeted strategies hold the key to creating a more supportive environment for the next generation, heralding a future characterized by empowered and thriving adolescents.

References:

1.https://oercommons.org/courseware/lesson/66171/overview

2.Brown BB, Klute C. Friendships, cliques, and crowds. In: Adams G, Berzonsky MD, editors. Blackwell Handbook of Adolescence. Malden, MA: Blackwell; 2003.

3.Buchanan, C.M., J.S. Eccles, and J.B. Becker 1992. Are adolescents the victims of raging hormones? Evidence of activational effects of hormones on moods and behavior at adolescence. Psychological Bulletin

4.The New York Times - The American Teenager: Stressed, Depressed and Feeling Hopeless (https://www.nytimes.com/2023/11/18/opinion/teenagers-mental-health-treatment.html) by Judith Newman

5.Psychology Today - 7 of the Biggest Challenges Teens Face Today (https://www.psychologytoday.com/us/blog/social-instincts/202301/two-worsening-mental-health-issues-for-teens) by Barbara Greenberg

6.https://www.psychologytoday.com/us/blog/the-stories-of-our-lives/202403/narrating-growth-predicts-college-students-well-being

Address
Dr Jai Parkash
Lecturer History
H.No - 2038, Sector 23
Sonipat (Haryana)
Contact No.
9991311411
Email- drjpdalal@gmail.com

40

Train To Pakistan:A Study of Multiculturalism And A Tragic Tale of Partition

Dr. Narendra Singh

Abstract:

All we know that India got freedom in 15th August 1947.The attainment of Indian Freedom was followed by tragic drama of partition.India was left bleeding for sometime.This tragic drama of partition inspired many remarkable novelists to write novels on partition themes. Khushwant Singh is one of them who wrote Train To Pakistan on the theme of partition.The novel reflects the trauma of partition in an effective way.It is the story of Mano Majra, a village on the Indo- Pak border.Shikhs and Muslims lived in this village peacefully.They respected to each other in the village.There was no horror and terror of partition on there.The novelist presents a picture of multiculturalism in the novel.But two incidents disturb the peace of the village people Mano Majra. First was murder incident of Ramlal who was mony lender in the village.Second incident was a ghost train from Pakistan which was full of Sikhs and Hindus dead bodies.Hindus and Sikhs wanted to revange from Pakistan and Muslims but Jagga saved the lives of Muslims cutting the rope on the bridge sutlej river.He dies on the railway track due to gun fire.Realy Jagga is a protagonist of the novel who loves to Nooran a Muslim girl.So the novel Train to Pakistan is tragic tale of partition.

Key words: Novelist, Multiculturalism, Partition, Murder, A Ghost Train.

1. Introduction: Khushwant Singh is a well known post colonial writer in English language.He was born in 1915 in Hadali Punjab which is now a part of Pakistan.He was a famous Indian novelist, journalist and social critic known for his clear cut secularism humour,wit and deep passion for poetry. His literary works strongly reflected contemporary satire and political commentary.His first novel Train to Pakistan dealing with the impact of partition on Mano Majra, a small village on the Indo- Pakistan border which is an epitome of India with Sikhs,Hindus and Muslims living in harmony until independence.His other best novels are I shall Not Here The Nightingale, Delhi, The Company of Women etc.It is truly said that very few novelists can match Khushwant Singh as a novelist on the theme of partition.

2. Research Methodology: The present research paper attempts to show multiculturalism, the impact of partition and tells a tragic tale of partition.In this research paper the analytical and description methods are adopted by me.The analysis is done after deeply studying the partition fiction.The Novel Train to Pakistan is taken as the primary text for the study, while references have been taken from various books,articles and famous journals.

3. Research Objectives: There are some main objectives of this study which are-

1.Multiculturalism.

2.A tragic tale of partition.

3.The impact of partition.

4.Important incidents.

4. Background: Train to Pakistan is a historical novel written by Khushwant Singh.It was published in 1956.It is an interesting blend of fact and fiction.He narrates the history of partition with the help of fictional village mano majra.He observes the two communities Hindu and Muslims during partition time.He portrays the reality of situation and horrible tragedy of two communities. Partition had brought about division to the lives of people who dreams of a united India.

It is real fact that partition literature presents political changes. social- political scenarios, historical events of that period of time.Most of the literary composition focuses upon the violation of women, how they were being victimised or targeted to attack on the dignity of a community. The novelist presents a glimpse of partition time. He presents a love story of Juggat Singh and Nooran during the time of partition.Jagga's sacrifice is also presented by Khushwant Singh.It become a tragic tale of partition in the novel.So novel is also a tragic tale during the time of partition.

4.1. Multiculturalism: India is known for its cultural diversity in the world map and maintaining unity.Many Indian and foreign writer depicted cultural diversity and conflict between two major religions in their writings and Khushwant Singh is also one among them who depicted Hindu and Muslim in India.In the novel Train to Pakistan he depicted a small village Mano Majra which is the symbol of multiculturalism.The village of Mano Majra was situated along the border of Punjab.People of different socio-religious backgrounds lived in this village in perfect amity.As they believed in the principles of peaceful co-existence they were not strangers to love, respect and trust.They had inordinate respect for each other's socio-cultural background and religious rituals.They never discouraged the differences in terms of lifestyle and food habits.As a result of his great respect

for the multicultural society of Mano Majra, Singh brings out the occupational and religious diversity of its residents in the opening page of the novel itself:

"Mano Majra is a tiny place. It has only three brick buildings, one of which is the home of the moneylender Lala Ram Lal.The other two are the Sikh temple and the mosque.The three brick buildings enclose a triangular common with a large peepul tree in the middle.The rest of the village is a cluster of flat-roofed mud huts and low-walled courtyards, which front on narrow lanes that radiate from the center ... At the western end of the village there is a pond ringed round by keeker trees.There are only about seventy families in Mano Majra, and Lala Ram Lal's is the only Hindu family.The others are Sikhs or Muslims, about equal in number.The Sikhs own all the land around the village; the Muslims are tenants and share the titling with the owners.There are few families of sweepers whose religion is uncertain". (Train to Pakistan 10)

These communities have lived in the village and shared their languages, religions, cultures and beliefs. Singh has brought into bold relief the socio- religious unity in Mano Majra. Singh is all praises for the religious tolerance of the villagers:

This is a three-foot slab of sandstone that stands upright under a keeker tree beside the pond. It is local deity, the deo to which all the villagers- or pseudo-Christian Hindu, Sikh, Muslim repair secretly whenever they are in special need of blessing". (Train to Pakistan 10-11).

Multiculturalism celebrates the vast differences in terms of religion, ideology, culture and the different ways of life.Though the residents of Mano Majra, particularly the Muslims, belong to the minority community yet they are never ill at ease in the village.This is because they enjoy a security in religious and socio-cultural matters. Singh scripts their comfortable outlook and sense of security thus:

The mullah at the mosque knows that it is time for Morning Prayer. He has a quick wash, stands facing west towards Mecca and with his fingers in his ears cries in long sonorous notes, "Allah-ho-Akbar". The priest at the Sikh temple lies in bed till the mullah has called. Then he gets up, draws a bucket of water from the well in the temple courtyard, pours it over himself, and intones his prayer in monotonous singsong to the sound of splashing water. (Train to Pakistan 12-13)

The citation above makes our understanding of multiculturalism crystal clear.

The different communities have different modes of worship in Mano Majra and the religious identity of each group is revealed by them:

"In the mosque, a dozen men stood in two rows silently going through their genuflections. In the gurudwara, Meet Singh sitting beside the book which was folded up in muslin on a cot, was recited the evening prayer. Five or six men and women sat in a semi-circle around a hurricane lantern and listened to him." (Train to Pakistan 59).

True multiculturalism prevails in the village of Mano Majra. Iqbal, has been abroad for several years. Small wonder, he has a fascination for the western outlook of life. Though his praise of the monotheism of Europe is interspersed with wonderful epithets, yet he is critical of the hegemonic attitude of monotheistic Christianity:

They are all Christians of one kind or another. They do not quarrel about their religions as we do here. They do not really bother very much about religion. (Train to Pakistan 49)

In a multireligious and multicultural country like India, people have inherent faith in different avatars' of god. Hence the different religees perform different religious practices. In his discussion with Iqbal, Meet Singh makes this viewpoint of the novelist pointedly clear:

Everyone is welcome to his religion. Here next door is a Muslim mosque. When I pray to my Guru, uncle Imam Baksh calls to Allah. How many religions do they have in Europe? (Train to Pakistan 49.

4.2. A Tale of Partition: The novelist narrates the harse and pathetic story of the individuals and group of communities experienced by them as well as the worse change in their lives resulted by partition. The partition of India was one of the most dreadful times in the recent Indian history. It was the darkest period in the history of modern India which witnessed a movement of hatred and bigotry of man who had been living like brothers for centuries. According to the theme of the novel Train to Pakistan we see that partition was in fact a parting of manners, attitude, a final break with each other, an end to long held friendship where is one was thirsty for the blood of the other. All such description give us a negative picture:

"We know what is happening. The winds of destruction are blowing across the land. All we here is kill. The only ones who enjoy freedom one thieves, robots and cut throats".

Even the weather of year of partition takes a turn and Khushwant Singh narrates;

"The summer was hotter then usual and drier and dustier ..... There was no rain. People begin to say that God was punishing theme for their sins".

The actual story begins with house-breaking and robbery and the murder of the village moneylender, Lala Ramlal, the only Hindu of the village by a gang of dacoits. Jagga is suspected of that murder. But at that time Jagga is away from home as he is with his sweet-heart Nooran, the daughter of

the old Imam of the village mosque. Upto this time Muslims and Sikhs are leading a life of happy communal harmony. The murder of Lala Ramlal offered a shrewd magistrate, Hukum Chand (D.C. of Mano Majra, getting drunk and pawing the hired Muslim prostitute, Haseena) the chance to manipulate it as he likes. A trainload of dead bodies of Sikhs and Hindus comes from Pakistan and this inflames the communal frenzy of the Sikhs. Then the Sikhs hold a meeting. Local Muslims are evacuated to a nearby refugee camp at that time. The Sikh leader boy tells the villagers that a trainload of Muslims is to cross the bridge on the river Sutlej the next day, and they should kill all nin those Muslims. Even the reminder that the Muslim brethren of Mano Majra village will go to Pakistan by that train cannot stop them now from the execution of the plot.

The Sikhs planned to stretch a rope across the bridge just one foot above the funnel of the engine. This means that all the four hundred or five hundred Muslims on the roof of the train will be swept into the river by the rope. Accordingly the next night the Sikhs await the coming of the train in tense anticipation. But Jagga reaches the spot. As the train arrives he climbs on the bridge and stretches on the rope while other Sikhs awaiting the disaster see this and fire shots at him. Before he falls down dead under the oncoming train he has cut the rope with his "kirpan" (sword). Thus, this "Number 10 Badmash" Juggut saves many Muslim lives at the cost of his own life. This sacrifice of Juggut Singh to save Nooran and the awakening of compassion in the magistrate Hukum Chand's heart for a young Muslim prostitute represent the still sad voice of humanity amid the pointless brutality and frenzy.

4.3. Effects of partition: All we know that partition of India during independence is a process of division based on the the process of partition, was not show clear and peaceful. it brought the terror of killing, bloodshed, countless travellers mass kill became the best way to imply the community deference. Due to the partition the economy of both countries suffered and phased a downfall many people lost their homes as they were forced to move from one state to another the immediately result of the migration was violence which continued with a series of riots between the two countries. We see that the entire nation was affected by the partition and the communal hatred . Mano Majra still lived in a peace and harmony with their neighbours but then Lala Ramlal a local and only Hindu money lender murdered than a fine day a train arrives carrying the bodies of dead body of Sikh with that the village gradually terms into a battlefield. Neither magistrate Nor police were able to control the rising wave of violence and riots against the innocent and there once neighbour.

Partition effects mano majra at both levels at the community level and at the individual level. At the community level It effects very badly with Hindus, Muslims and Sikhs the dark clouds of suspicion and the Sikhs and Muslims who have lived together for centuries.Now they become enemy and they hated to one onther.At the individual level partition effects mainly the two characters Juggat Singh and Nooran the daughter of Imam bukhs. They love each other. Juggat Singh loves for Nooran is a positive force it cuts across cast and religions barriers. The novelist beautifully presented the emotional ties between them after release from the police custody allowance from his mother that Nooran visited her before leaving for the refugee camp and she carriage child in her womb.

The people of Mano Majra both Sikhs and Muslims, look down on the ghostly train as a symbol of annihilation. The ghostly train sets as a canker of suspicion; so both Sikhs and Muslims begin suspecting each other's cultural and religious identities. The evil of partition and its resultant suspicion among the people of Mano Majra have been brilliantly summed up by Twinkle Manawar in the following words:

"Partition touched Mano Majra at both levels- at the community level and at the individual level. At the community level it affects very badly the Hindus, Muslims and Sikhs. The dark clouds of suspicion and fear arise among the Sikhs and Muslims, who have lived together for centuries. Yet feelings of brotherliness have not disappeared, and they meet for consultation in a scene that is both intensely humane and touching." (Contemporary Indian Writing in English 31)

Prior to the Partition, peace and tranquility was conspicuous in every fibre of social life of Mano Majra. But the abrupt arrival of the ghost train resulted in creating mistrust and suspicion among the people.

4.4. Main incidents: The novelist presents to many incidents during the time of partition as a fictional way in the novel Train to Pakistan but most important incidents are happened in the novel.These are murder incident of Lala Ramlal and a ghost train Incident from Pakistan which reaches at the village station mano Majra.There was no passenger in this train but full of dead bodies of Hindus and Sikhs.The actual story begins with house breaking and robbery and the murder of the village money lender Lala Ramlal.Jaggu and Iqbal singh have been arrested by police.when a train loaded of dead bodies of Sikhs and Hindus comes from Pakistan.Muslims and Hindus fear and hate to each other now.The Sikh holds a meeting.The Sikh leader boy tells the villagers that we should take revange from them.They planned to stretch a rope across the bridge just one foot above the funnel of the engine this means that

all the four or five hundred Muslims on the rope of the train will be swept into the river by the rope. But Jaggu has cut the rope with his kripan.Fire shots at him and he dies. He saves many Muslim lives at the cost of his own life. So the two incidents make this novel very interesting.

5.Conclusion: Thus Khushwant Singh describes the history of partition and multiculturalism in his novel Train to Pakistan.The novel presents a love story of Jagga and Nooran during the time of partition.Due to many incidents, the novel is called a tragic tale of partition.Murder of Lala Ramlal and a Ghost train make of this novel a tragic tale.when reader read this novel,thy imagine about those incidents which were happening in the partition time.So this novel is a heart touching tragic tale during the partition.

Works Cited

1. Singh Khushwant, Train to Pakistan, India: Penguin,2009 Pr.int.
2. Singh Khuswant: Train to Pakistan,TBI New Delhi,1889.
3. Kulshrestha, Chirantan "Khushwant Singh's Fiction "in Mukherjee, Meenakshi ed.Consideration.New Delhi: Allied publishers 1977.
4. Twinkle Manawar, "The Theme of Partition in Khushwant Singh's Train to Pakistan" in J.Dodiya ed. Contemporary Indian Writing in English,New Delhi: Atlantic Publishers and Distributors 1998.
5. Bruschi, Isabella,2010.Partition in Fiction: Gendered Perspectives.Atlantic Publishers and distributers.
6. Dr.Singh Kunjo, The Fiction of B.B.Bhattacharya ed.2002.Political Novels Based on Partition Riots.Atlantic publishers and distributors.
7. Multiculturism in Train to Pakistan by Sharma Archna, Sublime Tradition Vol.6,2013 Ed.by Dr.P.K.Jain, Sadbhavna Press, Bareilly.

Dr. Narendra Singh
Assistant Professor
Department of English
Constituent Government P.G. College,
Hasanpur, Amroha (U.P.)

41

A Literature Review upon the Land Use/Land Cover Mapping & Change Detection Analysis using Remote Sensing& GIS Techniques

Amit Singh, Prof (Dr.) Jai Prakash Yadav

Abstract:-

Now a days, Urban land-use deals with the problems emerging in urban centers in the process of selecting and translating into action, the optimum utilization of limited land between shopping centers and residential areas. The present paper has been based upon the debate of the phenomena of land use and land cover (LULC) which has undergone continue changes over the last few decades due to major variations in the environment caused by human and natural factors. A comprehensive review of the studies has been done so far in which a decreasing pattern in land use /land coverage has been identified.

Keywords: - Land use and Land cover; Change Detection; Remote Sensing; GIS Techniques

Introduction:-

Land is defined as an upper surface of the Earth on which all organic activities is being conducted. The use of land resources by the people gives ascent to land use resources which varies with the aims of its utilization; whether they may be food processing units, provision of shelter, recreation, extraction and mining activities or the bio-physical characteristics of land itself. Thus land use is being shaped under the influence of human needs and environmental features and process. The terms land use and land cover are not synonyms and the literature draws attention to their use and land cover change. Land use describes how people interact with land and its resources while land cover describes the physical material at the surface of the earth.

Land use includes activities and purposes such as agriculture, residential, industrial, mining, and recreational uses. Land use cannot be determined from satellite imagery, but requires other sources of data such as surveys and census data. Land use can have various effects on the environment and human health, depending on how the land is managed and modified. Land cover is the physical material at the surface of Earth, such as grass, asphalt, trees, bare ground, water, etc. Land cover can be observed and measured using satellite and aerial imagery, and can be classified into different types based on the characteristics and functions of the land. Land cover can also change over time due to natural or human factors, such as climate change, population growth, urbanization, and economic development.

Land cover and land use are both important for understanding the impacts of natural and human factors on the environment and human health. Land cover and land use data and maps can help managers and planners to assess the current and future conditions of the land, and to balance the needs and interests of different land users. Land cover and land use data and maps can also help to evaluate the effects of past and present management decisions, and to predict and mitigate the possible impacts of natural disasters, such as floods and storm surges.

Review of Literature:-

The study of land use / land cover change detection has moved from simplicity to complexity over the last decades. Many researchers and Academicians have attempted to evaluate future trend of land use and land cover by analyzing the past and present parcel of land. In the beginning period, the studies were concerned mostly with the physical aspect of the change. The geographer's interest in the areas associated with the activities within urban places, the economic base of cities which cities serve in one way or other and the pattern of distribution of cities. **(Harold M. Mayer & Kuhn C.F. 1965).** During mid 1970s, it was realized that land cover change modifies surface albedo, consequently the surface atmosphere energy exchange which impacts upon regional climate. **(Otterman, 1974; Charney and Stone, 1975; Seger et al. 1979).**

Existing Literature on Land use/ Land cover Change Studies:-

Various works on LU/LC have been made by the scholars, who have done major contributions especially on Land use/Land cover change detection studies.

R.L. Singh (1965) made a study related with morphology of cities to understand the arrangement of functional zones, the importance of individual centers and their land. **BOURNE (1974)** states in his paper "Land economics" that change in the urban spatial pattern has interrelationship between different components of such pattern like population characteristics and housing or between social areas and land use distribution. **ONOKERHORAYE (1977)** argued on contemporary land-use problems in the paper "Urban land use in Nigeria", mainly focused on land use regulation policies. **WILDER (1985)** examines the micro-level examination of the impact of the site and situation characteristics on the land-use succession and conversion.

DAI ET AL. (2001) claim that the rapidly changing pattern of urban growth has given rise to new problems for urban planning and redevelopment in China. The expansion of the various basic urban facilities, especially water supply, sewerage, and sewage disposal and transportation, constitutes the foremost municipal problems in most cities. **PAULEIT ET AL. (2005)** in their paper titled "Modeling the environmental impacts of urban land use and land cover change-a study in Merseyside, UK" explored the environmental and ecological consequences of urban land use and land cover change in residential areas to find out whether and how land use and land cover changed in selected residential areas.

Land use / Land cover studies using Remote Sensing & GIS Techniques:-

For using land in a sustainable order, it is necessary to update the existing land use/ land cover information in regularly. In present time Remote sensing and GIS techniques provide a better way to analyzing the change detection in land use/ land cover. It is also have the capability of monitoring the dynamics of land use resulting out of both changing demands of increasing population and the moments of nature acting to safe the landscape. It is mandatory to study the intra and inter urban form and understanding the evolution of urban systems are the still primary objectives in urban researchers.

Anderson et al. (1979) developed a system for utilization with remote sensing data which has been adopted by the U.S.G.S. for 1:250,000 and 1:100,000 scale land use and land cover mapping of USA. **Friedman et al. (1979)** developed two methodologies for detecting and mapping land cover changes in growing urban region based on digital image processing techniques. **Toll et al. (1980)** explained that Landsat digital enhancements and classification maps are useful for updating the urban expansion of standard metropolitan statistical areas on a macro scale. **Michalak (1993)** highlighted the application of GIS in land use change analysis and expressed his views that remotely sensed images are suitable to consistent, accurate and up to date land use elevations. **Nobi, et.al, (2009)** have studied the Land use/land cover mapping serve as a basic inventory of land resources throughout the world, whether regional or local in scope, remote sensing offers a means of acquiring and presenting land cover data in timely manner. **LI ET AL. (2011)** examined the current use of high-resolution remote sensing technology to monitor urban land-use change to affect the atmospheric circulation, hydrological process, the microclimate, soil, biodiversity, and environmental pollution. A Satellite device records response which is indicated by many characteristics of the land surface. A interpreter uses the element of tone, texture, pattern, shape, size, shadow, site and association to get information about land cover. Since the launch of first remote sensing satellite in 1972 named Landsat 1, the land use/land cover studies were carried out on different scales for different users accordingly by their objectives. For instance, Waste land mapping of India was carried out on 1:1million 55 scales by NRSA using 1980-82 Landsat multi- spectral scanner data. About 16.2% waste lands were estimated by this study. It has also been noted over time through series of studies that Landsat Thematic Mapper is useful for general extensive synoptic coverage of large areas. Consequently, it reduces the need of expensive and time consuming ground surveys which are conducted for validation of data.

In India, National Remote Sensing Agency (NRSA), The Department of Space under National Urban Information System (NUIS) scheme used Cartosat -1, Resource sat -1 and LISS – VI + PAN merged satellite data to carry out national level urban land use thematic mapping at 1:10,000 scale of 564 cities/ towns including state capitals and union territories, 23 cities with million plus population, NCR towns and one town from each class (from class I to class VI) from each state and union territories **(NRSA 2008).**

For this Land use mapping, A Standard Classification Scheme was designed with classes hierarchically arranged with information as the level I to level V.

In present study, Land use/ Land cover mapping and Change Detection Analysis of Shahjahanpur City, Uttar Pradesh has carried out applying the above Land use Classification standards designed by NRSA.

Conclusion:-

Thus, It's very important to study of land use/ land cover of the particular area to observe the changes and degradation upon the Earth surface day by day due to natural events like climate variability or climate change resulting floods, drought, or anthropogenic causes due to industrialization and urbanization. Many more reasons also there explained in literature review and describe how land use/ land cover are affecting, literature review are important for policy making and taking decisions to save environment degradation. In present time, there are many techniques which have been implemented in monitoring and assessment of land use/ land cover like remote sensing and GIS and GPS.

References:-

- Anderson, J.R., Hardy, E.E., Roach, J.T. and Witmer, R.E. (1976). A Land Use and Land Cover

Classification System for use with Remote Sensor data. U. S. Geological Survey, Professional Paper, No. 964, USGS, Washington, D.C., P.28.

- Bourne, L. S. (1974). A Descriptive Typology of Urban Land Use Structure and Change. Land Economics, 50(3):271–280.
- Charney, J., Stone, P. H., & Quirk, W. J. (1975). Drought in the Sahara: a Biogeophysical feedback mechanism. science, 187(4175), pp.434-435.
- Dai, F., Lee, C., and Zhang, X. (2001). GIS-based geo-environmental evaluation for urban land-use planning: a case study. Engineering Geology, 61:257–271.
- Friedman, S.Z. and Angelci, G.L. (1979). The Detection of Urban Expensin from Landsat Imagery, Remote Sensing Quarterly, Vol.1, pp.58-79.
- Li, C.-F., Yin, J.-Y., and Liu, L. (2011). Research overview on urban land use change based on remote sensing images. International Journal of Environmental Science and Development, pages 45–48.
- Mayer, W.B. (1965). Past and Present Land use and Land cover in USA Consequences. P: 24-33.
- Michalak, W.Z. (1993). GIS in Land use Change Analysis: Integration of Remotely Sensed data into GIS. Applied Geography vol. 13, pp28- 44.
- Nobi, E.P., Umamaheswari, R., Stella, C., and Thangaradjou, T. (2009). Land Use and Land Cover Assessment along Pondicherry and its Surroundings Using Indian Remote Sensing Satellite and GIS. American-Eurasian Journal of Scientific Research 4 (2): 54-58, 2009, ISSN 1818-6785.
- Otterman, J. (1974). Baring high-albedo soils by overgrazing: a hypothesized desertification mechanism. Science, 186(4163), 531-533.
- Onokerhoraye, A. (1977). Urban Land Use in Nigeria: Problems and Implications for Policy. Town Planning Review, 48(1):59.
- Pauleit, S., Ennos, R., and Golding, Y. (2005). Modeling the Environmental Impacts of Urban Land Use and Land Cover Change—A Study in Merseyside, UK. Landscape and urban planning, 71(2-4):295–310.
- Ramling, Shivpuje, P., (2018). Analysis of Land Use and Land Cover Change Detection Using GIS; SRTM University, Maharashtra, P.4.
- Singh, R.L. (1965). Banaras; A Study in Urban Geography. University Publishers Banaras, P 61.
- Toll, D.L., Royal, J.A. and Davis, J,B. (1980). Urban area Updates Procedures using Landsat data. Proceedings of the American Society of Photogrammetry, pp. 1-17.

Prof (Dr.) Jai Prakash Yadav
Professor& Ex Head
Department of Geography
D.A.V. College, Kanpur
Email id: yadav.jp.geo@gmail.com

Amit Singh
Research Scholar,
Department of Geography,
D.A.V. College, Kanpur
Email id: amit26546@gmail.com

42

An analysis of Browning's contribution to the English lyric.

Sahil Patil

Abstract

Robert Browning, who was born in 1812 and died in 1889, was a 19th-century English poet whose body of work spanned the Victorian era. Many of Browning's most famous poems employ his innovative use of dramatic monologue, in which the poem's speaker is a character often a recognizable literary or historical figure delivering a lengthy speech. Such poems plumb the psychological depths of intriguing and complex characters whose idiosyncrasies are gradually revealed throughout the poem. In works like "My Last Duchess" and "Porphyria's Lover," for example, Browning invites readers into the minds of narrators whose voices reveal a rich tapestry of conflicting emotions and moral corruption. These dramatic monologues not only showcase Browning's poetic skill but also offer a nuanced portrait of the human psyche. Browning was one of most popular poets of the 19th century, but his impact on poetry extends beyond that period. His innovative techniques and exploration of the inner lives of characters laid the groundwork for modernist poets. Browning's influence is evident in the works of subsequent generations, and his poetry remains a subject of study for its rich narrative complexity and psychological insight.

Introduction

Robert Browning had varied sense of aesthetic values. Perpetually on the lookout for experiment in poetic technique, he had attempted and succeeded at various aspects of poetry.

Exquisite use of symbolism in Browning's poetry

Browning could be regarded as an inaugurator of symbolism in English poetry. The term "symbolism" suggests the drawing together of two worlds-through the concrete world it suggests another world which is invisible. Thus, a rose for a poet is not only a rose, but something more. The visible and sensible world of Browning's poetry is full of meaningful symbols. He uses color, sound and light to suggest and evoke things. Generally, his titles for his books suggest a symbolic approach to writing Bells and Pomegranates for instance, can be seen as symbolic of musical sound in combination with created things and their relationships with each other and god. Browning's characters are all individuals as well as symbolic. The lost leader symbolizes the deserter of principles for trivial material gain. Fra Lippo Lippi is the symbol of the victory of a healthy culture over rigid asceticism in religion. Browning 'soften uses light and sunrise as symbolic of a divine agent. Lightning 'loosened' and the meteors and stars shining over the mountain are an appropriate setting for the noble scholar's burial place in a Grammarian's Funeral . The full moon is often used the by Browning as a symbol of maturity of love and knowledge. Color again suggests a mood or meaning. In Andrea Del Sarto, "silver grey" twilight is symbolic of the mediocrity and dullness of Andrea's art and life. "Gold" suggests brilliance, which Andrea is afraid of. Day-break and night are often used as symbolic of enlightenment and ignorance respectively. Browning uses insects, birds and animal to reveal the character of human beings. The "highflying birds symbolize man's aspiring sprit. But he clearly differentiates between man and animals-for man has an immortal soul. In some poems, characters stand for certain qualities. Lucrezia is a symbol of Andrea's art-perfect in lines but soulless. It is significant that the vigorous artist, Fra Lippo Lippi "splashes" his frescoe with bright colors, while Andrea is sensuousness through his constant concern with color-black blue, brown , rosy peach , and jade green. In Rabbi Ben Ezra occurs the famous symbol of the potter, his well and clay. God is the potter; time is the well and man is the clay. Browning's poetry is full of symbols of hope, coverage and faith "love is best", he concludes in one of his poems. Love symbolizes life's special game, triumph overtime and a means to achieve god head. Browning uses color, light, love, music etc. as symbol of the human souls and character.

Trails of romanticism Browning's poetry

Browning does not show much of romanticism but there is his poetry a subtle sense of mystery which is romantic. He does not go into ruptures our nature; indeed he is fully conscious of the ugly facts of nature and uses it is a background for man. Through initially influenced by Shelly's poetry, Browning letter carried romance into the inner world of the soul's adventure.

Manifestation of lyricism in Browning's poetry

One aspect of the romanticism is lyricism. Through one cannot call Browning a romantic one cannot underestimate his lyricism. He combines the dramatic with the lyrical especially lyrical are and the emotions running through the poems are truly lyrical. One the whole Browning is not strongly passionate or personal. He does not care much for melody and

music. However his few lyrics are inspired by his abiding love for Elizebeth Barrett.

Classism in Browning's poetry

Browning's poetry is marked more by classism then by romanticism. It is marked by a vigorous intellect. He is a dramatic poet and hence objective. Simple unsophisticated nature appeal less to him then the cultured and civilized cities often symbols learning and culture to Browning. He derived inspiration from the renaissance speculative interests and imaginative creed but he is not a classist as Ben Jonson was. He certainly substitutes the critical and the analytical for the imaginative sprit. His intellectual force and zeal for facts speak of his classical tendency, however, he also concentrates on the basic things and the vast themes of life, love and death. As far as style is concerned, one cannot find the classical virtue of clarity, conciseness, precision and directness in Browning's poetry. He is hardly ever simple in style. Browning's classism manifests itself in his critical sprit and his vigorous sport for liberal and humanitarian cases in his poetry. An obvious example is the Lost Leader where he deplores the leaders desertion of principles scared to mankind and god for the sake of material reward and fame. Browning's classism is also to be seen in his matter of facts projections of manners and customs. Thus is especially so of the poems reflecting Italian renaissance in which he vividly captures the spirit of the age. The Bishop Orders his Tomb at St Praxeds. Church last duchess is spoken by duke who typifies the arrogance, shrewdness, greed and taste in art which common in the renaissance nobleman of Italy. A Grammarian's Funeral presents a scholar who is also typical of the early renaissance giving up his life in arduous study in Finine, Browning projects few classical ideas on art, music, religion and science. Its hero sings in praise of human beauty. He considers art to be the "love of loving". Music assures the presence of god. Later on in his career, Browning dwelt with Greek legends. In Pauline he speaks of Agamemnon. He also refers to Andromeda and Plato. In Artemis he shows his classical scholarship again. Balaustion's adventure is inspired by his liking for Euripides, classical drama. His delight in Greek life and literature is well evident in Aristophanes' Apology.

Realism in Browning's poetry

The chief classical virtue of Browning poetry is in his realism. His attitude is for most of the part, objective, natural and sincere. He deals with various features of life as they really are. The characters he has created are true to life he is not concerned as the romantic poet was with the "picturesque groupings and tossings of the forest trees". He is more interested in "their roots and fibers naked to the chalk and stone". Realism is evident in Browning's evocation of the Italian ruins, churches, towns and landscapes. Italian art and life are depicted realistically. The renaissance tendency for intrigue is evident in The Laboratory; the ages concerned with the idea of damaging the soul of a hated person is evident in the soliloquy of the Spanish cloister. We get a beautiful picture of what the artist has painted in Fra Lippo Lippi. The life in Florence Square city peoples crosses, gossips, the shop signs, etc are realistic. Browning's characters are realistic in the psychological analysis is made of the bishop of saint praxed's church . we sense his fears , jealousy , his sensuousness and love of opulence through his words. At the same time his mode of speech reflects the delirium of a man on the verge of death.

Browning's portrayal of nature its trees and plants, animals and insects is again realistic. We get a vivid picture of the animal life on the island in caliban upon setebas. In the same poem, the delicious sensuous enjoyment of caliban lying in the slush, is communicated to the radar. Sunsets are beautifully and realistically picturised by Browning. He captures the play of light and color on the clouds and the leaves. Browning has reintroduced the reality of life and the natural world in his poetry. His chief means is his psychological insight. He delves into the human mind and unravels the complex strands of emotion, thought and feeling. Photographic realism does not satisfy him. He reveals the inner reality the soul of man. Through capable of striking word-paintings, yet these convey loss of fact than of associations with man. He can analyze the normal as well as the abnormal psychology of man. Nature forms an effective background to his characters.

Conclusion

Browning's poetry has various aspects. We cannot classify it as belonging to one particular type. He relishes fresh ideas and new forms. His basic aim and interest being the portrayal of man's inner reality, he uses other aspects help him in the process.

References

1. https://www.sparknotes.com/poetry/browning/
2. Venus English Exam Notes, Varun Enterprises(Regd.), Edition 2020,
3. English Literature Its History And Its Significance by William J. Long , Edition 1995, Kalyani Publishers
4. Arihant UGC net/jrf/set English paper 2 book by Mridula Sharma, Ajeet Singh Jadaun, Tanveen Kaur, Dr.

Chakreswari Dixit, Chhavi Kumar, Arihant Publication Limited, Edition 2022
5.https://www.poetryfoundation.org/poets/robert-browning

Name **Sahil Patil**
Father's Name Arvind Kumar Patil
Address Vidya Nagar, Mehem Road, Dr. Kajal wali gali near Ravinder Shop, Bhiwani, Haryana
Mob No. 8901027630
Pin Code 127021

43

Nutrition And Nostalgia: Investigating Millets' Cultural Value

Dr. Sunita Yadav

Abstract

This paper delves into the intertwined relationship between nutrition and cultural significance of millets, ancient grains that have been integral to various cultures for centuries. I explore how millets hold a unique place in the culinary heritage of diverse societies in India. As modern dietary patterns shift towards processed foods, traditional millet- based diets are being neglected.

My investigation reveals that millets not only provide essential nutrients crucial for human health but also evoke a sense of nostalgia and cultural identity. Ianalyse how millets have been celebrated in rituals, folklore, and traditional cuisines, serving as symbols of heritage and community cohesion. Additionally, I examine the contemporary resurgence of millets amidst growing concerns about health, sustainability, and food security, highlighting their potential to bridge past traditions with future dietary trends.

Millets play a significant role in culture and traditions of many communities around the world. In many cultures, millets are used in religious ceremonies and rituals. In India millet is generally consumed with legumes which creates mutual supplementation of protein, increases the amino acid content, and enhances the overall digestibility of protein.

By shedding light on the cultural value of millets, this research aims to inform policies and interventions that promote the preservation and revitalization of these ancient grains, fostering a deeper appreciation for their role in nourishing both body and soul.

Introduction:

God created the earth and made nature, the mother to sustain life for all. Mother nature plays her role unblemished. Nature has provided everything needed for sustenance in accordance with the situation, circumstances, location, climate, etc. So has nature provided us with millets which are highly nutritious, gluten-free and rich in fibre, protein, vitamins and minerals, and they are also relatively drought resistant and can grow in poor soils, making them a sustainable and affordable food source. There are many different types of millets, including pearl millet, Finger millet, Foxtail millet, proso millet and barnyard millet among others were each type of millet has its unique nutritional profile and culinary uses . Millets staple in the diet of the people since ancient times. These were amongst the first cultivated crops. These are the traditional grains consumed by half of the population of Asia and Africa. There are about 6000 varieties of millets worldwide.

Cultural significance of millets:

Millets carry profound cultural significance across various regions worldwide embodying heritage, traditions and local identity. In many cultures millets are more than just grains, they symbolise resilience, sustenance and community ties. Millets have remained a key ingredient in regional cuisines across India from ragi mudde in Karnataka to bhakri in Maharashtra, these grains continue to grace, Indian dinner tables.

Ragi (finger millet) is a staple in Southern Indian states like Karnataka, Tamil Nadu, Andhra Pradesh and Telangana. It is used to prepare ragi Mudde, a nutritious and wholesome ball-shaped dish, along with ragi Dosa, ragi Idli and ragi porridge. These dishes are not only delicious but also rich in nutrition.

Jowar (Sorghum) and Bajra (pearl millet) are commonly consumed in states like Maharashtra, Gujarat, and Rajasthan.Bhakri, a type of unleavened flatbread made from Jowar or bajra flour, is a staple accompanied to many meals. It is considered a nutritious alternative to wheat based rotis or bread.

Bajra features prominently in the cuisine of Rajasthan, where Bajra roti (flatbread) is a dietary staple. It is often served with dishes like Lapsi(a sweet porridge made from cracked wheat and bajra) along with various vegetables. Millets such as Kodo, barnyard and little millet are used in various dishes in regions like Odisha, West Bengal, and the north-eastern states.Millet based snacks, porridges and fermented beverages are commonly prepared.

Millets are so much a part of our culture that we see that millets have reference in songs also like 'Bajre Da Sitta, AlakLelo Palak Lelo or Lelochaunlai….

Earlier millets like bajra in Rajasthan was a staple and so it was like taken for granted, and during that time getting an opportunity to eat other grains was considered a luxury, only when some guest visited the house or on some special occasion of a festival etc. It was also connected with the financial position of the family, as only those who were economically well off could afford to enjoy other grains more often.

Despite their many benefits, millets have received limited attention in agricultural research policies and markets

millets are described as miracle crops because of their numerous advantages, including their use as food and food products without value for age contribution to agro diversity, low nutrient requirements, C4 plants, ability to prevent erosion in arid regions and confirmation of adequate supply of food and nutrition for small holders who live in harsh environmental conditions also, millets are the perfect food for people who care about their health because millets are gluten-free.

Millets are orphan crops with tremendous potential, but under explored source of nutraceutical properties as compared to other regularly consumed cereals, regular consumption of millets can reduce the chance of various life-threatening diseases such as diabetes, obesity, cardiovascular diseases, osteoporosis, and even age-associated diseases. It is not common in our diets, so the chance of incorporating it into various types of food products holds a vast scope of study and research, for scientific rationalisation of its health healing properties and moreover, millets can also probably transform food products into magical food products, that is, super foods.

In recent years, there has been a revived interest in cultivation of millets for their use as potential nutritional substitute in food formulations, pharmaceutical use, animal feed and for commercial starch production calling them as 'climate resilient crops 'and 'powerhouse of nutrients'. Initiatives are being taken to rejuvenate the cultivation distribution and accessibility of millets across diverse regions of India.

The cultivation and consumption of millets are also seen as a way to promote sustainable agriculture and food systems, as they require fewer inputs and resources compared to other crops. Many organisations and governments are promoting millets as part of efforts to combat climate change and promote food security in developing countries. The government of India had declared eight millet crops as nutri-cereals and the year 2018 as national year of millets, owing to their tremendous agricultural potential, the food and agricultural organisation (FAO) declared 2023 as the international year of millets.

As time changed and people were more attracted towards western culture and with the spread of globalisation, in the name of advancement and modernisation, the eating habits were also affected. There could be seen a shift from the traditional dishes to the Indian version of western dishes. The new generation had a change in their taste, and also following the traditional diet was looked down upon as being backward or obsolete, in the process, the identity of the millets was also diminished.

Another reason for the millets losing their popularity was their low productivity, which deterred the farmers from sticking to millet cultivation. The youth did not find millet recipes attractive, or their cultivation remunerative. There was a need to come up with newer ways to eat them.

Nutritional Renaissance:

In recent years, there has been a resurgence of interest in millets due to their nutritional value. Rich in fiber, protein, and micronutrients, millets are now being hailed as superfoods.

Millets in Contemporary Cuisine: Besides traditional dishes, millets are finding their way into modern culinary creations. From millet-based pizzas to cookies and smoothies, millets are being incorporated into a wide range of foods.

The versatility of millets: one of the main reasons for the surge in popularity of the millets is their versatility. They can be prepared in a variety of ways, yielding a wide diversity of textures and flavours. Chefs are experimenting with millets because of there were stability in cooking, which includes boiling, steaming, toasting, and even fermenting. millets are adaptable and can be incorporated into a wide range of dishes. They can be used in breakfast cereals, salads and soups, stews, pilaffs, baked goods like bread and muffins and as a rice substitute in various cuisines. They can be used to wipe up a wide variety of dishes from porridge to bread to Dosa and can be easily incorporated into our diet as a replacement for wheat and rice, not only this, millets are gaining popularity due to a diverse range of health benefits. They are low in calories and have lots of fibre which helps lose weight. They are rich in antioxidants that protect our cells and they don't make our blood sugar spike and so are good for people with diabetes.

Millets:Environment friendly

With the aim of creating awareness and increasing the production and consumption of millets, the United Nations, on the proposal of the Government of India, declared 2023 as the International Year of Millets. It's a way to create more demand for millet, both in India and around the world, to improve people's nutrition. In addition, India recently hosted the G20 presidency in New Delhi on September 9-10, 2023, and the guests were served delicious millet-based dishes. This is to promote millet as a nutritious food and increase its popularity worldwide.

Millets are nutrient-rich superfoods like sorghum, pearl millet (bajra), and finger millet (ragi). The best thing about these foods is that they can feed the increasing

population without causing any harm to the environment. Whether you're in the mood for a healthy grain bowl, a snack, or a crunchy and healthy dosa, millets offer various delicious options for you to try. Millets have become popular not only for their health benefits but also for their environmental impact.

Environmental sustainability of millet cultivation

Millets encourage sustainable farming practices by thriving in diverse climates with minimal chemical inputs. Their efficient water usage and resilience reduce the environmental impact of agriculture. Crop rotation with millets enhances soil fertility and reduces the need for synthetic fertilizers.

The cultivation and consumption of millets are also seen as a way to promote sustainable agriculture and food systems, as they require fewer inputs and resources compared to other crops. Many organisations and governments are promoting millets as part of efforts to combat climate change and promote food security in developing countries.

Millets have a low water footprint, requiring significantly less water compared to traditional grains like rice. Their efficient water usage, coupled with resilience to arid conditions, makes millets an environmentally friendly choice in regions facing water scarcity.

Drawback of millets

With so many good qualities of millets, there are some drawbacks also. If one has digestive issues, thyroid issues or have a history of grain allergies, then excessive use of millets is not recommended. Millets also contain anti nutrients - compounds that block or reduce your body's absorption of other nutrients and may lead to deficiencies, one of these compounds- phatic acid, interferes with potassium, calcium, iron, zinc, and magnesium uptake in the body.

Conclusion:

The diverse uses of millets in Indian cuisine showcase their adaptability, nutritional richness, and cultural significance. Millets have been an integral part of local diets for generations, reflecting the deep-rooted traditions and culinary practises in different regions across the country. Their presence is evident in festivals, religious offerings and traditional ceremonies where millet-based dishes, hold special significance. The adaptability of millets to diverse climatic conditions further accentuates their importance, serving as a resilient crop in agricultural practises contributing to the country's agricultural heritage and sustainability efforts. Thus, millet serve not just as a source of nutrition but as cultural treasures deeply intervened with India's culinary legacy and cultural diversity.

References:

1. MILLETS: The Future food | Indian Science, Technology and Innovation: ISTI Portal. indiascienceandtechnology.gov.in
2. https://apeda.gov.in/milletportal/Production.html
3. Indian Millets (apeda.gov.in)

Dr. SUNITA YADAV
Associate Professor of English
RDS Public Girls College, Rewari

44

William Henry Hudson as a Muse of Nature

Dr. Garima Shukla, Dr. Rajan Sharma

Abstract

William Henry Hudson or Guillermo Enrique Hudson, "Dominguito", as the countrymen of Quilmes called him, or "Huddie" as his intimate called him in England, was born on August 4, 1841 in the " Vineticinco Ombeus" estanzuela, currently located in the district of Florencio Varela, province of Buenos Aires and which is the museum that bears his name. The Pampas plain was not only the area where he grew up, along with his five brothers and their North-American parents, but it was the source of inspiration for much of his work. He left Argentina at the age of 32 heading to England for several reasons: A bit for health, the desire to achieve his vocation as a naturalist, which in the past - Rosista environment of Argentina, had no future, and perhaps, to distance himself from a frustrated love, something similar to what happens to the protagonist of the

'Purple Land'; Richard Lamb, for many his alter ego, with varied and solid motives, he chose the land of his ancestors, England.

The English countryside with its beauty of nature provides great scope for nature lovers. There are a large number of nature lovers who add respectable libraries of naturalist literature like Richard Jefferies, Edward Thomas followed by W.H Hudson. They are field naturalists and have their own pets and favourites. Hudson was in deep love with "tribe of Winged Warblers" that fly and sing and create music in the heart of listeners. A child of the Saddle, Hudson was a naturalist and ardent birder whose writings on South America- about plants, animals, rivers and men an women- echoed the transcendental movement of North America, exemplified particularly by the works of Thoreau and struck a deep chord among readers in Europe. Hudson felt, with sensual keenness of childhood that the pampas were a paradise, a deep spring of mystery and revelation. In books that ranged from 'The naturalist in La Plata' to 'Idle days in patagonia', his gift was seeing the glory in everyday like the sounds of the backyard birds.

He was a master at apprehending the rhythms of nature and reflecting back to the readers. His vision of Argentina was grand- a limitless plane of possibility, where the pleasures of nature were only sharpened by hardship. Argentines have a complicated relationship with rural life, often lionizing the city but the 1950s Argentine writer. Ezequiel Martinez Estrada championed Hudson's books, finding in them an antidote, an illumination revealing the hidden beauties of the sparse terrain. It took an outsider to make their own country familiar with the publication of Hudson's ' The Naturalist in La Plata', the world came to know that Hudson was a new interpreter of nature. Thus, he became a worthy successor of white, Bates, waterton and Jefferies. In his description of nature Hudson is so Grapic and perfect that reading his nature description one is transported into a world of beauty and sensuousness. No artist has been so bold to attempt to paint a bird so beautiful in flight or fish so colourful in its swim. Graham, a scottish naturalist and writer of great merit entered the life of Hudson and laid a great influence on his mind. There existed between the two not only personal intimacies but kingship of spirit. J.M Ford raised him to the fame of the legitimate King of Scotland and he called him so. Graham writes of Mexico, South America, and his native Scotland, of the life of the old world and of nature. Hudson and Graham have a strong common point of the love of travel, of life and of nature, though they belong to two different nations. Both these writers were travellers and produced great travel books.

Hudson's observations were both scientific and aesthetic. He saw nature with the sensibility of an artist and he contemplated it with the mind of a philosopher. His deep knowledge of nature did not come from books but from his close observation of nature. The following lines in 'Far away and Long ago' brings out his passion for nature:

"To listen in a trance of delight to the wild notes of the golden plover coming once more to the great pain, flying, flying south, flock succeeding flock the whole day long. Oh, those beautiful cries of the golden plover. I would explain with Hafiz, with one word, changed " if after a thousand years that sound should float over my tomb, my bones uprising in their gladness would dance in the sepulchre!" To climb trees and put my hand down in the deep heat of the Biel-Te-Veo and feel the hot eggs- the five long pointed cream coloured eggs with chocolate spots and splashes at the larger end. To lie on a grassy bank with the blue water between me and beds of tall bulrushes, listening to the wind and of hidden rails and coots and Coulans conversing together in strange human-like tones;To let my sight dwell and feast on the camalote flower amid its floating masses of moist vivid green leaves- the large alameda like flower of a purest divinel yellow that when plucked sheds its lovely petals to leave you nothing but a green stem in your hand.

Hudson's works bring out man's relation and response to the mystery and beauty of nature. He also brings out the effects of nature on man and it is this perception of man's communion with and nature's deep effect on human character and personality, that puts Hudson above a mere romancer and naturalist and gives him the status of William Wordsworth and Thomas Hardy. Hudson finds out a close relation between the habits of birds and those of men. When some person tried to get near the birds, these creatures tried to protect them. Man is responsible to nature and as Keats once said " nothing clears up my spirit like a fine day".

Describing the effect of nature on man, Hudson says- " it is probably that we that are country born and bred, are affected in more ways and more profoundly than we know by our surroundings. The nature of the soil we live on, the absence or presence of running water, of hills, rocks, woods, open spaces, every feature in the landscape, the vegetative and animal life- everything in fact that we see, hear, smell, feel, enters not only into the body, but the soul, and help to shape and colour it".

As regards his techniques as a naturalist, he first makes his quick and practised eye discover something new and different. Then begins the process of meditation and contemplation and then as a naturalist he begins to analyse his feelings. This observation of something new in nature brings the joy and thrills of discovery. The object passes away soon but the memory of sharp lines and fresh colours remain. The reaction of hudson to such beautiful sights is described by him in the following manner-

" The admiration, the delight and the desire are equally great, and the loss just as keenly felt, whether the strange species seen happens to be one surpassingly beautiful or hot. Its newness is to the naturalist its greatest attraction. How beautiful beyond all others seems to a certain small unnamed brown bird to a naturalist." If we compare Hudson with Wordsworth, the great naturalist, we can find many similarities.

Like Hudson, Wordsworth also believed that we can learn more of man and moral, evil and good from nature than from all the philosophies. In his eyes, " Nature isa teacher whose wisdom we can learn, and without which any human's life is vain and incomplete." He believed in the education of man by nature . Three points in his creed of nature may be noted.

1. He conceived of nature as a living personality. He believed that there is a divine spirit pervading all the objects of nature. This belief in a divine spirit pervading all objects of nature may be termed a mystical. Pantheism is fully expressed in Tintern Abbey.

2. Wordsworth believed that the company of nature gives joy to the human heart.

3. Above all, Wordsworth focuses on the moral influence of nature. He spiritualised Nature and regarded her as a great moral teacher. In the novels of Hudson we have seen him as a seasoned naturalist. He is a very keen observer of animal life. In "A naturalist in La Plata" Hudson gives a picturesque description of an exciting encounter between a spider and a wasp.

The delicacy of touch and fidelity to nature make this mirage in words a painting of arresting beauty. In such descriptions the naturalist turns an artist without being a naturalist.

In his autobiography Hudson shows his great faculty of vividly remembering the past and records his impressions, very vividly, of a girl he met as a boy.

'I disliked the whole tribe, except a little girl of about eight, a child, it was said, of one of unmarried sisters. I never discovered which of her aunts as she called, all these tall, white fraud heavy browned women, her mother was. I used to see her almost everyday, for though a child she was out on horseback early and late, riding bareback and boy fashion, flying about the plain, how to drive in the horses, now to turn back the flock when it was getting too far from the field, then the catch, and finally to ride on the errands to neighbours' houses or to buy groceries at the store." Hudson as a naturalist pushed jefferies out of sight and was the strongest champion of the blossombury cult. The impression that is left after reading his work is that Hudson did everything that Jefferies did only much better because Hudson was an artist and a great stylist. His love for nature, field nature and human nature was great . He drank deep of that love and taught others to be in communication with nature and to enjoy the variegated colours and moods of the sky, the sun , the wind ,the flower and the man. Hudson in his work proves himself to be an adventurer who travelled the flora and fauna of the Pampas and shared his lonely experiences and observations with the readers. A naturalist always relies on his sense organs which combine with his power of imagination in order to overflow powerful feelings. Hudson as a naturalist was sensitive to everything and found a deep meaning in the minutest objects. Thus Hudson can be compared to some great naturalists like Jeffereies, Williamson and William Wordsworth. He had the great skill of reaping the harvest cultivated by his eyes and ears.

Reference-

Far away and long ago. P26

Idle days in patagonia. p50
A shepherd's life. P11

Dr. Rajan Sharma
Asso. Prof. (research guide),
Dept. of English,
Bareilly college, Bareilly.

Garima Shukla
W/O Sri Subodh Kumar Mishra,
Parsvnath Planet,
Tower-4, Flat no-401
Vibhuti Khand,
Gomti Nagar, Lucknow.
Pin Code- 226010
M.N- 7007509877

45

A critical analysis of "The Man-Eater of Malgudi" as a picaresque novel by R.K. Narayan.

Sahil Patil

Abstract

The Man-Eater of Malgudi (1961) is considered by competent critics to be Narayan's finest work. It is an allegory showing that evil is self-destructive. In this novel, Narayan employs the Bhasmasura myth. The title of the novel is ironic for man-eater in the novel is no tiger, but a mighty man, Vasu, who not only kills a number of wild animals, but also kills himself with a single blow of his hammer-like fist. The story is narrated in the first person by its tragic-comic hero, Nataraj, a printer of Malgudi. In his printing work he is assisted by Mr. Sastri, who is a compositor, proof reader and a machineman, all rolled into one? Among his constant companions are a poet who is engaged in writing the life of God Krishna, and Mr. Sen, the journalist who always runs down Nehru.

Introduction

The word picaresque comes from the Spanish word Picaro, meaning a rogue or a villain. A picaresque novel deals with the adventures of a rogue or villain. The rogue or picaro is the central figure, and in the novel, he plays many roles and wears many masks and other things.

A picaresque novel has a number of particular features of its own. It is a string of incidents and episodes, which have no unity and coherence, except the unity of the hero, that is to say, the same hero, the same picaro or rogue, features in each of them. It is episodic in character and the characters are not fully developed. Most of the characters appear and then disappear, never to make their appearance again. New characters are untouched even towards the close of the novel, so that we know very little about them. The Man-eater of Malgudi has many of the features of a picaresque novel. H. Vasu is a picaro, an anti-hero and adventurous wanderer. The stress on his many roles and adventures makes the plot loose and episodic. Vasu is evil and the novel gives the account of his wanderings, of his adventures, and of the many roles he plays and the many masks he wears. We are given a detailed account of his past, of his several adventures, and roles, before he comes to Malgudi to play the role of a taxidermist. He himself narrates his past to Nataraj: "I was in Junagadh you know the place and there I grew interested in the art. I came across a master here, one Suleiman. When he stuffed a lion he could make it look more terrifying than it would be in jungle. His stuffings go all over the world. He was a master, and he taught me the art. After all we all superiority to nature. Science conquers nature in a new way each day: why not in creation also? That's my philosophy, sir. I challenge any man to contradict me." He sighed at the thought of Suleiman, his master. "He was a saint. He taught me his art sincerely." Continuing with the account of his adventurous past and of the many roles he has played, he further tells Nataraj that he was educated in the Presidency College. He took his master's degree in History, Economics and literature. That was in the year 1931. Then he joined the civil disobedience moment against British rule, broke the laws, marched, demonstrated and ended up in jail. He went repeatedly to prison and once when he was released found himself in the streets of Nagpur. There he met a phaelwan at a show. That man could bear a half-ton stone slab on his chest and have it split by hammer strokes; he could snap steel chains and he could hit a block of hard granite with his fist and pulverize it. I was young then, his strength appealed to me. I was prepared to become his disciple at any cost. I introduced myself to the phaelwan. He remained thoughtful for a while and continued, "I learnt everything from his master. The training was unsparing. He woke me up at three o'clock every morning and put me through exercises. And he provided me with the right diet. I had to eat a hundred almonds every morning and wash them down with half a sheer of milk two hours later six eggs with honey, at lunch chicken and rice and at night vegetables and fruits. Not everyone can hope to have this diet, but I was lucky in finding a man who enjoyed stuffing me like that. In six months I could understudy for him. On my first day when I banged my fist on a century old door of a house in Lucknow, the three inch panel of seasoned teak splintered. My master patted me on the back with tears of joy in his eyes 'You are growing on the right lines, my boy.' In a few months I could also snap chains, twist iron bars and pulverize granite. We travelled all over the country and gave our shows at every market fairing the villages, and in the town halls in the cities and he made a lot of money. Gradually he grew flabby and lazy and let me do everything. They announced his name on the notices but actually I did all the twisting and smashing of stone, iron and what not. When I spoke to him about it he called me an ungrateful dog and other names, and tried to push me out. I knew he could perform no more. I left him there and walked out and gave up the strong man's life once and for all. Thus Vasu has been a scholar a phaelwan a patriot and adventurer in search of a career and now he sets upas a taxidermist in

Malgudi. As he tells Nataraj the fame of Mempi forests has brought him to Malgudi. He now acts like an aggressive bully, begins to live in Nataraj's attic without his permission and even without paying him any rent. He soon turns Nataraj's parlor into an extension of the attic and makes friend of his closest friends, so that they go away as soon as he comes in. He cringes and flatters the forest officer in order to get his permission to shoot big game in the Mempi forest and the permission is not given he plays the role of a poacher and shoots wild animals here. Soon the attic is turned into a charnel house and the soul smell emanating from there gets intolerable. When at last he has to give up poaching in the Mempi forest, he plays the role of a womanizer. Rangi and other such women are frequently seen going up to the attic and coming down. He is entirely unprincipled and immoral and plans even to shoot Kumar, the temple elephant. He dies in mysterious circumstances of a blow of his head from his own hammerfist. Nataraj is suspected of having murdered him and, so this man-eater destroys his reputation and peace of mind. The plot of the noel is loose and episodic and the various incidents and episodes have no unity except the unity provided by the fact that the same person, Vasu appears in all of them. There is much superfluity. Too much space has been devoted to Vasu's varied activities. A number of characters appear for a short duration, play their respective roles and then disappear. The forest officer the bus conductor and driver, the lawyers the inspector etc. are such characters. They are not rounded three dimensional figures. The phaelwan and Vasu's guru Suleiman do not appear at all in the novel and Rangi who no doubt plays and important role is introduced very late. Even Nataraj's son Babu and his wife are merely background figures. Their characters are not developed and this applies also to the case of the poet and the journalist, Sen.

Conclusion

Because of all these reasons it would not be wrong to say that Vasu is a Picaro, and The Man-Eater of Malgudi is a picaresque novel with a loose and rambling structure. Thus it can be said that it has an exquisite characteristics of picaresque novel.

References

1. https://www.shareyouressays.com/knowledge/short-summary-of-man-eater-of-malgudi-by-r-k-narayan/118102
2. Arihant UGC net/jrf/set English paper 2 book by Mridula Sharma, Ajeet Singh Jadaun, Tanveen Kaur, Dr. Chakreswari Dixit, Chhavi Kumar, Arihant Publication Limited, Edition 2022
3. Upkar UGC NET/JRF/SET English Literature By Hira Lal Choudhary, Edition 2022, Upkar Prakashan
4. https://en.wikipedia.org/wiki/The_Man-Eater_of_Malgudi

- Name Sahil Patil
- Father's Name Arvind Kumar Patil
- Address Vidya Nagar, Mehem Road, Dr. Kajal wali gali near Ravinder Shop, Bhiwani, Haryana,pin code=127021

Mob No. 8901027630

46

Effects of Resilience on Depression

Dr. Arti Kumari

Abstract:-"

Resilience is a complex construct defined as "the capacity to maintain, or regain, psychological well being in the face of challenge". It is an attribute that is possessed to varying degrees by different individuals, a dynamic process (a State) with bidirectional relations to developmental and environmental factors, and an outcome in the face of stress and adversity. According to many empirical studies resilience is negatively correlated with indicators of mental ill being, such as depression, anxiety, and negative emotion, and positively correlated with positive indicators of mental health, such as life satisfaction, subjective well being, and positive emotion (Kesley et al,2019; Shapero et al,2019; Yin Wu et al,2020).

Most of the studies were done on western subjects, so for generalization of the findings it is necessary to conduct the study on Indian sample. Keeping this view in mind present study was attempted to show the Effects of Resilience on Depression".

Introduction of Resilience:

When faced with adversity in life, how does a person cope or adapt? Why do some people seem to bounce back from tragic events or loss much more quickly than others? Why do some people seem to get "stuck" in a point in their life, without the ability to move forward? Psychologists have long studied these issues and have come up with a label you may be familiar with **resilience.** When faced with a tragedy, natural disaster, health concern, relationship, work, or school problem, resilience is how well a person can adapt to the events in their life. A person with good resilience has the ability to bounce back more quickly and with less stress than someone whose resilience is less developed. Everybody has resilience. It's just a question of how much and how well you put it to good use in your life. Resilience doesn't mean the person doesn't feel the intensity of the event or problem. Instead, it just means that they've found a pretty good way of dealing with it more quickly than others. Everyone can learn to increase their resilience abilities. Like any human skill, learning greater resilience is something that you can do at any age, from any background, no matter your education or family relationships. All you need to do in order to increase your resilience is have the willingness to do so. And then seek out ways of learning more about resilience, either from search engines (and articles like this one), or with the help of a trained behavior specialist, like a psychologist.

Developing the concept of resilience: A brief narrative history In the 1950s and 1960s, researchers began to wonder how a number of seemingly extraordinary children managed to emerge from severely disadvantaged circumstances relatively un scathed. The construct of resilience has evolved significantly since the first studies focusing on resistance. Working Paper, Psychological resilience to negative outcomes among disadvantaged children. This section provides a brief understanding of resilience research since its inception in the mid-19th century and through to the late-20th century. Early resilience research conceptualized the construct as a personality trait permitting positive outcomes under extreme hardship. Resilience research originated in two fields: traumatology (looking at adults) and developmental psychology (looking at children and youth). Early resilience research with adults focused on identifying what led some individuals to avoid traumatic stress. In developmental psychology, researchers aimed to identify personal qualities (e.g., self-esteem) differentiating children who had adapted positively to socioeconomic disadvantage, abuse or neglect and catastrophic life events, from children showing comparatively poorer outcomes (**Luthar, Cicchetti and Becker, 2000**). These classic longitudinal studies of large cohorts of disadvantaged children revolutionized psychology and pioneered a methodological paradigm for resilience research**Rutter (2006**) argued that identification of protective mechanisms, and how they unfold over a person's lifetime, is a driving priority of resilience research. **Ungar (2005**) drew from sociological and multi-disciplinary studies to argue that an individual's resilience was mutually dependent with their social ecology. Advances in neurobiological techniques offered unprecedented opportunities to provide insight into resilience at the most micro level, with possible pharmacological implications. Resilience research expanded to be as complex as the construct it sought to understand. Resilience research is informed by related disciplines, including traumatology (focus on adult responses to trauma), developmental psychopathology (focus on children's responses to adversity), positive psychology (focus on human flourishing, positive emotions and positive relationships) and humanistic psychology (focus on human meaning-making and growth). There are, increasingly, intersections with health psychology and neurobiological psychology. Humanistic psychology philosophically underpins both positive

psychology and the ethos of resilience research. Methods and areas of focus have been imported from traumatology and developmental psychopathology. Figure 1 indicates the linkages between these areas of enquiry. Figure 2 situates resilience at a pole of adaptive functioning, with psychopathologies such as depression, anxiety and PTSD sitting at the opposite end. Resilience is distinct from dispositions such as hardiness, outlooks such as optimism and mood states such as happiness.

Resilience is a lifelong process of positive adaptation to adversity Psychological resilience is a developmental and psychosocial process through which individuals exposed to sustained adversity or potentially traumatic events experience positive psychological adaptation over time. There are three key tenets of resilience theory as it has developed within the last 10-15 years. Resilience is a developmental process, unfolding over time and circumstances. Resilience is developmental; both in the sense that childhood and adolescence are critical periods to lay foundations for functioning in adulthood and those individuals change and grow throughout life. Resilience is not an outcome, but a process, although 'resilient outcomes' may denote achievements thought to be remarkable given an individual's circumstances. Resilience is not a box to tick; it is an ongoing process of meaning-making and growth in which the only reliable constant is the mutually dependent capacity of the individual and their environment for change. Resilience involves a complex interaction of multiple mechanisms ranging from the individual-level to the structural. Certain dispositional aspects of a person undoubtedly help them face seemingly insurmountable challenges and cope with daily stressors that gradually erode well-being with imperceptible slowness. But resilience theory sees individuals as embedded within an environment of personal relationships, cultures, economies and
neurobiology. Resilience involves capacity, negotiation and adaptation.

circumstances of extraordinary adversity, than about positive adaptation and growth. Some degree of risk is necessary to demonstrate resilience: there must be a challenge to overcome. Resilience research actively seeks to identify and understand processes of strength, even those hidden by majority cultures and systems. While some aspects of resilience appear relevant across risks and cultures, domain-specific resilience processes in the face of complex risks speak to what it means specifically to be resilient in the face of poverty, abuse or prolonged conflict. Resilience may be seen in one domain, such as school, even if functioning is poor elsewhere. The complexity of resilience processes means that interventions seeking to promote resilience must draw upon deep knowledge of an individual's resources (be these psychological, social or material) and context to effectively facilitate meaningful change. Inconsistent definitions, usages and operationalisations of the term "resilience" populate the psychological literature.

Reasons include:-

- **Sub-disciplinary conventions**
- **Use of different knowledge paradigms**
- **Critical discoursecultural and disciplinary hegemonies**
- **Phenomenological and cultural definitions**
- **Domain-specific terminology**
- **Confusion between outcomes and processes**
- **Variations in measurement and assessment.**

However, when seen from the lens of resilience itself, these debates may be contextualised as part of the process of growth, as psychology has developed an understanding of how everyday people thrive when facing life's most difficult circumstances.

Resilience & Depression:

Resilient individuals are better able to form and maintain positive social relationships, regulate their behavior, and maintain a positive view of the self and their outlook on life **(Wright, Masten, & Narayan, 2013).** Ultimately, resilience can lead to greater overall life satisfaction and reduced occurrence of depression (**Cohn et al., 2009; Fredrickson et al., 2008; Mak, Ng, & Wong, 2011)**, even after experiencing a traumatic event (**Wingo et al., 2010**). Perhaps most relevant to the present study, there is evidence that resilience can combat depression (**Steinhardt & Dolbier, 2008)** and anxiety (**Scali et al., 2012**), and that resilience is negatively related to all dimensions of depression, which is the tendency to work while sick **(Thogersen-Ntoumani et al., 2017).** We conceptualize psychological resilience as a multidimensional, dynamic capacity influenced by the interaction of internal factors (e.g., cognitive capacity, personality, physical health) and external resources (social status, financial stability). Inthe context of major depressive disorder (MDD), psychological resilience refers to the net effects of a variety of psychosocial and biological variables that decrease risk of onset or relapse, decrease illness severity, or increase

probability or speed of recovery. Higher psychological resilience relates with lower risk of various physical and mental disorders (**Davydov, Stewart, Ritchie, Chaudieu, 2010).** Also higher psychological resilience relates with greater amount of positive emotions which in turn also relates with better physical and mental health (**Tugade, Fredrickson, Barrett, 2004).** So it may be assumed that psychological resilience can be beneficial both for physical and mental health. However, a question how psychological resilience relates with other psychological or social variables is not fully answered. Studies also demonstrate that higher psychological resilience relates with higher extraversion, agreeableness, conscientiousness, emotional stability and lower openness to experiences (Pietrzak & Cook, 2013), also with higher altruism, religiosity and active lifestyle (**Pietrzak & Cook, 2013).** Psychologically resilient individuals tend to show lower amount of depressive symptoms (**Pietrzak, Johnson, Goldstein, Malley & Southwick, 2009; Gooding, Hurst, Johson & Tarrier, 2012),** they are more often optimistic, energetic, and open to experience, and have high positive affectivity **(Klohnen, 1996). M. M. Tugade and B. L. Fredrickson (2004**) argue that positive emotions are important for psychological resilience. So one may assume that psychological resilience relates with some psychological constructs as well as with socio-demographic variables, but these relationships are not unambiguous. Psychological resilience may be a potential factor that buffers against the affective consequences of sleep disruption, and is also amenable to intervention. Psychological resilience is broadly characterized by an ability to respond and recover from environmental stressors (**Block & Kremen, 1996; Lazarus, 1998**), and buffers against potential threats to well-being (**Khanlou & Wray, 2014).** Research in resilience has employed a range of definitions; in this study, we conceptualize resilience as a trait that enables individuals to effectively engage in self-regulation following exposure to stressors, thereby resulting in less negative and more positive experiences and mood. Consistent with the definition advocated by **Rutter (1987),** resilience is defined not merely as the absence of mental illness, but instead how one responds to threat. As such, while depressed individuals on average may possess lower resilience, individuals with depression may still report varying levels of resilience that serve protective functions. This conceptualization is consistent with previous research demonstrating that combat veterans experiencing post-war depression show varying levels of severity corresponding to their level of resilience (**Youssef et al., 2013**). Furthermore, this conceptualization also allows for the possibility of strengths-based interventions that target the enhancement of existing resilience in depression. Very few studies have examined the relationship between resilience and sleep in the context of psychopathology. Some nascent research has pointed to the role of resilience in protecting individuals from poor sleep and its adverse consequences. A recent study in adolescents examining "mental toughness", a concept that overlaps with resilience, demonstrated that mentally tough adolescents exhibited better sleep indexed by higher sleep efficiency, less number of awakenings, less light sleep, and more deep sleep (**Brand et al., 2014**). Additionally, another recent correlational study in healthy children suggested that resilience mediated the relationship between reported sleep disturbance and externalizing and internalizing problems (**Chatburn, Coussens, & Kohler,2014**). Taken together, there is strong evidence for resilience as a potential buffer against the negative consequences of sleep disruption. However, additionally work is needed in exploring the relationship between resilience and sleep in adults, especially those already struggling with mood disorders.

Aims & Hypothesis

Aim:

.To understand and compare the nature of resilience in patients of Depression.

. There is no significant difference in nature of resilience between the normal control and patients of Depression.

Methodology

Venue of the study:

This study has been conducted at the Psychiatric unit of Sadar Hospital Medininagar and near habitat area of Pamau District of Jharkhand. Study was cross sectional and comparative in nature.

Sample:

Total 200 individuals were taken as sample for the present study. Among this 100 individuals were taken from Psychiatric unit of Sadar Hospital Medininagar who were consulted and diagnosed as Major Depressive Disorder according to ICD-10 by psychiatrist and 100 normal controls were selected from same habitat area. Psychiatric patients group constituted the Experimental group whereas normal group constituted control group for the study. Sample was collected on the basis of purposive random sampling method.

Following inclusion and exclusion criteria was followed during selection of sample: Inclusion criteria for patients of Depression (Experimental Group) Individual

within age range of 20-40 yrs Individual must be diagnosed as Major Depressive Diosrder as ICD-10 criteria Individual of either sex Individual must be educated minimum upto 10 th grade Individual must be stable or scored within mild range at the time of administration of the tests Exclusion criteria for patients of Depression (Experimental Group) Individual who is not cooperative. Individuals who should not understand and respond on the items of questionnaire Individuals having significant history of any other co morbid neurological, mental or physical illness Inclusion criteria for normal Individuals (Control group) Individuals scored below cut off point on GHQ-5 Scale Individuals having no history of any significant illness Individual of either sex Individual must be educated minimum upto 10 th grade Individual within age range of 20-40 yrs Exclusion criteria for normal control (Control Group) Individual who is non cooperative Individual who could not understand and respond on the test items

Tools Used in the study:

The Connor-Davidson Resilience Scale - CD-RISC (Connor & Davidson, 2003) - It is one of the most common instruments to assess resilience amongst adults. This scale has 25 items.Each item is rated on a five-point scale (0 = not at all true to 4 = true nearly all the time). The total score ranges from 0 to 100, with higher scores corresponding to higher levels of resilience. The original research reported that the scale included five factors: factor 1 describes the notion of personal competence, high standards, and tenacity; factor 2 relates to trust in one's instincts, tolerance to negative affect and the strengthening effects of stress; factor 3 was related to the positive acceptance of change and secure relationships; factor 4 refers to control; and factor 5 concerns spiritual influences. The scale had good psychometric properties (Cronbach's alpha = .89; test-retest reliability: intraclass correlation coefficient = .87), but the reliability of the factors was not reported.The CD-RISC has been validated in a variety of countries and Cultures.

Procedure for data collection:

According to inclusion and exclusion criteria sample were collected. After getting informed consent from the individuals and corresponding authorities, all sample were interviewed. For screening the level of depression BDI was administered and for ruling out any psychiatric morbidity in the normal control GHQ-5 was administered. After getting relevant socio demographic and clinical details, all selected questionnaires were administered in the sessions according to the convenience of the sample.

Statistical analysis

For analysis of raw data especially Mean SD and t-ratio was applied with the help of SPSS win 22 version

RESULT

Variables	Depressive group (Experimental Group)	Normal Group (Control Group)	t/X^2	Sig	
Age	35.23±3.12	33.54±2.45	2.19	NS	
Sex			.04	NS	
Male	63	61			
Female	37	39			
Education			.09	NS	
Below Graduation	53	56			
Above Graduation	47	44			
Family Income			.045	NS	
Upto 10000	19	17			
20000-30000	43	40			
Above 30000	38	33			
Family type			.06	NS	
Nuclear Family	61	59			
Joint family	39	41			
Marital status			.05	NS	
Married	43	45			
Unmarried	57	55			
Habitat			.06	NS	
Urban	33	35			
Semi Urban	46	41			
Rural	21	24			

Results- The results obtained after the statistical analysis of collected data have been described here .

Above table show that both groups were comparable on all the selected socio demographic variables. There was no significant difference was found between the both study groups. Although data reflect that most of the sample were male, educated above graduation, unmarried, belongs to nuclear family and semi urban area of habitat.

Clinical Characteristics of the Major Depressive Group is given in table below

: Comparison of **resilience b**etween Major Depressive group and Normal Control Group

Variables	Depressive group (Experimental Group)	Normal Group (Control Group)	t	Df
Resilience	_	59.79±6.71	21.2**	198

** sig. on .01 level

Above table show that both groups differed significantly on resilience scale (t=21.2). Depressive group have comparatively low mean score than normal control group

variable	Sub-domain	depression
resilience	resilience	-.76

Result also shows that resilience is negatively correlated with depression

Conclusion & Result Discussion Resilience and Depression:

Result also show that both groups differed significantly on resilience scale (t=21.2). Depressive group have comparatively low mean score than normal control group. Findings of some earlier studies also support the present result finding. They found that resilient individuals are better able to form and maintain positive social relationships, regulate their behavior, and maintain a positive view of the self and their outlook on life

psychological resilience refers to the net effects of a variety of psychosocial and biological variables that decrease risk of onset or relapse, decrease illness severity,or increase probability or speed of recovery. Higher psychological resilience relates with lower risk of various physical and mental disorders (**Davydov, Stewart, Ritchie, Chaudieu, 2010).**

Limitation of study

The study has the following limitations

- Time limit of the researcher is one major limitation
- The research is confined to limited city only, so the result might be indicative not conclusive for all.
- As the study is planning to conduct on particular city, so the same result may not hold true for other areas

REFRENCES

Abramson LY, Seligman ME, Teasdale JD.(1978). Learned helplessness in humans: Critique and reformulation. Journal of Abnormal Psychology. 87(1): 49–74.

Abramson LY, Metalsky GI, Alloy LB(1989). Hopelessness depression: A theory- based subtype of depression. Psychological Review. 96(2):358–372.

Abramson LY, Seligman ME, Teasdale JD.(1978). Learned helplessness in humans: Critique and reformulation. Journal of Abnormal Psychology. 87(1): 49–74.

Alloy LB, Abramson LY, Whitehouse WG, Hogan ME, Panzarella C, Rose DT.(2006). Prospective incidence of first onsets and recurrences of depression in individuals at high and low cognitive risk for depression. Journal of Abnormal Psychology. 115(1):145–156

Alloy LB, Lipman AJ, Abramson LY.(1992). Attributional style as a vulnerability factor for depression: Validation by past history of mood disorders. Cognitive Therapy and Research. 16(4):391–407.

Alloy LB, Abramson LY, Gibb BE, Crossfield AG, Pieracci AM, Spasojevic J, Steinberg JA.(2004). Developmental antecedents of cognitive vulnerability to depression: Review of findings from the cognitive vulnerability to depression project. Journal of Cognitive Psychotherapy. 18(2):115–133.

Alloy LB, Abramson LY, Whitehouse WG, Hogan ME, Panzarella C, Rose DT.(2006). Prospective incidence of first onsets and recurrences of depression in individuals at high and low cognitive risk for depression. Journal of Abnormal Psychology. 115(1):145–156

Dr. Arti Kumari
Add- W/O Harendra Kumar Tiwari
2No Town , Kumhartoli Redma(South)
Daltonganj Palamau Jharkhand 822102
artikr15121985@gmail.com
7061603046

47

System of Tax Code Observation.

Abhishek Kumar

Abstract:

For governments around the world, tax compliance and monitoring are essential components of revenue collection and fiscal governance. However, the inaccuracies and inefficiency of traditional tax enforcement techniques frequently result in revenue leaks and compliance issues. This research study suggests creating and implementing a Tax Codes Observation System (TCOS) in order to address these problems. Utilizing cutting-edge technologies like artificial intelligence, machine learning, and data analytics, the TCOS improves tax compliance, identifies irregularities, and efficiently monitors taxpayer behavior. The TCOS framework, which includes data collection, analysis, risk assessment, and enforcement strategies, is presented in this paper. It also goes over the possible advantages of the TCOS, such as increased tax administration transparency, decreased tax evasion, and better revenue collection.The effectiveness of the TCOS in enhancing fiscal governance and maximizing tax compliance efforts is demonstrated through case studies and empirical data. Governments can utilize the Technology and Competitiveness Oriented System (TCOS) to promote voluntary compliance, guarantee equitable taxation, and accomplish sustainable economic growth by adopting cutting edge technologies and approaches.

Keywords: Revenue Collection, Tax Evasion, Fiscal Governance, Artificial Intelligence, Machine Learning, Tax Codes Observation System, Tax Compliance, Monitoring.

I. INTRODUCTION

Within the context of fiscal governance, public services, socioeconomic growth, and governmental operations all depend on tax compliance. In addition to guaranteeing revenue collection, efficient tax administration preserves the fiscal system's equity and openness. However, given the complexity of contemporary economies and the changing nature of taxation, attaining optimal levels of compliance has proven to be a persistent challenge for tax authorities worldwide.

Technological innovations have become powerful tools in the toolbox of tax administrators in response to these challenges, enabling more accurate and efficient methods of enforcement, monitoring, and compliance. The Tax Codes Observation System (TCOS) is one of these innovations; it's a cutting-edge method that uses machine learning algorithms, real-time monitoring capabilities, and advanced data analytics to improve tax compliance.

With previously unheard-of speed and accuracy, TCOS uses artificial intelligence and data science to analyze enormous volumes of tax-related data, from individual taxpayer records to macroeconomic indicators. By closely examining trends, irregularities, and disparities in tax laws and financial transactions, TCOS helps tax authorities quickly and efficiently identify possible instances of fraud, tax evasion, or non-compliance.

Furthermore, because TCOS functions as a proactive rather than a reactive tool, tax authorities are able to foresee compliance risks, create focused interventions, and allocate resources. sensibly.

By means of ongoing observation and examination, TCOS can adjust to changing tax legislation, rules, and enforcement preferences, guaranteeing its applicability and efficiency in changing financial contexts.

II. DIFFICULTIES WITH TAX COMPLIANCE

For a long time, governments around the world have placed a high priority on tax compliance because it is necessary to both fund public services and preserve economic stability. Tax enforcement has historically placed a strong emphasis on conventional techniques like audits, fines, and voluntary disclosure schemes. Although these strategies have had some success, they are ineffective in the complex and dynamic tax environment of today due to their inherent limitations and inefficiencies.

Tax compliance initiatives have long relied on traditional tax enforcement techniques, such as tax authority audits. These methods have been in place for many years. In order to verify accuracy and completeness, these audits usually entail looking over taxpayer records and financial transactions. However, audits take a lot of time and resources, and they frequently need a large number of workers and specialized knowledge to be carried out well. Furthermore, audits are frequently viewed as punitive actions that engender hostilities between authorities and taxpayers and discourage voluntary compliance.

Moreover, there are numerous restrictions and inefficiencies with traditional enforcement strategies that reduce their effectiveness. For example, most audits are retrospective in nature, which means that tax authorities discover non-compliance only after the fact. This reactive strategy undermines revenue integrity and taxpayer trust by

providing ample opportunity for fraud and tax evasion to go unnoticed. Furthermore, the growth of intricate financial transactions in the digital age and the prevalence of complex tax evasion schemes may prove too much for conventional approaches to keep up with.

In order to overcome these obstacles, creative solutions are becoming more and more necessary. To improve tax compliance and enforcement capabilities, governments and tax authorities are utilizing technology-driven strategies like artificial intelligence, machine learning, and data analytics. With the potential for real-time monitoring, predictive analytics, and targeted interventions, these cutting-edge solutions should make it easier for authorities to identify and discourage non-compliance while also lessening the load on taxpayers who are in compliance.

III. THE TAX CODES OBSERVATION SYSYTEM'S CONCEPTUAL FRAMEWORK (TCOS)

The Tax Codes Observation System (TCOS), which uses technology to improve the effectiveness and efficiency of tax administration, represents a paradigm shift in tax compliance and enforcement. Fundamentally, TCOS is an all-inclusive structure intended to enable instantaneous observation, evaluation, and implementation of tax laws and guidelines. TCOS facilitates the proactive identification, evaluation, and resolution of compliance risks by tax authorities through the utilization of sophisticated data analytics, machine learning algorithms, and predictive modeling techniques.

Data collection, which includes the aggregation and integration of various sources of tax-related data, such as taxpayer records, financial transactions, economic indicators, and third-party information, is one of the core elements of TCOS. TCOS collects enormous volumes of both structured and unstructured data from various sources using automated data acquisition procedures, guaranteeing thorough coverage and accuracy.

After gathering data, TCOS uses advanced data analysis methods to draw conclusions from the data and find trends, abnormalities, and patterns in the tax information. TCOS can quickly and accurately identify possible cases of tax evasion, fraud, or non-compliance by using sophisticated algorithms and statistical techniques. Additionally, TCOS is capable of sophisticated analyses to find hidden patterns and new compliance risks, like anomaly detection, clustering, and predictive modeling.

Another essential element of TCOS is risk assessment, in which the system ranks compliance risks according to importance and severity after assessing their likelihood and impact. Tax authorities can more efficiently allocate resources and focus interventions on high-risk areas by using TCOS to classify taxpayers and transactions and assign risk scores.Lastly, TCOS helps with the development and execution of enforcement plans meant to mitigate detected compliance issues and guarantee compliance with tax laws and regulations. Targeted audits, investigations, compliance support programs, and outreach campaigns catered to the unique requirements and situations of taxpayers are a few examples of these tactics.

IV. TECHNOLOGY FACILITATING

The Tax Codes Observation System (TCOS) relies heavily on TCOS Technologies to carry out its mission of improving tax enforcement and compliance. Blockchain technology, data analytics, machine learning (ML), and artificial intelligence (AI) are some of the major technologies driving TCOS.

The cornerstone of TCOS is artificial intelligence (AI), which offers the cognitive powers required to effectively process and analyze enormous volumes of tax-related data. By automating processes like data collection, pattern recognition, and decision-making, AI algorithms allow TCOS to improve the ability of tax authorities to track compliance in real-time and identify anomalies or irregularities.

TCOS is equipped with predictive analytics capabilities thanks to Machine Learning (ML) algorithms, which enable it to foresee possible compliance issues and adjust to shifting tax environments. ML models can predict future trends, identify emerging risks, and optimize enforcement strategies by analyzing historical data and identifying patterns. This allows tax authorities to stay ahead of evolving tax evasion schemes.

The utilization of data analytics is essential in allowing TCOS to extract meaningful insights from heterogeneous and intricate datasets. TCOS can reveal hidden patterns, correlations, and anomalies within tax data through data visualization, exploratory data analysis, and statistical modeling techniques, enabling well-informed decision-making and focused interventions.

Blockchain technology improves the integrity and verifiability of data within TCOS by providing a transparent and safe platform for managing and storing tax-related data. TCOS can guarantee the immutability and auditability of tax records by utilizing blockchain's decentralized ledger technology. This lowers the possibility of data manipulation or tampering and increases trust between taxpayers and authorities.

In conclusion, the Tax Codes Observation System's capabilities are supported by the convergence of Artificial Intelligence, Machine Learning, Data Analytics, and Blockchain Technology. This allows tax authorities to improve tax compliance, identify and discourage tax evasion, and protect the integrity of the tax system in a world that is becoming more complex and digitalized. TCOS, which effectively navigates the challenges of modern taxation, represents a paradigm shift in tax administration by utilizing these technologies to provide authorities with the tools and insights they need.

IV. ADVANTAGES OF TCOS INTEGRATION

There are many advantages to implementing the Tax Codes Observation System (TCOS) for tax authorities, taxpayers, and society at large. These advantages are multifaceted and include increased tax revenue collection, decreased tax evasion, and increased accountability and transparency in the tax system.

First off, by making tax administration more effective and efficient, TCOS helps to increase revenue collection. Through the use of real-time monitoring capabilities and sophisticated data analytics, TCOS helps tax authorities to quickly and accurately identify possible instances of non-compliance. This proactive strategy decreases revenue leaks and raises the total tax yield by enabling prompt intervention. Additionally, TCOS makes it easier to optimize resource allocation, guaranteeing that enforcement actions are focused on high-risk areas and optimizing revenue collection.

Second, by discouraging non-compliant behavior and raising the possibility of detection, TCOS significantly contributes to the decrease of tax evasion. Taxpayers are discouraged from engaging in fraudulent activity or underreporting income due to the strong deterrent effect of the transparency and accountability that TCOS fosters. Furthermore, tax authorities can anticipate and proactively address new tax evasion schemes thanks to the predictive analytics capabilities of TCOS, keeping one step ahead of dishonest actors and successfully reducing compliance risks.

Furthermore, by giving stakeholders more visibility into the procedures and results of tax compliance, TCOS improves accountability and transparency within the tax system. TCOS makes sure that tax-related data is correct, accessible, and auditable by using technology to automate data collection, analysis, and reporting. By fostering trust between the authorities and taxpayers, this transparency encourages voluntary compliance and lessens the perception of unfairness or arbitrariness in tax enforcement procedures.

To sum up, there are numerous advantages to implementing TCOS, such as increased tax revenue collection, decreased tax evasion, and improved accountability and transparency in the tax system. TCOS enables tax authorities to maintain the integrity of the tax system, bolster compliance efforts, and create a just and equitable tax environment for all parties involved by utilizing cutting-edge technologies and data-driven strategies

V. DIFFICULTIES AND THINGS TO TAKE INTO ACCOUNT

To guarantee the Tax Codes Observation System's (TCOS) efficacy and sustainability, a number of obstacles and factors need to be taken into account during implementation. These difficulties include issues with data security and privacy, moral ramifications, and the requirement for tax authorities to undergo capacity building and training.

First of all, because TCOS collects and analyzes such a large quantity of sensitive taxpayer data, privacy and security issues are raised. Ensuring the protection of this data from unauthorized access, misuse, or breaches is crucial for upholding public confidence and adhering to privacy regulations. To reduce the chance of data breaches and safeguard taxpayer privacy, it is crucial to have strong data encryption, access controls, and secure storage systems.

Second, using cutting-edge technologies for tax enforcement purposes raises ethical questions when TCOS is implemented. Fairness, accountability, and transparency are a few examples of ethical concerns that are present in the gathering and application of taxpayer data. To guarantee that the use of TCOS is in line with societal values and upholds individual rights and liberties, it is imperative to establish explicit guidelines and ethical frameworks governing its operation.

Additionally, it becomes clear that training and capacity building are essential to the effective implementation and running of TCOS. Tax authorities must make the investment necessary to acquire the technical know-how and analytical skills needed to use TCOS efficiently. This might mean offering staff training courses on data analytics, machine learning, and cutting-edge technologies in addition to encouraging an innovative and ongoing learning environment in tax administrations.

A multifaceted strategy involving cooperation between governmental organizations, tech companies, and other stakeholders is needed to address these issues and concerns. The implementation of strong data privacy and

security protocols, the creation of moral standards for TCOS operation, and the supply of capacity building programs to improve the knowledge and abilities of tax authorities should be the top priorities of this strategy. Through proactive resolution of these obstacles, tax administrations can optimize the advantages of technology-enabled tax planning while guaranteeing adherence to legal, ethical, and societal standards.

VI. CONCLUSION

The Tax Codes Observation System (TCOS) is a revolutionary advancement in tax compliance and enforcement that utilizes cutting-edge technologies to improve the efficacy, integrity, and efficiency of tax management. Tax authorities can monitor compliance in real-time, identify anomalies and risks, and take proactive measures to address non-compliance by utilizing TCOS, which leverages artificial intelligence, machine learning, and data analytics. Numerous advantages come with implementing TCOS, such as increased tax revenue collection, decreased tax evasion, and improved accountability and transparency in the tax system.

The effective implementation of TCOS, however, also comes with a number of difficulties and factors to take into account, including issues with data security and privacy, moral ramifications, and the requirement for tax authorities to undergo capacity building and training. Governments, technology companies, and other stakeholders must work together to address these issues in order to guarantee that TCOS runs efficiently, morally, and in compliance with the law and society norms. In the end, TCOS has the power to completely transform tax administration, fostering justice, compliance, and public confidence in the tax system for the good of society at large.

REFERENCES:

1. Alm, J., & Torgler, B. (2011). References 1. Does morality matter? Morality and tax compliance. 101(4) Journal of Business Ethics, 635–651.
2. R. M. Bird (2019). Governance in the digital age: e-government, IT companies, and the government. Published by Edward Elgar Publishing.
3. IRS (2022). Taxpayer Advocate Service is the Taxpayer First Act. taken from the website taxpayeradvocate-service.irs.gov/taxpayer-first-act
4. The OECD (2020). 2020 Revenue Statistics. taken from the website https://www.oecd.org/tax/revenue-statistics-2522035x.htm.
5. J. Slemrod, (2007), 5. The Economics of Tax Evasion: A Case of Cheating Ourselves. 21(1), 25–48 in Journal of Economic Perspectives.
6. Hagan, M., and Smith, A. (2019). The management of tax evasion in the digital era: How the emergence of digital platforms presents new governance opportunities and difficulties. 20(3–4) Global Crime, 214–232. ATOMIC SPECTROSCOPY Mar-2024 204 ISSN: 0195-5373
7. The United Nations, 2020. 7. A Guide to Tax Administration Handbook. taken from theUN Handbook on Tax Administration publication at https://www.un.org/development/desa/dpad/publication/

Abhishek Kumar
Dr Shyama Prasad Mukherjee
University, Ranchi

48

झारखण्ड में जनजातीय विद्रोह और आंदोलन

श्री राजेश कुमार सिंह

सारांश

वर्तमान झारखण्ड मूल रूप से एक वन क्षेत्र है जिसकी स्थापना ''झारखण्ड आन्दोलन'' के परिणामस्वरूप हुई। इस राज्य में प्रचुर मात्रा में खनिज होने के कारण इसे ''भारत का रुर'' भी कहा जाता हैं,[1] रुर एक खनिज प्रदेश है जो यूरोप महादीप के जर्मनी राज्य में स्थित हैं। झारखंड का वर्णन वैदिक पुस्तकों में भी मिलता है वायु पुराण में झारखण्ड को मुरणड कहा गया है और विष्णु पुराण में इसे मुंड नाम से जाना गया है। महा भारत काल में छोटा नागपुर क्षेत्र को पुंडरिक नाम से जाना जाता था। कुछ बौध ग्रंथो में चीनी यात्री फाह्यान के 399 इसा में भारत आने का वर्णन मिलता है फाह्यान ने अपने पुस्तक में छोटा नागपुर को कुक्कुटलाड कहा हैं[2] तथा पूर्व मध्यकालीन संस्कृत साहित्य में छोटा नागपुर को कलिन्द देश कहा गया हैं।[3] झारखण्ड का वर्णन चीनी यात्री युवान च्वांग ईरानी यात्री अब्दुल लतीफ तथा ईरानी धर्म आचार्य मुल्ला बहबहानी ने भी किया हैं।

झारखण्ड राज्य का इतिहास :

इतिहासकारों का मानना है कि इस क्षेत्र को मगध साम्राज्य से पहले भी एक इकाई के रूप में चिन्हित किया जाता था क्योंकि इस क्षेत्र की भू–सरंचना, सांस्कृतिक पहचान अलग ही थी। झारखण्ड राज्य को आदिवासी समुदाय का नैसर्गिक स्थान माना जाता है, जिन्हें भारतीय सविधान में अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया गया हैं। जिनमे खड़िया, संताल, मुंडा, हो, उरांव, असुर, बिरजिया, पहाड़िया आदि जातियां प्रमुख हैं। झारखण्ड के जंगलो को साफ कर खेती लायक बनाने तथा मनुष्य के रहने योग्य बनाने का श्रेय इन्ही आदिवासियों को दिया जाता हैं। मुस्लिम तथा अंग्रेजी हुकूमत से पहले यहाँ की व्यवस्था आदिवासियों ने ही संभाली थी इन आदिवासियों की मुंडा प्रथा में गाँव में एक मुखिया नियुक्त किया जाता था जिसे मुंडा कहा जाता था तथा गाँव के संदेशवाहक को डकुवा कहा जाता था। बाद में मुगल सल्तनत के दौरान इस प्रदेश को कुकरा प्रदेश के नाम से जाना जाने लगा। वर्ष 1765 के बाद यह क्षेत्र ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन हो गया था। ब्रिटिश साम्राज्य की अधीनता के दौरान यहाँ के आदिवासियों कर बहुत अत्याचार हुए और दिन प्रतिदिन यहाँ क आदिवासियों की स्थिति खराब होती गई।

झारखण्ड में अंग्रेजों का पहला प्रवेश वर्ष 1760 में हुआ जिसके बाद से ही अंग्रेज झारखण्ड में अपने पैर पसारने लगे। वर्ष 1767 में अंग्रेजो ने फर्गुसन के नेतृत्व में सिंधभूम पर आक्रमण कर दिया और झाग्राम पर अधिकार कर लिया। कुछ राजाओं ने भयभीत होकर आक्रमण कर दिया जैसे – रामगढ़ के राजा मुकुंद सिंह, जामवनी के राजा और सिलदा के राजा प्रमुख थे। इसके बाद फर्गुसन ने घाटशिला पर आक्रमण कर उसपर भी अधिकार कर लिया इस तरह अंग्रेजों का झारखण्ड की धरती पर प्रवेश हो गया।[4] अंग्रेजों ने प्रशासकीय स्तर पर झारखण्ड के आदिवासी लोगों के हितों और अधिकारों का हनन तथा दमन करना शुरू कर दिया। इसके साथ आदिवासी लोगो को अपनी सभ्यता और संस्कृति पर भी खतरा मंडराता दिखाई दे रहा था। यह सभी कारणों ने जनजातीय विद्रोह को जन्म और यहाँ के स्थनीय लोग अंग्रेजों के नीतियों के विरुद्ध आंदोलन छेड़ने के लिए विवश हो गए।

इसाई धर्म का प्रचार :

झारखण्ड की जनजाति शुरू से ही जंगलो पर निर्भर रही है और वह अपनी आपूर्ति यही से करती थी परन्तु अंग्रेजों ने किस् जमीनों को जमीदारो को सौप दिया और जो किसान पहले अपनी भूमि के स्वामी हुआ करते थे वे अब उस भूमि के मजदूर बन गए। अंग्रेजों ने राजस्व बढ़ाने के लिए कार्नवालिस के काल में स्थायी बंदोबस्त को लागू कर दिया। जिसके अनुसार जमीदारों को भूमि का स्वामी मानकर अधिकार जमीदारों को दे दिया गया पहले वे केवल लगान वसूल करते थे लेकिन अब वे जमीन को बेच भी सकते थे। जमींदार वसूल किये गए लगान का 10/11 भाग अंग्रेज को देते और 1/11 भाग अपने पास रखते थे। समय पर लगान न मिलने पर जमींदार किसानों की जमीनों को करते थे जिससे किसान भूमि हीन होने लगे। इन्ही सभी कारणों ने किसान आदिवासियों में असंतोष की भावना उत्पन कर की और उन्हें विद्रोह पर विवश कर दिया। झारखण्ड में अंग्रेजों के प्रवेश के साथ ही ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार भी शुरू हो गया। ईसाई धर्म के प्रचारक आदिवासी अनेक प्रकार के लाभ दिखा कर या जनजातियों की संस्कृति पर प्रहार करके उन्हें अपना धर्म बदलने के लिए विवश करने लगे जिसके परिणामस्वरूप आदिवासियो को अपना धर्म संकट में लगने लगा और उनमें अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की भावना जागने लगी।

झारखण्ड में एक नई क्रांति का श्रीगणेश हुआ। इस शोधपत्र में कई कालखण्डों में विभाजित कर आदिवासी विद्रोह का इतिहास प्रस्तुत किया है। वास्तव में झारखण्ड राज्य बनने के पहले यह राज्य अपना अत्याचार का इतिहास कहा है।

ढाल विद्रोह (1767–1770 ई.)

झारखंड में यह पहला आदिवासी विद्रोह था जिसका नेतृत्व ढालभूम के अपदस्थ राजा जगन्नाथ ढाल ने किया था। ढाल विद्रोह

का मुख्य कारण ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का सिंहभूम और मानभूम क्षेत्र में आगमन या जिसने क्षेत्र के लोगी को असंतुष्ट कर दिया था। यह विद्रोह 10 वर्षों तक जारी रहा। लेफ्टिनेंट रूक और चार्ल्स मॉर्गन की विद्रोह को दबाने के लिए भेजा गया था लेकिन वे असफल रहे। परिणामस्वरूप, 1777 में, अंग्रेजों ने फिर से जगन्नाथ ढाल को ढालभूम का शासक घोषित कर दिया। कालान्तर में इस विद्रोह का दमन रूख मॉर्गन ने किया था।[5]

रामगढ़ विद्रोह (1772–1778 ई.)

यह विद्रोह राजा मुकुंद में शुरू हुआ था। 25 अक्टूबर 1772 को रामगढ़ पर एक तरफ से छोटा नागपुर के कैप्टन जैकब कैमैक और दूसरी तरफ से तेज सिंह ने. हमला किया था। इसके चलते गुरुद सिंह रामगढ़ से फरार हो गया। मुकुंद सिंह के समर्थक रघुनाथ सिंह ने विद्रोह करना शुरू कर दिया और पारसनाथ सिंह से चार परगना और जागीरदारों पर कब्जा कर लिया। इस विद्रोह को दबाने के लिए कैप्टन एकरमैन को बुलाया गया था। राजस्व की बढ़ती मांग और कंपनी के नियंत्रण ने पारसनाथ सिंह को बनारस के विद्रोही राजा राजा घेत सिंह का समर्थन करने के लिए मजबूर कर दिया। 1781 के अंत तक पूरा रामगढ़ विद्रोही मूड में था। 1782 तक, ब्रिटिश सरकार ने रामगढ़ के राजा को राजस्व संग्रह की जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया और जागीरदारों के साथ प्रत्यक्ष राजस्व समझौता किया। इस प्रकार, रामगढ़ का राजा केवल एक नाममात्र का राजा रह गया।

पहाड़िया विद्रोह (1776–1824 ई.)

पहाड़िया जनजाति राजमहल, गोड्डा और पाकुड क्षेत्री में बसी थी। अंग्रेजों के खिलाफ उनके विद्रोह को अंग्रेजों के खिलाफ आदिवासी विद्रोही के इतिहास में पहला बड़ा विद्रोह माना जाता है। इस अनजाति ने 1766, 1772 और 1781–82 में अंग्रेजी के खिलाफ कई बार विद्रोह किया। 1766 में, उन्होंने रमना अहदी के नेतृत्व में विद्रोह किया। 1772 के विद्रोह में चंगरून सांवरिया, पचने हीना पहाड़िया और करिया पुन्हार सहित कई नेताओं की मृत्यु हो गई। 1781–82 में, राजा महेशपुर की पत्नी रानी सर्वेश्वरी ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया, पहाड़िया प्रमुखर्जी ने रानी की मदद की। अंग्रेजों ने 1790 और 1810 के बीच इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में संथालों को बसाया। पहाड़िया अल्पसंख्यक हो गए, लेकिन उनका आंदोलन जारी रहा। 1827 में, अंग्रेजों ने पहाड़िया की भूमि को दामिन–ए–कोह घोषित कर दिया और विद्रोह को दबाने के लिए इसे सरकारी संपत्ति घोषित कर दिया।

तिलका मांझी विद्रोह (1783–1785 ई.)

इस विद्रोह का उद्देश्य इस क्षेत्र से अंग्रेजों को खदेड़ना और आदिवासियों की स्वायत्तता की रक्षा करना था। तिलका ने साल के पत्तों को गांवों में प्रसारित कर विद्रोह का संदेश दिया। तिलका मांझी ने ऑगस्टस क्लीवलैंड पर हमला किया, जिसकी बाद में मृत्यु हो गई। उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का पहला शहीद माना जाता है।

तमाड़ विद्रोह (1782–1820 ई.)

इसकी शुरुआत 1782 में छोटा नागपुर में उरांव जनजाति द्वारा की गई थी। इस विद्रोह के नेता ठाकुर भोलानाथ सिंह थे। 1807, 1811, 1817 और 1820 में, मुंडा और उरांव आदिवासियों ने जमींदारों और गैर–आदिवासियों के खिलाफ विद्रोह किया।

हो विद्रोह (1821–1837 ई.)

तीसरे आंग्ल–मराठा युद्ध (1818) के बाद, ईस्ट इंडिया कंपनी ने सिंहभूम के शासक जगन्नाथ सिंह के साथ एक समझौता किया। सिंहभूम शासक ने, न केवल खारवार और सरायकेला के प्रमुखों पर वर्चस्व की घोषणा की बल्कि कंपनी की मदद से हो जनजाति को नियंत्रित करने का प्रयास भी किया। 31 जनवरी, 1821 को, हो जनजाति ने सूबेदार और उनकी पार्टी पर हमला किया। लेकिन अंग्रेजों ने इसका दमन कर दिया और उन्होंने अंग्रेजों के अधीन अपनी अधीनता स्वीकार कर ली।

कोल विद्रोह (1831–1832 ई.)

यह झारखंड का पहला सुव्यवस्थित और व्यापक आदिवासी विद्रोह था, जो जमींदारों, ठेकेदारों, साहूकारों, गैर–आदिवासी व्यापारियों और राजा के एजेंटों की दमनकारी प्रशासनिक नीति के खिलाफ था। इस विद्रोह में शामिल मुख्य जनजातियाँ गुंडा, हो, उरांव, खरवार और चेरो थी। इस आंदोलन के प्रमुख नेता बुद्ध भगत (उरांव जनजाति), बिद्राई मांकी, सो बहादुर, देसाई मुंडा, सुरगा मुंडा, कार्तिक सरदार थे लेकिन इस विद्रोह को 1832 में कैप्टन विल्किंसन ने दबा दिया था। इन लोगों से मनमाना कर वसूल करने के लिए, जिन्होंने कृषि और शिकार पर निर्भर, उन्हें विभिन्न तरीकों से प्रताड़ित किया गया और करों का भुगतान करने में असमर्थता के कारण, उनकी भूमि 'दिकुओं' (बाहरी लोगों) को दे दी गई। मुंडा जनजाति ने बंदगांव में आदिवासियों की एक सभा बुलाई। इस सभा में करीब सात कोल आदिवासी आए और वहीं से यह उग्र विद्रोह शुरू हो गया। ब्रिटिश और उनके वफादार जमींदार ठीकू इसकी चपेट में आ गए। विद्रोहियों ने एक–एक कर गांवों को जला दिया। इस विद्रोह के परिणामस्वरूप, 1834 में विल्किंसन कानून लागू किया गया और दक्षिण–पूर्व फ्रंटियर एजेंसी नामक एक नए प्रांत का गठन किया गया। कंपनी ने विद्रोह के कारणों की जांच की और झारखंड की शासन प्रणाली में आमूल–चूल परिवर्तन किए गए। कंपनी ने 'विनियमन–XIII' नामक एक नया कानून बनाया, जिसके तहत रामगढ़ जिले को विभाजित किया गया। जंगल महल और सहायक नदी महल, एक

गैर–विनियमन प्रांत के साथ एक नया प्रशासनिक क्षेत्र बनाया गया था।[6]

संथाल विद्रोह (1855–1856 ई.)

संथाल 1790 ई. से दामिन–ए–कोह के नाम से मशहूर संथाल परगना क्षेत्र में बसने लगे। किसानों का उत्पीड़न विद्रोह का एक प्रमुख कारण था। संथाल जनजातियाँ भी कृषि और जंगलों पर निर्भर थीं, लेकिन जमींदारी व्यवस्था हतंकमनच ने उन्हें उनकी भूमि से बेदखल करना शुरू कर दिया। ब्रिटिश समर्थित जमींदार जमींदारों का पूरी तरह से शोषण कर रहे थे और साथ ही, कंपनी ने कृषि करों में इतनी वृद्धि की थी कि संथाल इसे भुगतान करने में असमर्थ थे। इससे संस्थानों में बंधुआ मजदूरी की प्रथा शुरू हो गई। बंधुआ मजदूरी को 'कामिया' या 'काम्योती' भी कहा जाता था। संथालों के इस तरह के घोर उत्पीड़न के विरोध में सिद्धो–कान्हू नाम के दो युवक आए। 1855 में भोगनाडीह के चुन्नू मांझी के चार पुत्र सिद्धो–कान्हू चंद और भैरव के नेतृत्व में हजारों संथालों ने एक सभा की, जिसमें उन्होंने अपने उत्पीड़कों के खिलाफ एक भीषण लड़ाई लड़ने की शपथ ली। सरकार की अवज्ञा, दामिन क्षेत्र में अपनी सरकार स्थापित करने और लगान न देने की घोषणा की गई। चेतावनी के दो दिन बाद, संथालों ने चुन– चुन कर अपने शोषकों को मारना शुरू कर दिया। यह एक खुले सशस्त्र विद्रोह था, जो कहलगांव से राजमहल तक फैला था। यह विद्रोह 1856 में बीरभूम, बांकुरा और हजारीबाग में भी फैल गया। सिद्धू और कान्हू पकड़े गए। उन्हें बरहेट में फांसी दी गई। इस विद्रोह को फिर भी कुछ सफलता मिली, क्योंकि संथालों ने या तो अधिकांश अंग्रेजों और उनके समर्थकों को उनके क्षेत्र से मार डाला या भगा दिया। इस विद्रोह के जनक सिद्धो–कान्हू झारखंड के लोगों के लिए पूजनीय हो गए और आज भी उन्हें झारखंड के जननायक के रूप में याद किया जाता है। इस संथाल विद्रोह के परिणामस्वरूप 30 नवंबर 1856 ई. को संथाल परगना जिले की विधिवत स्थापना हुई और एशली ईडन को पहला कलेक्टर बनाया गया। इस विद्रोह की याद में राज्य में हर साल 30 जून को 'विप्लव दिवस' मनाया जाता है। संथाल विद्रोह को संथाल हुल या हुल विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है।

बिरसा मुंडा आंदोलन (1895–1900 ई.)

इस आंदोलन को झारखंड में सबसे अधिक संगठित और व्यापक माना जाता था। बिरसा मुंडा को भगवान का अवतार माना जाता था। अन्य जनजातियों की तरह, मुंडा जनजाति भी अपनी परंपराओं और विश्वासों को बनाए रखने के लिए कृषि और जंगलों पर निर्भर थी। विद्रोह का एक मुख्य कारण उनकी संस्कृति पर अन्य संस्कृति का प्रभाव था। कालांतर में बिरसा मुंडा नाम का युवक मुंडा जनजाति के उत्थान का कार्य कर आगे आया। बिरसा मुंडा के भाषण में एक चिंगारी थी और उस समय व्यवस्था को चोट पहुंचाने की क्षमता भी रखते थे। वह बैठकें करते थे और लोगों को बुराइयों से दूर रहने के लिए कहते थे, जीवन में निर्भरता को जगह देने की बात करते थे और उनकी संगठनात्मक शक्ति के बारे में भी जानते थे। 1895 तक, बिरसा मुंडा लगभग छह हजार मुंडाओं को समूहों में संगठित करने में सक्षम था। यह अब तक की सबसे बड़ी आदिवासी सभा थी। इसके मुख्य उद्देश्य इस प्रकार थेः

1. ब्रिटिश सरकार को पूरी तरह से दवा देना
2. छोटा नागपुर सहित अन्य सभी क्षेत्रों से 'दिकुओं' को दूर भगाने के लिए
3. स्वतंत्र मुंडा राज्य की स्थापना

उन्होंने सभी मुंडाओं को साहस के साथ इस धर्मयुद्ध में कूदने का आहवान किया और साहूकारों, जमींदारों, मिशनरियों, दीकुओं आदि पर हमला करने की योजना बनाई और हमला किया। उन्हें कंपनी की सेना ने रांची में गिरफ्तार कर लिया, लेकिन कुछ दिनों बाद, उन्हें मुक्त कर दिया गया और वे वापस लौट आए। उसके दस्ते को। इस बार बिरसा मुदा ने अपनी योजना को एक अच्छा आकार दिया और 25 दिसंबर, 1897 को हमला करने का फैसला किया, जब क्रिसमस का दिन था और ईसाई इस दिन को मनाने वाले थे। इस हमले में उसने अधिक से अधिक ईसाइयों को मारने का संकल्प लिया। एक निश्चित दिन पर, मुंडा विद्रोहियों ने हंगामा किया और ईसाई और मुंडा जो ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए थे, मारे गए। इस विद्रोह को बेरहमी से दवा दिया गया। बिरसा मुंडा और उनके साथी गया मुंडा को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। कुछ लाइलाज बीमारियों और उचित इलाज के अभाव में जेल में रहते हुए बिरसा मुंडा की मृत्यु हो गई। अंग्रेजों ने भूमि अधिकार के नए नियम बनाए और काश्तकारी अधिनियम के तहत पहली बार मुंडारी खुंटकारी प्रणाली लागू की गई। प्रशासनिक सुविधाओं को और भी बेहतर बनाया गया। प्रशासन के मन से आदिवासियों के प्रति घृणा को समाप्त करने का प्रयास किया गया। 1908 में गुमला अनुमंडल का गठन किया गया, जबकि 1905 में खूंटी को अनुमंडल बनाया गया।

ताना भगत आंदोलन (1914)

यह आंदोलन बिरसा आंदोलन के साथ शुरू हुआ। यह आंदोलन 1914 में शुरू हुआ था। ताना भगत कोई व्यक्ति नहीं, बल्कि उरांव जनजाति की एक शाखा थी, जिसने कुडुख धर्म को अपनाया था। इस आंदोलन के प्रमुख नेता जात्रा भगत और सिदू भगत थे। इन लोगों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी और ये ज्यादातर श्रम कार्य करते थे। जात्रा भगत नाम के युवक को इस आंदोलन के नायक के रूप में पहचाना जाता था, जो अलौकिक मान्यताओं के

साथ रहता था। जनश्रुति के आधार पर इस जात्रा भगत को 'धर्मेश' नाम के एक उरांव देवता ने दर्शन दिए और उन्हें कुछ निर्देश दिए और इस आंदोलन को शुरू करने का आदेश दिया। उन्होंने लोगों के अधविश्वास को मानने से इंकार कर दिया और आचरण में सात्विकता लाने का संदेश दिया। जतरा भगत ने कृषि मुद्दों को सामने लाया और नो–रेट अभियान शुरू किया। उन्होंने बेगार या कम वेतन वाले मजदूरों को भी ऐसा काम नहीं करने का आदेश दिया। ताना भगत क्रांतिकारी हिंदू कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ लड़े। उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन में भाग हतंकमनच लिया और असहयोग आंदोलन में भी भाग लिया। वे सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी सक्रिय थे। यह आंदोलन एक अहिंसक आंदोलन था क्योंकि वे अहिंसक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के सहभागी थे। उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ काम किया और शराब की दुकानों पर छापा मारा, सड़को, टेलीग्राफ लाइनों को नष्ट कर दिया, पुलिस स्टेशनों और सरकारी कार्यालयों पर हमला किया।

ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान झारखण्ड का इतिहास :

1857 में अंग्रेजो के खिलाफ विद्रोह उग्र हुआ लेकिन यहाँ के आदिवासियों ने लगभग 100 साल पहले ही अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह की मुहीम छेड़ दी थी। आदिवासियों ने झारखण्ड की जमीन की रक्षा के लिए ब्रिटिश साम्राज्य से कई विद्रोह किये । तिलका मांझी ने सबसे पहले ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह के खिलाफ विद्रोह की मुहीम छेड़ी, 1796 में एक आदिवासी नेता संत लाल ने जमीदारों तथा ब्रिटिश सरकार से अपनी जमीने छुड़ाने तथा पूर्वजों की जमीन पुनः स्थापित करने का प्रण लिया। ब्रिटिश सरकार ने अपने सैनिकों को भेज तिलका मांझी के विद्रोह को कुचल दिया। सन् 1797 में अन्य जनजातियों ने भी ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ विद्रोह छेड़ दी। इसके बाद पलामू में चेरो जनजाति के लोगों ने 1800 ईसवीं में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह शुरू किया। इस विद्रोह के सात साल बाद 1807 ईसवीं में बैरवे में ओरेंस ने गुमला के पशिचम में श्रीनगर के अपने बड़े मालिक की हत्या कर दी। यह बात शीघ्र ही गुमला तथा आसपास के इलाकों में फैल गयी। आसपास के मुंडा जनजाति के लोगों तथा तमार इलाकों में फैले हुए लोगो ने भी ब्रिटिश राज का विद्रोह किया। 1813 के विद्रोह में गुलाब सिंह भूम बैचेन हो रहे थे लेकिन फिर 1820 में खुल कर जमीदारों तथा अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह करने लगे। इसे लाका कोल रिसिंग्स 1820–1821 के नाम से जाना गया। फिर महान कोल रिइसिंग आया और यह विद्रोह 1832 में किया गया था। यह विद्रोह झारखण्ड की जनजातियों द्वारा किया में ब्रिटिश सरकार ने इन्हें भी कुचल दिया। इन सब के बाद बिरसा मुंडा का विद्रोह शुरू हुआ इस विद्रोह में मुंडा जनजाति के लोगों ने खुंटी, तामार, सरवाड़ा और बाडगोंव आदि बेल्ट में विद्रोह किया। मुंडा विद्रोह झारखंड का सबसे बड़ा तथा सबसे लम्बा चलने वाला जनजातीय विद्रोह था। छोटा नागपुर डिविजन में ब्रिटिश सरकार ने बहुत से विद्रोहों का सामना किया ब्रिटिश सरकार के विरोधी जहाँ भी अस्तित्व में थे सरकार ने वहां डिवाइड एंड रूल की पालिसी अपनाई। ब्रिटिश सरकार ने आदिवासियों को दबाए रखने तथा राज करने की पूरी कोशिश की लेकिन आदिवासियों ने भी इसका भरपूर विरोध किया और अपनी मातुर्भूमि की रक्षा की। अपनी भूमि की रक्षा के लिए छोटानागपुर टेनेंसी अधिनियम 1908 के बाद आदिवासियों ने लोगों के सामाजिक तथा आर्थिक विकास करने की सोची और 1920 में महात्मा गाँधी के सत्याग्रह आन्दोलन में शामिल हो गए और सरकार को भूमि देने से रोक लिया। 1928 में साइमन आयोग पटना आया तब आदिवासियों ने अलग झारखण्ड राज्य की मांग की लेकिन इनकी मांग को ठुकरा दिया गया। इसके पच्शात थैबल ओरोन ने 1931 में किसान सभा का आयोजन किया और फिर 1935 में चौटालागपुर में उन्नति समाज और किसान सभा को राजनितिक सत्ता हासिल करने के लिए विलय कर लिया गया था।

अनुसूचित जनजाति हासिए पर :

वर्तमान झारखण्ड का गठन 15 नवम्बर 2000 को आदिवासी नायक बिरसा मुंडा के जन्मदिन पर किया गया था झारखण्ड भारत का 28 वां राज्य है। झारखंड की राजधानी रांची हैं तथा जमशेदपुर, धनबाद व् बोकारो इसके बड़े शहरों में शामिल हैं। झारखण्ड की सीमाएं वेस्ट बंगाल, ओड़िसा, बिहार, छत्तीसगढ और उत्तरप्रदेश से लगती हैं। हिंदी, बंगाली, हो, खड़िया, खोरठा, कुरमाली, कुडुख, मुंडारी, नागपुरी, ओडिया, संथाली उर्दू आदि यहाँ बोली जाने वाली मुख्य बोलियाँ हैं। यहाँ की मुख्य नदियों में कोयल, दामोदर, खड़कई और सुवर्णरेखा प्रमुख हैं। यह राज्य वन्य जीव सरंक्षण में अग्रणी हैं। झारखण्ड की जनसँख्या 3,29,88,134 हैं तथा इस राज्य का क्षेत्रफल 79,714 वर्ग कि.मी. है। इस राज्य में 24 जिले है। देवघर वैधनाथ मंदिर, हुंडरू जलप्रपात, दलमा अभयारण्य, बेतला राष्ट्रीय उद्यान, श्री समेद शिखरजी जैन तीर्थस्थल (पारसनाथ), पतरातू डैम, पतरातू, गौतम धारा, जोन्हा, छिनमस्तिके मंदिर, रजरप्पा, पंचघाघ जलप्रपात, दशम जलप्रपात, हजारीबाग राष्ट्रीय अभयारण्य आदि यहाँ के पर्यटक स्थल है।

अनुसूचित जनजाति समुदाय का एक समूह है जो प्राचीन काल से पारंपरिक रूप से हाशिए पर और वंचित रहा है। भारत का संविधान उन्हें विशेषाधिकार और लाभ प्रदान करता है ताकि वे समाज में सशक्त हो सकें। भारत में अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत है। भारत में अनुसूचित जनजातियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को समाज के सबसे वंचित समूह के रूप में पहचाना और चित्रित किया जा सकता है। वे

अज्ञानी, गरीब, पिछड़े, भौगोलिक रूप से अलग–थलग और सांस्कृतिक रूप से अलग–थलग हैं। उनके उत्थान और समग्र विकास के लिए उनके अधिकारों और हितों की रक्षा के लिए उन्हें विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। मैदानी इलाकों के अलावा ये आमतौर पर जंगलों और पहाड़ी इलाकों में रहते हैं। संविधान के अनुच्छेद 342 में अधिसूचित अनुसूचित जनजातियों को भारत में आदिवासी कहा जाता है। भारत सरकार का उद्देश्य जनजातियों की हाशिए की स्थिति का उत्थान और विकास करना है। इस समुदाय को मजबूत और सशक्त बनाने के लिए सरकार उन्हें असंख्य योजनाएं, अधिनियम, संशोधन और आजीविका सहायता प्रदान कर रही है। पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में जनजातीय लोगों के सामाजिक–आर्थिक, शिक्षा, वन अधिनियम कानूनी व्यवस्था, लैंगिक सरोकारों, लड़कियों महिलाओं को हाशिए पर धकेले जाने, प्रमुख स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं, उत्पीड़न, दलित साहित्य, भाषा के मुद्दों और चुनौतियों जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई है। इन मुद्दों का सामना करने और रणनीति और समाधान तैयार करने में।

भारत में आदिवासी समुदायों का उल्लेख भारतीय संविधान की अनुसूची 5 के तहत किया गया है। इन समुदायों को अनुसूचित जनजाति के रूप में जाना जाता है। अनुसूचित जनजातियाँ आधिकारिक तौर पर लोगों के नामित समूह है और भारत में सबसे वंचित सामाजिक–आर्थिक समूहों में से है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में जनजातीय आबादी 10.43 करोड़ या कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत है। इसमें से 89.97 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में और 10.03 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में रहते हैं। मिजोरम और लक्षद्वीप (95:) में अनुसूचित जनजातियों का उच्चतम प्रतिशत पाया जाता है, जबकि पंजाब और हरियाणा (0रू) में कोई अनुसूचित जाति नहीं पाई जाती है। अनुसूचित जनजातियों की सर्वाधिक संख्या मध्य प्रदेश में पाई जाती है। भारत में अनुसूचित जनजातियों का अनुपात 1951 में 6. 23 प्रतिशत था जो धीरे–धीरे बढ़कर वर्ष 2011 में 8.6 प्रतिशत हो गया। भारत में कुल 645 जनजातियों पाई जाती है। सबसे बड़ी जनजाति भील है जिसकी जनसंख्या 40 लाख से अधिक है।

निष्कर्ष:

स्वतंत्रता के बाद की अवधि में सामाजिक–आर्थिक क्षेत्र में आदिवासियों के अधिकारों को कानूनी और संवैधानिक रूप से मान्यता दी गई थी। फिर भी आदिवासियों की यात्रा संघर्षों और आंदोलनों से मुक्त नहीं रही है। अक्सर पर्यावरण के नाम पर जनजातियों के उनकी भूमि पर दावों को खारिज कर दिया गया था और अन्य उदाहरणों में बाहरी लोगों द्वारा वनों के संसाधनों का दोहन करने के लिए बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया है। नीति निर्माताओं ने इस तरह के विरोधाभासों को विधायी कानूनों के माध्यम से हल करने का प्रयास किया। जनजातियों के ज्वलंत मुद्दों को हल करने के लिए अधिनियमित ऐसा ही एक कानून वन अधिकार अधिनियम 2006 है। इसके प्रावधानों और पर्यावरण और जनजातियों पर इसके राबद्ध प्रभाव की गहन समझ से जनजातियों के जटिल मुद्दों के संदर्भ में बहुत आवश्यक जागरूकता लागी जा सकती है। पर्यावरण को संरक्षित करने की जरूरत है।

<u>सन्दर्भ ग्रंथ सूची</u>

1. डॉ0 शत्रुघन कुमार पाण्डेय, झारखण्ड का इतिहास एवं संस्कृति (प्रारम्भ से 1947 तक), साहित्य भवन पब्लिकेशन।
2. डॉ0 वी0 वीरोत्तम, झारखण्डः इतिहास एवं संस्कृति, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, पंचम संस्करण, नवम्बर, 2013, पृष्ठ 15–44।
3. सरित कुमारी, झारखण्ड पर एक अध्ययन, समय प्रकाशन।
4. प्रो0 डॉ0 शक्ति पद शर्मा, झारखण्ड का इतिहास (प्राचीनकाल से लेकर 2014 ई0 तक), प्रकाशन 2018।
5. शैलेंद्र महतो, झारखण्ड में विद्रोह का इतिहास (1767–1914), प्रभात प्रकाशन, 12 नवंबर 2020।
6. डॉ0 वी0 वीरोत्तम, झारखण्डः इतिहास एवं संस्कृति, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, पंचम संस्करण, नवम्बर, 2013, पृष्ठ 403–444।

श्री राजेश कुमार सिंह
इतिहास विभाग,
डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय,
राँची